

श्री कुलजम सरूप साहेब

छोटा व बड़ा कियामतनामा

(टीका एवं भावार्थ सहित)

टीकाकर्ता
राजन स्वामी
नरेश टंडन

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (उ. प्र.), भारत

प्रकाशक:

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ. प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 91-7088120381
वेबसाइट : www.spjin.org

सर्वाधिकार :

© प्रकाशकाधीन इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति व संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित सामग्री इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

प्रथम संस्करण : १०००

बुद्ध जी शाका ३४२
विक्रम संवत् २०७७
ईस्वी सन् २०२१
ISBN : 978-93-85094-40-8

न्यौछावर : रु. १६०

मुद्रक :

ज्ञानपीठ मुद्रणालय
सरसावा, जिला-सहारनपुर

अनुभूमिका

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! अक्षरातीत श्री राज जी के दिल में इल्म के अनन्त सागर हैं। उनकी एक बूंद श्री महामति जी के धाम-हृदय में आयी, जो सागर का स्वरूप बन गई, इसलिये कहा गया 'नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन' अर्थात् ज्ञान के सागर के रूप में यह तारतम वाणी है, जो मारिफत के ज्ञान का सूर्य है। यह ब्रह्मवाणी सबके हृदय में ब्रह्मज्ञान का उजाला करती है।

'हक इलम से होत है, अर्स बका दीदार' का कथन अक्षरशः सत्य है। इस ब्रह्मवाणी की अलौकिक ज्योति सुन्दरसाथ के हृदय में माया का अन्धकार कदापि नहीं रहने देगी। इस ब्रह्मवाणी की थोड़ी सी अमृतमयी बूंदों का भी रसास्वादन करके जीव अपने लिये ब्रह्म साक्षात्कार एवं अखण्ड मुक्ति का दरवाजा खोल सकता है।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि अनेक भारतीय भाषाओं में अवतरित इस ब्रह्मवाणी की टीका सरल भाषा में प्रस्तुत हो। यद्यपि वर्तमान में अनेकों सम्माननीय मनीषियों की टीकायें प्रचलित हैं, किन्तु ऐसा अनुभव किया जा रहा था कि एक ऐसी भी टीका हो, जो विश्लेशणात्मक हो, सन्दर्भ, भावार्थ, स्पष्टीकरण एवं टिप्पणियों से युक्त हो।

मुझ जैसे अल्पज्ञ एवं अल्प बुद्धि वाले व्यक्ति के लिये यह कदापि सम्भव नहीं था, किन्तु मेरे मन में अचानक ही यह विचार आया कि यदि कबीर जी और ज्ञानेश्वर जी जैसे संत अपने योगबल से भैसे से वेद मन्त्रों का उच्चारण करवा सकते हैं, तो मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत मुझसे टीका की सेवा क्यों नहीं करवा सकते? इसी आशा के साथ मैंने अक्षरातीत श्री जी के चरणों में अन्तरात्मा से प्रार्थना की।

धाम धनी श्री राज श्यामा जी एवं सद्गुरु महाराज श्री रामरतन दास जी की मेहर की छांव तले मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया। सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा ने मुझे इस कार्य में दृढ़तापूर्वक जुटे रहने के लिये प्रेरित किया। इन सबका प्रतिफल यह टीका है।

सभी सम्माननीय पूर्व टीकाकारों के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए मैं आशा करता हूँ कि यह टीका आपको रुचिकर लगेगी। सभी सुन्दरसाथ से निवेदन है कि इसमें होने वाली त्रुटियों को सुधार कर मुझे भी सूचित करने की कृपा करें, जिससे मैं भी आपके अनमोल वचनों से लाभ उठा सकूँ एवं अपने को धन्य-धन्य कर सकूँ।

आप सबकी चरण-रज

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (३० प्र०), भारत

अनुक्रमणिका

प्र. सं.	विषय	पृष्ठ
	छोटा कयामतनामा	5-70
१.	जो नूर पार अर्स अजीम	7
२.	जैते पैगंबर भए	37
	बड़ा कयामतनामा	71-261
१.	खास उमतसों कहियो जाई	71
२.	एक तो कहे अल्ला कलाम	86
३.	लिख्या चौथे सिपारे	89
४.	तीसरे सिपारे बड़ा जहूर	98
५.	लिख्या माहें नामें नूर	109
६.	हो सैयां फुरमान ल्याए हम	125
७.	हुएयां सोभा तेरी सोहागनियां	142
८.	लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत	153
९.	लिख्या सिपारे सूरतों	181
१०.	चौथे सिपारे में लिखी	189
११.	ए रोज नाही खिलाफ	192
१२.	कुरान तफसीर जो हुसेनी	196
१३.	ए सिपारे पेहेले की कही	204
१४.	औलाद याकूब कह्या इस्हाक	206
१५.	छिपके साहेब कीजे याद	214
१६.	ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें	218
१७.	कह्या आम सिपारे माहें	219
१८.	सिपारा आम आधा पूरन	223
१९.	साखी - तीन दिन कहे जो बुजरक	226
२०.	जिनको कयामत की है सक	230
२१.	लिख्या आम सिपारे सूरत	233
२२.	महंमदे जाहेर करी दावत	236
२३.	दिन कयामत के पूरे कहे	254
२४.	नौमी आगे अरफा ईद कही	259

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भाए, सब विध वतन सहीत ॥

॥ कियामतनामा ॥

छोटा कियामतनामा

भला वह कौन सा पाषाण हृदय होगा जो वैशाख ज्येष्ठ (मई-जून) के महीने में दहकते हुए सूरज की तपिश से तप्त रेगिस्तान में सावन भादों की फुहारों जैसी स्थिति से आह्लादित न होता हो। कई दिनों की भूख और प्यास से तड़पता हुआ मानव यदि अचानक ही छप्पन व्यंजनों और गंगोत्री के गंगाजल जैसा पवित्र जल पा ले तो क्या वह हर्षातिरेक से झूम नहीं उठेगा? वर्षों से पिंजरे में सिसकता हुआ पक्षी जब उससे मुक्त होकर स्वच्छन्दता पूर्वक नीले गगन में विहार करेगा तो क्या वह प्रसन्नता के आसुंओं से अपनी चोंच को भीगो नहीं लेगा? यदि ऐसा है तो 'कियामत' शब्द सुनते ही हृदय में भय का संचार क्यों होता है? घने अन्धकार से परिपूर्ण रात्रि में समुद्र में उठे भयंकर झंझावात (तूफान) से जूझता हुआ यात्री जब अपनी नौका सहित अपने जीवन को बचाने का प्रयास करे और पास में ही किसी प्रकाश स्तम्भ को देखे तो वह कितनी प्रसन्नता का अनुभव करेगा, यह सहज ही सोचा जा सकता है? इससे भी अधिक प्रसन्नता तो हमें तब होनी चाहिए जब हमारे कानों में अमृत से भी अधिक मधुर लगने वाले ये शब्द सुनने के लिये मिलें कि 'कियामत आ गयी है'।

'कियामत', मृत्यु या प्रलय का निमन्त्रण नहीं अपितु शाश्वत जीवन के शाश्वत प्रेम, शान्ति, आनन्द, और सौन्दर्य के सागर में डूबकर अपने प्राणेश्वर के मधुर दर्शन (शरबत ए-हलीम दीदार) का सौभाग्य प्राप्त करने की शुभ सूचना है। आज से लाखों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने जिस महानतम लक्ष्य की ओर हमारा ध्यान खींचा था, उसी की प्राप्ति का स्वर्णिम अवसर कियामत के आने से प्राप्त होता है। ऋषियों ने डिण्डिम घोष के साथ कहा था- 'असतो मा सद् गमय' हे परब्रह्म! तू मूझे असत्य से सत्य की ओर ले चला। 'तमसो मा

ज्योतिर्गमय' आज्ञानता के अन्धकार से परिपूर्ण इस भौतिक जगत से परे अनन्त ज्योति से ज्योतिष्मान धाम की ओर मुझे ले चल। 'मृत्योर्मा अमृतं गमय' मृत्यु से परे मुझे शाश्वत् जीवन की ओर ले चल।

वैदिक ऋषियों का यह उद्घोष तब फलीभूत होता है जब ग्यारहवीं सदी में हमारे प्राणवल्लभ प्राणप्रियतम् अक्षरातीत परमधाम का अलौकिक ज्ञान लेकर श्री प्राणनाथ जी स्वरूप में इस नश्वर जगत में प्रकट होते हैं और सारे संसार को यह आह्वान करते हैं कि संसार के लोगो! अब तुम्हें संसार चक्र में भटकते हुए दुःखों की दावाग्नि में जलने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुम्हारे लिये अमृत से भी मधुर वह तारतम ज्ञान लाया हूँ जिसके रसास्वादन से तुम परब्रह्म को अपने आत्म चक्षुओं से स्पष्ट रूप से देखोगे! अन्तः श्रवणों से उनकी दिव्य वाणी सुनोगे और अन्तः रसना से तुम स्वयं ही उनसे वार्तालाप करने में सक्षम हो जाओगे।

इसे ही तो 'कियामत' पुनरोत्थान का आना कहते हैं। क्या यह प्रसन्नता के आवेश में अपने प्राणेश्वर को पहचानकर उन पर समर्पित होने का समय नहीं है? क्या उस तारतम ज्ञान की अमृत धारा का रसपान करके संसार के अन्य प्राणियों को भी उस अमृत धारा के आनन्द में डूबोना हमारा नैतिक उत्तरदायित्व नहीं है? कानों से सत्य को सुना जाता है और आंखों से सत्य को प्रत्यक्ष देखा जाता है। यदि मारिफत सागर हमें कान की भाँति प्राणेश्वर अक्षरातीत के दिव्य ज्ञान को सुनाकर हमें स्वलीला अद्वैत स्वरूप की पहचान करा रहा है, तो 'कियामतनामा' नामा यह दिव्य ग्रन्थ हमारे अन्तः चक्षुओं को खोलकर प्रत्यक्ष रूप से इस सत्य का साक्षात्कार कर रहा है, कि इन अन्धकार से परिपूर्ण जगत में सबकी अखण्ड मुक्ति की घोषणा करने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में कौन आया है? वह हमें कहाँ ले जाना चाहते हैं? वहाँ जाने से हमें क्या मिलने वाला है तथा वहाँ जाने के लिये हमें क्या करना पड़ेगा? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर देने के लिये अब प्रारम्भ होती है- दिव्य ग्रन्थ 'कियामतनामा' की ये मधुर पुकार।

मोमिन दुनी का बेवरा (ब्रह्मसृष्टि तथा जीव सृष्टि का विवरण)

जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत का।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका॥१॥

कियामत का विवरण देते समय अक्षर से परे परमधाम की ओर ध्यान जाता है। ब्रह्मसृष्टि एवं जीव सृष्टि में यही अन्तर है कि जीव सृष्टि इस नश्वर जगत में रहती है, जबकि ब्रह्मसृष्टि अपने अखण्ड परमधाम की रहने वाली है।

जब लाहूत से रूहें उतरीं, कहा अलस्तो बे रब कुंम।
नासूत जिमी में जाए के, जिन मुझे भूलो तुम॥२॥

जब परमधाम से ब्रह्मात्मायें इस नश्वर संसार में अवतरित हो रही थीं तो प्रियतम अक्षरातीत ने उनसे पूछा था, कि 'क्या मैं तुम्हारा एकमात्र प्रियतम नहीं हूँ? मृत्युलोक में जाकर कहीं तुम मुझे भूल न जाना।

तब रूहों वले कहा, हम भूलें नहीं क्योंए कर।
तुम साहेद किए रूहें फरिस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर॥३॥

तब आत्माओं ने प्रत्युत्तर में कहा 'वले' अर्थात् निश्चित रूप से आप ही एकमात्र हमारे प्रियतम हैं। हम किसी भी प्रकार से आपको भूल नहीं सकती हैं। आपने इसके लिये ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि को साक्षी रखा है। हम तो आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकती हैं।

तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन॥४॥

आप हमारे प्राणेश्वर हैं। हमारे शिर पर आपका वरद हस्त है। अखण्ड परमधाम हमारा मूल घर है। इसके शाश्वत सुखों को हमारे द्वारा कैसे भूलाया जा सकता है? हम तो आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकती हैं।

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान॥५॥

श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं को यह वचन दिया कि मैं तुम्हें साक्षी देने के लिये कुर्आन के साथ मुहम्मद साहब (माशूक) को भेजूंगा। श्यामा जी को तारतम ज्ञान देकर भेजूंगा। उनके द्वारा तुम्हें परमधाम की सम्पूर्ण पहचान प्राप्त होगी।

**हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम॥६॥**

मुहम्मद साहब के साथ कुर्आन और श्यामा जी के हाथ तारतम आएका। मूल स्वरूप के आदेश से श्री प्राणनाथ जी सभी सुन्दरसाथ को मूल मिलावे का ध्यान करायेगें तथा निराकार का आवरण (अवरोध) हटाकर सभी की सुरता को प्रियतम का साक्षात्कार करायेगें।

**तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार।
रूहें फरिस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार॥७॥**

मुहम्मद की तीनों सूरतों अर्थात् मुहम्मद साहब, ईसा (अहमद) व इमाम मुहम्मद साहिबुज्जमाँ अर्थात् सदगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी ने अलग-अलग तरीकों से ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिये परमधाम का ज्ञान दिया। सभी धर्मग्रन्थों में श्री राजजी के आदेश से जो साक्षियां लिखवायी गयी थीं, ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों ने उसे ग्रहण किया।

**बशरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब॥८॥**

बशरी, मल्की (मलायकी) तथा हकी सूरत को अलग-अलग शोभा मिली। बशरी सूरत को मुहम्मद रसूल, मल्की सूरत को मुहम्मद ईसा (अहमद) गिरोह मुहम्मदी तथा हकी सूरत को मुहम्मद नूर कहलाने की शोभा मिली। बशरी सूरत से कुर्आन का अवतरण हुआ। मल्की सूरत तारतम ज्ञान लायी तथा हकी सूरत ने कुर्आन सहित सभी धर्मग्रन्थों के गुह्यतम रहस्यों को प्रकट किया।

**लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर॥९॥**

श्री राज जी ने दोनों सृष्टियों तथा तीनों सूरतों के लिये धर्म ग्रन्थों में सांकेतिक भाषा में गुह्य रहस्यों को लिखवाकर भेजा। इनके अतिरिक्त अन्य किसी (जीव सृष्टि) में यह सामर्थ्य नहीं है, कि उन गुह्य रहस्यों का अभिप्राय प्रकट कर सके।

**हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेंगे सब।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब॥१०॥**

जब श्री प्राणनाथ जी इस संसार में प्रकट हुए तो उनके साथ परमधाम की पांचों शक्तियां (जिब्रील, अम्राफिल, अक्षरब्रह्म की आत्मा, श्यामा जी एवं श्री राज जी का आवेश) अवतरित हुई। श्री जी ही सभी ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों को उनके धाम ले जायेंगे।

श्री राज जी ने कुर्आन में संकेतों में जो कुछ भी लिखा था या मुहम्मद साहब से कहलवाया था, वह कभी भी मिथ्या नहीं हो सकता।

**चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल।
सो भेले दुनी के क्यों चले, जो उमत अर्स असल॥११॥**

लैल-तुल-कदर के पहले भाग अर्थात् ब्रज लीला में परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां इस नश्वर जगत में आयीं। किन्तु भला वे संसार के जीवों के समान कैसे रह सकती थीं?

भावार्थ- लैल तुल कदर का तात्पर्य है इस प्रकार की वह लम्बी महिमावान रात्रि (माया की रात्रि) जिसमें ब्रह्मात्मायें एवं ईश्वरीय सृष्टि इस नश्वर जगत की लीला को देखने के लिये अवतरित हुई।

**गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर हूद तोफान।
बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान॥१२॥**

इन्द्रकोप के समय श्री राज जी ने गोवर्धन पर्वत के नीचे गोपिकाओं के रूप में प्रकट होने वाली ब्रह्मसृष्टियों की रक्षा की। पुनः दूसरी बार ब्रज से रास में जाते समय महाप्रलय में योगमाया की नौका द्वारा उन्हें सुरक्षित रखा।

**अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो विचार।
पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार॥१३॥**

हे साथ जी! अब तीसरी बार ब्रह्मसृष्टियां इस जागनी ब्रह्माण्ड में आयी है, उन की वास्तविकता सुनिए। चाहे कोई सामान्य सुन्दर साथ हो या यूथ-प्रमुख, बिना परब्रह्म की पहचान के कोई भी क्या कर सकता है?

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में 'सिरदार' शब्द का आशय उस ब्रह्मात्मा से है- जो ज्ञान, प्रेम, समर्पण, जागनी आदि सभी क्षेत्रों में अग्रगण्य हो। दूसरे शब्दों में चालीस युत्थों के प्रमुखों को 'सरदार' शब्द से सम्बोधित किया जाता है जैसे-शकुण्डल, सकुमार, प्रेमसखी, केशरबाई इत्यादि।

**या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत।
गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत॥१४॥**

परमधाम, अपने निजस्वरूप, श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं के मूल सम्बन्ध की पहचान हुए बिना कोई भी आत्मा स्वयं को जागृत नहीं कर सकती है। ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से आयी हैं, जबकि संसार के जीव मोह सागर से उत्पन्न हुए हैं।

**दिल मोमिन अर्स कहा, सैतान दुनी दिल पर।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर॥१५॥**

ब्रह्मात्माओं के हृदय को धाम कहा जाता है, जबकि संसार के जीवों के हृदय में अज्ञान रूपी इल्लीश का निवास होता है। ऐसी स्थिति में ब्रह्मसृष्टियां संसार के जीवों के साथ कैसे रह सकती हैं? इस प्रकार दोनों में भेद स्पष्ट होता है।

**ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन॥१६॥**

संसार के जीवों को न तो परमधाम की पहचान होती है और न परब्रह्म से अपने मूल सम्बन्ध का ही पता होता है। तमोगुण एवं रजोगुण से ग्रसित होने के कारण जीव सृष्टि ब्रह्मात्माओं के साथ वैर भाव रखती है। ब्रह्मसृष्टि किसी भी स्थिति में प्रियतम अक्षरातीत को नहीं छोड़ती (भूलती) है, जबकि संसार के जीव इस नश्वर जगत को ही अपना धाम समझते हैं।

**निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पाउं गिरो के पर॥१७॥**

परब्रह्म से इनके मूल सम्बन्ध में ही अन्तर है। ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म की अंगरूपा है जबकि जीव स्वात्मिक है। ऐसी स्थिति में ये दोनों एक साथ कैसे रह सकते हैं? संसार के जीव धरती पर पैरों से चलते हैं अर्थात् कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलते हैं, जबकि ब्रह्मसृष्टि इश्क, ईमान के पंखों से आकाश में उड़ती है (ध्यान द्वारा परमधाम पहुँचती है)।

**एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए।
पट खोल पोहोंचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनीपे न कोए॥१८॥**

ब्रह्मसृष्टियों के इश्क (प्रेम) और ईमान (अटूट विश्वास) ये दो पंख हैं, जिनके द्वारा वे परमधाम की उड़ान भरती हैं (दर्शन करती हैं)। इनके पास तारतम ज्ञान का प्रकाश होता है जो अज्ञानता के अन्धकार को दूर करके उन्हें निजधाम पहुँचाता है। इसके विपरीत जीव सृष्टि के पास न तो इश्क-ईमान होता है और न श्री कुलजम् स्वरूप का ज्ञान।

**ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल।
लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल॥१९॥**

संसार के जीव शरीर एवं इन्द्रियों से होने वाली कर्मकाण्ड (शरीरगत) की भक्ति के मार्ग पर चलते हैं। ब्रह्मात्मायें अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने प्राणवल्लभ का साक्षात्कार करती हैं। कुरआन में जीव सृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि के बीच इस प्रकार का स्पष्ट भेद लिखा हुआ है।

**कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत।
दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत॥२०॥**

कुरान में यह भेद स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि संसार के जीवों का हृदय झूठा (स्वाप्तिक) होता है, वह निराकार को पार नहीं कर पाता। इसके विपरीत ब्रह्मसृष्टियों का हृदय सच्चा होता है और प्रियतम अक्षरातीत का धाम कहलाता है।

**इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनी सों मिल।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल॥२१॥**

संसार में परमधाम की जो भी आत्मायें होंगी उनका आचरण जीवों की भांति नहीं होगा। उनकी कथनी, करनी और रहनी तीनों ही जीवों से अलग होती है। ब्रह्मसृष्टि तथा जीव की कथनी, करनी और रहनी सदा ही अलग होती है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है।

**जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन।
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन॥२२॥**

संसार के जीवों के कर्मकाण्ड की राह पर चलने वाला ब्रह्ममुनि हो ही नहीं सकता, न उसके मूलतन परमधाम में हो सकते हैं। संसार के जीवों का घर निराकार है, जबकि ब्रह्मात्मायें परमधाम से आयी हैं।

**पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत।
अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत॥२३॥**

जब मुहम्मद साहब अरब में आये थे, तो उस समय उन्हें अकेले ही सरियत का पसारा करना पड़ा था। अब परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ आ गई हैं और श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में परमधाम का ज्ञान भी प्रकट हो गया है। ऐसी स्थिति में श्री राज जी ब्रह्मात्माओं को अकेले कैसे छोड़ सकते हैं?

**पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद॥२४॥**

एक यहूदी गुलाम जैद बिन हारसा जो पैगम्बर मुहम्मद का दत्तक था (जैद बिन हारिसा) वह अपने श्रेष्ठ विचारों के कारण मुहम्मद साहब के बताए हुए रास्ते को नहीं छोड़ सका। अबूबक्र, उमर और उस्मान उनके दोस्त तो कहलाते थे, किन्तु उनके बताये हुए मार्ग पर नहीं चल सके। इस बात की साक्षी मसनवी किताब में है।

भावार्थ- जैद एक यहूदी गुलाम था जो मुहम्मद स. की पत्नि बीबी खदीजा ने खरीद कर उन्हें भेट किया था। परन्तु उसको पैगम्बर इस्लाम ने आजाद कर दिया लेकिन उसने वापिस अपने देश हब्सा जाने से मना किया। अतः मुहम्मद स. ने उन्हें अपना दत्तक पुत्र बनाया। और अपनी फुफेरी बहन जैनब से उसकी शादी की। इसकी शान में कुर्आन का चौथा पारः सूरः निशा नाजिल हुआ। या जैद बिन अली की माता जो सिंध की राजकुमारी थी परन्तु इस्लामी ग्रंथों में वह जौधा ही जैदा के नाम से प्रसिद्ध है। उनके पुत्र ने इस्लाम के तत्कालीन खलीफाओं के विरुद्ध धर्म युद्ध किया। इन्हें वीरगति प्राप्त हुई। इनके अनुयायी वंशज जैदी कहलाते हैं। इनकी संख्या यमन व मुंबई में अत्यधिक है। ये मात्र पांच इमामों को ही मान्यता देते हैं।

**जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल।
आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल॥२५॥**

इस तरह के श्रेष्ठ आचरण करने वाले को यहूदी कैसे कहा जा सकता है? उसने किसी भी स्थिति में मुहम्मद साहब के दर्शाये हुए मार्ग को नहीं छोड़ा और मुहम्मद साहब पर अटूट इमान रखने वाले सभी मुस्लिमों में सर्वश्रेष्ठ हुआ।

**तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखासी बातन।
इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन॥२६॥**

प्रियतम अक्षरातीत जिस पर बातिनी मेहर (गुह्य कृपा) करते हैं वह अपनी आत्मिक दृष्टि खोल लेता है। परमधाम के इस मार्ग पर मात्र वे ब्रह्मात्मायें ही चलेंगी जिनका हृदय अक्षरातीत का धाम कहलाता है।

**दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए।
सो आएन सकेवाहेदत में, जिन दिल अबलीस कहा सोए॥२७॥**

जीवों के दिल को झूठा कहा जाता है, ऐसी स्थिति में उनके दिल को धाम कहलाने की शोभा कभी नहीं मिल सकती। ये जीव स्वलीला अद्वैत परमधाम के वहदत में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि इनके हृदय में अज्ञान रूपी इब्लीश की बैठक होती है।

**रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन।
देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन॥२८॥**

मुहम्मद साहब को मेयराज में प्रियतम अक्षरातीत का दर्शन हुआ और उन्होंने मूलमिलावे में जाकर श्री राजजी से वार्ता की। अपनी आत्मिक दृष्टि से वे परमधाम जाकर

और पुनः इस संसार में आकर परमधाम के दर्शन का अलौकिक मार्ग बताये। श्री राजजी ने मूल मिलावे में आत्माओं से जो वार्ता की थी, उस का भी उन्होंने वर्णन किया। उनके बताये हुए मार्ग का जो अनुसरण करेगा, वही ब्रह्ममुनि कहलाने का अधिकार कहलायेगा।

**मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन।
हकें कहा उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन॥२९॥**

मुहम्मद साहब उस मूल मिलावे में पहुँचें, जिसमें श्री राज श्यामा जी ब्रह्मात्माओं के मध्य सिंहासन पर विराजमान हैं। उन्होंने श्री राज जी से ६०००० हरफ बाते की। परमधाम से इस मायावी जगत में आती हुई आत्माओं से श्री राजजी ने जो कुछ कहा, उसे कुर्आन के गुह्य रहस्यों के प्रकट होने पर जाना जा सकता है।

**जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह।
इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह॥३०॥**

इस मूल मिलावे में सच्चे हृदय वाला कोई (मुहम्मद साहब या ब्रह्ममुनि) ही ईश्वर-ईमान के द्वारा जा सका है। जिन जीवों के हृदय में अज्ञान रूपी शैतान का स्वामित्व है वे मिथ्या दिल वाले, इस मूल-मिलावे तक नहीं पहुँच सकते।

**भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन।
मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन॥३१॥**

माया में आने वाली ब्रह्मसृष्टियाँ स्वयं को ही भूल गयी हैं। उन्हें अध्यात्म जगत के गुह्य रहस्यों का ज्ञान नहीं है। परिणामस्वरूप वे कर्मकाण्ड की राह पर चलने वाले जीवों के महिमा मण्डन में लगी रहती हैं। जब तक उनके हृदय को 'मारिफत' का सूर्य कहे जाने वाले श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान का प्रकाश न मिले और वे चितवनी न करें तब तक वे मूल मिलावे में विद्यमान अपनी परात्म को कैसे देख सकती है?

**तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत।
हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत॥३२॥**

यही कारण है कि वास्तविकता को न जानने के कारण ही ब्रह्ममुनि भी कर्मकाण्ड के अन्धेर में फंसे हुए जीवों के महिमा-गायन में लगे रहते हैं। जब तक ब्रह्ममुनियों को श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान प्राप्त न हों, वे भी श्री राजजी या परमधाम की पहचान कैसे कर सकते हैं?

**सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल।
बका तरफ न पावे अर्स की, ए फानी बीच अंधेर असल ॥३३॥**

झूठे (स्वाप्निक) हृदय वाले जीव दिखावे के लिये शरीर तथा इन्द्रियों से होने वाली कर्मकाण्ड (शरीयत) की भक्ति करते हैं। उसे वे अपने जीवन के लिये आवश्यक समझते हैं, इसलिये अपना कर्तव्य मान कर पूरा करते हैं। उन्हें अखण्ड परमधाम का कोई भी ज्ञान नहीं होता है। मोह सागर से बने हुए इस नश्वर जगत को ही वे वास्तविक मानते हैं।

भावार्थ- फर्ज बन्दगी वह है, जो अपने जीवन को सुखमय बनाने अथवा धन या प्रतिष्ठा के लोभ में की जाती है। इसमें तरीकत और हकीकत की तरह हृदय या आत्मा का प्रेम नहीं होता। केवल अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये शरीर तथा इन्द्रियों का सहारा लिया जाता है।

**दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन।
हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन ॥३४॥**

सच्चे हृदय वाले जो ब्रह्ममुनि हैं, वे अध्यात्म के गुह्य तत्वों को ग्रहण करते हैं तथा तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रियतम परब्रह्म का प्रेम लेकर मूलमिलावे की चितवनी करते हैं। वे श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के प्रकाश में श्री राजजी एवं परमधाम से प्रेम करते हैं।

**फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार ॥३५॥**

ब्रज में अक्षर ब्रह्म की जो आत्मा श्री राजजी के जोश-आवेश के साथ अवतरित हुई थी, वही अरब में जोश के साथ संदेशवाहक (रसूल) बनकर प्रकट हुई। इस जागनी लीला में श्री राज जी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अपनी पांचों शक्तियों (जिब्रील, अम्राफील, अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी की आत्मा तथा श्री राजजी के आवेश) के साथ प्रकट हुए हैं। ब्रज और रास में क्रीड़ा करने वाली ब्रह्मसृष्टियां भी संसार में आयी हुई हैं। वे पांचों शक्तियों से सुशोभित अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से अपने मूल सम्बन्ध की पहचान करके प्रेम करती हैं और किसी भी स्थिति में परमधाम के अपने अखण्ड प्रेम को नहीं छोड़ती हैं।

**कहे महमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन माहें।
ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहें ॥३६॥**

श्री महामति (सरदार महमत) जी कहते हैं कि जब मैं इस संसार से पहले परमधाम चलूंगा, तो परमधाम के ब्रह्ममुनि क्षण भर में मेरे पास आकर मुझसे मिलेंगे। यही परमधाम की एक दिली के स्वरूप ब्रह्ममुनियों की पहचान है। तारतम ज्ञान के प्रकाश में जागृत होने पर मुझसे कैसे कोई अलग रह सकता है?

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई में परमधाम चलने का तात्पर्य वि० सं० १७५१ की अन्तर्धान लीला से नहीं है, अपितु बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों तथा २४००० ईश्वरीय सृष्टि की जागनी के लिये चितवनी से धाम चलने से है। वर्तमान समय में श्री राजजी का आवेश श्री महामति जी के धाम हृदय में ही लीला कर रहा है और जागनी लीला के अन्त तक करता रहेगा।

**मैं अक्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरो की होए॥३७॥**

जब मैं इस संसार से सबसे पहले परमधाम चलूंगा अर्थात् चितवनी में लगूंगा, तो सभी सुन्दरसाथ आकर मिलेंगे। इस स्थिति में सारे संसार में ब्रह्मात्माओं की गरिमा होगी।

भावार्थ—महाप्रलय में जब संसार ही नहीं रहेगा, तो ब्रह्मात्माओं की महिमा कैसे फैल सकती है? इससे स्पष्ट होता है कि चौ. ३६, ३७ एवं ३८ में जो परमधाम को देखने (चलने) से सम्बन्धित है। इस सम्बन्ध में कीर्तन ग्रन्थ में बहुत सी चौपाईयां हैं—

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले ।किरंतन १३/१

अब हम धाम चलत है, तुम हुजो सबे हुसियार ।कि. १२/१

सैयां हम धाम चले ।कि. ८१/१

**इत मैं चलो जो अक्वल, कर यारोंसों सहूर।
तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर॥३८॥**

जब मैं संसार में सबसे पहले सुन्दरसाथ से जागनी के सम्बन्ध में चिन्तन करके मूल स्वरूप की चितवनी में लग जाऊंगा, तो बेहद से परे अक्षर और अक्षर ब्रह्म से भी परे अक्षरातीत एवं परमधाम की महिमा को संसार निश्चित रूप से समझेगा।

भावार्थ—उपरोक्त तीनों चौपाईयों तथा ३८-४५ तक की चौपाईयों में चितवनी की महिमा दर्शायी गयी है। चितवनी के बिना आत्म-जागृति एक दिवा स्वप्न है। चितवनी का नाम सुनते ही नाक-भौं सिकोड़ने वाले सुन्दरसाथ को इन चौपाईयों को पढ़कर आत्म-मन्थन अवश्य करना चाहिए।

**खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार॥३९॥**

युगल स्वरूप सहित २५ पक्षों की चितवनी से सुन्दरसाथ में और अधिक आनन्द की वृद्धि होगी, साथ ही साथ जागनी की इस ब्रह्मलीला से इस नश्वर जगत की शोभा बढ़ जायेगी।

अतः हे साथ जी! परमधाम का प्रेम लेकर श्री महामति जी के द्वारा दर्शाये गये चितवनी के स्वर्णिम पथ पर उनके साथ चलिये और अपनी आत्मा को जागृत कर परमधाम के अखण्ड प्रेम का रसपान कीजिए।

**पोहोंचे नहीं अंग दिल के, तार्थें रूह अंग लीजे जगाए।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए॥४०॥**

इश्क का यह रस परात्म तक नहीं पहुँच सकता, इसलिये अपनी आत्मा के अंगों को जागृत करना चाहिए। जब तक मैं (खुदी) नहीं मिटती है, तब तक अहंकार का आवरण (पर्दा) भी नहीं हटता।

भावार्थ- परमधाम में परात्म श्री राज जी के दिल (हृदय) का स्वरूप है। उस परात्म के दिल का प्रतिबिम्ब आत्मा के रूप में संसार में अवतरित हुआ है।

‘अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहे’ । श्रृंगार 11/79

मोमिन असल तन अर्स में, उन दिल बीच ए दिल ।

केहेने को ए दिल है, है अर्स दिल असल ॥ श्रृं. 26/14

से यही प्रमाणित होता है कि खिल्वत के पहले प्रकरण में कहा गया है, कि परमधाम में परात्म नींद (फरामोशी) में है। यही कारण है कि वह श्री राज जी के सामने बैठी होने पर भी न तो उन्हें देख सकती है, न बातें कर सकती है और न सुन सकती है। यहां तक कि वह उठ-बैठ भी नहीं सकती है। ऐसी स्थिति में संसार में आत्मा चितवनी के द्वारा जिस प्रेम और दर्शन का आनन्द प्राप्त करती है, परात्म उस सुख का भी तब तक अनुभव नहीं कर सकती है, जब तक वह जागृत नहीं हो जाती। यहां तक कि श्री कुलजम् स्वरूप के ज्ञान का भी उसे तब अनुभव होगा, जब जागनी लीला समाप्त होगी और परात्म में जागृति आयेगी। इस जागनी लीला में आत्मा ही अपने जीव के माध्यम से श्री कुलजम् स्वरूप के ज्ञान और चितवनी के आनन्द आदि को प्राप्त करती है।

अहंकार में बीज (सूक्ष्म) रूप से अस्मिता का अस्तित्व है। वहीं मैं है। प्रियतम की मैं आने पर ही संसार की मैं जायेगी और अहंकार का नाश होगा।

**जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान।
आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान॥४१॥**

हे साथ जी! जब आपकी आत्मा के अंग जागृत हो जाय, तब आप स्वयं को जागृत हुआ समझिये। जिसे परात्म के एक-एक अंग का रसास्वादन मिलता है, उसे ही अपने स्वरूप की पूर्ण पहचान मिलना कहा जाता है।

भावार्थ- चितवनी के द्वारा आत्मा श्री राज जी के जिस-जिस अंग की शोभा को देखती है, आत्मा का वह-वह अंग खड़ा होता है अर्थात् आत्मा को अपना वह-वह अंग दिखायी पड़ता है। इसके साथ ही उसे अपनी परात्म का भी वह अंग दिखायी पड़ता है, किन्तु आत्मा को उस समय यह बोध नहीं होता है कि मेरी आत्मा और परात्म अलग-अलग है। चितवनी टूटने के बाद केवल ज्ञान दृष्टि से ही इस तथ्य को जाना जा सकता है कि मैंने मूल मिलावे में ब्रह्मसृष्टियों के मूल तनों के साथ अपने तन को भी देखा था। इसे इस दृष्टान्त से समझा जा सकता है कि जैसे अपने नेत्रों के द्वारा अपने शरीर को जब हम देखते हैं, तो हम यही अनुभव करते हैं कि हम अपने रूप को देख रहे हैं।

अपनी अन्तर्दृष्टि के द्वारा श्री राज जी के चरण कमल, मुख, नेत्र आदि जिस-जिस अंग की शोभा को देखेगी, आत्मा का वह-वह अंग भी उसे दिखता जायेगा। जब श्री राज जी का पूर्ण स्वरूप दिख जाय तो आत्मा को भी अपना पूर्ण स्वरूप दिखायी पड़ेगा।

जब पूरन स्वरूप हक का, आए बैठा माहिं दिल ।

तब सोई अंग आत्म के, उठ खड़े सब मिल ॥

ए अंग जेते मैं कहे, आवे रूप के हिरदे हक ।

तेते अंग रूह के, उठ खड़े होए बेसक ॥ श्रृं. 4/70, 28

यही अवस्था आत्मा की पूर्ण जागृत अवस्था कहलायेगी। इस अवस्था में उसे अपनी परात्म का भी पूर्ण स्वरूप दिखायी देगा, जिसे इस चौपाई में परात्म की लज्जत (रसास्वादन) लेना कहा गया है।

जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे ।

बारे हजार रूहन में, सो काहे को आप गिनाए ॥४२॥

जो सुन्दरसाथ परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहलाने का दावा तो करते हैं किन्तु उनके हृदय में अपने प्राणेश्वर के लिये विरह की आहें नहीं निकलती हैं, तो उन्हें 92 हजार ब्रह्मात्माओं में अपनी गणना करने का कोई नैतिक आधार नहीं है अर्थात् वे ब्रह्मसृष्टि है ही नहीं।

करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे ।

याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के ॥४३॥

जो ब्रह्ममुनि निद्रावस्था में भी करवट लेते समय प्रियतम के विरह में ठण्डी आहें भरते हैं, उन्हें अपने आराध्य को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि उनके हृदय में युगल स्वरूप की छवि अखण्ड रूप से बसी होती है। इस प्रकार आशिक ब्रह्ममुनि अपने प्रेमास्पद युगल स्वरूप की शोभा एवं मूल सम्बन्ध का निरन्तर रसास्वादन करते हैं।

भावार्थ- इस चौपाई में शरीरगत एवं तरीकत (उपासना) को ही सर्वोपरि मानते वालों के ऊपर एक व्यंग्यात्मक हास्य किया गया है। सामान्यतः कर्मकाण्ड या उपासना के मार्ग पर चलने वाला गहरी निन्द्रा में सोता है, और अपने निश्चित समय पर पूजा-पाठ, मानसिक जप आदि के द्वारा अपने आराध्य की स्तुति करके अपने कर्तव्य की इति-श्री समझ लेता है। इसके विपरीत हकीकत (ज्ञान) तथा मारिफत (विज्ञान) के मार्ग पर चलने वाला एक ब्रह्ममुनि प्रेम मार्ग का अनुसरण करता है। एकान्त पाते ही वह अपने सर्वस्व के रूप माधुर्य का रसपान करने में इतना डूब जाता है कि वह गहन समाधि की अवस्था में चला जाता है। सामान्य अवस्था में वह ब्रज की गोपियों, चैतन्य महाप्रभु या राम कृष्ण परमहंस की तरह भावलीनता में इतना डूबा रहता है कि उसे हर पल अपने प्राण वल्लभ की सामीप्यता का आभास होता है। सांसारिक कार्यों को करते समय भी उसका आधा मन अपने जीवन के आधार युगल स्वरूप में खोया रहता है। स्थिति ऐसी बन जाती है कि मन सोने की इच्छा तो नहीं करता किन्तु प्रकृति के नियमों की विवशता उसे सोने के लिये बाध्य कर देती है। हृदय में धधकती हुई विरह की ज्वाला उसे गाढ़ निन्द्रा में सोने नहीं देती, परिणाम स्वरूप उसे करवट लेते समय भी ऐसा लगता है कि मेरा प्राणेश्वर मेरे पास ही प्रत्यक्ष रूप से खड़ा है। नेत्र भले ही बन्द होते हैं किन्तु हृदय की आंखें अपने सर्वस्व को निहार रही होती हैं।

हे साथ जी! इस अवस्था को प्राप्त करने वाले ब्रह्ममुनि के लिये क्या पूजा-पाठ, परिक्रमा या मन्त्र जप करना सम्भव है? क्या ब्रज लीला में गोपियों ने किसी भी प्रकार का कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, जप आदि किया था? यदि नहीं, तो परमधाम की प्रेममयी चितवनी के स्वर्णिम मार्ग को छुड़ाकर कंकड़-पत्थरों के कटीले मार्ग पर समाज को क्यों चलाया जा रहा है?

जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबू ना और सों होए।

इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए॥४४॥

परमधाम की ब्रह्मांगनायें चितवनी के जिस प्रेममयी मार्ग पर चलती हैं, संसार के जीव उस पर कभी भी चल नहीं पाते। उनके लिये तो कर्मकाण्ड और उपासना ही सर्वोपरि है और उसे वे बलपूर्वक सबके ऊपर थोपने का भी प्रयास करते हैं। इस प्रकार चितवनी के प्रेम मार्ग का अनुसरण करके जो अपनी आत्मा को जागृत कर लेता है, वह इस संसार में भी धन्य-धन्य होता है और परात्म में भी जागृत होने पर धन्य-धन्य होता है।

देखा बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।

धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड॥४५॥

अपने प्राणेश्वर का प्रत्यक्ष वियोग देखकर भी जो अपने शरीर के मोह के कारण उसके भरण-पोषण में ही लगा रहता है, उसकी बुद्धि को धिक्कार है। निश्चित रूप से वह परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहलाने का अधिकारी नहीं हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में प्रेमोन्माद की अवस्था का वर्णन किया गया है। जो इस अवस्था में पहुँच जाता है उसके लिये शरीर और संसार का समस्त वैभव एक तिनके के समान तुच्छ प्रतीत होता है। ऐसी दशा में शरीर को रखना उसके लिये सम्भव नहीं होता। यही कारण है कि श्री जी की अन्तर्धान लीला के समय लगभग २५ सुन्दरसाथ ने अपना तन छोड़ दिया था।

किन्तु निरन्त चितवनी में डूबे रहने से जो पहले ही अपने मन से मर चुके होते हैं, वे मात्र बाह्य रूप से ही संसार में अपने तन को धारण किये होते हैं। स्वयं महाराजा छत्रसाल जी ने भी अपनी तलवार से अपना प्राणान्त करना चाहा, किन्तु श्री जी ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। श्री लालदास जी भी अपना तन छोड़ना चाहते थे किन्तु श्री राज जी के आदेश ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। स्वयं श्री मिहिरराज जी भी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के धाम गमन के पश्चात् शरीर को नहीं रखना चाहते थे किन्तु उस तन से ब्रह्मलीला होनी थी, अतः उस तन को रखना अनिवार्य था। क्या इस स्थिति में यही माना जाय कि महाराजा छत्रसाल जी एवं श्री लालदास जी ब्रह्ममुनि नहीं थे। ऐसा कदापि नहीं है, अपितु चौपाई का भाव यह है कि अपने प्राणेश्वर, आराध्य स्वरूप श्री जी के अन्तर्धान होने पर जो संसार के वैभव, सुख एवं प्रतिष्ठा के मोह में शरीर को पालता है, वह ब्रह्मसृष्टि नहीं है, किन्तु यदि चाहकर भी कोई सुन्दरसाथ अपना तन नहीं छोड़ पाता है तथा श्री राज जी के प्रेम में इस प्रकार डूबा रहता है कि उसे अपने शरीर का न तो कोई मोह रहता है न संसार के वैभव-विलास को भोगने की उत्कण्ठा रहती है और न पद-प्रतिष्ठा के प्रति कोई आकर्षण रहता है, वह व्यक्ति शरीर से जीवित रहते हुए भी मन से मरा हुआ ही होता है। ऐसी अवस्था में ब्रह्ममुनि अपने शरीर की शेष आयु को पूर्ण करते हैं। इस तथ्य को इस घटना से सरलता पूर्वक समझा जा सकता है, कि मुहम्मद सल्ल. (साहिब) के देह त्याग के पश्चात् जब हजरत अली उन्हें धरती में दफना रहे थे, उस समय अबूबक्र, उमर और उस्मान एक कक्ष में खलीफा पद के लिये मंत्रणा कर रहे थे। उन्हें मुहम्मद स. के देह त्याग का कोई दुःख नहीं था। अपितु स्वयं को मुहम्मद सल्ल. (साहिब) का निकटस्थ दर्शाकर मुस्लिम जगत का खलीफा बनना उनकी प्राथमिकता थी। उन्होंने आपस में मन्त्रणा करके स्वयं ही अबूबक्र सिददीक को खलीफा पद के लिए चुना तथा बाद में अपने लिए खलीफा का पद भी सुरक्षित कर लिया। इनके विपरीत हजरत अली मुतुर्जा को मुहम्मद सल्ल. (साहिब) के वियोग का दुःख था क्योंकि वे तरीकत की राह पर चलने वाले थे और उनके हृदय में अपने रसूल के लिये अगाध श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का भाव था।

**ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान।
ए मोमिन रूहें जान हीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान॥४६॥**

जिन जीवों को अन्तर्दृष्टि से प्रियतम अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं होती है वे बाह्य रूप से प्रेम का दिखावा ही करते हैं। मात्र ब्रह्ममुनि ही श्री जी के स्वरूप को यथार्थ रूप से जानते हैं और इन्हीं के हृदय को प्राणेश्वर अक्षरातीत का धाम कहते हैं।

**रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल॥४७॥**

जो यथार्थ में परमधाम की ब्रह्मांगना होती है, वह एक पल के लिये भी अपने जीवन के आधार श्री प्राणनाथ जी का वियोग सहन करने की स्थिति में नहीं होती है। वह सर्वदा यही कामना करती है कि अपने आराध्य के अन्तर्धान से पूर्व ही वह अपने शरीर का परित्याग कर दे।

**दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान॥४८॥**

सच्चे दिल वाले ब्रह्ममुनियों को जब तारतम ज्ञान का प्रकाश मिल जाता है, तो वे अपने प्रियतम के बिना संसार में नहीं रह पाते, इसके विपरीत झूठे हृदय वाले माया के संसार में ही लिप्त रहते हैं। धरती तथा आकाश में जो भेद होता है वही भेद जीवसृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि में होता है।

**कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली का मलकूत।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत॥४९॥**

कोई भी सृष्टि अपने मूलनिवास को नहीं छोड़ पाती है। जीव सृष्टि अपने नश्वर बैकुण्ठ में जाती है तो ईश्वरी अक्षर धाम (सत्स्वरूप)। इसी प्रकार ब्रह्मसृष्टि परमधाम पहुँचेगी।

**बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान।
दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान॥५०॥**

पाक कुर्आन मजीद में इन तीनों सृष्टियों का अलग-अलग विवरण लिखा है, किन्तु मिथ्या दिल वाले ये सपने के जीव इस रहस्य को नहीं समझ पाते। कुर्आन में इन्हें मृतक के समान नश्वर कहा गया है।

भावार्थ- कुर्आन के विभिन्न पारों में व सूरः में तीन उम्मत का वयान है। यथा- रूह,

मलायक, आदमी, हक्कुल यकीन, ऐन उल यकीन, मुसलमीन यानि कि मोमिन, मुस्लिम और मुसलमान, अर्थात् अंगूर, खजूर व घास।

कु. पा. ६ सू. ७ आराफ आयत १७२- “व इज् अखज रब्बुक मिम्बनी आदम मिन् जुहूरिहिम् जुर्रियतहुम् व अश्हदहुम् अला अन्फुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् कालू बला शहिदना अन् तकूलू यौमल्-कियामति त इन्ना कुन्ना अन् हाजा गाफिलीन गाफिलीन” अर्थात् “क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ?” सब बोले हाँ हम मानते हैं। यह गवाही हमने इसलिए ली कि कियामत के दिन कहीं यह न कहने लगे कि हमको इस बात की खबर ही न थी।

कु. पा. ३० सू. ६१७ कद्र आयत ४- “तनज्जलुल्-मलाइकतु वर्खुह फीहा बिइज्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्” अर्थात् उसमें फिरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से जमीन पर उतरते हैं, हर काम पर,

कु. पा. ८ सू. ७ आराफ आयत ११ “व लकद् खलकूनाकुम् सुम्म सव्वर्नाकुम् सुम्म कुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआदम फसजदू इल्ला इब्लीस लम् यकुम्-मिनस्साजिदीन” अर्थात् और हमने ही तुमको पैदा किया और तुम्हारी सूरत बनाई और फिर हमने फिरिश्तों को आज्ञा दी कि तुम्हारे मूल पुरुष आदम को सज्दः करो! तो वे आदम के आगे झुक गये, मगर इब्लीस झुकने वालों में न हुआ।

ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक।

ए पानी न पोहोंचे दिल को, क्या होए ऊपर धोए खाक।।५१।।

जल के द्वारा ऊपर से शरीर को धोने से कोई भी पवित्र नहीं हो सकता, क्योंकि यह जल हृदय तक नहीं पहुँच सकता। ऐसी स्थिति में नश्वर तन को जल के द्वारा ऊपर से धोने से क्या लाभ?

भावार्थ- जल को उचित रूप से पीने तथा स्नान आदि के द्वारा सात्विकता में कुछ वृद्धि तो होती है किन्तु पूर्ण निर्मलता नहीं हो सकती। हृदय को पूर्ण रूप से पवित्र करने के लिये अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है।

किताबों सबों यों कह्या, अर्से पोहोंचे रूह पाक।

दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाकमें खाक।।५२।।

सभी धर्म ग्रन्थों में कहा गया है कि परमधाम में पवित्र आत्मायें ही पहुँचती हैं। इस संसार के मिथ्या दिल वाले जीवों के तन मिट्टी के होते हैं और मिट्टी में ही मिल जाते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि स्वान्निक जीव मोह सागर में लय हो जाते हैं।

**खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल।
कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल।।५३।।**

इस प्रकार कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलने वाले जीव, परब्रह्म की कुछ भी सानिध्यता प्राप्त नहीं कर पाते हैं, जबकि आत्मा अपने परमधाम के मूल मिलावे में अपनी परात्म के रूप में विराजमान हैं। हे साथ जी! इस विषय पर कोई गहन चिन्तन करे तो यह स्पष्ट होगा कि ब्रह्मसृष्टि परमधाम के अपने मूल सम्बन्ध के कारण इस जागनी लीला में श्री प्राणनाथ जी (गुम्मत जी) के चरणों में पहुँच जाती है और इस खेल के समाप्त होने के पश्चात् परमधाम के मूल मिलावे में युगल स्वरूप के चरणों में विद्यमान अपनी परात्म में जागृत होंगी।

**गुम हुई जिनोंकी अकलें, होए नजीक न तिनों हक।
जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक।।५४।।**

जिन जीवों की बुद्धि माया में ही भटकी हुई होती है उन्हें प्रियतम अक्षरातीत की सानिध्यता प्राप्त नहीं होती। वे जान बूझ कर इस संसार का मोह छोड़ नहीं पाते। इसमें कोई संशय नहीं कि ऐसे जीव ब्रह्मसृष्टियों जैसा आचरण नहीं कर सकते।

**कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम।।५५।।**

यदि कोई अपने मुख से ब्रह्मसृष्टियों जैसा आचरण करने की बात तो कहे, किन्तु उसे व्यवहारिक रूप में चरितार्थ न करे तो इस प्रकार के कथन से कोई लाभ नहीं। विशुद्ध आचरण ही आत्मा को परमधाम तक पहुँचाता है (अनुभूति कराता है) कथन मात्र से तो केवल जिह्वा की शोभा बनी रहती है।

**केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन।।५६।।**

अज्ञानता के अन्धकार में केवल ज्ञान को कहने व सुनने का ही विषय बना दिया गया था, किन्तु जागनी लीला की इस घड़ी में ज्ञान को चरितार्थ (क्रियात्मक रूप देने) करने की आवश्यकता है। जब अखण्ड परमधाम तथा परात्म का ज्ञान प्रकट हो गया, तो ऐसे अनमोल समय में श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के आधार पर आचरण से रहित होकर केवल कथन मात्र से कोई लाभ नहीं।

**केहेनी करनी चलनी, ए होए जुदियां तीन।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और एतो इलम आकीन।।५७।।**

ज्ञान को कहना, उसके अनुसार आचरण में लाने का प्रयास करना तथा पूर्ण रूप से आचरण में उतार लेना तीनों ही अलग-अलग रूप हैं। माया से उत्पन्न हुई जीव सृष्टि कथनी, करनी और रहनी को अलग-अलग नहीं समझ सकती। इसके विपरीत ब्रह्मसृष्टियों को तारतम ज्ञान पर अटूट विश्वास होता है। जिससे वे कथनी, करनी और रहनी के भेद को यथार्थ रूप से समझती हैं।

**अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक।
रूहअल्ला महंमद मेहेंदी ने, उड़ाए दर्ई सब सक।।५८।।**

अब श्री कुलजुम स्वरूप के अवतरित होने से परमधाम के पच्चीस पक्षों की शोभा, लीला एवं अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य ज्ञान प्रकट हो गया है। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में बशरी, मल्की और हकी इन तीनों सूरतों ने प्रकट होकर तारतम ज्ञान के द्वारा सबका संशय समाप्त कर दिया है।

**सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेहेंदी दिल।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रात के मिल।।५९।।**

अब श्री महामति जी के धाम हृदय (श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप) में श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परमधाम का सूर्य उग आया है, जिससे सत्य और असत्य (ब्रह्म और माया) का विवरण पूर्णतया स्पष्ट हो गया है। जबकि आज दिन तक अज्ञानता के अन्धकार में इस मायावी जगत में ब्रह्म को ओत-प्रोत माना जाता था।

**कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात।
अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात।।६०।।**

आज दिन तक अज्ञानता के अन्धकार के कारण नास्तिकता और परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास में भेद का पता नहीं था। अब परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के अवतरित होने से तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबको यथार्थ सत्य का बोध हो गया है।

**ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक।
सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक।।६१।।**

अब तक किसी को यह पता नहीं था कि ब्रह्मसृष्टि कौन है और ईश्वरी सृष्टि कौन है? यह भी सुध नहीं था कि परब्रह्म को न मानने वाले काफिर कौन है तथा अवसर देख कर रंग

बदलने वाले मुनाफिक कौन है? अब श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान ने उपरोक्त तथ्यों का विवरण स्पष्ट कर दिया है, जिसका बोध सभी को प्राप्त हो गया है।

**हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर।
कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन असों सूर॥६२॥**

श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परब्रह्म के आवेश स्वरूप द्वारा परमधाम का ज्ञान अवतरित हुआ है। जिसने बशरी सूरत (मुहम्मद साहब) के हृदय में छिपे हुए मारिफत के रहस्यों को प्रकट कर दिया है। तारतम ज्ञान से सब के हृदय से नास्तिकता को निकालकर परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास भर दिया है। अब ब्रह्मात्माओं के धाम हृदय में अक्षर धाम तथा परमधाम के ज्ञान का सूर्य ही उदित हो गया है।

**खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद।
सब खोले मगज मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद॥६३॥**

श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान ने वेद और कतेब ग्रन्थों के छिपे हुए गुह्य रहस्य को प्रकट कर दिया। कुर्आन की हकीकत के जितने भी गुह्य रहस्य थे, जिनका स्पष्टीकरण आज दिन तक कोई नहीं कर पाया था, तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी उजागर हो गये हैं।

**जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों माहें।
इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें॥६४॥**

आज दिन तक संसार में जितने भी पैगम्बर हुए हैं, सभी यह यहुदियों में आये हैं। ईस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब भी यहुदियों में ही आए हैं, यहाँ तक कि इस जागनी लीला में भी परमधाम से आने वाले ब्रह्ममुनि प्रायः हिन्दुओं में ही आये हैं। शरियत की राह पर चलने वाले कट्टरपन्थी मुसलमानों में कोई ब्रह्मात्मा नहीं है।

भावार्थ—यद्यपि श्री महामति जी के द्वारा होने वाले जागनी लीला में अब्बल खाँ, मिहीन खाँ, जहान मुहम्मद, शेखबदल आदि अनेकों मुसलमान थे, जिनके तन में परमधाम की आत्माएं अवतरित हुई थी। वर्तमान समय में इस्लामी कट्टरता को देखकर मुसलमानों में ब्रह्मसृष्टियों का होना नगण्य ही कहा जा सकता है।

**जाकी करे मुसाफ सिफतें, औल्लिए अंबिए पैगंमर।
सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर॥६५॥**

हे साथ जी! यदि हम गहन चिन्तन करके सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि कुर्आन में जिन औलियों, अम्बियों तथा पैगम्बरों की महिमा गाई गई है, वे सभी यहुदियों में हुए हैं।

भावार्थ- औलिये, अम्बिये आदि मुस्लिम फकीरों का ही एक वर्ग है, जिनका गुह्य अभिप्राय उन ब्रह्मसृष्टियों से है जो हिन्दू तनों में आई है।

**जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए॥६६॥**

जो कुर्आन में वर्णित औलिये, अम्बिये का गुह्य अर्थ ब्रह्मसृष्टि के रूप में लेता है वही आखरूल इमाम महामत साहिबुज्जमाँ (श्री प्राणनाथ जी) कहलाने की शोभा को धारण करता है। कुर्आन में जहाँ भी उम्मत, औलिए, अम्बिए आदि शब्द आए हैं, उनका गुह्य अभिप्राय ब्रह्मसृष्टियों से है। कुर्आन का कोई भी प्रसंग सूक्ष्म अर्थों से रहित नहीं है।

**जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन॥६७॥**

शरियत की राह पर चलने वाले कट्टरपन्थी मुसलमान स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, किन्तु परमधाम की वास्तविकता का इन्हें जरा भी ज्ञान नहीं है। जब तक संसार में श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान अवतरित नहीं हुआ था तब तक परमधाम के विषय में किसी को भी ज्ञान नहीं था।

**कह्या जाहेर माहें दुनियां, और बातून माहें हक।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक॥६८॥**

चारों वेदों और कतेब ग्रन्थों (तौरेत, इंजील, जंबूर और कुर्आन) में यह बात पुकार-पुकार कर कही गई है, कि धर्म ग्रन्थों के बाह्य अर्थों को लेने पर संसार चक्र में भटकना पड़ता है और सूक्ष्म अर्थ लेने पर परब्रह्म की पहचान होती है। परब्रह्म और परमधाम के सम्बन्ध में श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान पूर्णतया संशय रहित होता है।

**ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत।
रात मेट के दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत॥६९॥**

श्री महामति जी का हृदय (श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप) परमधाम (मारिफत) के ज्ञान का सूर्य है। जब श्री प्राणनाथ जी ने कुर्आन के गुह्य अर्थ को खोलकर उसकी वास्तविकता को दर्शाया, तो परमधाम के ज्ञान का प्रकटीकरण हुआ। उन्होंने अज्ञानता की रात्रि के अन्धकार को मिटाकर परमधाम के दिव्य ज्ञान से दिन जैसा उजाला कर दिया।

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन॥७०॥

श्री राज जी ने अखण्ड परमधाम में ब्रह्मात्माओं को यह वचन दिया था, कि मैं कियामत के समय आकर तुम्हें परमधाम का ज्ञान दूँगा और जागृत करूँगा। अब वही समय आ गया है, जिसके कारण स्वलीला अद्वैत परमधाम तथा परात्म का ज्ञान अवतरित हुआ है।

एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक॥७१॥

संसार के जीव आज दिन तक एक ओर जहाँ मैं खुदी (अहंकार) की अग्नि में जल रहे थे, तो दूसरी ओर संशयात्मक ज्ञान के शिकार थे। एक सच्चिदानन्द परब्रह्म से पीठ देकर जड़ निराकार को ही परब्रह्म माने बैठे थे तथा शरीयत (कर्मकाण्ड) एवं तरीकत (उपासना) के द्वारा उसकी भक्ति करते थे।

सो खुदी काढी जड़मूल से, हुए जाहेर हक इलम।
सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम॥७२॥

अब तारतम ज्ञान के अवतरित होने से अज्ञान से उत्पन्न होने वाला अहंकार जड़ से नष्ट हो गया है और सबको एक परब्रह्म की पहचान हो गई है। किसी के मन में कोई संशय नहीं रह गया है। अब सभी लोग अनन्य परा प्रेम लक्षणा भक्ति के मार्ग पर सहजता से चल रहे हैं।

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई का कथन भावातिरेक में अतिशयोक्ति अलंकार की भाषा में व्यक्त किया गया है।

जुदी जुदी जातें कहावतीं, फैल करते जुदे नाम धर।
सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर॥७३॥

आज दिन तक संसार में मानव समाज अलग-अलग जातियों में बंटा हुआ था। संसार के लोग परब्रह्म के अलग-अलग नामों की कल्पना करके कर्मकाण्ड के द्वारा भक्ति किया करते थे, किन्तु श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा अज्ञानता की रात्रि का अंधकार मिटा दिया है और परमधाम के ज्ञान से उजाला कर दिया है, जिसका ज्ञान सभी लोगों को हो गया है।

**जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक॥७४॥**

जो अपनी आत्मिक दृष्टि खोल लेते हैं, वे परमधाम में विराजमान श्री राज जी का दर्शन करते हैं। जो जीव अपनी बहिर्मुखी दृष्टि को छोड़ नहीं पाते हैं, वे इस संशयात्मक जगत में जन्म मरण के चक्र में फंसे रहते हैं।

**जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन।
और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन॥७५॥**

जिन्हें परमधाम की यथार्थता (हकीकत) तथा परमसत्य (मारिफत) का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह श्री राज जी से पल भर का भी वियोग सहन नहीं कर पाता। श्री राज जी ने खिल्वत, परिक्रमा, सागर और शृंगार (आखिरी इल्म) के रूप में परमधाम का दिव्य ज्ञान उन ब्रह्मात्माओं के बीच में दिया है, जिनके मूल तन परमधाम में विराजमान हैं।

**जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम॥७६॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश ने जिसे अज्ञानता की नींद से जगा दिया है और वह श्री राज जी के प्रति अटूट विश्वास लेकर उठकर बैठ जाता है, तो प्रियतम प्राणनाथ के बिना एक पल भी रहना उसके लिए सम्भव नहीं हो पाता। वह किसी भी अवस्था में श्री जी के चरणों को नहीं छोड़ सकता है।

**सब साहेदी दर्ई जो हदीसों, और अल्ला कलाम।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम॥७७॥**

कुर्आन ए पाक और हदीसों की सभी साक्षियों को लेकर भी जो आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ श्री प्राणनाथ जी की पहचान करने में पीछे रह जाते हैं, उनके ऊपर न तो मुहम्मद स. (साहिब) की कृपा होती है और न अक्षरातीत परब्रह्म की।

**जिनों लदुन्नी पोहोंचिया, लिया बका अर्स भेद।
सो क्यो गिरोसों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद॥७८॥**

जिन्हें श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वे परमधाम के गुह्य रहस्यों को जान जाते हैं, वे किसी भी स्थिति में ब्रह्ममुनियों के समुदाय से अलग नहीं हो सकते, क्योंकि तारतम ज्ञान के प्रभाव से उनका हृदय बिंध गया होता है अर्थात् वे परब्रह्म के प्रति समर्पित हो गये होते हैं।

भावार्थ- कलेजे या हृदय में छिद्र हो जाना एक मुहाविरा है। जिसका आशय होता है- प्रेम के आवेग में हृदय का पूर्णतया समर्पित हो जाना।

**जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान॥७९॥**

जिन्हें श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा हकीकत (सत्य) तथा मारिफत (परमसत्य) का बोध हो जाता है, उन्हें परमधाम का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। वे अपनी मायावी नींद का पूर्णतया परित्याग कर देते हैं। ऐसी स्थिति में उनके लिये परमधाम का वियोग असह्य होता है।

**ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक॥८०॥**

जब प्राणेश्वर अक्षरातीत ने अपना तारतम ज्ञान इस नश्वर जगत में अवतरित किया, तो वह सभी ब्रह्मात्माओं तक पहुँच गया (जायेगा)। इसके परिणाम स्वरूप उनके मन में किसी भी प्रकार का संशय नहीं रह गया है और वे निश्चित रूप से श्री राज जी तथा परमधाम को प्राप्त होंगे।

**जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार।
अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार॥८१॥**

जिन सुन्दरसाथ को श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में तारतम ज्ञान प्राप्त हो जाता है उन्हें चितवनी के द्वारा युगल स्वरूप सहित परमधाम के सभी पक्षों का दर्शन होने लगता है। उनके और धाम धनी के मध्य माया का किसी भी प्रकार का आवरण (पर्दा) नहीं रह जाता। उनकी अन्तर्दृष्टि अनायास ही अक्षर धाम से परे परमधाम में विचरण करने लगती है।

**जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए॥८२॥**

जिसके हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश नहीं पहुँच पाता है, उसके ऊपर माया का आवरण पड़ा रहता है। यद्यपि मूल सम्बन्ध के कारण श्री राज जी उसकी प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट थे, किन्तु तारतम ज्ञान के अभाव में विवेक जागृत न होने से वह अपने आराध्य के चरणों से दूर हो गया।

भावार्थ- यद्यपि, आत्मा से धाम धनी कभी भी अलग नहीं थे और न कभी होंगे, किन्तु इस चौपाई में उस अवस्था का वर्णन किया गया है जब आत्मा किसी तन को धारण करती है और

उसका जीव अपने आलस्य-प्रमाद के कारण न तो तारतम ज्ञान को ग्रहण करता है और न चितवनी ही करता है। ऐसी अवस्था में जीव तथा आत्मा दोनों ही जागृत नहीं हो पाते हैं और वह जीवन व्यर्थ चला जाता है। इसे ही परब्रह्म से दूर हो हो जाना कहा गया है। वस्तुतः उसके अगले तन में अलग जीव होगा तथा उसे पुनः प्रियतम का साक्षात्कार करने का अवसर मिलेगा, क्योंकि परात्म की प्रतिबिम्ब स्वरूपा आत्मा के हृदय से कभी भी राज जी अलग हो ही नहीं सकते।

सिफ्त ऐसी कही मोमिनो, जाके अक्स का दिल अर्स ।

हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन बिध अरस-परस ॥

श्रृं. २१/८१ का कथन उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करता है।

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम।

सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम ॥८३॥

एक मानवीय तन को धारण कर जो आत्मा इस संसार में रह रही है, उस आत्मा का मूल निवास मूल मिलावे में विद्यमान उसकी परात्म है। जिस सुन्दरसाथ को तारतम ज्ञान के प्रकाश में श्री राज जी की पहचान नहीं हो पाती है, उसका जीव देह त्याग के पश्चात् पूर्ववत् माया में भटक जाता है।

लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें।

जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें ॥८४॥

जो भी व्यक्ति श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान को आत्मसात् कर लेता है, वह भला अपने शरीर रूपी कब्र में अज्ञानता की रात्रि के वशीभूत होकर क्यों भटकता फिरेगा? जो सुन्दरसाथ चितवनी के द्वारा अपनी परात्म का साक्षात्कार कर लेता है, वह जागृत हो जाता है। वह किसी भी तरह से अज्ञान-निशा में नहीं सोयेगा।

भावार्थ- कब्र में सोने का तात्पर्य है- शरीर और संसार के मोह-जाल में फंस कर अपने आत्मिक स्वरूप एवं परब्रह्म की पहचान न कर पाना।

वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार।

मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार ॥८५॥

तारतम ज्ञान को आत्मसात् करने वाला अपने हृदय में प्रातःकाल के उजाले का अनुभव करता है। उसके मन में अब अज्ञान रूपी रात्रि भी अस्तित्व नहीं रहता। ऐसी अवस्था में वह

चितवनी के द्वारा परमधाम के सूर्य (ज्ञान, प्रेम, आनन्द, एकत्व के स्वरूप) श्री राज जी का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करता है। उसे अब पूर्ण रूप से इस तथ्य का अनुभव हो जाता है, कि परमधाम से माया में आते समय श्री राज जी ने कहा था कि मैं तुमसे कभी अलग नहीं रहूँगा, आज वह वचन सार्थक हो गया है।

**जो उठी कियामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन।
आया असल तन में, बीच बका वतन।।८६।।**

कियामत की इस घड़ी में जो ब्रह्मात्मा जागृत हो जायेगी, वह परमधाम के अलौकिक ज्ञान के उजाले में भला संसार सागर में क्यों भटकेगी? वह तो अपनी अन्तर्दृष्टि से परमधाम के मूल मिलावे में विद्यमान अपनी परात्म को प्रत्यक्ष रूप से देखेगी।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का तीसरा चरण सुन्दरसाथ के लिये प्रयुक्त हुआ है, इसलिये यह कथन पुल्लिंग में कहा गया है। असल तन में आने का तात्पर्य आत्म-दृष्टि से देखना है, उसमें प्रविष्ट होकर जागृत होना नहीं है। परात्म में जागृत होने की यह लीला खेल समाप्त होने के पश्चात् एक साथ ही होगी।

**जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें।
पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।।८७।।**

जो भी ब्रह्मात्मा जागृत होकर महाप्रलय से पूर्व अपने शरीर का परित्याग करती है, वह अपने जीव के साथ श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान श्री राज जी के चरणों में (गुम्मत जी) पहुँच जाती है। यद्यपि, उसका पंच भूतात्मक तन तो नष्ट हो जाता है, किन्तु आत्मा अपने प्राणेश्वर से अलग नहीं हो पाती है और उनकी सानिध्यता में पहुँच जाती है।

भावार्थ- खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचियां खसम ।।
बोया बीज बतन का, सो ऊग्या बाही रसम ।।

कलश हिन्दुस्तानी ६/६ के इस कथन में जिमी अर्थात् धरती, श्री महामति जी की वह आत्मा है जिसमें प्रेम के जल से सींचित करके श्री राज जी ने तारतम ज्ञान का बीज बोया और उससे श्री कुलजुम स्वरूप के वृक्ष का पौधा अंकुरित हुआ। दूसरी धरती (जमीन) वह आत्मा है, जो तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर चितवनी द्वारा युगल स्वरूप का दर्शन करती है तथा शरीर छोड़ने के पश्चात् श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान युगल स्वरूप के चरणों में पहुँच जाती है। यद्यपि, उस जागृत ब्रह्मात्मा के धाम हृदय में भी युगल स्वरूप स्वरूप की अखण्ड छवि विराजमान होती है, किन्तु इस जागनी लीला में अक्षरातीत कहलाने की सम्पूर्ण शोभा

रुहुल्लाह महमत साहिबुज्जमां स्वरूप श्री महामति जी को प्राप्त है, अतः उनकी सानिध्यता में आत्मा को पहुँचना अनिवार्य होता है। यही कारण है कि श्री गुम्मत जी मन्दिर को ही धाम कहलाने की शोभा प्राप्त है, जो अन्य किसी को भी न तो प्राप्त है और न होगी। इसका मूल कारण यह है कि गुम्मत जी मन्दिर में आज भी श्री महामति जी ध्यानावस्था में विराजमान हैं, जिनके धाम हृदय में युगल स्वरूप शोभायमान है। अन्य मन्दिर भले ही वास्तुकला या वैभव की दृष्टि से श्रेष्ठ हो सकते हैं, किन्तु महमत रुहुल्लाह महामति जी के वहां न होने से उन्हें धाम की शोभा नहीं मिल सकती।

**यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत॥८८॥**

इस प्रकार अक्षरातीत की पहचान देने वाले श्री कुलजुम स्वरूप का अलौकिक ज्ञान समझाने पर भी यदि कोई जानबूझकर समझना नहीं चाहता है, तो उस मिथ्या हृदय वाले जीव को शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है। वस्तुतः वह इसका पात्र ही नहीं है।

**काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन।
तो अर्स तन और जिमी के, क्यों पाड़े कुफर आकीन॥८९॥**

यदि जीव सृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि का स्वरूप अलग-अलग नहीं होता, तो परात्म वाले ब्रह्ममुनियों में प्रियतम के प्रति अटूट विश्वास कैसे होता और इनके विपरीत संसार के जीवों में नास्तिकता एवं पाप की प्रवृत्ति क्यों होती?

**अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन॥९०॥**

ब्रह्मसृष्टियों का मूल तन अखण्ड परमधाम में होता है तथा जीवों का तन इस नश्वर संसार का होता है। ऐसी अवस्था में इन दोनों की कथनी, करनी (चाल-चलन) एवं रहनी एक समान कैसे हो सकती है?

**जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर॥९१॥**

जिनका हृदय प्रियतम अक्षरातीत का धाम कहलाता है, वे आपस में मिलकर इस बात का चिन्तन करें कि संसार के जीव तो निराकार से इस पृथ्वी लोक पर आये हैं, जबकि ब्रह्मसृष्टियां अक्षर धाम से भी परे परमधाम की रहने वाली हैं।

**मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की॥१२॥**

ब्रह्मसृष्टियों तथा जीवों में हर तरह से भेद स्पष्ट है। संसार के जीवों की उत्पत्ति निराकार से हुई है, जबकि ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से अवतरित हुई हैं।

**ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत॥१३॥**

हे साथ जी! जब संसार के समस्त जीवों का योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय होगा, उस समय जीव और ब्रह्मसृष्टि के इन भेदों को आप याद रखना, क्योंकि आपके ही हाथों से जीवों को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होनी है। ब्रह्मसृष्टियों को खेल की समाप्ति के पश्चात् अपने मूल घर परमधाम जाना है तथा जीवों को, ब्रह्मात्माओं की कृपा-दृष्टि से अखण्ड होना है। यही दोनों में मूलतः भेद है। यदि इस प्रकार का स्पष्ट अन्तर नहीं होता तो स्वयं श्री राज जी ब्रह्मात्माओं की अपने श्री मुख से महिमा क्यों गाते?

**मर मर सब कोई जात है, चाहिए मोमिनों मौत फरक।
दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागें दिल अर्स हक॥१४॥**

यद्यपि, इस संसार में प्रत्येक भौतिक शरीरधारी की मृत्यु होती है अर्थात् उसे अपना तन छोड़ना पड़ता है किन्तु ब्रह्मसृष्टियों ने जिन तनों को धारण किया होता है, उनकी मृत्यु भी विलक्षण ही होती है। संसार के जीव सब अपने शरीर का त्याग करते हैं, तो अपने शुभ-अशुभ कर्मों के फलस्वरूप वे विभिन्न योनियों में अज्ञान दशा में सुख-दुःख का भोग करते हैं, किन्तु ब्रह्मसृष्टि जब अपने धाम हृदय में अपने आराध्य सहित परमधाम का साक्षात्कार करके जागृत हो जाती है, तो अपने पंच भौतिक तन का त्याग करने के उपरान्त सीधे प्रियतम के चरणों में पहुँचती है।

**जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत।
कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत॥१५॥**

जी भी परमधाम की ब्रह्मात्मा हो, उन्हें इस संसार में माया से सावधान होकर चलना चाहिए क्योंकि उन्हें परब्रह्म की अंगरूपा कहलाने की शोभा प्राप्त है। कुर्आन-हदीसों में कहा गया है, कि कियामत के समय अज्ञानता तथा अशुभ कर्मों के कारण परब्रह्म को न मानने वाले जीवों के मुख काले होंगे तथा तारतम ज्ञान के प्रकाश एवं प्रियतम के प्रेम में डूबे रहने के कारण ब्रह्मात्माओं का मुख उज्ज्वलता से जगमगा रहा होगा।

**मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार।
ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार॥१६॥**

यह संसार स्वाप्निक हृदय वाले जीवों का मेला (समूह) है। ये किसी भी अन्ध परम्परा के पीछे चींटी हार, ऊँट कतार की भांति अज्ञान दशा में चलते रहते हैं। इनके विपरीत ब्रह्मसृष्टियों का हृदय सत्य निष्ठ होता है और उसे प्रियतम का धाम कहलाने की भी शोभा है। ये तारतम ज्ञान के प्रकाश में जागृत अवस्था में रहते हैं। ये संसार के नश्वर जीवों की भांति अज्ञानता के अन्धकार में भटकते हुए कैसे चल सकते हैं?

**बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन॥१७॥**

संसार के नश्वर तन वाले जीवों के मध्य भला वे ब्रह्ममुनि घूल-मिल कर कैसे रह सकते हैं, जिनके परमधाम में अखण्ड तन है। स्वलीला अद्वैत परमधाम के रहने वाले ब्रह्ममुनि आन्तरिक रूप से इनके मध्य पल भर भी नहीं रह सकते हैं।

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई में जीवों के प्रति घृणा का भाव नहीं है, अपितु यह दर्शाया गया है कि जागृत होने के पश्चात् कोई भी ब्रह्मसृष्टि जीवों की भांति जड़ पूजा, कर्मकाण्ड, राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों में नहीं फंसी रहेगी।

**ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार।
ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार॥१८॥**

धर्म ग्रन्थों में परब्रह्म के ये वचन हैं, कि स्वाप्निक हृदय वाले संसार के ये जीव तथा इनके प्रमुख महापुरुष बड़े-बड़े योगी ज्ञानी एवं फकीर आदि इस नश्वर ब्रह्माण्ड को उलंघकर अखण्ड धाम में नहीं जा सकते।

भावार्थ—पुराण संहिता के अध्याय १२ श्लोक ४६ में यह बात दर्शायी गयी है, कि किस प्रकार रोधिनी शक्ति सभी जीवों को निराकार में ही रोक देती है। मे'राजनामः ग्रन्थ में भी इसी प्रकार का कथन है।

रूधन्ती रोधिनी रोधा ज्ञानरोधा तमोपहा ।

निरोधिका कला प/ परिवार्या व्यवस्थितः॥१२/४६

अर्थात् सबको अखण्ड में जाने से रोकने वाली यह रोधिनी शक्ति ज्ञान को अवरूद्ध करने वाली, तथा अन्धकार को दूर करने वाली है। सबका मार्ग रोकने वाली यह रोधिनी शक्ति पांच शक्तियों के ऐश्वर्य से स्थित है।

**मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत॥१९॥**

ब्रह्ममुनि परमधाम से आये हैं, जबकि संसार के जीव मोहसागर से उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार सत्य और झूठ का मेल नहीं हो सकता। भला इनकी संगति एक साथ कैसे निभा सकती है?

**सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों माहें।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें॥१००॥**

सत्य का मेल सत्य से ही होता है और झूठ का मेल झूठ से होता है अर्थात् ब्रह्मसृष्टियों की संगति ब्रह्मसृष्टियों से ही निभती है, जीवों से नहीं। जो जैसा होता है, उसकी संगति भी वैसे ही व्यक्तित्व से होती है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं किया जा सकता।

**अर्स दिल मोमिन कहा, दुनी दिल पर अबलीस।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस॥१०१॥**

ब्रह्मात्मा का हृदय प्रियतम अक्षरातीत का धाम कहलाता है, जबकि जीवों के हृदय पर अज्ञान (कलियुग) रूपी शैतान का स्वामित्व होता है। यह अज्ञान किसी का भी हितैशी नहीं है, भले ही कोई इसकी प्रसन्नता के लिये अपना शिर काट कर समर्पित क्यों न कर दें।

भावार्थ- शैतान या कलियुग कोई चेतन प्राणी नहीं है, कि इसे अपना शीश देकर भी प्रसन्न किया जा सके। यह कथन एक प्रकार की भावात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका आशय यह है कि अज्ञान को किसी भी अवस्था में हितकारी नहीं मानना चाहिए। भगवान बुद्ध ने संसार के दुःखों का कारण अज्ञान को ही बताया है।

**लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए।
चिरकीन जिमी सें निकस के, क्यों न लीजे बका खुसबोए॥१०२॥**

परमधाम अखण्ड है, जबकि यह मृत्युलोक नश्वर है। हे साथ जी! इन दोनों का मूल्यांकन कीजिए। आप चितवनी के द्वारा गन्दगी से भरपूर इस पृथ्वी लोक से परे होकर परमधाम की सुगन्धि का आनन्द क्यों नहीं लेते हैं?

भावार्थ- प्रत्येक प्राणी का शरीर जहां मल (गन्दगी) से भरा होता है, वहीं बड़े-बड़े नगरों के नालों से गन्दगी ही गन्दगी निकलती है। इसके विपरीत परमधाम के कण-कण में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश है, अपार सौन्दर्य है, सुगन्धि है और चेतनता है। ऐसी अवस्था में चितवनी में न डूबना कितनी विवेक हीनता है?

**जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक।
देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक॥१०३॥**

हे साथ जी! आपने संशय रहित कर देने वाला श्री कुल्जुम स्वरूप का अलौकिक ज्ञान पाया है। ऐसी अवस्था में आप जानकर भी अपने प्राणेश्वर को क्यों भूले हुए हैं? आप अपने हृदय में इस बात का विचार कीजिए, कि अपने प्राण वल्लभ अक्षरातीत को आप कब और किस प्रकार रिझायेंगे?

**जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक॥१०४॥**

श्री कुल्जुम स्वरूप में अक्षरातीत के कहे गये हुए शब्द बार-बार पुकार करके यही कह रहे हैं, कि अपने प्रियतम के प्रेम में जीते जी अपने मन की इच्छाओं को समाप्त कर दीजिए। यदि ब्रह्ममुनि ही शरीर के जीवित रहते हुए अपनी इच्छाओं को नहीं मारेंगे, तो क्या वे मिथ्या वादी लोग मारेंगे, जो सामने तो ज्ञान एवं भक्ति का नाटक करते हैं किन्तु छिप कर विषय भोगों में लिप्त रहते हैं?

द्रष्टव्य- स्वयं को मारने का तात्पर्य है, अपने मन की समस्त लौकिक चाहनाओं को समाप्त कर प्रियतम अक्षरातीत के प्रति समर्पित हो जाना।

**फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर॥१०५॥**

श्री कुल्जुम स्वरूप में सभी ब्रह्मात्माओं को सम्बोधित करके कहा गया है। उन कथनों का गहन चिन्तन परमधाम के ब्रह्ममुनि ही करते हैं। हे साथ जी! आप चितवनी के द्वारा अज्ञानता के अन्धकार से परिपूर्ण इस नश्वर जगत को छोड़कर, अक्षर ब्रह्म से परे परमधाम के मूल मिलावे में जाकर अपने प्राणेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन क्यों नहीं करते हैं?

**हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह।
मूल सरूप ले दिल में, उड़ाए दीजे अरवाह॥१०६॥**

इस नश्वर जगत में श्री प्राणनाथ जी मूल स्वरूप श्री राज जी के निर्देशों को क्रियान्वित कर रहे हैं। आप उनका आदेश मानकर परमधाम की चितवनी में क्यों नहीं लग जाते हैं? आप चितवनी के द्वारा मूल स्वरूप श्री राज श्यामा जी की अनुपम शोभा को अपने धाम हृदय में बसाइये तथा अपनी आत्मा को उनके प्रेम में पूर्णतया समर्पित कर दीजिए।

**चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक।
पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजेकी लीक।।१०७।।**

संसार के सभी लोग निश्चित रूप से यह जानते हैं, कि अन्ततोगत्वा सभी को एक परब्रह्म की भक्ति के मार्ग पर ही चलना पड़ेगा क्योंकि वे ही सबके स्वामी हैं। किन्तु यह जानते हुए भी कोई अपने मन को वश में करके उनके प्रेम मार्ग पर नहीं चलता। सभी एक-दूसरे की देखा-देखी विषयों में सुख शान्ति की कामना से भागते चले जा रहे हैं।

**जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस।
सब सावचेत सुरत बांध के, बीच उठिए अपने अर्स।।१०८।।**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में जो यहां जागृत हो जाएगा, वह संसार के जीवों की देखा-देखी उस अंधकार से परिपूर्ण विषय-भोग के मार्ग पर क्यों चलेगा? हे साथ जी! आप सभी माया से सावधान हो जाइये। और अपनी अन्तर्दृष्टि (सुरता) को एकाग्र कर अपने परमधाम के पच्चीस पक्षों और युगल स्वरूप की शोभा में डूब जाइये।

**जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान।
मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान।।१०९।।**

मूल स्वरूप श्री राज श्यामा जी की शोभा को अपने धाम हृदय में बसाइये और माया का आवरण हटाकर उनकी पूर्ण पहचान कीजिये। परमधाम की जो भी आत्मा इस संसार में जागृत होगी उसकी स्पष्ट पहचान यही है।

भावार्थ— इस चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'सुरत' शब्द का अर्थ कहीं 'स्वरूप' होता है तो कहीं 'आत्मदृष्टि' अर्थात् 'सुरता' को भी 'सुरत' कहा जाता है। जैसे— 'सुरत धनी सों बांध के चलिए, ले विरहा रस प्रेम काम' किरन्तन ८६/६

**भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन।
हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन।।११०।।**

भले ही आपको इस संसार में कितनी ही प्रतिष्ठा क्यों न मिल जाये, कितनी ही लोग प्रशंसा क्यों न करें किन्तु अपनी परात्म को कभी भी न भूलें अर्थात् यह हमेशा ध्यान रखिये कि आपका वास्तविक स्वरूप मूल मिलावे में विद्यमान है। हे साथ जी! मूल-मिलावे में श्री राज श्यामा जी ब्रह्मांगनाओं के बीच में सिंहासन में विराजमान हैं। अपनी अन्तर्दृष्टि से परमधाम के मूल-मिलावे में जाकर उस शोभा को निहारिये।

**जो मसलहत कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर॥१११॥**

आप परमधाम के सभी ब्रह्ममुनि मिलकर मेरे इन कथनों पर विचार कीजिये और चितवनी के प्रेम मार्ग पर चलिये। ऐसा किये बिना इस दुःखभरे संसार से अपने को अलग करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

**अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर॥११२॥**

स्वयं को इस दुःखमयी संसार से अलग करने वाले चितवनी के इस प्रेममार्ग का प्रसार होना चाहिये। ब्रह्मसृष्टि और जीव दोनों एक ही मार्ग पर नहीं चल सकते हैं। संसार के जीव निराकार से उत्पन्न हुये हैं इसलिए संसार के विषय-भोग ही उनके लिए सुख के साधन प्रतीत होते हैं। इसके विपरीत परमधाम की आत्माएं तो श्री राज जी की नूरी अंग रूपा हैं। भला, वे संसार के क्षणिक सुखों के पीछे क्यों भागेंगी?

**महामत कहे सुनो मोमिनो, मेहेर हक की आपन पर।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर॥११३॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! प्राणेश्वर अक्षरातीत की हमारे ऊपर अपार कृपा है कि चितवनी का यह प्रेम मार्ग हमें प्राप्त हुआ है। अब आप चितवनी के स्वर्णिम पथ पर चलकर युगल स्वरूप के सभी अंगों की शोभा में अपने को डुबोइये, जिससे आपकी आत्मिक दृष्टि खुल जाये।

॥प्रकारण॥१॥ चौपाई॥११३॥

बाब पैगंमरों का (पैगम्बरों का प्रकरण)

**जेते पैगंमर भाए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम॥१॥**

आज दिन तक संसार में परब्रह्म का संदेश पहुँचाने वाले जो भी पैगम्बर हुए हैं, उन्होंने जिब्रील की सहायता से ही यह गरिमा पायी है। यह जिब्रील अक्षरब्रह्म का फरिश्ता है, जो अक्षर धाम (सत्स्वरूप) तक जाता है।

**हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर।
आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर॥२॥**

कुर्आन पाक की हकीकत (यथार्थता) के ज्ञान से अक्षर धाम (सत्स्वरूप) तक पहुँचा जा सकता है। इसके आगे श्री राज जी के हृदय की गुह्यतम बातों को जानने के लिये मारिफत का ज्ञान चाहिये, जो सागर, श्रृंगार एवं मा'रिफत सागर ग्रन्थ में वर्णित है।

**हुआ मेयराज महंमद पर, तिनमें बका सब बात।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात॥३॥**

मुहम्मद स. को परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ, जिसमें उन्होंने परमधाम की सम्पूर्ण शोभा को देखा। वे अपनी आत्मिक दृष्टि से मूल मिलावे में पहुँचे और वहां उन्होंने श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को देखा।

**देखे मोती पूर नूर से, कहा मुंह पर कुलफ तिन।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन॥४॥**

वहां उन्होंने नूर से भरपूर अनुपम स्वरूप वाली ब्रह्मात्माओं को देखा। उनके मुख पर छायी हुई फरामोशी को देखकर मुहम्मद स. ने जब पूछा- तो श्री राज जी (परब्रह्म) ने उत्तर दिया, कि मुहम्मद! जब तुम्हारे हृदय में जागृति आयेगी तो यह फरामोशी हट जायेगी।

भावार्थ- 'कुलफ' का शुद्ध साहित्यिक शब्द 'कल्फ' होगा, जिसका अर्थ होता है- फरामोशी या आत्म मुग्धता। नूरमयी मोती का तात्पर्य ब्रह्मात्माओं के स्वरूप से है।

**गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन॥५॥**

तुम्हारी उम्मत इन ब्रह्मसृष्टियों ने माया का खेल मांगने का अपराध (गुनाह) किया है, इसलिये इनके मुख पर फरामोशी छायी है। तू अपनी दाहिनी ओर विद्यमान श्यामा जी को देख। यह बात परब्रह्म ने स्वयं अपने मुख से कही।

भावार्थ- श्री राज जी ने बसरी सूरत मुहम्मद स. (अक्षर ब्रह्म) के अन्दर अपना इश्क भरकर अपना ही स्वरूप बना लिया, जिससे वे मूल मिलावे में पहुँच सके। यही कारण है कि उन्होंने मलायकी सूरत श्यामा जी सहित सभी ब्रह्मात्माओं को उनकी उम्मत कहा। दाहिने हाथ का आशय यह है, कि श्यामा जी श्री राज जी के बायीं ओर विराजमान हैं। जिससे जब मुहम्मद स. अपने सामने विद्यमान युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी को देखेंगे, तो श्री राज जी उनके बायें हाथ की ओर होंगे तथा श्यामा जी दायें हाथ की ओर।

**किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर।
कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर ॥६॥**

हे मुहम्मद सल्ल.! तू चिन्ता किस लिये करता है? तू अपनी दाहिनी ओर विद्यमान श्यामा जी को देख। मुहम्मद स. साहब ने नूरमयी शोभा से परिपूर्ण श्यामा जी सहित सभी ब्रह्मांगनाओं के मुख पर फरामोशी का आवरण देखा।

**हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल।
ए जो दर्ई फरामोसी खेल में, जो उतरते मांग्या रूहों मिल ॥७॥**

हकीकी सूरत श्री राज जी ने कहा, कि इन ब्रह्मात्माओं ने माया का खेल देखने का अपराध किया है, इसलिये इनके दिल (हृदय) में फरामोशी छायी हुई है। सभी ने मिलकर मुझसे माया का खेल देखने की इच्छा की है, इसलिये परमधाम से अपनी सूरता से माया में अवतरित होने वाली इन ब्रह्मात्माओं के स्वरूप पर फरामोशी का आवरण छाया हुआ है।

भावार्थ- एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग। सनद २४/६४ के इस कथन से यह स्पष्ट है कि जिस समय अरब में मुहम्मद स. अवतरित हुए थे, उस समय कोई भी ब्रह्मात्मा आयी नहीं थी। किन्तु जब उन्हें मेयराज (मे'राज) होता है, तो उन्होंने मूल मिलावे में ब्रह्मसृष्टियों को फरामोशी में बैठे हुए देखा। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न होता है कि उस समय ब्रह्मात्माओं की सूरता कहाँ थी?

इसका उत्तर यह है कि जिस समय मुहम्मद स. की आत्मा मूल मिलावे में पहुँची, उसी समय ब्रह्मात्माओं पर फरामोशी का आवरण पड़ गया था, क्योंकि वे खेल में आने वाली थीं। उनकी दृष्टि को श्री राज जी ने अपनी ओर कर लिया था तथा उनकी सूरता मायावी जगत में आने वाली थी। उस समय तब 'अलस्तो बिरब्ब कुम्म' (क्या मैं तुम्हारा एक मात्र प्रियतम नहीं हूँ?) तथा 'कालू बला' (निश्चित रूप से आप ही हमारे प्रियतम हैं) का कथन पूरा हो चुका था।

**कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत ॥८॥**

मुहम्मद स. ने कुर्आन में परमधाम की जिस शोभा का वर्णन किया है, उसे मैं बता रहा हूँ। उन्होंने हीरे-मोती आदि जवाहरातों के उन सुन्दर वनों को देखा, जो अपनी नूरमयी शोभा से झलकार कर रहे थे। यमुना जी के किनारे वे अति मनोरम वृक्ष भी दिखायी पड़े, जिनसे पवित्र सुगन्धि निकल रही थी।

**देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए।
और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए॥९॥**

मुहम्मद स. ने परमधाम के उस हौज कौसर को देखा, जिसके चारों ओर द्योहरियां आयी है। जिब्रील ने नूरी मोतियों के उन जगमगाते हुए वनों की शोभा को भी दिखाया।

**इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान॥१०॥**

जिब्रील यहां तक मुहम्मद स. के साथ था। वह सत्स्वरूप तक ही जा सका। वह चौथे आकाश परमधाम में नहीं पहुंच सका। उसने स्पष्ट कह दिया कि यदि मैं आगे चलता हूँ, तो मेरे पर जल जायेंगे।

भावार्थ—उपरोक्त ६वीं तथा १० वीं चौपाई के शब्दों का बाह्यार्थ लेने पर ऐसा प्रतीत होता है, कि जिब्रील फरिश्ता मुहम्मद स. साहिब के साथ यमुना जी एवं हौज कौसर तक चला गया था।

किन्तु, ऐसा नहीं है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि परमधाम स्वलीला अद्वैत है। एकत्व के धाम में जहां भी श्री राज श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं की लीला होती है, वहां जिब्रील का जा पाना कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि वह अक्षर ब्रह्म के आवेश या शक्ति का फरिश्ता है। यह सर्वविदित है कि जिस नूर सागर, नीर सागर, सर्वरस सागर तथा रस सागर में युगल स्वरूप एवं ब्रह्मात्माओं की लीला होती है, वहाँ जिब्रील का पहुँचना सम्भव ही नहीं है।

सत्स्वरूप की सीमा को पार करके परमधाम में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम उन वनों की शोभा आती है, जिनको जिब्रील ने मुहम्मद स. साहिब को दिखाया। इसलिये ६ वीं चौपाई के चौथे चरण में 'देखाए' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है दिखाना। जबकि इसी चौपाई के पहले चरण में 'देख्या' शब्द है जिसका अर्थ है स्वयं देखना अर्थात् हौज कौसर को मुहम्मद स. ने स्वयं देखा, जिब्रील ने नहीं। वनों की इस सीमा के आगे भोमभर ऊंचे चबूतरे पर बड़ी रांग की हवेलियों की शोभा आती है। इसके पश्चात् सर्वरस सागर की शोभा आती है, इसी सर्वरस सागर में युगल स्वरूप के साथ ब्रह्मात्माएं लीला करती हैं। जिब्रील का इस सर्वरस सागर तक पहुंच पाना संभव नहीं है, क्योंकि दसवीं चौपाई के चौथे चरण में कहा गया है कि—

जिब्रील चौथे आसमान अर्थात् परमधाम में नहीं जा सकता। इसी प्रकार, नौवीं चौपाई के चौथे चरण में स्पष्ट कहा गया है कि “दिया महम्मद को देखाए” अर्थात् मुहम्मद साहब को दूर से उन वनों की शोभा को दिखाया जिनके आगे भोम भर ऊंचे चबूतरे पर बड़ीरांग की हवेलियों की शोभा आती है।

मुहम्मद साहब के स्वरूप (अक्षर ब्रह्म) की पहचान न कर पाने के कारण जिब्रील (सत्स्वरूप) से आगे नहीं जा सका, किन्तु अस्माफील फरिश्ते ने उनके स्वरूप की, पहचान की जिसके कारण उसे यमुना जी के किनारे तक आने का सौभाग्य मिल सका।

पुनः, जागनी लीला में श्री महामति जी (सरदार महमत स्वरूप) के धाम हृदय में विद्यमान होकर अस्माफील ने परमधाम के २५ पक्षों, युगल स्वरूप की शोभा एवं लीला का रसपान किया। जिब्रील के पंख जलने का कथन आलंकारिक है, वह कोई पक्षी नहीं अपितु श्री राज जी का जोश एवं अक्षर का आवेश है। स्वलीला अद्वैत परमधाम में प्रवेश न कर पाने की अपनी असमर्थता को पंख जलने के दृष्टान्त से वर्णित किया गया है।

**महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम।
और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम॥११॥**

ऊपर की चौपाईयों के इन कथनों से मुहम्मद स. की गरिमा का पता चलता है। और इसके अतिरिक्त कियामत के समय में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने की वास्तविकता का भी पता चलता है।

**पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार।
दर्ई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तक़रार॥१२॥**

श्री देवचन्द्र जी ने इस पृथ्वी लोक में ही अपने बाह्य नेत्रों से अपने प्रियतम अक्षरातीत का प्रत्यक्ष दर्शन किया है। श्री राज जी ने उन्हें परमधाम के तारतम ज्ञान की कुंजी दी, जिसके प्रकाश में उन्हें लैल तूल कदर (मायावी रात्रि में होने वाली ब्रह्मलीला) के तीन भागों -बृज, रास एवं जागनी का यथार्थ बोध हुआ।

**हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल।
जो कही मारफत महंमदे, सो रूहअल्ला कहे सब बोल॥१३॥**

दर्शन देने के पश्चात् श्री राज जी, सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के धाम हृदय में विराजमान हुये और परमधाम के सभी दरवाजे खोल दिये अर्थात् निराकार, बेहद और अक्षर धाम से परे परमधाम का प्रत्यक्ष दर्शन कराया। श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में परमधाम का जो ज्ञान श्री प्राणनाथ जी ने दिया है, उसे सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने पहले ही कह दिया था।

**जो हुकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार॥१४॥**

मुहम्मद स. ने श्री राज जी से सुने हुये नब्बे हजार हरूफों में से कुरान में शरीयत के तीस हजार हरूफों को प्रकट किया। शेष हकीकत के तीस हजार हरूफों को खोलने का अधिकार उनकी इच्छा पर सौंप दिया। शेष जो तीस हजार मारीफत के हरूफ थे, उसे श्री श्यामा जी ने अपने दूसरे तन में बहुत प्रेम से प्रकट किया।

**अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दई महंमद साहेदी।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की॥१५॥**

श्री महामति जी (महमत स्वरूप) कहते हैं कि अब मैं सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी की बात बताता हूं जिन्होंने मुहम्मद स. के कथनों की साक्षी दी। मेरे हृदय में उनके तारतम ज्ञान का प्रकाश हुआ, जिससे मैंने अक्षरधाम तथा परमधाम की सम्पूर्ण शोभा व लीला का ज्ञान प्राप्त किया।

**जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए।
सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह॥१६॥**

जिस परमधाम में जिब्रील नहीं जा सका, उसके कदम आगे नहीं बढ़ पाए, उस परमधाम की सम्पूर्ण शोभा को मैंने श्री श्यामा जी की कृपा से देखा।

**हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद।
इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद॥१७॥**

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तारतम ज्ञान तथा मुहम्मद स. के कुरान एवं हदीसों के ज्ञान द्वारा मैंने अपनी अन्तर्दृष्टि से हौस-कौसर, सातों घाट सहित यमुना जी और अक्षर धाम की सीमा को देखा।

**और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत।
ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत॥१८॥**

मूल मिलावे में श्री राज जी और मुहम्मद स. की जो बातें हुईं। वे कुरान में संकेतों में कही गई है जिसकी साक्षी एकमात्र श्री प्राणनाथ जी और ब्रह्ममुनि ही जानते हैं। क्योंकि यह इनकी ही साक्षी है और एकमात्र इन्हीं को ही स्पष्ट करने का अधिकार है।

**देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर।
सो ए दुनी में महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर॥१९॥**

मुहम्मद स. ने मूल मिलावे में श्री राज जी के किशोर स्वरूप को देखा और उनसे नब्बे हजार हस्फ बातें की। मुहम्मद स. ने इस संसार में आकर मेराज नामः ग्रन्थ में इन सारी बातों को प्रकट किया है।

**दुनियां चौदे तबक में, जाकी तरफ न पाई किन।
सो सब मेयराज में, रसूलें करी रोसन॥२०॥**

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में आज तक किसी को भी परमधाम का ज्ञान नहीं था किन्तु मुहम्मद स. ने श्री राज जी एवं परमधाम की सारी बातों को मेयराज नामा ग्रन्थ में प्रकाशित कर दिया।

**पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राह में जात हैं जल॥२१॥**

किन्तु मेराजनामः के इस कथन को तो वही समझ सकता है, जो अध्यात्म के इस स्तर पर पहुंचा हो अर्थात् तारतम ज्ञान के प्रकाश में जिसे श्री राज जी एवं परमधाम का अनुभव हो। परमधाम के अनन्य प्रेम एवं एकत्व (वहदत) में जल जाने वाले अर्थात् उसका रसपान करने में पूर्णतः असमर्थ रहने वाले स्वप्न के जीव भला इन प्रसंगों को कैसे समझ सकते हैं?

**इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत।
ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत॥२२॥**

श्री श्यामा जी की आत्मा के स्वरूप सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने अपनी आत्मिक दृष्टि से परमधाम का प्रत्यक्ष दर्शन किया है, इन्हें मुहम्मद स. की मलायकी सूरत कहा जाता है। श्री राज जी ने इन्हें अपनी अंगरूपा आत्मा कहा है। इन्हें ही कियामत के समय में सबका प्रियतम कहलाने की शोभा प्राप्त हुयी।

भावार्थ- पुराण संहिता, माहेश्वर तंत्र, कुरान मजिद तथा हदीसों में यह बात लिखी हुयी है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म उन दो तनों में लीला करेंगे, जो श्री श्यामा जी के द्वारा धारण किये जाएंगे। सहायम् इन्दिरायाश्च लब्ध्वा कार्यं करिष्यति। पुराण संहिता ३४/४३

तथा 'मार्गे अस्मिन् सुन्दरी एव सद्गुरु' पु. सं. ३४/४६ के ये कथन बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार, कुरान में कहा गया है कि-

पार: ३० अम्म यतसा अलून सूर: कद्र (६७) “इन्ना अन्जल्लाहु फी लैलतिल् - कद्रि(१) व मा अद्राक मा लैलतुल - कद्रि(२) लैलतुल् - कद्रि खैरुम् - मिन् अल्फि शहरिन्(३) तनज्जलुल्-मलाइकतु वर्सुहु फीहा बिइज्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्(४) सलामुन् हिय हत्ता मत्लइल्- फज्जि(५)” अर्थात् हमने यह कुर्आन कद्र की रात से उतारना शुरू किया। और तू (आप) क्या जाने कद्र की रात क्या है? कद्र की रात हजार महीनों से बढ़कर (बेहतर) है। हर काम पर सलामती वह रात सुबह तक सलामत रहती है।

महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेहेंदी इमाम।

मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम।।२३।।

मुहम्मद स. ने कुरान में कहा है कि कियामत के समय ईसा रूह अल्ला (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) और आखरुल ईमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ (श्री प्राणनाथ जी) आएंगे। वे अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर संसार की नास्तिकता एवं पाप को नष्ट करेंगे और सभी को एक सत्यधर्म में स्थापित करेंगे।

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल।

ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल।।२४।।

सारे संसार में एक सत्यधर्म की स्थापना तब होगी जब सबके हृदय निर्मल हो जाएंगे। यह अलौकिक कार्य परब्रह्म के बिना अन्य कोई भी नहीं कर सकता है। भले ही चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के सभी लोग मिलकर करना चाहें तब भी सम्भव नहीं है।

भावार्थ- धर्म का स्वरूप तो सर्वदा एक ही होता है। अपने मजहबी उन्माद में कट्टरपंथी लोग हिंसा और आतंक के सहारे अपनी शरियत को बलपूर्वक सब पर थोपना चाहते हैं। वस्तुतः उन्हें इस्लाम के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान ही नहीं है।

सो ए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब।

या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब।।२५।।

सारे संसार को एक सत्यधर्म में स्थापित करने की शोभा या तो सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को है या मुहम्मद स. को है अथवा इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी को है, जो कियामत के समय में सभी धर्मग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को प्रकट करेंगे।

**सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और॥२६॥**

धर्मग्रन्थों में छिपे हुए गुह्य रहस्यों को वही स्पष्ट कर सकता है, जो स्वयं अध्यात्म के शिखर तक पहुँचा हो अर्थात् परमधाम तक का साक्षात्कार किया हो। श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान स्वलीला अद्वैत परमधाम से आया है। श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई इसे कह ही नहीं सकता। संसार के जीव तो इसे कहने में पूर्णतया असमर्थ हैं।

भावार्थ— जलकर मर जाना एक मुहाविरा है जिसका अर्थ है— पूर्णरूपेण इस प्रकार असमर्थ होना, कि अपना अस्तित्व ही संकट में पड़ जाय। यद्यपि, संसार के जीव साहित्यिक ज्ञान में बहुत आगे हैं किन्तु परमधाम की शोभा एवं स्वरूप के ज्ञान में बाल बुद्धि भी नहीं रखते।

**ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन।
पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन॥२७॥**

जीव सृष्टि के जो भी मनुष्य हैं, उनके मिथ्या हृदय में अज्ञान रूपी शैतान का निवास है, जिसके भ्रमित करने के कारण वे निराकार मोहसागर को ही परमात्मा मानकर उसकी भक्ति करते हैं। भला उनसे श्री कुलजुम स्वरूप का अलौकिक ज्ञान कैसे सुना जा सकेगा?

भावार्थ— कूर्आन के गुह्य भेद श्री कुलजुम स्वरूप में निहित हैं, इसलिये उपरोक्त चौपाई में कथित 'फुरकान' का आशय श्री कुलजुम स्वरूप से है।

**हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब॥२८॥**

जब इस संसार के लोगों को एक सच्चिदानन्द परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी, ब्रह्मसृष्टियों तथा श्री कुलजुम स्वरूप की यथार्थ पहचान हो जायेगी, तो एक चौथाई पल में ही यह पता चल जायेगा कि सत्य क्या है और झूठ क्या है?

भावार्थ— तारतम्य ज्ञान के प्रकाश में संसार के लोगों को यह पता चल जायेगा कि स्वलीला अद्वैत परब्रह्म या परमधाम इस नश्वर जगत में ओत-प्रोत व्यापक नहीं है, अपितु इससे परे हैं। जो एक परब्रह्म के प्रति अटूट निष्ठा एवं श्रद्धा से प्रेम करेंगे, वे ब्रह्मसृष्टि होंगे तथा जड़ पदार्थों और काल्पनिक देवी-देवताओं की पूजा करने वाले एवं नास्तिक विचार धारा को मानने वाले जीव होंगे। इसे ही सत्य एवं झूठ का अलग-अलग होना कहा गया है।

ए सब पैदा महंमद के नूर से, अक्वल आखिर सोई नूर।

एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर ॥२९॥

यह समस्त सृष्टि अक्षर ब्रह्म के आदेश (मुहम्मद के नूर) से बनी है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाप्रलय तक अक्षर ब्रह्म का आदेश ही सब कुछ कर रहा है। उसके आदेश के बिना इस सृष्टि का एक पल भी नहीं बीता है। संसार के जीवों को इस रहस्य का पता तब चलेगा, जब सबको एक परब्रह्म की पहचान होगी।

सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर।

झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर ॥३०॥

कियामत की इस घड़ी में परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को ही यह शोभा है कि वे श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को प्रकाशित करेंगे, जिसके परिणाम स्वरूप रात्रि रूपी अज्ञानता का अन्धकार मिट जायेगा तथा सभी को अखण्ड परमधाम के सूर्य रूपी सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान हो जायेगी।

सब की जुबांसे महंमद, सब पर करसी हिदायत।

एसुकन लिखे सब किताबों, पर क्योँ समझे दम गफलत ॥३१॥

उस समय सबकी जिह्वा पर एकमात्र श्री प्राणनाथ जी का ही नाम होगा तथा वे सब को अपने अनुपम ज्ञान के द्वारा दिशा निर्देश देंगे। यह बात सभी धर्मग्रन्थों में लिखी हुई है, किन्तु निराकार से पैदा हुई जीव सृष्टि इस रहस्य को नहीं समझ पाती है।

भावार्थ- यह प्रसंग पुराण संहिता, बृहत्सदाशिव संहिता तथा बुद्ध गीता में वर्णित है। कुर्आन के सि. २६ हामीम, सूर: फत्ह ४८ आयत ८ “इन्ना अर्सलनाक शाहिदं व मुबशिशरं व नजीरल” हमने (मुहम्मद) आपको हक जाहिर करने वाला और खुशखबरी सुनाने वाला एवं खौफ दिलाने वाला बनाकर भेजा है।

यथा: पार: १६ सूर: १६ मर्यम आयत १ “काफ् हा या ऐन् साद्” तफ्सीरे हुसैनी जिल्द दोवम पन्ना नं. ६ और १० सूर: मर्यम की तफ्सीर में बयान है कि इलाही में मजकूर है कि रसूल मुहब्बे सुपियान अकरम की तीन सूरते हैं। एक सूरत बसरी जैसा कि हक तआला ने फुर्माया, कि ऐ मुहम्मद! स. सिवाय इसके नहीं की मैं भी बशर हूँ तुम्हारी तरह। दूसरी मलायकी जैसा खुद हजरत ने फर्माया बेशक मैं नहीं हूँ। तुम में से किसी किं मिसल। मैं रहता हूँ अपने रब के पास। वह खिलाता है मुझे और पिलाता है मुझको और तीसरी हकीकी जैसा कि खुद आपने फर्माया मेरे वास्ते अल्लाह के साथ एक वक्त है। इससे भी खुली हुई ये हदीस है

जिसने मुझे देखा उसने हक देखा और हजरत ने हक तअला को हर सूरत में जनाब रसूले अकरम स. के साथ कलाम और हैं। हदीस में “अव्वल मा खल्कुल्लाह नूरी” अर्थात् मैं अल्लाह के नूर से हूँ और “नूर अनामिनल्लाह व कुल शैअ मिन्नूरी” अर्थात् मैं अल्लाह के नूर से हूँ और तमाम दुनिया मेरे नूर से है। या अव्वल तो मुहम्मद व औसतनो महम्मद व आखिर तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि वसल्लम।

अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम।

हकें मासूक कहा महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम।।३२।।

कुर्आन के इस कथन को सम्पूर्ण मुस्लिम जगत जानता है, कि प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त में मुहम्मद (हुक्म) की ही लीला रही है। श्री राज जी ने मुहम्मद को अपना माशूक क्यों कहा है, इसे संसार की जीव सृष्टि भला कैसे जान सकती है?

पा. २६ सू. ४६ हुजुरात आयत २८-२९ “हुवल्लजी अर्सल रसूलह विल्हुदा व दीनिल् - हक्क लियज्हरह अलद्दीनि कुल्लि व कफा विल्लाहि शहीदा (२८) मुहम्मदुर् - रसूलुल्लाहि वल्लजीन मअह अशिद्दाअु अलल् - कुप्फारि रुहमाअु बैनहुम् तराहुम् रुक्कअन् सुज्जदय्यब्तगून फज़ल् - मिनल्लाहि व रिज्वानन् सीमाहुम् फी वुजूहिहिम् मिन् असरिस्सुजूदि जालिक मसलुहुम् फित्तौराति व मसलुहुम् फिल्इन्जीलि कजरून् अखूरज शत्अह फआजरह फस्तगूलज फस्तवा अला सूकिही युऽजिबुज् - जुर्राअ लियगीज बिहिमुल् - कुप्फार वअदल्लाहुल् - लजीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़फिरतंव्व अज़रन् अजीमन् (२९)” अर्थात् वही (अल्लाह) है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत (कुरआन) और सच्चा दीन (इस्लाम) देकर भेजा ताकि उस को तमाम दीनों पर गालिब करे और हक (सत्य) जाहिर करने में खुदा ही काफी है। मुहम्मद खुदा के पैगम्बर है और जो लोग उनके साथ हैं वे काफिरों के हक में बड़े सख्त हैं और आपस में रहमदिल हैं। तू उन्हें रुकूअ और सज्दः करते देखेगा कि अल्लाह की कृपा और उसकी खुशी चाह रहे हैं। उनकी पहचान यह है कि सज्दे के निशान उनके उनके मार्थें पर हैं, यही लक्षण उनके तौरात में और यही लक्षण उनके इंजील में लिखे हैं, कि गोया (ईमानवाले) एक खेती है कि उसने अपना कल्ला निकाला और उसे मजबूत किया फिर मोटी हुई, आखिरकार अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गई और खेती वालों को खुश करने लगी ताकि काफिरों का जी जलाये। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे अल्लाह ने क्षमा का और बड़े अज़्र (बदले) का वादा किया है।

पा. २२ सू. ३६ आ. १-३-४ “या सीन् (१) वल्कुरआनिल् हकीमि (२) इन्क लमिनल्-मुर्सलीन (३)” या सीन (ऐ सरदार या मुहम्मद) हिकमत वाले कुर्आन की कस्म, ऐ

मुहम्मद बेशक आप पैगबरों में से हैं। “अला सिरातिम मुस्तकीम” (४) अर्थात् और आप सीधे राह पर हैं।

पा. २७ सू. ५३ आयत २-४ “मा जल्ल साहिबुकुम् व मा गवा(२) इन् हुव इल्ला वहुयुयूहा”(४) अर्थात् कि आपके साथी (मुहम्मद) राह भूले भटके नहीं हैं। नेहायत ताकतवर (जिब्रील) ने उसे सिखाया है।

आयत ८ “सुम्म दना फतदल्ला” अर्थात् वह नजदीक और बड़ा।

आयत ९ “फकान काब कौसैनि औ अदना” अर्थात् फिर दो कमान के फासले पर या उस से भी कम फर्क रह गया।

आ. १३ “व लकद् रआहु नज़लतन् उखरा” अर्थात् और यह कोई झगड़ने की चीज नहीं है। रसूल स. ने उसको एक बार फिर देखा है। तपसीरे हुसैनी जिल्द दोवम पन्ना नं. ४५६ सूरः नज़्म की तपसीर में लिखा है जबराईल उस काम पर सख्ती के साथ कायम हो गये जिस पर मासूम थे या अपनी असली सूरत पर ठहरे और वो आसमान के ऊँचे किनारे पर था, यानि मतला-ए-आफताव के करीब यहाँ तक की रसूल ने उनको देखा और रसूल मकबूल के सिवा हजरत जबराईल को किसी ने सूरत हकी पर नहीं देखा और आपने उनको दो बार देखा है। पहली बार असली सूरत पर देखा तो बेहोश हो गये और जब आप होश में आये तो हजरत जबराईल को अपने करीब देखा, कि एक हाथ आप सीना-ए-मुबारिक पर, और दूसरा आपके सीना पर रखे हुये थे। हक तआला इसी बात से खबर देता है कि फिर नजदीक आए जबराईल पैगंबर के बाद इसके आप जबराईल को देखकर बेहोश हो गये। फिर सिर झुकाया हजरत से बात करने को तो था फर्क जबराईल और मुहम्मद स. के दरमियान दो कमानों के दरमियान का था कि उससे भी बहुत कम फिर वही चीज जबराईल ने और जाहेर कर दिया खुदा के बन्दे की तरफ की मुहम्मद सल्ल. है जो कुछ वही की खुदा ने यानि जबराईल से कहा और बाजों के कौल पर बाजों जमीरें हक तआला की तरफ फिरती है। और बाजों मुहम्मद सल्ल. के तरफ इस तरह पर कि (हक) नजदीक हुए। मुहम्मद स. के साथ यानि कुमुक दरगाहें इलाही तह मर्तबा में मकान में नहीं। फिर फिरोतनी की यानि खिदमत का सिजदा सिखाया था, तो दोबारा ज्यादा खिदमत अदा की, और सिज्दें में कर्ब का वायदा भी है कि और मकान का बकोशिन जो अदना बनाया है ताकीद कुर्बत और तकरीरं मुहब्बत से पेश से करीब तो जाने के वास्ते तमसिल की सूरत में अदा हुआ इस वास्ते।

यह परमधाम में मुहम्मद स. के नूरी स्वरूप में हक के खबरू होकर दीदार ए हक और अपने स्वरूप की तीन लीलाओं की क्रिया है।

**जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम।
सोबात समझेहकअर्सकी, जिनदिलपरलिख्याबिनाकलम॥३३॥**

परमधाम की जिन ब्रह्मात्माओं को श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वे ही परमधाम तथा श्री राज जी की अलौकिक बातों को समझती हैं, क्योंकि परमधाम के मूल सम्बन्ध से इनके हृदय में वहां की शोभा एवं लीला की आभा सूक्ष्म रूप से अंकित होती है।

भावार्थ— बिना कलम के लिखा जाना एक मुहाविरा है जिसका आशय है— बताने से पहले ही जान लेना अर्थात् परमधाम की ब्रह्मसृष्टि के हृदय में परमधाम के प्रेम, परब्रह्म के प्रति निष्ठा, कोमलता, समर्पण आदि गुणों के संस्कार स्वाभाविक रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। जब वह प्रारम्भ में श्री राज जी या परमधाम के विषय में सामान्य सी ज्ञान-चर्चा सुनती है तो उसे ऐसा लगता है कि मैं पहले कुछ ऐसा देख चुकी हूँ। उसे इनसे एक विचित्र प्रकार के अपनापन का आभास होता है तथा परमधाम की शोभा एवं लीला सम्बन्धी गुह्य रहस्यों को बहुत सरलता से समझ जाती है, जबकि जीव सृष्टि के दिग्गज विद्वानों को वह काल्पनिक लगती है।

**और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे॥३४॥**

स्वप्न के जीवों के मिथ्या दिल को प्रेम से रहित होने के कारण मात्र मांस का टुकड़ा ही कहा जाता है। ऐसे मिथ्या दिल वाले जीव अंधे, बहरे व मुर्दे कहे जाते हैं अर्थात् अन्तर्दृष्टि न होने से न तो इन्हें श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान होती है, न इन्हें तारतम्य ज्ञान सुनायी जड़ता है और न इनमें प्रियतम परब्रह्म से प्रेम करने की भावना पैदा होती है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि ये श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान को सुनेंगे ही क्यों? जब ये परमधाम के ज्ञान को आत्मसात् ही नहीं करेंगे तो कहेंगे भी क्या?

**दिल मोमिन अर्स कहा, उतरे भी अर्स से।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में॥३५॥**

ब्रह्मात्माओं के हृदय को धाम कहा जाता है। ये परमधाम से अवतरित भी हुये हैं। इनके हृदय में मारिफत की दृष्टि से श्री राज जी विराजमान होते हैं। इनकी महिमा को जिह्वा से व्यक्त नहीं किया जा सकता।

**कह्या दुनी निकाह अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास॥३६॥**

आदि आदम (मनु) से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण मानव जाति निराकार को ही परमात्मा मानकर पूजा करती है। ऐसा करने में वह अपना सम्मान समझती है। इसलिये कुरान

में सम्पूर्ण जीव सृष्टि को अज्ञान रूपी शैतान से विवाह होना कहा गया है। यही कारण है कि मिथ्या दिल वाले ये जीव अज्ञान लेकर ही पैदा होते हैं।

**कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन॥३७॥**

श्री राज जी के नूर से श्री श्यामा जी हैं अर्थात् श्री श्यामा जी, राज जी की अंगरूपा हैं। इसी प्रकार, सभी ब्रह्मात्माएं श्री श्यामा जी की अंगरूपा हैं। परमधाम में श्री राज जी, श्री श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं का स्वरूप एकत्व (वहदत) में है। अर्थात् एकमात्र श्री राज जी का हृदय ही सभी रूपों में क्रीड़ा कर रहा है। इस एकत्व के स्वरूप में कालमाया या योगमाया का कोई अन्य स्वरूप मिल नहीं सकता।

“अव्वल मा खल्कुल्लाह नूरी” अर्थात् मैं अल्लाह के नूर से हूँ। “नूर अनामिनल्लाह व कुल शैअमिन्नूरी” मैं अल्लाह के नूर से तथा तमाम संसार मेरे नूर से हैं।

**कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर।
नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर॥३८॥**

मुहम्मद स. के तिहत्तर फिरके (पंथ) कहे गये हैं, जिसमें एक को ही अखण्ड सुख प्राप्त करने वाला कहा गया है और शेष बहत्तर फिरकों को दोजक में जाने वाला कहा गया है। इस नाजी फिरके (निजानन्द सम्प्रदाय) को ही श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परब्रह्म का निर्देश प्राप्त होता है, जिसके परिणाम स्वरूप वह परमधाम के सत्यमार्ग का अनुगामी होता है।

भावार्थ- चौपाई के उक्त कथन में तिहत्तर फिरकों का तात्पर्य विश्व के सम्पूर्ण सम्प्रदायों से है। ऐसा नहीं मानना चाहिये कि श्री प्राणनाथ जी के अनुयायियों में भी तिहत्तर फिरके हो जाएंगे। इतना अवश्य हो सकता है कि किसी सिद्धान्त पर अनेक मत हो सकते हैं, किन्तु श्री कुलजुम स्वरूप का चिन्तन करने वाला तथा एक अक्षरातीत के प्रति निष्ठा रखने वाला किसी भी अवस्था में दोजक में नहीं जाएगा।

**बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए । सनंध 21/47
जाको मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक ॥ श्रृंगार 1/43**

का कथन यही सिद्ध करता है।

**और तफरका भाए, चले कौल तोड़ कर।
दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर॥३९॥**

मुहम्मद साहब के कथनों को यथार्थ रूप में न मानने से ७२ फिरकें के आपस में लड़-झगड़ कर अलग हो गये। अज्ञान रूपी इब्लीश ने इन्हें अपने अधीन कर शरीयत से बांध

दिया। इस प्रकार इन फिरकों के अनुयायी परब्रह्म की छत्रछाया से दूर होने के कारण दोजक के कष्ट को प्राप्त हुए।

भावार्थ— भले ही ७२ फिरकों के अनुयायी मुहम्मद स. के कथनों का यथार्थता से पालन नहीं करते हो किन्तु वे अपना पथ प्रदर्शक उन्हीं को मानते हैं। जब मनुष्य पर स्वार्थ और अहंकार हावी हो जाते हैं तो वह अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुनना बन्द कर देता है तथा पद प्रतिष्ठा के लोभ में झूठ और पक्षपात के कीचड़ में धंस जाता है। यहीं से नये-नये फिरकों का जन्म होना प्रारम्भ होता है।

मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन।

सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन॥४०॥

अब से पहले मात्र मुहम्मद स. को ही परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ था। अन्य कोई भी महापुरुष यह सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका था। कियामत के समय में अहमद रूहुल्लाह सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा मुहंमद रूहुल्लाह श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्ममुनियों को चितवनी का मार्ग बताकर परमधाम तथा अक्षरातीत श्री राज श्यामा जी के दर्शन करने का द्वार खोल दिया अर्थात् स्वर्णिम अवसर प्रदान किया।

खूबियां आखिर बखत की, किन मुख कही न जाए।

खूबी कहिए तिन की, जो सब्द माहें समाए॥४१॥

कियामत का यह ऐसा सुनहरा समय है, जिसमें सबके लिये प्रियतम अक्षरातीत के दर्शन का द्वार खुला हुआ है। इसकी विशेषताओं का वर्णन किसी भी मुख से नहीं हो सकता। वर्णन तो तब हो, जब शब्दों में उसे बांधा जा सके। जो विशेषता शब्दातीत हो, उसे कैसे कहा जाय?

अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर।

पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर॥४२॥

यद्यपि, इसके पूर्व सैयद एवं पैगम्बर कहलाने वालों की बड़ी महिमा रही है, किन्तु कियामत के इस समय में श्री जी के साथ ब्रह्ममुनियों का जो समूह आया है, उनकी किसी से भी (पैगम्बरों तथा सैयदों से) तुलना नहीं हो सकती है, क्योंकि ब्रह्ममुनि परब्रह्म के साक्षात् अंगरूप हैं।

**लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द।
क्या समझें अब्बल कतार जो, दुनी बांधी जाए माहें हद ॥४३॥**

कुर्आन में गुह्य शब्दों के अर्थ संकेतों में लिखे हुए हैं, किन्तु मलकूत-निराकार को ही अपना लक्ष्य मानने वाली यह जीव सृष्टि जो शरीयत का अनुसरण करती है। उन रहस्यों को कैसे समझ सकती है?

**रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले।
आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के ॥४४॥**

कुर्आन में लिखा है कि परब्रह्म के आदेश से श्री देवचन्द्र जी (रूहुल्लाहु) तारतम ज्ञान से जागृत करेंगे (मुर्दों को जीवित करेंगे)। कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी के ब्रह्ममुनि अपने प्राणेश्वर के आदेश से श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान द्वारा सबको जागृत करेंगे।

भावार्थ- ब्रह्ममुनि अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत के प्रति पूर्णतया समर्पित होते हैं, अतः उनके प्रेम में वे अपने अस्तित्व को समाप्त कर देते हैं। श्रृंगार २६/२६ में कहा गया है कि

सो तो दिया में तुमको, सो खुले ना बिन तुम ।

जो मेरी सुध दयो औरों को, तित चले तुम्हारा हुकम ॥

ब्रह्ममुनि परब्रह्म के अंगरूप हैं और आध्यात्मिक दृष्टि से उनका आदेश चलेगा, किन्तु वे इसे परब्रह्म का ही हुकम मानेंगे। अगली चौपाई में भी यही प्रसंग है।

**इन विध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा।
सब बोले फना में रात को, किया उमते फजर बका ॥४५॥**

कुर्आन में इस प्रकार स्पष्ट रूप से लिखा है किन्तु संसार के लोग उसकी यथार्थता को नहीं समझ पाते हैं। अज्ञानता के अन्धकार में फंसे होने के कारण इनका ज्ञान बैकुण्ठ (मलकूत) और निराकार से आगे नहीं जा पाता। ब्रह्मसृष्टियों ने श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा परमधाम का ज्ञान फैलाकर अज्ञानता की रात्रि का अन्धकार मिटा दिया है जिससे अब चारों ओर सत्य का प्रकाश फैल गया है (प्रातःकाल हो गया है)।

**जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर।
सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर ॥४६॥**

कुर्आन-हदीसों में औलियों, अंबियों, तथा पैगम्बरों आदि की जो महिमा लिखी गयी है वह कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी एवं उनके अनुगामी ब्रह्मात्माओं की ही महिमा है।

ब्रह्मात्माओं के अनुपम आचरण (रहनी) के आधार पर ही औलिए, अंबिए आदि नाम रखे गये हैं।

अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का।

खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या।।४७।।

बशरी सूरत (मुहम्मद स.) ने परमधाम का जो संक्षिप्त ज्ञान प्रकट किया था वह उस समय से लेकर कियामत के आखिरी समय श्री प्राणनाथ जी तक बढ़ता ही रहा। इस प्रकार पहली हिजरी से लेकर १२ वीं सदी तक मुहम्मद की तीनों सूरतों के द्वारा परमधाम के ज्ञान का विस्तार होता रहा, शून्यता नहीं रही। ऐसा कुर्आन एवं हदीसों में लिखा है।

भावार्थ- पार: १६ सूर: १६ मर्यम आयत १ “काफ़ हा या ऐन् साद्” तफ्सीरे हुसैनी जिल्द दोवम पन्ना नं. ६ और १० सूर: मर्यम की तफ्सीर में बयान है कि इलाही में मजकूर है कि रसूल मुहब्बे सुफ़ियान अकरम की तीन सूरते हैं। एक सूरत बसरी जैसा कि हक़ तआला ने फर्माया, कि ऐ मुहम्मद! स. सिवाय इसके नहीं की मैं भी बशर हूँ तुम्हारी तरह। दूसरी मलायकी जैसा खुद हजरत ने फर्माया बेशक मैं नहीं हूँ। तुम में से किसी किं मिसल। मैं रहता हूँ अपने रब के पास। वह खिलाता है मुझे और पिलाता है मुझको और तीसरी हकीकी जैसा कि खुद आपने फुर्माया मेरे वास्ते अल्लाह के साथ एक वक़्त है इससे भी खुली हुई ये हदीस है जिसने मुझे देखा उसने हक़ देखा और हजरत ने हक़ तआला को हर सूरत में जनाब रसूले अकरम स. के साथ कलाम और हैं। अर्थात् मुहम्मद मुस्तफा रसूल अल्लाह अहमदहुल्लाह, मेहमत हुज्जतुल्लाह बकेतुल्लाह इमाम अल् मुतंजर, अल् कायमव इमामे अम्र या साहिबुज्जमाँ,

यद्यपि, मुहम्मद साहब (महम्मद मुस्तफा स. अहमद सहुल्लाह मेहमत साहिबुज्जमाँ) के अन्तर्धान के पश्चात् १० वीं सदी तक शरीयत का ही साम्राज्य रहा फिर भी परमधाम और बेहद की बहिश्तों की चर्चा होती रही। इसे ही मुहम्मद स. के ज्ञान का निरन्तर अस्तित्व में बने रहना कहा गया है।

पार: ६ कालत्मलउ सूरतुल अन्फालि ६ आयत २४ “या अय्युहल्लजीन आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्सूलि इजा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वऽलमू अन्नल्लाह यहूलु बैनल्मरूइ व कल्बिही व अन्नह इलैहि तुहशरून” अर्थात् ऐ ईमान वालों! तुम मोमिनों, खुदा और उसके रसूल (मुहम्मद स.) का हुक्म कुबूल करो जबकि खुदा के रसूल आपको ऐसे काम के लिए पुकारते हैं। जिससे आपको जिंदगी प्रदान होती है। संज्ञान रखिए। खुदा आदमी और उसके दिल का हाल ही जानता है। जबकि आप सभी उसके सम्मुख प्रस्तुत किये जाएंगे।

**ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कहा जिनका दिल अर्स।
आखिर सोई नजीकी मोमिन, जो अर्स मता के वारस॥४८॥**

जिन ब्रह्ममुनियों का हृदय अक्षरातीत का धाम होता है वे ही अपनी महिमा को अपने आचरण के द्वारा कियामत के समय प्रकट करेंगे। वे ही श्री राज जी के निकटस्थ होंगे और परमधाम की प्रेम, ज्ञान, आनन्द तथा एकत्व आदि निधियों को पाने का अधिकार भी इन्हीं को ही है।

**मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन।
कहा रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन॥४९॥**

ब्रह्ममुनि परमधाम से आये हैं। श्री राज जी ने मूल मिलावे में ही इश्क-रब्द के समय इनसे कहा था कि तुम्हें साक्षी देने के लिये मुहम्मद स. कुर्आन लेकर आयेंगे और तुम्हें माया से सावधान करेंगे।

**और भेजोंगा फुरमान, सब इतकी हकीकत।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत॥५०॥**

मैं परमधाम की वास्तविकता को दर्शाने के लिये तुम्हारे पास कुर्आन भेजूंगा जिसमें संकेतों में गुह्य बातें होगी। श्यामा जी के दूसरे तन से तुम्हें परमधाम की पूर्ण पहचान मिलेगी।

**दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझसे निसबत॥५१॥**

यह सारा संसार मेरे 'कुंन' कहने से उत्पन्न हुआ है। संसार के जीव मोह सागर (निराकार) से प्रकट हुए हैं। तुम परमधाम की ब्रह्मांगना हो। तुम्हारा एवं श्यामा जी का मुझसे अनादि काल का अखण्ड सम्बन्ध है। इसलिये तुम संसार के जीवों में न मिलो।

**तुम आपमें रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए॥५२॥**

हे साथ जी! तुम मेरी इन बातों को भूलना नहीं कि तुमने मुझसे माया का खेल देखने की इच्छा की थी जिसके लिये तुम्हें आपस में साक्षी रहना होगा तथा ईश्वरीय सृष्टि भी साक्षी रहेगी। मैं भी इसके लिये अपनी साक्षी देता हूँ।

**याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी।
इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की॥५३॥**

तुम मायावी जगत में जाकर अपने परमधाम को याद करना। इसके अतिरिक्त मुझे और श्यामा जी अपने अखण्ड सम्बन्ध को अपनी स्मृति में बसाये रखना। मैं तुम्हें जागृत करने के लिये तारतम ज्ञान (कुलजुम स्वरूप) भेजूंगा जिससे तुम्हें नाममात्र भी संशय न रह जाय।

**खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर।
जिन मिल जाओ तिनमें, ओ तुम नहीं बराबर॥५४॥**

माया का यह खेल मात्र तुम्हारे लिये ही बनाया गया है। यह जादू के खेल की भांति झूठा है अर्थात् महाप्रलय में लय हो जाने वाला है। संसार के जीव जादू के कबूतरों की भांति है। तुम उनमें मिल नहीं जाना। वे तुम्हारे बराबर नहीं हैं।

भावार्थ- जीवों में न मिलने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार संसार के जीव परमात्मा से मुख फेर कर केवल विषय सुखों को ही अपने जीवन का ध्येय बना लेते हैं, तुम भी वैसा ही न करना।

**हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए।
तुम बका करोगे दम खेल के, पर सकोगे न आप उठाए॥५५॥**

परमधाम में जागृत होने पर तुम्हारी इस बात की हंसी होगी कि संसार में मेरा तारतम ज्ञान तुम्हें जागृत करेगा। तुम उस ज्ञान के द्वारा संसार के जीवों को तो अखण्ड मुक्ति दे दोगे, किन्तु जब तक खेल चलता रहेगा, तब तक तुम अपनी परात्म में स्वयं ही जागृत नहीं हो पाओगे।

**ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार।
तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार॥५६॥**

अब मैं तुम्हें माया का ऐसा खेल दिखाऊंगा जिसमें तुम सब कुछ ही भूल जाओगी। तुम इस बात के लिये सावचेत हो जाओ कि न तो तुम्हें स्वयं को भूलना है न परमधाम को और न मुझे। यह तुम सर्वदा याद रखों कि मैं तुम्हारा एक मात्र प्राण प्रियतम हूँ।

**हम कबू न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़ें नहीं एक दम॥५७॥**

यह सुनकर ब्रह्मात्माओं ने कहा था कि प्राणेश्वर! हम आपको कभी भी नहीं भूलेंगी। हम यहां पर ही आपके चरणों को पकड़ कर बैठ जायेंगी, जिससे कि हमारा कभी भी वियोग न हो। हम आपसे इस प्रकार प्रेम करती हैं, कि हम आपको मायावी जगत में एक पल के लिये भी नहीं छोड़ेंगी।

**तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक॥५८॥**

प्रियेश्वर! आप तो हमारे प्रेमास्पद हैं और हमारा आपके प्रति अथाह प्रेम है अर्थात् हम आपके प्रेमी (आशिक) हैं। जब आप हमें अपना संशय रहित करने वाला तारतम ज्ञान दे देंगे, तो यह कैसे सम्भव है कि हम आपको भूल जाय।

**ए तो बड़ी हाँसी कोई खेल में, जो ऐसी होए हमसे।
मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें॥५९॥**

ऐसा लगता है कि उस मायावी जगत में हमसे कोई ऐसी भूल होने वाली है, जिसकी परमधाम में बड़ी हंसी होगी। इस समय श्री राज जी हमसे जो बातें कह रहे हैं, आप उसकी साक्षी देने के लिए अवश्य तैयार रहना।

**लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर।
अकल न पोहोंचे इनोंकी, सो भी लिख्या लिखन हारे योंकर॥६०॥**

धर्म ग्रन्थों (कुरान एवं पुराण संहिता) में इस प्रकार स्पष्ट रूप से लिखा है, फिर भी माया के जीव इसे समझ नहीं पाते। इन ग्रन्थों को लिखने वालों ने तो यह भी लिख दिया है, कि संसार के जीवों की बुद्धि प्रेम संवाद के इस तथ्य को ग्रहण ही नहीं कर सकती।

**सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का।
रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका॥६१॥**

धर्म ग्रन्थों में महापुरुषों की महिमा में जो परमहंस, ब्रह्ममुनि, मोमिन आदि शब्द लिखे गये हैं, वे सभी क्यामत के समय में प्रकट होने वाली आत्माओं के लिए हैं। अज्ञानता के अंधकार में जो धर्म ग्रन्थ बने वे सभी निराकार तक का ही वर्णन करते हैं, जबकि क्यामत के समय में अवतरित श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान अखण्ड परमधाम का है और अज्ञानता की रात्रि को हटाकर दिव्य ज्ञान का प्रकाश करता है।

**सो ए बड़ाई सब उमत की, जो कही महंमद की आखिर।
वह खावंद कहे खेल के, ए खेल के कबूतर॥६२॥**

धर्मग्रन्थों में लिखी हुयी यह सारी महिमा श्री प्राणनाथ जी की सानिध्यता में रहने वाले उन ब्रह्ममुनियों की है, जो कियामत के समय में अवतरित हुये हैं। ये ब्रह्ममुनि इस खेल के स्वामी कहे गये हैं, जबकि संसार के लोग अदृश्य हो जाने वाले खेल के कबूतरों की भांति महाप्रलय में लय हो जाने वाले हैं।

**एता फरक कहा जाहेर, तो भी करें इनकी सरभर।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर॥६३॥**

इस प्रकार ब्रह्मसृष्टियों में और जीवों में प्रत्यक्ष रूप से अंतर बताया गया है, फिर भी संसार के जीव ब्रह्मसृष्टियों से अपनी तुलना करते हैं। एक मरे हुये तथा एक जीवित व्यक्ति में जो अंतर होता है इतना ही अंतर जीवसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि में होता है। जब जीवों के पास परमतत्व को समझने की बुद्धि ही नहीं है तो वे क्या करें?

**फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर।
एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर॥६४॥**

कियामत के आने से पहले जब तक तारतम ज्ञान अवतरित नहीं हुआ था, तब तक किसी को भी यह ज्ञान नहीं था कि मुहम्मद स. जो कुरान लाये हैं, वह किसके लिये लाये हैं?

**बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान।
बड़े उलमा आरिफ कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान॥६५॥**

मुहम्मद साहेब के द्वारा कुरान का अवतरण किये हुये ग्यारह सौ वर्ष व्यतीत हो गये थे किन्तु तारतम ज्ञान के अवतरण से पहले भले ही कुरान के बड़े-बड़े ज्ञानी-विद्वान हो गये किन्तु कोई भी उसमें परमधाम के छिपे हुए सत्य को जान नहीं सका था।

**पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत॥६६॥**

अब प्रश्न यह होता है कि तारम ज्ञान के प्रकाश में कुरान को अब कौन पढ़ेगा तथा उसकी वास्तविकता को कौन ग्रहण करेगा? कुरान के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करके सच्चिदानन्द परब्रह्म की पूर्ण पहचान कौन करेगा?

**जोलों फुरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादी ने॥६७॥**

जब तक श्री कुलजुम स्वरूप के प्रकाश में कुरान के छिपे हुये गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण नहीं होता है, तब तक सबके अन्दर संशय रूपी अज्ञानता का अंधकार बना ही रहेगा। जब श्री प्राणनाथ जी स्वयं कुरान के गुह्य भेदों को स्पष्ट कर देंगे, तो अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो जायेगा और परमधाम का दिव्य ज्ञान फैल जाने से प्रातःकाल हो जायेगा।

**कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका॥६८॥**

मुहम्मद स. के वचनों को न मानकर बहुत से लोग अलग-अलग फिरकों में बंट गये हैं। इलमे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) से सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी इस अलगाव वाद को समाप्त करेंगे। जब श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा अखण्ड परमधाम के ज्ञान का उजाला हो जाएगा तब सारे संसार में एक सत्यधर्म की स्थापना होगी।

**ए अब्बल कहा महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल॥६९॥**

मुहम्मद स. ने कुरान में पहले ही कह दिया था, कि क्यामत के समय में ईसा रूहअल्लाह (श्री श्यामा जी) आएंगे और तारतम ज्ञान के द्वारा अज्ञान रूपी दज्जाल को नष्ट कर देंगे। वे तारतम ज्ञान के प्रकाश में चितवनी के द्वारा सबको श्री राज जी का दर्शन करायेंगे। इस प्रकार सबके हृदय निर्मल हो जाएंगे।

भावार्थ- पारः ७ सूरतुल अनआमि ६ आयत ३८ “व मा मिन् दाब्बतिन् फिल्अर्जि व ला ताइरिंयतीरु बिजनाहैहि इल्ला अुममुन् अमूसालुकुम् मा फरत्तना फिल् - किताबि मिन् शैइन् सुम्म इला रब्बिहिम् युहूशरून” अर्थात् आकाश और जमीन में चलने-फिरने वाला या दो पंखों से उड़ने वाला जानवर है, उसके भी आपके समान साथी है। हमने किताब में किसी चीज के लिखने की कौताही नहीं की है। पुनः सभी अपने परवरदिगार के सम्मुख (जमा) एकट्ठा किये जाएंगे।

पारः २ सूरः २ आयत १६४ “इन्न फी खल्किस्समावाति वल्अर्जि वख्रतिलाफिल्लैलि वन्नहारि वल्फुल्किल्लती तजूरी फिल्बहरि बिमा यन्फअुन्नास व मा अन्नलल्लाहु मिनस्समाइ मिम्माइन् फ अह्या बिहिल्अर्ज बऽद मौतिहा व बस्स फीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् टव तसूरीफिरियाहि वस्सहाबिल् - मुसख्खरि बैनस्समाइ वल्अर्जि ल आयातिल्-

लिकौमिय्यऽकिलून” अर्थात् बेशक आसमान और जमीन के पैदा करने में, और रात और दिन के आने-जाने में, और कश्तियों में जो लोगों के फायदे की चीजें समुद्र में लेकर चलती है, और मेह में जिसको अल्लाह ने आकाश से बरसाया है, फिर उसके जरिए जमीन को उसके मरे (उजड़े) पीछे, जिन्दः किया (लहलहाया) है, और उसमें हर किस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं के फेरने में, और बादल में जो अल्लाह के हुक्म से आकाश और धरती के बीच काम में लगे हैं- इन सब में उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं अल्लाह की कुदरत की निशानियाँ है।

पारः ८ सूरः ६ आयत १५८ “हल् यन्जुरून इल्ला अन् तअत्तिय-हुमुल्-मलाइकतु औ यअत्तिय रब्बुक औ यअत्तिय बऽजु आयाति रब्बिक यौम यअत्ती बऽजु आयाति रब्बिक ला यन्फअु नफ्सन् औमानुहा लम् तकुन् आमनत् मिन् कब्रु औ कसबत् फी औमानिहा खैरन् कुलिनूतजिरु इन्ना मुन्तजिरुन” अर्थात् यह लोग क्या इसी बात की राह देख रहे हैं कि फरिश्ते इनके पास आयें, या तुम्हारा पालनकर्ता इनके पास आये, या तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार जाहिर होगा तो जो शख्स उससे पहले ईमान नहीं लाया, या अपने ईमान में उसने कुछ नेकी न की थी, उसका अब ईमान लाना उसके कुछ भी काम न आयेगा। तो ऐ नबी! कहो कि राह देखो, हम भी राह देखते हैं। उस निशानी याने कियामत की जब तुमको सिवा अजाब भुगतने के और चारा न रह जायगा।

पारः ६ सूरः ४ निमा आयत १५८-१५९ “बर्रफअहुल्लाहु इलैहि व कानल्लहु अजीजन् हकीमन् (१५८) व इम्मिन् अह्लिल्-किताबि इल्ला ल युअ्मिनन्न बिही कब्ल मौतिही व यौमल् - कियामति यकूनु अलैहिम् शहीदन्”(१५९) अर्थात् बल्कि उनको खुदा ने अपनी तरफ उठा लिया और बेशक अल्लाह जबरदस्त और हिकमत वाला है। और जितने किताब वाले हैं जरूर उनके मरने से पहले सबके सब उन पर ईमान लावेंगे और कियामत के दिन (ईसा अ.) उनका गवाह होगा।

इमाम इमामत उमत की, करसी अर्स अजीम ऊपर।

ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर।७०॥

श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मसृष्टियों को चितवनी के द्वारा परमधाम के मूल मिलावे में विराजमान युगल स्वरूप के चरणों में अखण्ड प्रणाम करवाएंगे। कियामत की इस शुभ घड़ी में परमधाम के ज्ञान का प्रकाश पूर्णरूप से फैल जाएगा।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम का ज्ञान देकर उन्हें युगल स्वरूप की चितवनी में लगाना ही वास्तविक नेतृत्व करना है। इसे ही इमामत करना कहा गया है।

**जो अर्स से रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार ॥७१॥**

परमधाम से जो आत्माए इस संसार में अवतरित हुयी हैं, उसमें श्री श्यामा जी सबकी प्रमुख हैं। श्री राज जी ने परमधाम में उन्हें यह वचन दिया था, कि मैं तुम्हें साक्षी देने के लिए अपने संदेशवाहक को भेजूंगा।

**इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान ॥७२॥**

इस प्रकार कुरान में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी हुयी है, किन्तु आज दिन तक किसी ने इसका वर्णन नहीं किया। यह बात तो वे ब्रह्ममुनि ही बता सकते हैं जिनके लिए श्री राज जी ने अपना कुरान भेजा है।

**खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेहेंदी किताब।
एले इलम आखिरी हक का, महंमद मेहेंदी खोले किताब ॥७३॥**

मुहम्मद स. को आखिरी पैगम्बर कहलाने की शोभा मिली है। क्यामत के समय जागनी लीला के नेतृत्व की सम्पूर्ण शोभा श्री प्राणनाथ जी को है। वे श्री कुलजम् स्वरूप के चार ग्रन्थों खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार में वर्णित परमधाम के ज्ञान के आधार पर कुरान के गुह्य रहस्यों को प्रकट करेंगे।

**फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए ॥७४॥**

प्रियतम अक्षरातीत ने अपने संदेश वाहक मुहम्मद स. के हाथ से कुरान को संसार में अवतरित किया। यह कुरान वस्तुतः श्री श्यामा जी (श्री देवचन्द्र जी) की साक्षी देने के लिए आया। किन्तु किसी को भी इस रहस्य की जानकारी नहीं हो पायी।

**ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका।
एक नाजी बहत्तर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा ॥७५॥**

मुहम्मद स. ने पहले ही यह बात कह दी थी, कि मेरे अनुयायी मेरे वचनों का उल्लंघन करके ७३ फिरकों में बंट जाएंगे। जिसमें केवल एक ही फिरका परमधाम में अखण्ड

सुख के मार्ग पर चलेगा। शेष ७२ फिरके दोजक के मार्ग पर चलेंगे। किन्तु कोई भी इस रहस्य को समझ नहीं पाया।

**कौल सोई तोड़ेंगे, जिनों होसी मजाजी दिल।
होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कहा फिरसी फिरके मिल मिल। ॥७६॥**

जिनके दिल झूठे होंगे वे ही मुहम्मद स. के वचनों का उल्लंघन करेंगे। ये लोग संसार में अपने को बड़ा कहलाने की कामना से अलग-अलग फिरकों में बटेंगे। मुहम्मद स. ने यह भी कहा है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग मिलकर अलग-अलग फिरके (पंथ) बनाएंगे और अलग हो जाएंगे।

भावार्थ- पार: ४ सूर: ३ आयत १००-१०१ “या अय्युहल्लजीन आमनू इन् तुतीअू फरीकम् - मिनल्लजीन अतुल्लकिताब यरुद्दूकुम् बऽद ओमानिकुम् काफिरीन(१००) व कैफ तक्फुरून व अन्तुम् तुतूला अलैकुम् आयातुल्लाहि व फीकुम् रसूलुह व मय्यऽतसिम् बिल्लाहि फ कद् हुदिया इला सिरातिम्-मुस्तकीमिन्(१०१)” अर्थात् मोमिनो! अगर तुम अहले किताब के किसी फिरके का कहा मानोगे तो कोई तेरे मानने के बाद भी काफिर कहलायेगा। और तुम झूठ को कैसे अपनाओगे, जबकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ़-पढ़कर सुनाई जाती है और उनके रसूल तुममें मौजूद है। जिसने परवरदिगार की हिदायत को मजबूती से पकड़ लिया तो वह जरूर सीधे रास्ते पर चलने लगेगा।

**जाहेर लिख्या मिस्कात में, मैं डरों पीछले इमामों से।
गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिर में। ॥७७॥**

मिस्कात नामक ग्रन्थ में मुहम्मद स. ने स्पष्ट रूप से कहा है, कि मैं भविष्य में होने वाले उन ईमामों से डरता हूँ, जो सारे संसार को मिथ्या मार्ग पर भटका देंगे। स्वयं को मुस्लिम जगत में श्रेष्ठ मानने वाले ये लोग कियामत के समय में भी होंगे।

भावार्थ- पा. ४ सू. ३ आ. १०० “या अय्युहल्लजीन आमनू इन् तुतीअू फरीकम् - मिनल्लजीन अतुल्लकिताब यरुद्दूकुम् बऽद ओमानिकुम् काफिरीन(१००) मोमिनो! अगर तुम अहल-ए-किताब के किसी फिरके का कहा मानोगे तो (ईमान) अहल ए ईमान होने के बाद भी वह आपको भटका देंगे।

पार: ६ सूरत ४ आयत १५६ “ व इम्मिन् अहलिल्-किताबि इल्ला ल युअ्मिनन्न बिही कबूल मौतिही व यौमल् - कियामति यकूनु अलैहिम् शहीदन्” अर्थात् जो कोई भी अहले किताब वाले हैं, जरूर उनके तन छोड़ने से पहले सभी लोग उन पर ईमान लायेंगे और कियामत के दिन ईसा उन सबका गवाह होगा।

पारः २ सूरत २ आयत १६४ “इन्न फी खल्किस्समावाति वल्अर्जि वख्तिलाफिल्लैलि वन्नहारि वल्फुल्किल्लती तजूरी फिल्बहरि बिमा यन्फअुन्नास व मा अन्जलल्लाहु मिनस्समाइ मिम्माइन् फ अह्या बिहिल्अर्ज बऽद मौतिहा व बस्स फीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् टव तसूरीफिरियाहि वस्सहाबिल्-मुसख्खरि बैनस्समाइ वल्अर्जि ल आयातिल् - लिक्कौमिंय्यऽकिलून” अर्थात् बेशक आकाश और पृथ्वी उत्पन्न करने में और रात दिन के निरन्तर चक्र में कश्तियों में जो लोगों में फायदे की चीजें समुन्द्र मार्ग से लेकर चलती है और इस संसार में जिसको खुदा ने भेज करके सम्पूर्ण प्राणी मात्र को जीवित रखा है। इस सृष्टि में विभिन्न प्रकार के जानवर बनाये और हवाओं के चलने में आकाश में और धरती के बीच में जो भी प्राणी अपनी समझ से कार्य कर रहे हैं यह सब कुदरत की निशानियां हैं।

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का।

लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या ॥७८॥

हदीस में लिखा है कि धर्म के नाम पर समाज का नेतृत्व करने वाले इन अग्रगण्य लोगों का शरीर तो मनुष्य का होगा, किन्तु उनका हृदय शैतान का होगा, जिस प्रकार से शरीर में रक्त सर्वत्र मिला होता है, उसी प्रकार से शैतान (अज्ञान) भी उनके शरीर में सर्वत्र व्याप्त होगा।

भावार्थ- इस्लाम का नाम लेकर भिन्न-भिन्न आतंकवादी संगठनों की स्थापना करने वाले क्रूर आतंकवादी इसी मानसिकता के हैं। पा. ११ सू. १० आ. ५२ “सुम्म कील लिल्लजीन जलमू जुक्कू अजाबल्-खुल्दि हल् तुजूजौन इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून” अर्थात् फिर जालिम लोगों से कहा जाएगा कि हमेशा के लिए अजाब का मजा चखो। अब उन्हीं आमल (कर्म) का बदला पाओगे जो दुनिया में करते थे।

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर।

यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर ॥७९॥

उन अग्रगण्य लोगों के चारों ओर शैतान का घेरा होगा। ऐसा अनेक प्रकार से हदीस में लिखा गया है। इस प्रकार अज्ञान रूपी शैतान ने समस्त संसार के जीवों को निगल लिया। श्री राज जी ने तारतम ज्ञान से जो उजाला किया, उसके प्रकाश में रहले वाले एकमात्र ब्रह्ममुनि ही शैतान के प्रभाव से सुरक्षित रह सके।

**भाँत भाँत आलम में, रसूलें करी पुकार।
बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार।।८०।।**

मुहम्मद साहब ने संसार में अनेक प्रकार से पुकार-पुकार कर लोगों को सावचेत किया, किन्तु ब्रह्ममुनियों को छोड़कर अन्य किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं थी, कि उनके निर्देश को सुनकर सावधान होता।

**जिन विध लिख्या कुरान में, हदीसों में भी सोए।
एअर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंद से उतखा होए।।८१।।**

इस सम्बन्ध में कुरान में जिस प्रकार लिखा है, हदीसों में भी वैसा ही वर्णन है किन्तु इस रहस्य को मात्र वह ब्रह्ममुनि ही जानता है, जिसका हृदय प्रियतम का धाम बन गया है और जो परमधाम से आया है।

**आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेहेंदी इमाम।
इनविध खावंदीरूहअल्लाहकी, एतीनोंएकदीनकरसीतमाम।।८२।।**

मुहम्मद साहब को अन्तिम पैगम्बर कहलाने की शोभा मिली है, और श्री प्राणनाथ जी को आखरूल ईमाम मुहम्मद महदी कहलाने की शोभा मिली है, इसी प्रकार (श्यामा जी) सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को ब्रह्मात्माओं में स्वामित्व की शोभा मिली है, श्री महामति जी के हृदय में विराजमान होकर ये तीनों सूरतें संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना करेंगी।

भावार्थ- पार: १६ सूर: १६ मर्यम आयत १ “काफ़ हा या अैन् साद्” तफ्सीरे हुसैनी जिल्द दोवम पन्ना नं. ६ और १०। सूर: मर्यम की तफ्सीर में बयान है कि इलाही में मजकूर है कि रसूल मुहब्बे सुफ़ियान अकरम की तीन सूरतें हैं। एक सूरत बसरी जैसा कि हक् तआला ने फर्माया, कि ऐ मुहम्मद! स. सिवाय इसके नहीं की मैं भी बशर हूँ तुम्हारी तरह। दूसरी मलायकी जैसा खुद हजरत ने फर्माया बेशक मैं नहीं हूँ। तुम में से किसी किं मिसल। मैं रहता हूँ अपने रब के पास। वह खिलाता है मुझे और पिलाता है मुझको और तीसरी हकीकी जैसा कि खुद आपने फर्माया मेरे वास्ते अल्लाह के साथ एक वक्त्त है इससे भी खुली हुई ये हदीस है जिसने मुझे देखा उसने हक् देखा और हजरत ने हक् तअला को हर सूरत में जनाब रसूले अकरम स. के साथ कलाम और हैं। मुहम्मद साहब के पश्चात् अब कोई भी पैगम्बर नहीं आयेगा, इसी प्रकार श्री प्राणनाथ जी से पहले ग्यारहवीं सदी तक ग्यारह इमाम हो चुके हैं। आखरूल इमाम मेहदी श्री प्राणनाथ जी के पश्चात् अब कोई भी ईमाम नहीं होगा। श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्षों में खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार ग्रंथ का अवतरण हुआ। जो परमधाम की अखण्ड संपदा है।

**ए अव्वल कहा रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल।
ना बूझे हक हादी रूहों की, जो चौदे तबक मथें मिल।।८३।।**

मुहम्मद साहब ने ये बातें पहले ही कह दी थी। किन्तु झूठे हृदय वाले दुनिया के जीव इसे कैसे समझते। यदि १४ लोकों के इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव मिलकर भी चिंतन करें, तो श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं की गुह्य बातों को नहीं जान सकते।

**केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए।
पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए।।८४।।**

मुहम्मद साहब ने इस बात को बार-बार कहा, जिससे सबको समझ में आ जाय। किन्तु इस बात को श्री राज जी, श्यामा जी और ब्रह्मात्मायें ही जानती हैं। इनके अतिरिक्त परमधाम में कोई और हो, तब तो इस रहस्य को जानें।

**कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान।
पर नफस मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आँख बुधन कान।।८५।।**

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि श्री कुलजम् स्वरूप के मात्र एक शब्द अर्थात् कुछ शब्दों के ज्ञान से कुरान के सभी प्रसंगों का भाव स्पष्ट हो जाता है। किन्तु इन्द्रियों के मिथ्या विषयों में फंसे रहने वाले संसार के वे जीव भला कैसे जान सकते हैं, जिनके पास न तो प्रेम और विश्वास से भरा हुआ हृदय है, न अंतर दृष्टि है, न सत्य को ग्रहण करने वाली बुद्धि है और न ब्रह्मज्ञान को सुनने वाले कान ही?

भावार्थ- हरफे मुक्ते आत, अलिफ, लाम, मीम, ऐन, गैन आदि का अर्थ समझने वाला सम्पूर्ण प्रसंग को समझ जाता है। इसी प्रकार 'अलस्तो बिरब्बि कुंम' तथा 'कालूबला' से भी इश्क रब्द का सारा प्रसंग समझा जा सकता है।

**जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी ।
सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी।।८६।।**

कुरान में भी राज जी के द्वारा कही हुयी गुह्य बातों को मात्र वे आत्मायें ही समझ पाती हैं, जो परमधाम से आयी हैं। उनके अतिरिक्त अन्य किसी को भी परमधाम की गुह्य बातों की जानकारी नहीं होती है।

**ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए॥८७॥**

नहीं तो मुहम्मद साहब ने इतने सरल तरीके से ये बातें कही हैं, कि सबको समझ में आ जाय, किन्तु जिन जीवों के न तो परमधाम में परात्म है, न प्रेम और विश्वास से भरा हृदय है और न जागृत बुद्धि है, भला वे श्री राज जी के कथनों का आशय कैसे समझ सकते हैं?

**जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत।
सो हक की हादी बिना, और न कोई समझत॥८८॥**

मुहम्मद साहब कहते हैं कि श्री राज जी ने अपने मुख से जो भी बातें कही हैं, उसे मैंने कुरान में संकेतों में कहा है। श्री राज जी की उन बातों को श्यामा जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी समझ नहीं सकता।

**हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए॥८९॥**

कुरान में श्री राज जी के द्वारा संकेतों में कही हुयी बातों की या तो स्वयं श्री राज जी ही जानते हैं या उन्हें लाने वाले मुहम्मद साहब जानते हैं या जिन ब्रह्मात्माओं के लिये आयी है वो जानती हैं। इनके अतिरिक्त कुरान की गुह्य बातों का ज्ञान अन्य किसी को भी नहीं है। क्योंकि परमधाम में इनके अतिरिक्त और कोई नहीं है।

**तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर।
क्यों समझे औलाद आदम की, हक दिल छिपी खबर॥९०॥**

यही कारण है कि हिजरी सन् १०६० अर्थात् विक्रम संवत् १७३५ तक कुरान के गुह्य रहस्यों को कोई भी जान नहीं सका था। प्रियतम अक्षरातीत के हृदय की गुह्य बातों को भला जीव सृष्टि के मनुष्य कैसे जान सकते थे?

**निकाह हवासों कही आदम की, निकाह अबलीस औलाद आदम।
पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम॥९१॥**

कुर्आन में आदम का विवाह 'हव्वा' से होना कहा गया है। इसी प्रकार आदम की सन्तान आदमी (मानव) का विवाह इब्लीश (शैतान, अज्ञान) से हुआ है। यही कारण है कि मानव जाति में जितने बड़े-बड़े महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपनी लौकिक इच्छाओं के लिये निराकार को ही परमात्मा मानकर पूजा की है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में आदम, हव्वा और इब्लीश की आख्यायिका के आलंकारिक वर्णन के द्वारा सृष्टि के गहन प्रसंग को समझाया गया है। 'हव्वा' वह मोह सागर है जिसे निराकार, शून्य कहते हैं। इसे ही तृष्णा, इच्छा अथवा माया भी कहते हैं। मोह, निराकार और शून्य पुल्लिंग वाचक शब्द है तथा तृष्णा (इच्छा) अथवा माया स्त्रीलिंग। माया (प्रकृति) का सूक्ष्मतम रूप ही मोह (निराकार) है। इस प्रकार मोह (माया) का दोनों लिंगों में प्रयोग किया जाता है।

सृष्टि के के प्रारम्भिक आदि मानव आदम (मनु) का प्रकृति (माया) से जुड़ना ही उसका विवाह है। मनु की सन्तान मानव का जीवन यापन के लिये कार्य करना अनिवार्य है। कोई भी कार्य इच्छा (तृष्णा) के बिना नहीं हो सकता, इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का विवाह (सम्बन्ध) तृष्णा से उत्पन्न होने वाले अज्ञान से होता है। लौकिक सुखों की इच्छा ही तृष्णा है। सम्पूर्ण सृष्टि जिस महाशून्य से उत्पन्न हुई है, महाप्रलय में उसी में लीन हो जाती है। इस महाशून्य का विस्तार अनन्त है। समस्त सृष्टि में दृश्य-अदृश्य सभी पदार्थों, इच्छा, अज्ञान आदि का समष्टि रूप यह मोह सागर ही है। यही कारण है कि जैन, बौद्ध आदि मतों के बड़े-बड़े योगी इस निराकार को ही सृष्टि का कर्ता-धर्ता मानते हैं। इतना ही नहीं, आस्तिक विचार धारा के महान योगी-महात्मा भी इसी को परब्रह्म मानने की भूल कर बैठते हैं। यद्यपि वे महाशून्य को जड़ मानते हैं, किन्तु परब्रह्म के स्वरूप का बोध न होने से इसी निराकार के अन्दर सूक्ष्म रूप से ब्रह्म को भी व्यापक मान लेते हैं। इस प्रकार, उनकी धारणा के अनुसार परब्रह्म अति सूक्ष्म निराकार, सर्व व्यापक सिद्ध होता है।

तो रही छिपी बीच फुरमान के, निकाह अबलीस सो होबत अकल ।

सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल ।। १२ ।।

इस प्रकार, मनुष्य की बुद्धि के साथ अज्ञान रूप इब्लीश के विवाह (सम्बन्ध) का रहस्य कुर्आन में छिपा रहा। जिन जीवों के स्वाप्निक हृदय को श्रद्धा-विश्वास से रहित कहा जाता है, भला वे कुर्आन के इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं?

भावार्थ- समष्टि महत्त्व का ही अंश व्यष्टि रूप में बुद्धि है, जो प्रत्येक प्राणी के अन्तःकरण के रूप में क्रियाशील है। बुद्धि त्रिगुणात्मिका होती है। ऐसी अवस्था में यह त्रिगुणातीत परब्रह्म को कदापि नहीं जान सकती। रज और तम से अधिक ग्रसित होने पर बुद्धि ही मनुष्य को अज्ञानता के गहन अन्धकार में भटका देती है। यही कारण है कि बुद्धि का विवाह अज्ञान रूप (इब्लीश) के साथ माना गया है।

**जिन गेहूं खाया कौल तोड़ के, आदम तिन नसल।
सो क्यों पावे रमूजें हक की, जो लिख्या अर्स असल॥१३॥**

मुनष्य उस आदम की ही सन्तान है जिसने परब्रह्म के आदेश को न मानकर वर्जित गेहूँ के फल को खाया था। ऐसी स्थिति में मानवीय बुद्धि से यह कैसे आशा की जा सकती है, कि वह अखण्ड परमधाम के सम्बन्ध में श्री राज जी के द्वारा कही गयी गुह्य बातों का रहस्य जान सकें।

भावार्थ—वर्जित गेहूँ का फल खाना भी एक आलंकारिक कथन है। इसका आशय है— प्रकृति के सुख या संसार में भ्रमण करने या देखने की इच्छा। बेहद मण्डल में त्रिगुणात्मिका प्रकृति नहीं है। वहां की बहिस्तों में रहकर यदि कोई संसार चक्र में आने की इच्छा करे तो दण्ड स्वरूप उसे आना पड़ेगा। सृष्टि रचना के इस प्रसंग को माहेश्वर तन्त्र में अच्छी प्रकार दर्शाया गया है कि किस प्रकार सुमंगला शक्ति, अव्याकृत पुरुष को सृष्टि रचना के लिये संकल्प (मोह) में डालकर विवश कर देती है कि उसका मन आदिनारायण के रूप में मोह सागर में प्रकट हो।

**ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल॥१४॥**

श्री राज जी के संदेश वाहक के रूप में मुहम्मद स. श्यामा जी (मल्की सूरत) के लिये कुर्आन लेकर आये। इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी को इसके रहस्यों को प्रकट करने की शोभा है, जिससे कि परब्रह्म की पूर्ण पहचान कराने वाले ज्ञान से कोई वंचित न रह जाय।

**खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान॥१५॥**

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने ग्यारहवीं सदी में कुर्आन के रहस्यों को सनद एवं खुलासा ग्रन्थ के माध्यम से स्पष्ट किया। वे कियामत के संकेतों को दर्शाकर सबके हृदय में विद्यमान अज्ञान रूपी दज्जाल को नष्टकर रहे हैं और संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना कर रहे हैं।

**इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर।
रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर॥१६॥**

श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान बशरी सूरत मुहम्मद स., मल्की सूरत श्यामा जी तथा हकी सूरत इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर

परमधाम के ज्ञान से उजाला करेंगे। फरदारोज अर्थात् कल के दिन १२वीं सदी में कियामत का समय है, जिसमें इन तीनों स्वरूपों ने परमधाम के ज्ञान से ब्रह्मात्माओं की अन्तर्दृष्टि को खोल दिया।

**काफर कौल कियामत के, जानते थे झूठ कर।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर ॥१७॥**

कुर्आन में वर्णित कियामत के वचनों को काफिर लोग मिथ्या मानते थे। किन्तु ग्यारहवीं सदी के अन्त (वि. सं. १७३५) में कियामत के प्रकट हो जाने से मुहम्मद स. की बात सत्य सिद्ध हो गयी।

**कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल।
पर क्यों बूझें औलाद आदम की, जिनकी अबलीस नसल ॥१८॥**

मुहम्मद स. का कहा हुआ एक भी कथन इधर-उधर नहीं हुआ, किन्तु इस रहस्य को संसार के वे मनुष्य कैसे जान सकते हैं, जो अज्ञान रूपी इस्लीश के अधीन हैं।

**साँचे कौल महंमद के, फिरवले सब पर।
जो कछू कहा सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर ॥१९॥**

मुहम्मद स. के कथन सबके लिये पूर्णतया सत्य ही सिद्ध हुए। उन्होंने जो कुछ भी कहा, वह अक्षरशः सत्य हुआ, फिर भी नास्तिक लोग उन्हें नहीं समझ पाये।

**दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम।
भिस्त दोजख कहीं त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम ॥२०॥**

मुहम्मद स. के कथनानुसार कियामत के समय परब्रह्म के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का सबको दर्शन हुआ। परमधाम का तारतम ज्ञान अवतरित हुआ, जिससे माया के नींद में सोये रहने वाले जीव भी जागृत हो गये। परब्रह्म के आदेशानुसार सबके कर्मों के अनुसार न्याय हुआ, जिसमें प्रायश्चित रूपी दोजक की अग्नि में जलकर जीव निर्मल हुए तथा बेहद की अखण्ड बहिश्तों के सुख के अधिकारी बने।

भावार्थ- अभी न्याय की लीला मात्र ज्ञान दृष्टि से ही हुई है। व्यवहारिक रूप में यह सातवें दिन की लीला में बेहद में चरितार्थ होगी।

**कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने।
भूल परे ना किसी कौल की, रसूलें कहा तिनमें॥१०१॥**

मुहम्मद स. के कहे हुए कुछ वचन पूर्ण हो गये हैं तथा कुछ वचन अभी पूरे होने शेष हैं। उन्होंने कुर्आन में जो कुछ भी कहा है, वह कथन कभी भी इधर-उधर व्यर्थ नहीं जायेगा अर्थात् उसमें किसी भी प्रकार का कोई भी परिवर्तन नहीं होगा।

**निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब।
दाभ-तूल-अर्ज काफरों, स्याह मुंह करसी तब॥१०२॥**

कियामत के सभी सातों संकेत (निशान) सूक्ष्म रूप में मिल चुके हैं (प्रकट हो चुके हैं)। वस्तुतः काफिर ही दाब्तुल अर्ज जानवर के स्वरूप हैं। अब प्रत्यक्ष रूप से जब कियामत के सभी संकेत प्रकट होंगे, तो तारतम ज्ञान की कसौटी पर इन काफिरों का मुंह काला हो जायेगा अर्थात् संसार यह स्पष्ट रूप से देखेगा कि परब्रह्म को न मानने वाले ये लोग किस प्रकार पाप से भरे अपने काले मुख लिये हुए हैं।

**जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत।
एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत॥१०३॥**

जब श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट कर परमधाम की हकीकत (सत्य) एवं मारिफत (परम सत्य) का मार्ग दर्शा दिया, तो संसार ने कियामत का प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया। यही वह शुभ समय है, जब श्री कुल्जुम स्वरूप के प्रकाश में अक्षरातीत परब्रह्म का पूर्ण ज्ञान उजागर हुआ है।

**महामत कहे ए मोमिनो, जिन जागी भूलो कोए।
राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए॥१०४॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से जागृत होकर पुनः माया में स्वयं को कोई भी न भूलो। प्रियतम ने चितवनी के रूप में आपको परमधाम के प्रेम का जो मार्ग दिखाया है, उसे छोड़िये नहीं, जिससे आप इस खेल में भी शोभा पाइये तथा परमधाम में जागृत होने पर भी धन्य-धन्य होइए।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय होता है कि प्रेम का वह कौन सा मार्ग है, जिसे न छोड़ने के लिये प्रियतम का निर्देश है? क्या श्री कुल्जुम स्वरूप का चिन्तन करना ही प्रेम का मार्ग है अथवा जोर-जोर से भजन गाना, बजाना, नाचना, सेवा-पूजा या भावलीनता में डूबकर श्री राज जी की बातें करना?

परिक्रमा के चौथे प्रकरण में यह बताया गया है, कि हमारे अन्दर प्रियतम का प्रेम कैसे प्रकट होगा? उस प्रकरण की ये चौपाईयां ही स्पष्ट करती हैं, कि मात्र चितवनी ही वह दिव्य साधन है जिसके द्वारा परमधाम का प्रेम पाया जा सकता है-

निस दिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामा जी स्याम ।

याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ॥

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन ।

निमख एक ना छोड़िये, कर मनसा वाचा करमन ॥

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।

इस्क याही सों आवहीं, याहीं सों होइए सनमुख ॥

फेर फेर सूरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन ।

इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन ॥

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार ।

फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार ॥

परिक्रमा प्रकरण 4 चौ. 5, 6, 7, 19, 20

ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए कि चितवनी का मार्ग शुष्क साधना का मार्ग है। वास्तविकता तो यह है कि साध्य (लक्ष्य) को प्राप्त करने के लिये जो पुरुषार्थ किया जाता है, उसे ही साधना कहते हैं। अपनी सूरता को एकाग्र करके युगल स्वरूप की ओर एकाग्र करना धारणा है, अन्तर्दृष्टि से देखना ध्यान है तथा उसमें डूब जाना समाधि है। अतः सुन्दरसाथ को अपना जीवन सार्थक करने के लिये यह आवश्यक है कि वे कर्मकाण्डों तथा नवधा भक्ति के जाल में न फंसकर परमधाम की प्रेममयी चितवनी का मार्ग अपनायें, जिससे वे यहां भी धन्य-धन्य हों सकें और परमधाम में भी।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २१७ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ५०३, चौपाई १८२२७ ॥

॥ छोटा कयामतनामा ॥ संपूर्ण ॥

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भाए, सब विध वतन सहीत ॥

॥ कियामतनामा ॥

बड़ा कियामतनामा

श्री कुलजम स्वरूप के रास से कियामतनामा तक का प्रत्येक शब्द अक्षरातीत श्री राज जी के आवेश द्वारा श्री महामति जी के धाम हृदय से अवतरित हुआ है, किन्तु प्रेम के लहराते सागर के स्वरूप श्री जी ने कहीं महाराजा छत्रसाल जी को ब्रह्मवाणी अवतरण में शोभांकित किया है, तो कहीं जसिया और ललिता को।

छोटा कियामतनामा पन्ना जी में वि. सं. १७४३-४४ में अवतरित हुआ, किन्तु बड़ा कियामतनामा चित्रकूट में वि. सं. १७४३ में उतरा, जब श्री जी वहां पधारे और १ वर्ष तक उन्होंने वहां निवास निवास किया। श्री प्राणनाथ जी की सेवा छूटने से छत्रसाल जी बहुत ही व्यथित हो गये थे। यद्यपि उन्होंने अपनी मझली महारानी सुशीला जी को उनकी सेवा में अन्य सेविकाओं के साथ भेज दिया था, किन्तु अपने आराध्य के वियोग में वे तड़पते रहे। इसी प्रेम भावना से रीझे हुए धाम धनी ने महाराजा छत्रसाल जी के नाम से यह बड़ा कियामतनामा अवतरित किया। इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में कियामत की बड़ी मार्मिक विवेचना की गयी है यह पहला प्रकरण श्री प्राणनाथ जी की महिमा से सम्बन्धित है।

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमिनों कियामत आई।

केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करें बयान ॥१॥

छत्रसाल (सकुण्डल)! तुम ब्रह्मसृष्टियों से जाकर कह दो कि ब्रह्मात्माओं! अब कियामत आ गयी है, इसलिए इल्म-ए लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के प्रकाश में जागृत हो जाओ। मेरे द्वारा तुमसे जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह कुरआन के पूर्णतया अनुकूल है।

भावार्थ- परम्परागत रूप से ऐसा माना जाता है कि इस चौपाई का यह संदेश महाराजा छत्रसाल जी के द्वारा औरंगजेब (सकुमार) तक पहुंचाने के लिये कहा गया है, किन्तु इस चौपाई के दूसरे चरण में कथित 'मोमिनों' शब्द से यही निष्कर्ष निकलता है यह उद्बोधन सभी

ब्रह्मांगनाओं के लिये है। इसका तीसरा चरण यही दर्शाता है कि इसमें स्वर श्री महामति जी (महमत रूहुल्लाहु) का है, भले ही प्रकरण के अन्त में छत्रसाल जी का उल्लेख क्यों न हुआ हो?

**जो कोई खास उमत सिरदार, खडे रहो होए हुसियार।
वसीयत नामे देवे साख, अग्यारैं सदीं होसी बेबाक॥२॥**

ब्रह्मसृष्टियों में सकुमार (औरंगेजब) आदि जो भी प्रमुख सुन्दरसाथ हों, वे माया से सावधान रहते हुये श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के प्रकाश में जागृत होकर प्रियतम के प्रति अटूट विश्वास लेकर खड़े हो जाएं। मक्कः-मदीनः से आने वाले चार वसीयतनामे इस बात की साक्षी दे रहे हैं, कि ग्यारहवीं सदी में ज्ञान दृष्टि से न्याय की लीला पूर्ण हो जाएगी।

भावार्थ- वि. सं. १७४५ तक ग्यारहवीं सदी पूर्ण होती है, जिसमें रास से लेकर शृंगार तक की वाणी का अवतरण हो चुका होता है। इसके आधार पर अध्यात्म जगत के सभी विवादों का समाधान हो गया और सारे संसार को परमधाम का सत्यमार्ग मिला। इसे ही ज्ञान के द्वारा न्याय की लीला होना कहा गया है।

**बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान।
एदरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान॥३॥**

मक्कः मदीनः से आने वाले वसीयतनामों में यह स्पष्ट लिखकर आया है कि परब्रह्म की ओर से अरब की धरती को दी जाने वाली बरकत (कृपा, लाभ) फकीरों की मेहरबानी (कृपा), तथा कुरान को जिब्रील फरिश्ता हिन्दुस्तान में इमाम महंदी अजल्लला तअला फर्जहु वल् शरीफ के पास (पन्ना जी) ले गया है।

भावार्थ- यह ऐतिहासिक तथ्य है कि वि. सं. १७४५ से पहले अरब का इस्लामिक ध्वज विश्व के अधिकतर भागों में फहरा हुआ था, किन्तु इसके पश्चात् उसमें पतन प्रारम्भ हुआ और ईसाईयत (बाईबिल) का ध्वज इस प्रकार आगे हुआ कि कहावत बन गयी कि अंग्रेजों के राज में कभी सूरज नहीं डूबता था। प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार से खलीफा का पद भी समाप्त हो गया था और भारत में भी मुगलसत्ता समाप्त हो गई। दुनिया की बरकत चले जाने से यही आशय है।

**और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध।
कह्या होसी और रवेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस॥४॥**

रोज-ए-महशर (महाप्रलय) के पश्चात् जब योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय (कजा) की लीला होगी, उस समय किसी को भी अपने बुरे कर्मों के लिए प्रायश्चित का अवसर नहीं

मिलेगा। बल्कि आंख मूंदकर प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा। कुरान में कहा गया है कि न्याय की उस लीला में ऐसा हो जाएगा, कि कोई भी किसी के लिए पारिवारिक सम्बन्ध के नाते किसी का बचाव नहीं कर पाएगा।

भावार्थ— जब तक यह जागनी ब्रह्माण्ड चल रहा है, तब तक सारे ब्रह्माण्ड को यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह तारतम ज्ञान से परब्रह्म के स्वरूप और धाम की पहचान कर उनकी प्रेम लक्षणा भक्ति करे तथा अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित करे। इसे ही 'तौबा' करना कहा गया है। किन्तु जब योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय की लीला होगी उस समय किसी को भी प्रायश्चित करने का अवसर नहीं मिलेगा। पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर भी कोई किसी की सिफारिश नहीं कर सकेगा। इत तथ्य को प्रगट वाणी में इस प्रकार कहा गया है—

द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब ।

जब द्वार तोबा के मूद्यो, रैन गई भोर जो भयो ॥

या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी ।

तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी ॥

तब कोई नहीं किसी के संग, सुख दुख लेवे अपने अंग ।

करूं ब्रह्मसृष्टि को मिलाप, अखांड सूर उदे भयो आप ॥

प्रकाश हिन्दु. 37/99, 100, 101

इस विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि इस चौपाई में योगमाया में होने वाली न्याय की लीला का प्रसंग है, अरब की धरती का नहीं।

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कहा ।

पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ॥५॥

हे ब्रह्ममुनिगण! अब आप ही बताइए कि जब वसीयतनामों से कियामत का आना सिद्ध हो गया है, तो अरब की धरती पर कौन-सी निधि बाकी रह गयी है? कुरान के अट्ठारहवें सिपारे में लिखा है कि श्री श्यामा जी का स्वामित्व, परमधाम के ज्ञान का अवतरित होना और उसका प्रसारित होना चालीस वर्षों तक रहेगा।

भावार्थ— कुरान के सिपारे २८ सूरत हशर ५६ आयत १८ “अय्युहल्लजीन आमनुत्तकुल्लाह वल्लन्जुर नप्सुम्मा कद्दमत् लिगदिन् वल्लकुल्लाह इन्नल्लाह खबीरुम् - बिमा तऽमलून” अर्थात् ऐ ईमान वालो! खुदा से डरते रहो और प्रत्येक व्यक्ति को देखना चाहिए कि उसने कल (यानि कियामत का कल) के लिये क्या भेजा है। (पुनः कहते हैं हम) कि (खुदा) परब्रह्म से भयभीत रहिये। निःसंदेह खुदा आपके सब आमाल से खबरदार है।

पार: ११ सूरत १० आयत ५ “हुवल्जी अअलशश्मस जियाअंवल्लकमर नूरंवल कद्दरह मनाजिल लितऽलमू अददस्सिनीन वल्लिहाब मा खलकल्लाहु जालिक इल्ला बिल्हविक युफस्सिलुल्- आयाति लिकौमिंय्यऽलमून” वही तो हैं जिसने चमकते सूरज को बनाया और चांद को रोसन किया और उसकी मंजिले ठहरायी ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। यह सब अल्लाह ने इसी उद्देश्य से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं, उनके लिये वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं।

**क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन॥६॥**

हे साथ जी! इस बात का अपने हृदय में विचार करके देखिये कि चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान सभी एक ईमान मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के ऊपर अटूट विश्वास ला रहे हैं। क्या अरब की धरती से कुरआन की शक्ति उठ जाने के बाद ऐसा हो पाना सम्भव है? इसका तात्पर्य यही है कि क्यामत आ गयी है।

**नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत।
सो लिख्या अग्यारहे सिपारे माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें॥७॥**

मुहम्मद स. के ६६० वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् विक्रम् संवत् १६३८ में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) अवतरण हुआ, यह प्रसंग कुरआन के ११ वें सिपारे में लिखा हुआ है। मैं कुरआन के कथन के विपरीत में कुछ नहीं कहूंगा।

भावार्थ- पार: ११ सूर: ६ आयत १११ “इन्नल्लाहशतरा मिनल्मुअमिनीन अन्फुसहुम् व अम्वालहुम् बिअन्न लहुमुल्जन्नत युकातिलून फी सबीलिल्लाहि फयक्तुलून व व जालिक हुवल्फौजुल् - अजीमु” खुदा मोमिनों से कुरआन में सच्चा वायदा है... यही काम यानी है। (११२) अत्ताइबूनल् - आबिदूनल् व बश्शिरिल् - मुअमिनीन” अर्थात् तोबा करने वाले मोमिनों को खुशखबरी सुना दो। १२८- “लकद् जाअ कुम् रसूलुम् - मिन् अन्फुसिकुम् अजीजुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन् अलैकुम् बिल्मुअमिनीन रअुफुरहीमुन्” तुम्हारे पास तुम्ही में से एक पैगम्बर आये हैं। तुम्हारा दुःख इनको कठिन लग रहा है। वह तुम्हारी तलाश रखता है कि तुम ईमान की रोशनी में आ जाओ, और वह ईमान वालों पर प्रेम रखने वाला और महेरबान है।

पार: ११ सूर: १० आयत १२८ “लकद् जा अ कुम् रसूलुम्-मिन् अन्फुसिकुम् अजीजुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन् अलैकुम् बिल्मुअमिनीन रअुफुरहीमुन्” तुम्हारे पास

तुम्हीं में के एक पैगम्बर आये। तुम्हारा दुख इनको कठिन मालूम होता है। वह तुम्हारी तलाश रखता है और ईमान वालों पर प्रेम रखने वाला और मेहरबान है।

**रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखे वाला जाए देखे ताहें ॥८॥**

श्यामा जी ने इस जागनी लीला में दो तनों को धारण किया। पहला श्री देवचन्द्र जी का तथा दूसरा श्री मिहिरराज जी का। जो कुरान में लिखा है वही घटित होगा। जिसके मन में संशय हो, वह कुरान में जाकर देख लेवे, कि उसके छठे सिपारे में यह प्रसंग लिखा है कि इस संसार में श्यामा जी के द्वारा दो तन धारण किये गये हैं।

भावार्थ- पा. ६ सू. ४ आयत १६३ “इन्ना औहैना इलैक कमा औहैना इला नूहिंव्वत्रिबिय्यीन मिम्बऽदिही व औहैना इला इब्राहीम व इस्माअील व इसहाक व यऽकूब वल् - अस्बाति व औसा व अय्यूब व युनुस व हारून व सुलैमान व आतैना दावद जबूरन्” ऐ मुहम्मद! हमने तुम्हारी तरफ वही संदेश भेजा है जैसे नूह और उनके बाद दूसरे पैगम्बरों को भेजा था और जैसे इब्राहिम आदि को भी खुदाई संदेश भेजा था और दाउद को हमने जबूर इनायत की थी।

पा. ६ सू. ५ आयत ६७ “या अय्युहरसूलु बल्लिग् मा अन्जिल इलैक मिरब्बिक व इल्लम् तफूअल् ला यह्दिल् - कौमल् - काफिरीन्” ऐ पैगम्बर! जो खुदा ने ईशाद किया है वह लोगों तक पहुँचा दो। बेशक खुदा मुनकिरों को हिदायत नहीं देता है।

**ए जो बरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर कर देऊं सही।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस ॥९॥**

कुर्आन में श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्ष कहे गये हैं। उसका मैं यथार्थ रूप से स्पष्टीकरण कर देता हूँ। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष मिलकर श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्ष पूरे होते हैं।

भावार्थ- वि. सं. १७३५ से १७४५ तक अर्थात् वि. सं. १०६० से ११०० तक १० वर्ष ग्यारहवीं सदी के पूरे होते हैं। शेष वि. सं. १७४५ से वि. सं. १७७५ तक ३० वर्ष बारहवीं सदी के पूरे होते हैं। इन ४० वर्षों में वि. सं. १७३५ से वि. सं. १७५१ तक १६ वर्ष श्री महामति जी के तन से तथा शेष २४ वर्षों में महाराजा छत्रसाल जी के तन से श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्ष पूरे हुये। इन ४० वर्षों में खिल्वत, परिक्रमा, सागर और शृंगार के रूप में परमधाम की मारिफत का ज्ञान अवतरित हुआ और चारों ओर उसका प्रचार हुआ।

**सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल-सरात के कहे।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी भी घोड़े की भांत ॥१०॥**

बाहरवीं सदी के ७० वर्ष जो शेष रहते हैं, उसमें जीव सृष्टि कर्म-काण्ड के मार्ग पर चलती रही, यह समय वि. सं. १७७५ से वि. सं. १८४५ तक का है। इस समय में ब्रह्मसृष्टि विद्युत की भांति जागनी के पथ पर तेजी से चलेगी तथा ईश्वरी सृष्टि घोड़े की भांति दौड़ेगी।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टि श्री राज जी का अटूट प्रेम और विश्वास लेकर अति अल्प समय में अपनी आत्मा को जागृत कर लेती है, इसलिये उसकी जागनी की गति की विद्युत से तुलना की गयी है। ईश्वरीय सृष्टि के पास अटूट विश्वास तो होता है, किन्तु वह ब्रह्मसृष्टि के प्रेम के स्थान पर भक्ति का मार्ग अपनाती हैं, जिससे उसकी आत्म जागृति में ब्रह्मसृष्टि की अपेक्षा अधिक समय लगता है। यही कारण है कि उसकी आत्म जागृति की तुलना घोड़े की गति से की गयी है।

**और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही।
पुल-सरात कही खाँडे की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार ॥११॥**

इन दोनों सृष्टियों से भिन्न जो जीव सृष्टि है, वह कर्म-काण्ड (शरीयत) के मार्ग पर चलती है। जीव सृष्टि को कुरान में १० प्रकार की दोजक (प्रायश्चित) की अग्नि में जलने वाला कहा गया है। निराकार को पार करने का मार्ग (पुलसिरात) तलवार की धार के समान तीक्ष्ण कहा गया है, जिसे ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीय सृष्टि अपने इश्क, ईमान तथा बंदगी के द्वारा सरलता से पार कर लेती है। किन्तु कर्म-काण्ड (शरीयत) के मार्ग पर चलने वाली जीव सृष्टि के पैर कट कर गिर जाते हैं। और वह निराकार को पार कर बेहद में नहीं पहुँच पाती है।

**अमेतसालून में कहाँ ए, ए जाए देखो दीदे दिल के।
ए जाहेर कहाँ बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान ॥१२॥**

कुर्आन के तीसवें सिपारे की पहली आयत अमेतसालून में दस प्रकार की दोजक का वर्णन लिखा है। इसे अपने हृदय की आँखों से कहा गया है किन्तु जिनके पास अन्तर्दृष्टि नहीं है, वे उसे नहीं जान सकते हैं।

भावार्थ- कुर्आन के सिपारे ३० अम-म सूरः फज्र ८६ आयत १-४ में कहा गया है कि “वल्फज्रि(१) व लयालिन् अशिरन्(२) टवशफूअि वल्वत्रि(३) वल्लैलि इजा यस्रि(४)” फज्र की कसम और दस रातों की और जुफ्त व ताक की वल्लैलि इजा मस्ति ८ और रात जब जाने लगे।

**दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम।
एलिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम॥१३॥**

दसवीं सदी ६६० हिजरी वि. सं. १६३८ में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी, रूहुल्लाहु) का प्रकटन हुआ। ग्यारहवीं सदी वि. सं. १६७५ में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी का अवतरण हुआ और बारहवीं सदी वि. सं. १७४५-१८४५ में पूर्ण रूप से श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के प्रकाश से उजाला हो गया। यह सम्पूर्ण प्रसंग कुर्आन के तीसरे सिपारे में लिखा हुआ है जिसे आम सिपारा भी कहते हैं।

भावार्थ- कुर्आन के सि. ३० आयत ३-४ सूर: कदरि ६७ “लैलतुल - कदरि खैरुम् - मिन् अल्फि शहरिन्(३) तनज्जलुल्-मलाइकतु वर्सुहु फीहा बिइज्जि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्” अर्थात् शब-ए-कदर हजार माह से बेहतर है। इसमें रूहें और फरिश्ते हर काम के लिये अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते हैं। “सलामुन् हिय हत्ता मल्लइल् फज्रि(५)” यह सुबह के होने तक सलामती है।

**आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी॥१४॥**

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तीनों सूरतें बशरी, मल्की तथा हकी विराजमान हो गयी हैं। इन्हें परब्रह्म का स्वरूप मानकर सभी प्रणाम कीजिए। किन्तु इनके स्वरूप को बाह्य आंखों से देखकर नहीं जाना जा सकता। एकाग्र मन से अन्तर्दृष्टि से देखने पर ही इन्हें पहचाना जा सकता है।

भावार्थ- बशरी सूरत (मुहम्मद) में सत् अंग (अक्षर ब्रह्म) की आत्मा थी। मल्की सूरत श्री देवचन्द्र में आनन्द अंग (श्यामा जी की आत्मा) थी। इसी प्रकार हकी सूरत इमाम महदी में चिद्घन स्वरूप श्री राज जी का आवेश है। इन तीनों स्वरूपों के एकाकार होने पर सत्+चित्+आनन्द स्वरूप परब्रह्म का स्वरूप प्रकट होता है। इसे ही खुलासा ग्रन्थ १५/२१ में इस प्रकार कहा गया है-

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम ।

अहमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद ।

सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारे ही हुए रद॥१५॥

अजाजील ने आदम के बाह्य तन को देखा, जिससे वह आदम के अन्दर विद्यमान परब्रह्म की आत्मा (अल्लाह की रूह) को पहचान नहीं पाया और प्रणाम नहीं किया। यद्यपि उसने परब्रह्म को अनन्त बार प्रणाम किया होगा, किन्तु वह सभी प्रणाम (सज्दे) निरर्थक हो गये।

भावार्थ- जीव सृष्टि श्री प्राणनाथ जी के बाह्य तन (श्री मिहिरराज जी) को देखती है, जिसके कारण वह उनकी पहचान नहीं कर पाती है। इस स्वरूप की अवहेलना के परिणाम स्वरूप उनकी पूर्व की सम्पूर्ण भक्ति (बन्दगी) का फल निरर्थक हो जाता है।

**जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर ।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन ॥१६॥**

अजाजील ने अपनी बाह्य दृष्टि से आदम के बाह्य शरीर को देखा तो वह पहचान नहीं पाया, जिसके कारण उसे फटकार लगी और उसकी दुर्दशा हुई (संसार में आना पड़ा)। इसके पश्चात् अजाजील ने अपनी बन्दगी का फल मांगा कि यह आदम मेरा शत्रु है, इसलिये

**इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारे में जाहेर कही ॥१७॥**

हे परब्रह्म! मुझे यह बक्षीश (वरदान) मिले कि मैं सम्पूर्ण मानव जाति को वैसे ही भटकाऊँ, जैसे न पहचानने के कारण मुझे भटकना पड़ा है। मुझे सभी प्राणियों के हृदय पर स्वामित्व का अधिकार चाहिए आदम तथा अजाजील के विरोध का यह प्रसंग कुर्आन के आठवें सिपारे में स्पष्ट रूप से कहा गया है।

भावार्थ- पार: १८ सूर: २५ फुर्कान आयत १७ “व यौम यहशुरुहुम् व मा यऽबुदून मिन् दूनिल्लाहि फयकूलु अ अन्तुम् अजलल्लुम् इबादी हाअुलाइ अम् हुम् जल्लुस्सबील” और जिस दिन नास्तिकों और आस्तिकों को जिन्हें खुदा मानकर पूजते हैं। जमा करेगा तो फरमाएगा क्या तुम ने मेरे बन्दों को गुमराह किया था या ये खुद ही गुमराह हो गये।

**फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल ।
तुम दज्जाल बाहेर ढूँढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत ॥१८॥**

हे संसार के लोगों! तुम अजाजील की बुद्धि को लेकर दज्जाल को बाहर खोज रहे हो। वह तो लानत लगने (धिक्कार खाने) के पश्चात् तुम्हारे हृदय में बैठा है और तुम्हें सत्य से विमुख कर रहा है। किन्तु तुम भी क्या कर सकते हो? आदम की सन्तान होने के कारण तुम भी उसके ही बहकावे में चलते हो।

भावार्थ- अजाजील (आदि नारायण) का अंश ही जीव के रूप में सभी प्राणियों के अन्दर क्रीड़ा कर रहा है। जिस प्रकार किसी श्वेत वस्त्र को काले रंग से रंग देने पर उसका प्रत्येक भाग काला ही कहलाता है, उसी प्रकार आदम को न पहचान पाने के कारण अजाजील को जो अपराध लगा, वही अपराध अज्ञानता के दोष के कारण अज्ञान (दज्जाल, शैतान) के रूप में सभी प्राणियों के साथ जुड़ा रहता है। इसे ही आलंकारिक रूप में सभी प्राणियों के हृदय में अज्ञान (शैतान, इब्लीश) के निवास के रूप में वर्णित किया गया है। सम्पूर्ण श्री कुल्जुम स्वरूप में अजाजील को कहीं भी शैतान नहीं कहा गया है, बल्कि उसका अज्ञान रूप मन ही शैतान या दज्जाल है, जिसके कारण अजाजील भी आदम के अन्दर विद्यमान परब्रह्म की आत्मा को पहचान नहीं सका।

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक ।

सनंद ३७/६ इस कथन से स्पष्ट है कि अजाजील भी अम्राफील की तरह अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है। ऐसी स्थिति में उसे दज्जाल या शैतान कैसे कहा जा सकता है? वस्तुतः दज्जाल या शैतान (इब्लीश) तो वह अज्ञान (कलियुग) है, जो किसी भी चेतन को सत्य से भटका देता है। प्र. हि. ३७/२४, प्रगट वाणी का यह कथन भी इसी प्रसंग के अनुरूप है कि 'यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, तार्थें थिर चर सब उतपन।' रज और तम की अधिकता मन को अज्ञान स्वरूप बना देती है जिसके कारण मन से बंधा हुआ जीव सत्य से भटक जाता है। उपरोक्त आख्यायिका का यही आशय है।

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान ।

हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ॥१९॥

शब्दों के मात्र बाह्य अर्थ लेने से ही सत्य की पहचान नहीं हो सकती। मेरे कथन को तुम अपने हृदय के कानों से सुनो। जिस प्रकार सदा से ही हिन्दुओं में महान शक्ति स्वरूपों का अवतरण होता रहा है, उसी प्रकार अब भी हिन्दू तन में श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हुआ है।

सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दीदे दिल के ।

ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ॥२०॥

हे मुसलमानों! यदि तुम गहन विचार करके अपने हृदय की आंखों से देखो तो तुम्हें यह ज्ञात होगा कि आज दिन तक सभी पैगम्बर मात्र यहूदियों से ही आये हैं। जिन हिन्दुओं को घृणा वश तुम काफिर कहते हो, उन्हीं हिन्दुओं में परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी आये हैं।

**तुम ढूँढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात ॥२१॥**

मात्र शरीयत को ही अपना सर्वस्व समझने वाले मुसलमानों! तुम इमाम महंदाई स्वरूप परब्रह्म को अपने मुस्लिम समुदाय में खोजते हो, किन्तु यह ध्यान रखो कि उसमें वे नहीं आये हैं। जिन हिन्दुओं को तुम काफिर कहते हो, उन्हीं हिन्दुओं में परमधाम के ब्रह्ममुनि (मोमिन) एवं इमाम महंदाई श्री प्राणनाथ जी आये हैं, जो अपनी कृपा से संसार के सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

**रब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान।
परदा लिख्या जो हजरत केरूप पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर ॥२२॥**

परब्रह्म किसी का भी अहंकार नहीं रहने देते। वे तो सदा ही विनम्र लोगों पर कृपालु होते हैं। आखरूल इमाम मुहम्मद महंदाई का परदे में जो आना लिखा है, क्या तुम उसका आशय नहीं समझते?

**परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥२३॥**

कुर्आन-हदीसों में इमाम महंदाई का परदे में आने का जो वर्णन है? उसका आशय हिन्दू तन में आने से है। कुर्आन के विद्वान उसे पढ़ते तो हैं किन्तु समझते नहीं हैं। जो लोग मात्र अरबी भाषा के व्याकरण की उलझनों में ही फंसे रहते हैं, भला वे तारतम्य ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) से रहित होकर वास्तविकता को कैसे जान सकते हैं?

भावार्थ- पा. ११ सू. ६ आ. १११-११२ “इब्रल्लाहशतरा मिनल्मुअमिनीन अन्फुसहुम् व अम्वालहुम् बिअन्न लहुमुल्जन्नत जालिक हुवल्फौजुल् - अजीमु(१११) अत्ताइबूनल् - आबिदूनल् - हामिदूनस् - साइहूनर् वल्हाफिजून लिहुदूदिल्लाहि व बश्शिरिल् - मुअमिनीन्(११२)” और जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को पुकारा कि जालिम लोगों के पास जाओ (मुगल काल में औरंगजेब जालिम था) हिन्दुओं के पीड़ित होने के कारण परब्रह्म ने उन पर मेहरबानी की कि उनकी कौम में अवतरित हुये।

**ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखिर हिंदुओंमें मुलक नबुवत।
और आप हजरत रिसालत-पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह ॥२४॥**

इस प्रकार कुर्आन-हदीसों में हिन्दुओं की महिमा बतायी गयी है, कि कियामत के समय में हिन्दुओं के स्थान में नबुवत होगी अर्थात् हिन्दुओं के तनों में ब्रह्मात्माओं का अवतरण

होगा। आखरूल इमाम महंदा श्री प्राणनाथ जी हिन्दू तनों में अवतरित होने वाले फकीर रूप ब्रह्ममुनियों के आराध्य होंगे और वे सबको अपनी कृपा की छत्रछाया में रखेंगे।

पार: २० सूरत २८ आयत ५ व नुरीदु अन् नमुन्न अलल्लजीनस् - तुज्इफू फिल्अर्जि व नज्अलहुम अइम्मतंत्वं नज्अलहुमुल् - वारिसीन” और हम चाहते हैं कि जो लोग मुल्क में कमजोर कर दिये गये हैं उन पर अहसान करे, उनको पेशवा बनाये।

पार: १६ सूरत २६ आयत ६६ “सुम्म अग्रकन्ल् - आखरीन” दूसरी जातियों को डूबा दिया।

पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान।

और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही॥२५॥

कुर्आन के पांचवे सिपारे में यह प्रसंग वर्णित है। जिसे विश्वास न हो वह कुर्आन में जाकर देख ले। हिन्दू धर्मग्रन्थों भविष्योत्तर पुराण, बुद्ध गीता, श्रीमद्भागवत आदि में कहा गया है, कि वि. सं. १७३८ के आस पास श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप का प्रकटन होगा। यही समय कियामत के भी प्रकट होने का है।

भावार्थ- पा. १६ सू. २६ आ. २२ “व तिल्क निऽमतुन् तमुन्नहा अलय्य अन् अब्बत्त बनी इस्राईल” और क्या यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं कि आप ने बनी ईस्राईल को गुलाम बना रखा है। मुगलकाल में यहूदियों व हिन्दुओं को अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

सो आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस।

कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर॥२६॥

धर्मग्रन्थों में लिखा है कि श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप संसार में आकर अपने दिव्य ज्ञान से सबको एक रस परमधाम का ज्ञान देंगे अर्थात् सभी को एक सत्य मार्ग पर चलायेंगे। उस समय वेद-कतेब दोनों ही धाराओं को मानने वाले उनके दर्शाये हुए मार्ग का अनुसरण करेंगे। कोई कह सकता है कि क्या बुद्ध और कल्कि एक ही समय में होंगे? मैं उसका भी निर्णय कर देता हूँ।

भावार्थ- वेद और कतेब को ही हामी और सामी अथवा पूर्व और पश्चिम कहते हैं। विष्णु के २४ अवतारों में अन्तिम दो अवतार बुद्ध और कल्कि के माने जाते हैं, जिनका निर्णय बिना तातरम ज्ञान के हो पाना सम्भव नहीं है।

**ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी ना पाइए सुध।
घोड़े को लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर॥२७॥**

धर्म ग्रन्थों में संकेतों में कहे गये इस रहस्य को मात्र निज बुद्धि के ज्ञान के द्वारा श्री प्राणनाथ जी की कृपा दृष्टि से ही जाना जा सकता है। घोड़े को कलंकी कह कर वर्णित किया गया है, जिसका ज्ञान किसी को भी नहीं है।

भावार्थ—बुद्ध गीता में ‘कल्कि रूपोऽसौ ईश्वरः च परात्परम्’ कह कर श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वर्णन किया गया है। ‘कल्कि’ का अर्थ होता है— जागृत बुद्धि का घोड़ा। उस जागृत बुद्धि के घोड़े पर सवार विजयाभिनन्द बुद्ध (श्री देवचन्द्र जी) होंगे, किन्तु उस स्वरूप के द्वारा न तो अथर्ववेद के गुह्य रहस्य खुलेंगे न परमधाम की वाणी अवतरित होगी और न कतेब के रहस्य खुलेंगे। जब श्यामा जी की आत्मा दूसरे तन से (श्री मिहिरराज जी के तन से) लीला करेंगी तो श्री राज जी का यह स्वरूप, जब उस जागृत बुद्धि के घोड़े पर सवार होगा तो अथर्ववेद सहित कतेब के सभी रहस्य स्पष्ट हो जायेंगे। इसी स्वरूप से खिल्वत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार का भी अवतरण होगा, इसलिये इसे श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप कहा जायेगा अर्थात् विजय ही जिसका अभिनन्दन करे, वह विजयाभिनन्द है और ज्ञान की प्रत्येक दृष्टि से पूर्णता होने के कारण यह निष्कलंक स्वरूप कहलाया। अब जागृत बुद्धि रूपी घोड़े में किसी भी प्रकार का कलंक (अपूर्णता) का अस्तित्व नहीं रहा।

**ज्योतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक॥२८॥**

ज्योतिष के ग्रन्थों (भविष्य दीपिका आदि) में कहा गया है कि ‘श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप, कलियुग रूपी अज्ञान का विनाश करेंगे।’ इसी प्रकार इंजील (बाइबिल) में कहा गया है कि ‘जब ईसा मसीह पुनः आएंगे तो वे संसार में ईश्वरीय राज्य की स्थापना करेंगे।’

**जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए।
यो सारों ने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनी की कही॥२९॥**

यहूदी कहते हैं कि हमारे मूसा पैगम्बर सबसे बड़े हैं। उनके हाथ से ही समस्त संसार को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी। इस प्रकार सभी ने अपने-अपने धर्मग्रन्थों में अलग-अलग नामों से एकमात्र श्री प्राणनाथ जी की ही महिमा का गायन किया है।

**ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलम का आया आखिर।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब॥३०॥**

हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन और यहूदी आदि अपने-अपने धर्मग्रन्थों में अलग-अलग भाषाओं के अलग-अलग नामों के कारण उलझे हुये हैं, किन्तु सब में परब्रह्म के आने का एक ही निश्चित समय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनन्त ब्रह्माण्डों के स्वामी प्रियतम प्राणनाथ आए हैं, जिन्हें हिन्दू 'विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप' कह रहे हैं तो मुसलमान 'आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां,' क्रिश्चियन 'सेकेण्ड क्राइस्ट' तो यहूदी 'आखिरी मूसा'। अब कोई भी अक्षरातीत श्री जी के चरणों से अलग नहीं रह पायेगा।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करने वाले सुन्दरसाथ ने एक स्वर से यह स्वीकार किया-

**एही अक्षरातीत हैं, एही हैं धनी धाम ।
एही महम्मद मेहंदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम ॥बी.सा. 64/72**

भगवान बुद्ध ने भी एक बार कहा था कि मेरे बाद जो बुद्ध आएंगे वे मुझसे भी अधिक ज्ञानवान होंगे।

**सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाएके दिए॥३१॥**

सभी धर्मग्रन्थ श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने की इस प्रकार साक्षी दे रहे हैं, कि उनमें अलग-अलग भाषाओं के अलग-अलग नामों से श्री प्राणनाथ जी का ही वर्णन है। प्रियतम अक्षरातीत ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रगट होकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में सत्य और असत्य दोनों को अलग कर दिया है तथा माया-ब्रह्म की स्पष्ट पहचान करा दी है।

**दोनों जहान में थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन॥३२॥**

वेद-कतेब की दोनों धाराओं के अनुयायियों में यथार्थ सत्य का प्रकाश न होने से उलझन थी। वे मात्र कर्मकाण्ड या शरियत के ही मार्ग पर चल रहे थे। श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में हकीकत तथा मारिफत का ज्ञान देकर धरती और आकाश (समस्त ब्रह्माण्ड) को निर्मल कर दिया।

**ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप ।
गवाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे ॥३३॥**

श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा संसार के सभी मत-मतान्तरों के आपसी विरोधाभाष को समाप्त कर दिया है और सबको एक सत्य का मार्ग दर्शाकर आपस में मेल करा दिया है। परब्रह्म के स्वरूप की साक्षी तो परब्रह्म ही दे सकते हैं। इसी प्रकार श्री प्राणनाथ जी, अक्षरातीत के धाम, स्वरूप और लीला का वर्णन करते हुये भी अपने स्वरूप पर हुक्म का आवरण डाल देते हैं और कहते हैं, कि यह सारा वर्णन श्री राज जी के आदेश से हो रहा है।

विशेष—तारतम ज्ञान के प्रकाश में सैद्धान्तिक रूप से मत-मतान्तरों का विरोध तो समाप्त हो गया है किन्तु व्यवहारिक रूप में आंशिक ही विरोध समाप्त हुआ है। पूर्ण एकता तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही होगी, जहां सभी को जागृत बुद्धि मिलेगी।

**सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीम के द्वारे ॥३४॥**

कुरान में कहा गया है कि कियामत के समय जब परब्रह्म ईमाम महंदी के स्वरूप में प्रकट होंगे तो सारा संसार उनकी पूजा करेगा और वे सारे संसार को परमधाम के साक्षात्कार का मार्ग बताएंगे। यह तथ्य कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा हुआ है।

भावार्थ—पा. ३ सू. ३ आ. ८१ “व इज् अखजल्लाहु मीसाकत्रबिय्यीन लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिब्ब हिक्मतिन् सुम्म जाअकुम् रसूलुम्—मुसदिदकुल्लिमा मअकुम् ल तुअमिनुन्न बिही व ल तन्सुरुन्न काल अ अकूरतुम् व अखज्तुम् अला जालिकुम् इसरी कालू अकूरना काल फशहदू व अना मअकुम् मिनश्शहिदीन” और जब खुदा ने पैगम्बरों से वचन लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अदा करूं, फिर तुम्हारे पास कोई पैगम्बर मुहम्मद (इमाम महमत रूहुल्लाह) आए और तुम्हारी किताब (कुरआन) की तस्दीक करे तो तुम्हें उस पर जरूर ईमान लाना होगा और जरूर उसकी मदद करनी होगी और खुदा अल्लाह तुमने इकरार किया और इकरार पर मेरा जिम्मा लिया। उन्होंने कहा कि हमने इकरार किया। खुदा ने फरमाया तुम इसके गवाह रहो।

**लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार ।
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदर के माहें उतरे ॥३५॥**

कुरान में लैल-तूल-कदर (माया की इस प्रकार की लम्बी रात्रि) के तीन भाग ब्रज, रास और जागनी कहे गये हैं। इसमें ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों ने दो बार कालमाया के

तथा एक बार योगमाया के तन धारण कर लीला की है। इस लीला के लिए उन्हें परमधाम से बाहर माया की अज्ञानमयी रात्रि में अवतरित होना पड़ा है। इसके तीसरे भाग में तारतम ज्ञान के प्रकाश में मायावी रात्रि का अंधकार मिटकर उजाला होना है, जिसमें समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देने के लिए ज्ञान के द्वारा जागनी लीला होनी है।

**खौर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार।
हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥३६॥**

इस मायावी जगत में आने के बाद हजार महीने अर्थात् ८३ वर्ष ४ महीने तक ईश्वरीय सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि पर श्री राज जी की कृपा बरसती रही, जिसका दोनों सृष्टियों ने रसपान किया। प्रियतम अक्षरातीत ने इन दोनों सृष्टियों को संसार में परमधाम का ज्ञान फैलाने का आदेश दिया तथा इन्हीं के हाथ से समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भावार्थ- वि. सं. १६६४ से १७४८ तक एक हजार माह अर्थात् ८३ वर्ष ४ माह पूरे होते हैं, जिसमें बेहद से लेकर परमधाम तक का अमृतमयी ज्ञान अवतरित होता है। इसे ही परब्रह्म की कृपा का बरसना कहा गया है।

**यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारें सदी में देखो नजर ॥३७॥**

इस प्रकार मैं कुरान की कितनी साक्षियां दूँ? तीसवें सिपारे की इन्ना इन्जुलना आयत में इसका स्पष्ट वर्णन है। अपनी अन्तर्दृष्टि से देखिये तो यह विदित होगा कि जागनी लीला में ग्यारहवीं सदी में श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से अज्ञानता की रात्रि का अन्धकार मिटता है और प्रातःकाल का उजाला फैल जाता है।

**और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए ॥३८॥**

कुरान के पहले सिपारे में जो लिखा है, क्या तुमने उसे देखा नहीं है? मूल मिलावे में श्री राज जी के द्वारा 'कुन्न' कहकर सृष्टि रचना का आदेश देने की जो साक्षी दे, निश्चित रूप से उसे परमधाम की ब्रह्मसृष्टि समझना चाहिए।

भावार्थ- पा. ३ सू. ३ आ. ५६ 'इन्न मसल इसा इन्दल्लाहि क मसलि आदम खलकह मिन् तुराबिन् सुम्म काल लह कुन् फ यकूनु' बेशक अल्लाह के नजदीक ईसा की मिसाल आदम की

जैसी है। अल्लाह ने मिट्टी से आदम के शरीर को बनाकर उनको हुक्म दिया कि हो जा तो वह इन्सान हो गया।

**अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित ।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान ॥३९॥**

अब यदि कोई मूल मिलावे में श्री राज जी के द्वारा कुन्न कहने की साक्षी दे देता है, तो वह स्वयं को ब्रह्मसृष्टि होना सिद्ध कर सकता है। कुर्आन- हदीसों के अत्यधिक अध्ययन का अहंकार छोड़कर अपने अन्दर के संशय को नष्ट कीजिए तथा अपनी आत्म-जागृति के प्रति सावधान हो जाइए।

**हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोई ।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥४०॥**

मेरे कथनों पर पहले वही ईमान (तृढ़ विश्वास) लायेगा, जो मुहम्मद स. के ऊपर अटूट विश्वास रखता हो और उनके द्वारा दर्शाये गये शाश्वत सिद्धान्तों का पालन करता हो। योगमाया के ब्रह्माण्ड में तो सम्पूर्ण जगत ही अक्षरातीत पर विश्वास (ईमान) लायेगा।

**भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई ।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥४१॥**

अपने प्राणेश्वर के चरण कमलों को अपने हृदय में बसाकर महाराजा छत्रसाल जी कहते हैं, कि तारतम ज्ञान के प्रकाश में अब बहिश्तों तथा दोजक का विवरण स्पष्ट हो गया है। अब सबके लिये परमधाम का मार्ग दर्शाया जा चुका है। योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाले न्याय के समय कोई भी किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकेगा। अतः यही स्वर्णिम अवसर है, कि स्वयं सत्य के मार्ग पर चलें तथा दूसरों को भी चलायें।

॥ प्रकरण ॥१॥ चौपाई ॥४१॥

इस प्रकरण में कुर्आन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

**एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहू की ना रही ॥१॥**

परब्रह्म के द्वारा कहे गये इस कुर्आन की पहली विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के मात्र बाह्यार्थ से ही वास्तविक सत्य का पता नहीं चलता। अतः इसके गुह्यार्थ को जानना

आवश्यक है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि कुर्आन में संकेतों में जो बात कही गयी, उसमें ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त अन्य किसी को भी यह दावा करने का अधिकार नहीं है कि मैंने इसका अभिप्राय समझ लिया है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।

सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें ॥१२॥

कुर्आन की तीसरी विशेषता यह है कि इसमें अलग-अलग आयतों में अलग-अलग कड़ियों (प्रसंगों) के रूप में वर्णन किया गया है, जिन्हें जोड़ने पर वास्तविक आशय ज्ञात होता है। चौदह लोकों के मनुष्यों की बुद्धि वहां तक नहीं पहुँच पाती है। उस रहस्य को मात्र परब्रह्म ही जानते हैं जिन्हें परमधाम के मोती रूप ब्रह्ममुनियों के हृदय में बिठाना है।

भावार्थ- कुर्आन के पारों में लिखा है कि जिस दिन (क्यामत) के लिए जल्दी मचा रहे हैं तो उसका एक दिन मुर्कर है फिर लिखा है कि वह एक दिन तुम्हारी गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है। इन दोनों बातों को जोड़ने से मालूम होता है कि क्यामत का छोटा दौर शुरू होगा। तो वह एक हजार हिजरी साल से शुरू हुआ। जिसके बाद इस्लामी हुकुमतों का दौर जवाल (पतन) में आया। इस प्रकार इमामे अम्र के जहूर को न मानने वाले पतित हो गये।

केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान ।

ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार ॥१३॥

कुर्आन पढ़ने वाले ये लोग काजी कहलाते हैं किन्तु इन्हें न तो परब्रह्म की पहचान है, न मुहम्मद स. और न ब्रह्ममुनियों की। इन्हें तो कुर्आन या अपने स्वरूप की भी पहचान नहीं है, किन्तु धर्म के ये अग्रगण्य स्वयं को कुर्आन के ज्ञान का उत्तराधिकारी समझते हैं।

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।

ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ॥१४॥

जो अज्ञानता वश कुर्आन के मात्र बाह्य अर्थ को ही ग्रहण करते हैं, उनके लिये कुर्आन में बार-बार धिक्कार लिखी है। उनके हृदय में बैठा हुआ अज्ञान रूपी शैतान उन्हें बार-बार कुर्आन के वास्तविक ज्ञान को छिपाये रखने के लिये प्रेरित कर रहा है।

भावार्थ- कुर्आन में वर्णन है कि हमने आंखों तथा कानों पर मोहर लगा दी है। लिहाजा दुनियां वाले इमामे जमाना के दौर को देखकर भी नहीं मान रहे हैं कि उनका जहूर हो चुका है।

ऐसे लोग माया के अधीन होकर संसार की लीला में मग्न है। रोजे आखिरत को इसकी सजा अवश्य ही भुगतनी होगी।

**दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह।
हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे॥५॥**

इन तथाकथित काजियों के हृदय में इब्लीश (शैतान) का स्वामित्व है जो उन्हें धर्म के सच्चे मार्ग पर नहीं चलने देता। अज्ञान ने इन्हें इतना विवेकहीन कर रखा है कि ये लोग पूर्णरूप से माया की ही तृष्णा में डूबे हुए हैं।

**सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिल के दीदे दिए फोर।
दुस्मनें ना छोड़्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी देर॥६॥**

संसार के सभी प्राणियों के अंग-अंग में शैतान (अज्ञान) अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ बैठा है। उसने उनके हृदय की आंखों को फोड़ दिया है अर्थात् विवेक को नष्ट कर दिया है। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहां अज्ञान ने अपना साम्राज्य स्थापित न किया हो।

भावार्थ- 'जगत मोहात्मकं प्राहुः अव्यक्तात् व्यक्तं संज्ञकम्' महाभारत के इस कथन के अनुसार अव्यक्त प्रकृति से उत्पन्न होने वाला यह सम्पूर्ण जगत मोहमयी (अज्ञान रूप) है। जहां पर परब्रह्म की कृपा नहीं है, वहां पर अज्ञान रूपी शैतान (कलियुग, इब्लीश) का ही वर्चस्व है।

**उबरीं एक रूहें उमत, दूजे गिरो फरिस्तोंकी इत।
जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरों में पातसाही करी॥७॥**

अक्षरातीत की छत्रछाया में रहने वाली ब्रह्मसृष्टियां तथा दूसरी ईश्वरीय सृष्टि ही इस शैतान (अज्ञान) के बन्धनों से मुक्त रह सकी हैं। हिन्दू तनों में प्रकट होने वाली ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों के मध्य आखरूल इमाम मुहम्मद महंदा श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हुआ, जिन्हें सभी ने अपना आराध्य माना।

**देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबोंका दिया भान।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन॥८॥**

श्री प्राणनाथ जी ने कलश तथा सनंध ग्रन्थ का ज्ञान देकर सबके अन्दर की अज्ञानता को नष्ट कर दिया और सबको परमधाम का मार्ग दिखाया। किन्तु जो इन दोनों ग्रन्थों के

कथनों पर विश्वास नहीं करेगा उसे प्रायश्चित की अग्नि में जलकर अन्ततोगत्वा सत्य को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

**जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर।
कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा ॥९॥**

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में अज्ञानता का अन्धकार छाया हुआ था। इब्लीश (अज्ञान) के वशीभूत होकर संसार के लोग उल्टी दिशा में चल रहे थे किन्तु श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा सबको परमधाम का सत्य मार्ग दिखाया और सबको उस अक्षरातीत के चरणों में प्रणाम कराया, जो शाश्वत हैं, अनादि है और स्वलीला अद्वैत हैं।

**खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ॥१०॥**

खेल की समाप्ति के पश्चात् ब्रह्मसृष्टियों का परमधाम जाना निश्चित हुआ तो ईश्वरीय सृष्टि को अक्षर धाम (सत्स्वरूप), शेष समस्त जीव सृष्टि को बेहद के सबलिक एवं अव्याकृत की बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड मुक्ति का सुख मिला।

**भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध।
कहे छत्ता जो ल्यावे ईमान, खास उमत का सोई जान ॥११॥**

इस प्रकार श्री जी ने संसार के समस्त जीवों को बेहद की आठ बहिश्तों में स्थान दिया। इस तरह से जीवों के द्वारा अखण्ड सुख को प्राप्त करने का लक्ष्य पूर्ण हो गया। छत्रसाल जी कहते हैं कि जो श्री प्राणनाथ जी पर पहले विश्वास लायेगा, उसे ही ब्रह्मसृष्टि मानना चाहिए।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि के जीवों को सत्स्वरूप की दो बहिश्तों में स्थान मिला। शेष जीवों को सबलिक की तीन तथा अव्याकृत की तीन बहिश्तों में स्थान मिला।

॥ प्रकरण ॥२॥ चौपाई ॥५२॥

यह प्रकरण भी श्री प्राणनाथ जी की पहचान से सम्बन्धित है।

**लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर ॥१॥**

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियों को श्री राज जी के सभी अखण्ड सुख स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं इसलिए संसार के क्षणिक सुखों के प्रति उनके मन में

कोई आकर्षण नहीं होता। बिहारी जी महाराज, नवतनपुरी में चाकला मंदिर की गादी पर अवश्य विराजमान हैं किन्तु श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान न करने के कारण वे काफिर के समान हैं। वे चाकला मंदिर की गादी पर विराजमान होकर लौकिक सुखों में आराम से जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

भावार्थ—नवतनपुरी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तन से श्री राज जी की लीला होने से उसे मक्का कहा गया है। सुपुत्र होने के कारण बिहारी जी महाराज को वहां की गादी मिलती है किन्तु उनके अंदर आध्यात्मिकता का प्रकाश नहीं है। परिणाम स्वरूप वे श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं कर पाए और हमेशा उन्हें कष्ट देने का प्रयास करते रहे। यद्यपि उनके अंदर भी रतनबाई की आत्मा है किन्तु जीव भाव से सुन्दरसाथ एवं श्री जी के प्रति बुरा व्यवहार करने के कारण उन्हें काफिर कहा गया है।

**जो पूजे मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोडें ईमान ॥२॥**

बिहारी जी का हृदय पत्थर के समान शुष्क और कठोर गादी है। के ऊपर अंधश्रद्धा रखने वाले सुन्दरसाथ ने आध्यात्मिकता से रहित बिहारी जी को सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का साक्षात् स्वरूप मानकर अज्ञानतावश पूजना प्रारम्भ कर दिया। किन्तु जिन सुन्दरसाथ ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान युगल स्वरूप की पहचान कर ली वे अपना घर-परिवार सब कुछ छोड़कर जागनी कार्य में निकल पड़े। दिल्ली, उदयपुर, मंदसौर, औरंगाबाद आदि स्थानों में उन्हें भूख-प्यास तथा पैदल आदि का बहुत कष्ट सहना पड़ा किन्तु श्री जी के प्रति उनके विश्वास में कोई कमी नहीं आयी।

**तिनकी तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस ॥३॥**

अपना सर्वस्व त्याग करने वाले इन ब्रह्ममुनियों को सांत्वना देने के लिए मूलस्वरूप श्री राज जी के द्वारा श्री महामति जी को यह निर्देश हुआ कि उन्हें परमधाम के अलौकिक ज्ञान का सुख दिया जाय। परमधाम के इन ब्रह्ममुनियों ने वैराग्य का भेष धारण कर लिया है। इस्लाम धर्म में इन्हें ही खुदा से प्रेम करने वाला फकीर कहा गया है।

**याकी मुराद कही इसलाम, यों कहा माहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमद को देवें फरेब ॥४॥**

कुरान में ऐसा कहा गया है कि ये ब्रह्ममुनि केवल धर्म के स्वरूप में ही स्थित रहना चाहते हैं। संसार के जो जीव श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं कर पाते हैं, वे उन्हें कवि, जादूगर, ठग आदि अपशब्दों से सम्बोधित कर वशीभूत करने वाला कहते हैं।

**बीच आवें जाएं सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर।
काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर॥५॥**

श्री प्राणनाथ जी के चरणों में ऐसे सांसारिक लोग भी आते हैं, जो किसी व्यापारी के समान थोड़ी-सी सेवा (भोजन आदि की) करके संसार के नश्वर सुख, सम्पत्ति तथा पद-प्रतिष्ठा के आशीष की कामना करते हैं। काफिर अपने दुर्भाग्य से उनके चरणों की छत्रछाया से शीघ्र ही दूर हो जाते हैं, जबकि ब्रह्ममुनि हर पल उनकी सानिध्यता में रहते हैं तथा उन्हें परब्रह्म का स्वरूप मानकर अपनी सेवा से रिझाते हैं।

भावार्थ- जिस प्रकार कोई व्यापारी अपने व्यापार में थोड़ी सी पूँजी लगाकर ज्यादा लाभ कमाना चाहता है, उसी प्रकार सांसारिक लोग भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की यथार्थ रूप से पहचान न कर पाने के कारण अपनी थोड़ी-सी शारीरिक या आर्थिक सेवा के बदले बहुत-सा सांसारिक सुख या पद चाहते हैं। इसी प्रकार, औरंगजेब के काजी शेख इस्लाम, आकिल खान, रिजवी खान, उदयपुर के राणा और उसके पण्डित, औरंगाबाद में फतह मुहम्मद और रामनगर के राजा जैसे काफिर लोग भी थे, जो अपने बुरे-विचारों के कारण श्री जी को पहचान नहीं सके और उनके चरणों से दूर हो गए।

**सो काफर पड़े माहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार॥६॥**

कियामत की इस घड़ी में जो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं कर पाते हैं और उन पर संशय करते हैं, उन काफिरों को पश्चाताप (दोजक) की अग्नि में जलना पड़ेगा। इसके विपरीत जो परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं, वे अपनी आत्म जागृति के प्रति सतर्क हैं और इस बात से वे हमेशा डरते हैं कि अपने प्राणेश्वर के प्रति प्रेम, समर्पण और पहचान में कहीं कोई कमी न रह जाए, जिससे परमधाम में सबके सम्मुख उन्हें लज्जा से मुख नीचा न करना पड़े।

**बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमत की।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक॥७॥**

कियामत के समय में इन ब्रह्मात्माओं की अपार महिमा प्रकट हुई है। ये परब्रह्म की अंग स्वरूपा हैं और शाश्वत हैं। ये जिस परमधाम में रहती हैं, वहां अलौकिक शोभा वाले नूरमयी बाग-बगीचे हैं।

**दूध सहद की नदियां चले, बागों बीच दरखतों तले।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदा की मेहेरबानी॥८॥**

परमधाम के बागों में वृक्षों के नीचे इसे दूध (वहदत-एकत्व) तथा शहद (ज्ञान) की बड़ी-बड़ी नहरें (नदियां) प्रवाहित होती हैं। इन ब्रह्मात्माओं पर श्री राज जी की अपार कृपा की वर्षा होने वाली है क्योंकि उन्होंने ब्रह्ममुनियों को चितवनी के द्वारा अखण्ड शान्ति देने वाली परमधाम की शोभा के रसास्वादन करने का निमन्त्रण दिया है।

**जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेब के हजूर॥९॥**

सत्स्वरूप की बहिश्त में तरह-तरह के नूरमयी मेवे, मिठाईयां एवं आनन्द की लीला रूप सामग्री है। अक्षर ब्रह्म की स्वाप्निक लीला को देखकर शान्ति के स्वरूप ब्रह्ममुनि मूल मिलावे में अपने आराध्य श्री राज जी के सम्मुख विद्यमान अपनी परात्म के तनों में जागृत हो जायेंगे।

**जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाए के।
और जाहेद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदार की कस्त॥१०॥**

परमधाम में रहने वाले ब्रह्ममुनि सर्वदा श्री राज जी के प्रेम भरे मधुर दर्शन की ही कामना करते हैं। संसार के जीव परब्रह्म की कृपा से बेहद की बहिश्तों के अधिकारी बनेंगे। इसी प्रकार संयमी तथा भक्ति में लीन रहने वाली ईश्वरीय सृष्टि भी सत्स्वरूप की बहिश्त की कामना करती है।

**जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार॥११॥**

जो धर्मानुकूल शुभ कार्य करने वाले ब्रह्ममुनि हैं, उन्होंने तारतम ज्ञान के द्वारा अपने प्राणेश्वर को गोपनीय रूप से श्री मिहिरराज जी के तन में लीला करते हुए पहचान लिया है और उनका दर्शन भी किया है। जो श्री कुलजम् स्वरूप के कथनों के अनुसार परमधाम के प्रेम मार्ग पर चलने वाले हैं, वे अति श्रेष्ठ हैं और ब्रह्मसृष्टियों की जागनी लीला में प्रमुख हैं।

**ए जो कही किताबें तीन, तिनपर है हक का आकीन।
सिफ्त जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाए का डर॥१२॥**

रास, कलश तथा सनंध ग्रन्थ के द्वारा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान होती है और उन पर पूर्ण विश्वास (ईमान) आता है। इन तीनों ग्रन्थों के माध्यम से श्री जी ने सम्पूर्ण

मानव जाति को परमधाम के प्रेम मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। इनकी अपार महिमा है। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं श्री राज जी ही लीला कर रहे हैं, ऐसा मानकर अपने हृदय में हमेशा इस बात का भय बनाये रखना चाहिए और धाम धनी से प्रार्थना करनी चाहिए, कि हमारा विश्वास कभी भी खण्डित न हो और हम हमेशा ही उनके निर्देशों पर चलते रहें।

**अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान।
जो हवसेका पातसाह, पाई इन किताबों से राह॥१३॥**

रास, कलश तथा सनद ग्रन्थ के द्वारा ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिये मूल स्वरूप श्री राज जी का आदेश हुआ। हब्शे के बादशाह की भांति श्री मिहिरराज जी (श्री महामति जी) को इन तीनों ग्रन्थों से जागनी का मार्ग प्राप्त हुआ।

भावार्थ- अफ्रीका के इथोपिया (हब्शे) देश का बादशाह ईसाई था। वहां मुहम्मद स. के विरोधियों द्वारा प्रताड़ित अरब के कुछ मुसलमान पहुँचे और उन्होंने बादशाह को कुर्आन का सूरा मरियम सुनाया। यह सुनकर हब्शे का बादशाह इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि उसे आज सत्य का यथार्थ बोध हुआ है। वह आज दिन तक भ्रमवश ईसा मसीह को ही अल्लाह का पुत्र समझता था। उसके पश्चात् वह मुहम्मद स. के प्रति ईमान ले आया।

इस कथानक का सूक्ष्म आशय यह है कि हब्शे में रास (इंजील) तथा कलश (तौरेत) की दो चौपाईयों के अवतरण ने श्री मिहिरराज जी के तन में विद्यमान श्री इन्द्रावती आत्मा को जागनी कार्य के लिये तत्पर कर दिया। स्वयं श्री राज जी ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर यह निर्देश दिया कि महामति! तेरे तन से ही परमधाम की वाणी अवतरित होगी। तुम्हें सारा संसार मेरा ही स्वरूप मानकर आराधना करेगा। समस्त ब्रह्मात्माओं को जगाने का उत्तरदायित्व तुम्हारा ही है। इस घटना के पश्चात् श्री महामति जी ने अपने धाम हृदय में ही अक्षरातीत का निवास माना, गादी में नहीं। यहीं से वास्तविक जागनी लीला का प्रारम्भ होता है।

**इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद।
जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाए के खासे फैल॥१४॥**

परम शान्ति की इच्छा करने वाले जिन ब्रह्ममुनियों ने इन तीनों ग्रन्थों के दिव्य ज्ञान की चाहना की, उन्हें अध्यात्म जगत के गुह्य रहस्यों का पता चला। इन ब्रह्ममुनियों को कुर्आन में परब्रह्म का प्रेमी (दोस्त) कहा गया है। इनका हृदय ही प्रियतम का धाम कहलाता है। ये अपने विरह, प्रेम, समर्पण आदि के अपने विशिष्ट आचरण के कारण श्री राज जी के अत्यन्त निकटस्थ (अंग रूप) कहे जाते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'दोस्त' का तात्पर्य प्रेमी से है। इस सम्बन्ध में श्री कुलजुम स्वरूप के ये कथन दर्शनीय हैं-

ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत । श्रृं. 29/6

दोस्त मेरे मोमिन, और मासूक हादी बेसक । श्रृं. 29/22

सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद ।

वास्ते नेकी आखिरत, कबू न छोड़ें खास उमत ॥१५॥

इस नश्वर संसार के मोह का परित्याग करने के लिये परमधाम के ब्रह्ममुनि श्री प्राणनाथ जी के वचनमृत रूप श्री कुलजुम स्वरूप के किसी भी शब्द को छोड़ते नहीं हैं अर्थात् सम्पूर्ण ग्रन्थ का चिन्तन करके उसे आत्मसात् करते हैं। कियामत (आखिरत) के समय में नेकी के लिये ये श्री जी के प्रति अपने अटूट विश्वास, प्रेम एवं समर्पण को कभी भी नहीं छोड़ते हैं।

भावार्थ- 'नेकी' का अर्थ होता है- शुभ कार्य। ब्रह्ममुनियों के लिये अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं अटूट विश्वास रखना ही सबसे बड़ा शुभ कार्य है।

अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज ।

खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ॥१६॥

जब ब्रह्ममुनियों ने अपने प्राणेश्वर के प्रति अटूट विश्वास प्रेम, एवं समर्पण रखने का अपना कर्तव्य पूरा किया, तो इनके ऊपर से लोक व्यवहार का ऋण स्वतः ही समाप्त हो गया। इन्होंने खिलवत, परिक्रमा, सागर और शृंगार के रूप में परमधाम के आनन्द का अक्षय धन रूपी कोश (खजाना) पाया है, जिससे इन्हें इस संसार में ही परमधाम की शोभा, लीला, प्रेम, एकत्व आदि अनेक प्रकार की निधियों के आनन्द का रसपान करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

भावार्थ- संसार में मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं ऋषि ऋण के रूप में तीन ऋणों की चर्चा की जाती है। राष्ट्र एवं समाज के प्रति भी कुछ कर्तव्य होते हैं, किन्तु जो व्यक्ति त्रिगुणातीत अवस्था को प्राप्त कर लेता है एवं अक्षरातीत परब्रह्म का साक्षात्कार कर लेता है, उसके ऊपर किसी भी प्रकार का कोई ऋण नहीं होता है। उसे संसार के सभी बन्धनों एवं लोक-कर्तव्यों से परे माना जाता है।

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाए के हिसाब ।

सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन ॥१७॥

इस संसार में आने पर किस ब्रह्मात्मा ने अपने प्राणेश्वर के प्रति कितना प्रेम, श्रद्धा, समर्पण एवं विश्वास रखा है, इसका निर्णय शीघ्र ही परात्म में जागृत होने पर श्री राज जी के

सम्मुख होगा। ब्रह्ममुनियों के लिये सबसे बड़ी भक्ति यही है, कि वे अपने जीव के काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष और अहंकार आदि शत्रु रूप विकारों को नष्ट कर दें तथा निर्मल हो जायें।

**एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत।
आप रखो पाउं उस्तुवार, मैदान लड़ाई हो हुसियार॥१८॥**

हे साथ जी! आपके लिये प्रेम और विश्वास (ईशक-ईमान) का मार्ग ही हकीकत (सत्य) का पन्थ है, जो आपको इस संसार में प्रियतम की अनुभूति करायेगा किन्तु इसके साथ ही शरीयत (कर्मकाण्ड) के पालन का यह आदेश स्वीकार कीजिए कि आप अपने अन्तःकरण के काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों को दूर कर उसे निर्मल बनाइये। आप मेरे द्वारा बताये हुए इस मार्ग पर चलने के लिये अपने कदम रखिए और शैतान (अज्ञान) से युद्ध करने के लिये तैयार हो जाइये।

भावार्थ- संसार के जीव शरीर को स्वच्छ रखना कर्मकाण्ड का आधार मानते हैं किन्तु ब्रह्मसृष्टियों के लिये अन्तःकरण को शुद्ध करना कर्मकाण्ड है। प्रेम के मार्ग पर चलने से हृदय स्वतः ही निर्मल हो जाता है। उसके लिये अलग से कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है। चितवनी की प्रेमाग्नि काम-क्रोध और अहंकार के बड़े-बड़े वनों को पलभर में ही जलाकर राख कर देती है।

**ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाए का है दुस्मन।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर॥१९॥**

सभी जीवों के हृदय में बैठा हुआ अज्ञान रूपी इब्लीश ही परब्रह्म की राह में सबसे बड़ा बाधक है। काफिर रूप यह इब्लीश अपनी कितनी ही शक्ति क्यों न लगाये किन्तु ब्रह्मसृष्टियों के सामने इसका बल नहीं चलता।

**बाजे नजीक अर्ज निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर॥२०॥**

कुछ लोग परब्रह्म की सानिध्यता (निकटता) प्राप्त करने के लिये प्रार्थना एवं भक्ति (बन्दगी) करते हैं किन्तु उनके आदेश से अवतरित श्री कुल्जुम स्वरूप के निर्देशों का डर नहीं रखते हैं अर्थात् उसका पालन नहीं करते हैं। अतः श्री कुल्जुम स्वरूप में श्री जी का कथन है कि भक्ति के पश्चात् यह डर भी होना चाहिए, कि श्री राज जी हमारे प्रत्येक कार्य को देख रहे हैं। यदि हम बुरे कार्य करेंगे तो उसका दण्ड मिलेगा।

**फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर॥२१॥**

श्री महामति जी के धाम हृदय में कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों का प्रकटीकरण हुआ है। उन्होंने अपने हृदय से यह बात कही है कि श्री कुलजुम स्वरूप के निर्देशों के अनुसार जो व्यक्ति परब्रह्म के प्रति अटूट प्रेम एवं विश्वास रखेगा, वह बहुत शीघ्र ही इस संसार चक्र से मुक्त होकर अखण्ड सुख का अधिकारी बनेगा।

**नफसों से करो सबर, मारे हिरस हवा परहेज कर।
दिल से दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर॥२२॥**

अपनी पांचों इन्द्रियों के विकारों शब्द, स्पर्श, रूप, रस, एवं गन्ध के प्रति संतोष रखिए अर्थात् इनमें लिप्त न होइए (दूरी बनाये रखिए)। विशय भोगों की तृष्णा से दूर रहिए। सुख-दुःख के प्रति सम रहते हुए अपने हृदय में संतोष का भाव बनाए रखिए, तभी आप अपने आराध्य श्री राज जी की सच्ची प्रेम-लक्षण भक्ति कर सकेंगे।

**बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम॥२३॥**

पूर्ण विश्वास के साथ भक्ति करने वाले को परब्रह्म सभी प्रकार के कष्टों से दूर रखते हैं। अतः यदि आप अपनी आत्मा को प्रियतम अक्षरातीत से मिलाना चाहते हैं, तो श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा अध्यात्म-जगत में जो न्याय किया है, उसे स्वीकार कीजिए अर्थात् श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के अनुसार आचरण कीजिए।

भावार्थ- संसार में तीन प्रकार के कष्ट होते हैं- १. दैहिक-शरीर जन्य व्याधि आदि के द्वारा २. जीव के शुभ-अशुभ कर्मों के द्वारा परमात्मा की ओर से मिलने वाला ३. प्राकृतिक आपदा के रूप में मिलने वाला कष्ट।

**दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद॥२४॥**

श्री राज जी के अतिरिक्त पद, प्रतिष्ठा तथा लौकिक सुख आदि वस्तुओं को अपने से अलग कीजिए। प्रेम, समर्पण, विश्वास सेवा आदि महान गुणों को अपने हृदय में दृढ़ता पूर्वक धारण कीजिए। ऐसा करने पर आपको परब्रह्म की कृपा का लाभ मिलेगा तथा श्री राज जी के

हृदय में विद्यमान प्रेम, एकत्व आदि का गुह्य रहस्य प्राप्त होगा। जो निषिद्ध वस्तुएं हैं, उनसे स्वयं को पूर्ण रूप से अलग कर लीजिए।

भावार्थ- निषिद्ध वस्तुएं इस प्रकार हैं-

पीउना तमाखू छोड़ देओ, मांस मछली सब ।

सराब और सब कैफ, परदारा चोरी न कब ॥ बीतक साहेब 27/29

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब ।

पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥ २५ ॥

साक्षात् परब्रह्म श्री मिहिरराज जी के पंच भौतिक तन के आवरण (परदे) में अपने आवेश स्वरूप द्वारा विराजमान हैं। इस आवरण ने ही आपकी आत्मा की अन्तर्दृष्टि को अन्धेरे में रखा हुआ है, जिससे वह अपने प्राणेश्वर को पहचान नहीं पा रही है। यदि आप अपनी विवेक दृष्टि से उनके स्वरूप को पहचान कर अपने हृदय के सम्पूर्ण प्रेम के साथ न्योछावर हो जाते हैं, तो आपको केवल लाभ ही लाभ होगा। आपको श्री राज जी के द्वारा परमधाम की अखण्ड सम्पदा अर्थात् आठों सागरों का रस प्राप्त होगा।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए।

छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर ॥ २६ ॥

हे साथ जी! यदि आप परमधाम के आठों सागरों का अखण्ड धन प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको अपने हृदय के सम्पूर्ण प्रेम के साथ पूर्णतया समर्पित होना होगा। कोई भी व्यक्ति बिना समर्पित हुए परमधाम के उस अखण्ड धन को प्राप्त नहीं कर सकता। संसार की पद-प्रतिष्ठा तथा सुखों का मोह छोड़ दीजिए और परमधाम एवं युगल स्वरूप के प्रेम में अपना सर्वस्व त्याग दीजिए।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन।

बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥ २७ ॥

आज दिन तक किसी ने भी कुरआन के गुह्यतम रहस्यों को स्पष्ट नहीं किया था। वे आज दिन तक कुरआन में छिपे ही रहे हैं। मेरे प्रियेश्वर ने मेरे नाम को शोभा देकर इस कियामतनामा में उन कठिन प्रश्नों का सरल समाधान प्रस्तुत किया है।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ७९ ॥

इस प्रकरण में महाराजा छत्रसाल जी की आत्म जागृति पर प्रकाश डाला गया है-
तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥१॥

कुर्आन के तीसरे सिपारे आल-ए-इमरान की तफसीर-ए-हुसैनी में इमाम मिस्त्री और महमूद गजनवी के मिलाप की बड़ी ही सुन्दर व्याख्या की गयी है। उसमें यह बताया गया है, कि गजनी के सुलतान महमूद गजनवी की जब इमाम मिस्त्री से भेंट हुई तो संसार को बहुत सुख हुआ।

भावार्थ- इस कथानक से तात्पर्य तत्कालीन मुगल बादशाह मुहीद्दीन औरंगजेब और इमाम मेहमत रूहुल्लाह साहिबुज्जमां की दो बार मुलाकात से है, जिसका उदाहरण वृत्तांत मुक्तावली के प्र. ६० चौ. ७-१६ में औरंगजेब व श्री प्राणनाथ जी से है। दूसरी ओर समाज में प्रचलित इसका सूक्ष्म आशय महाराजा छत्रसाल जी और श्री प्राणनाथ जी के मिलन से है। किन्तु दूसरे प्रसंग में इसका तात्पर्य औरंगजेब बादशाह से भी है, जो श्री जी के चरणों का लाभ न ले सका।

कुर्आन के तीसरे सिपारे की तफसीर-ए-हुसैनी जिल्द अब्बल पन्ना नं. ६५ में लिखा है कि तफसीर बसाईर में लिखा है कि सुलतान महमूद गजनबी ने जब सोमनाथ का कस्द (बुतखाना) ध्वस्त किया तो इमाम मिस्त्री गजनवी जो उस वक्त अपने जमाने में कुतब औलिया थे, उनकी खिदमत (सेवा) में सुलतान महमूद गजनवी ने हाजिर होकर फतहमंद (विजयी) होने के वास्ते दुआ चाही और उसी तरह सफ नंआल (लाईन) में खड़े होकर आया। उसकी तफसीर का नुक्ता पूछा। इस आयत की बहुत खुली हुई एक सूरत यह है कि तू सतरह सौ जंगली हाथी, पाँच हजार फर्जद आबाद मुल्क और लाख सवार रखता है। बाईस बामुल्क की ज्यारत (दर्शन) को ख्वाहिश में हक़ तआला तुझे मुझ जैसे फकीर के घर में लाता है और सफ के नीचे जहां जूतिया उतारते है, वहां खड़ा रखता है, आजादी में सद्र नशीन करता है और मुझे उस फटी कमली और नंगे होने में मुल्क कवाइत बख़्शता है और आजादी में सद्र नशीन करता है।

लागन हिंदु मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान।
ढाए हिंदुओं के खाने बुत, दिल में इमाम की ज्यारत ॥२॥

औरंगजेब बादशाह (महमूद गजनवी) के मन में हिन्दुओं के प्रति द्वेष भाव था, जिसके कारण हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष छिड़ा हुआ था। उसके मन में इमाम महंदी से मिलने की इच्छा थी, इसलिये उसने हिन्दुओं के मन्दिरों को ढहाना प्रारम्भ किया, जिससे विवश होकर इमाम महदी को उनके सम्मुख आना पड़े।

भावार्थ- ऐतिहासिक तथ्य यह भी है कि गजनवी का सुल्तान महमूद गजनवी था, जिसने भारत विजय के लिये इमाम मिस्त्री आशीर्वाद मांगा। इस प्रसंग को इमाम गजाली ने लेखनी बद्ध किया है।

**अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार।
बंदगी माहें था बड़ा, सफ तलेकी रहेता खड़ा॥३॥**

औरंगजेब अपने समय में इस्लाम पर अत्यन्त दृढ़ आस्था रखने वाला था। वह कुतब और औलिये जैसे फकीरों में प्रमुख था। वह निष्ठा पूर्वक पांचों वक्त की नमाज पढ़ा करता था। जामा मस्जिद में नमाज पढ़ते समय वह नमाजियों के पीछे खड़ा हुआ करता था।

**तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही॥४॥**

कुरान की पार: १ सूर: २ आयत १०५ में कहा गया है कि अल्लाह जिसको चाहे इज्जत दे या ज़िल्लत। औरंगजेब बादशाह के अंदर इमाम महदी से मिलकर बहिश्त के सुख की कामना थी इसलिये वह अल्लाह से दुआ करके सूर फातिहा पढ़ा करता था। उसे अवसर तो मिला था, किन्तु उसने खो दिया। फकीर की सुल्तान से जब बातें हुईं तो उसे विश्वास आ गया।

भावार्थ- अलिफ् लाम् मीम् १ “मा यवदुल्लजीन कफरु मिन् अह्लिल् - किताबि व लल्मुशरिकीन अय्युनज्जल अलैकुम् मिन् खैरिम्-मिर्रब्बिकुम् वल्लाहु यख्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशाअु वल्लाहु जुल्फज़लिल्-अजीमि(१०५)” अर्थात् किताब वालों में से जो लोग इन्कार करने वाले हैं और मुशरिक, वे दोनों ही इस बात से खुश नहीं हैं कि तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से तुम पर भलाई उतरे। यहूदी तमन्ना करते हैं कि बनी इस्राईल में से अन्तिम रसूल होता और मुशरिक चाहते हैं कि अन्तिम रसूल उनकी जाति में से होता परन्तु अल्लाह ने जिस पर चाहा अपनी दया उतारी। और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए चुन लेता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है।

ऐतिहासिक घटना है कि भारत विजय के लिए गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने इस्ताम्बूल (अंकारा) में खलीफा से दुआ करने का आग्रह किया। उन्होंने इमाम मिस्त्री के पास भेज दिया जो उस समय अरब में निवास कर रहे थे। उसे आशीर्वाद तो मिल गया, किन्तु निर्दोश स्त्रियों और बच्चों पर भयंकर अत्याचार करने के कारण वह गुनाहों के कीचड़ में फंस

गया था। जब वह सोमनाथ के मंदिर को लूटकर आ रहा था तो कुछ जाटों और भाटी हिन्दुओं ने रेगिस्तान में उसे भटका दिया जिसके कारण वह गजनी पहुंचते-पहुंचते भयंकर मलेरिया (फेफड़े गलने) के रोग से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार, औरंगजेब बादशाह की भी इमाम महंदा श्री प्राणनाथ जी से शेख वाजिद के तकिए के पास भेंट हुई। उसने श्री जी की सारी बातों को स्वीकार कर लिया, किन्तु किसी भी स्थिति में शरीयत छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करके भी उसने अपने अहंकार एवं शरीयत के प्रति अपनी कट्टरता के कारण परमधाम की अखण्ड सम्पदा लेने का अवसर खो दिया।

पा. ३ सू. ३ आ. २६ “कुलिल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तुअतिल्मुल्क मन् तशाअु व तन्जिअुल्मुल्क मिम्मन् तशाअु व तुइज्जु मन् तशाअु व तुजिल्लु मन तशाअु बि यदिकल्खैरु इन्नक अला कुल्लि शैइन् कदीरुन्” कहो कि ऐ खुदा! बादशाह के मालिक। आप जिसे चाहे बादशाही बख्शो और जिससे चाहे बादशाही छीने लेवे जिसको चाहे इज्जत बख्श दे और जिसको चाहे जलील करे। हर प्रकार की भलाई आपके ही हाथ में है और बेशक आप हर चीज पर कादिर सामर्थ्यवान है।

परमधाम की दो ब्रह्मात्माएं सकुण्डल और सकुमार हैं। सकुण्डल श्री छत्रशाल जी के तन में हैं, तो सकुमार, औरंगजेब के तन में। इन दोनों आत्माओं की जागनी पर ही खेल के समाप्त होने का उत्तरदायित्व है। औरंगजेब जहाँ घर आए हुये इमाम महंदा को पहचान कर भी लाभ नहीं ले पाया, वहीं महाराजा श्री छत्रशाल जी ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान कर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

मऊ सिंहानिया में तिरुंदी दरवाजे के पास श्री छत्रशाल जी का श्रीजी से मिलाप हुआ और श्रीजी द्वारा श्री छत्रशाल जी को स्वप्न में दिये हुये सिक्के से जब पुनः अपने पास विद्यमान वर्तमान सिक्के से मिलान किया, तो महाराजा श्री छत्रशाल जी को अटूट विश्वास आ गया।

इमामें कह्ना यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर।

बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बजार ॥५॥

इमाम मिस्री ने महमूद गजनवी से पूछा कि मुझे भारत विजय के पश्चात् क्या भेंट करोगे? महमूद गजनवी ने उत्तर दिया कि पांच हजार (कोस) की बस्ती, मदीने का क्षेत्र और बाजारों से युक्त शहर।

भावार्थ- औरंगजेब बादशाह ने श्री जी से कहा कि यदि आप शरीयत का विरोध न करें, तो उत्तर भारत भेंट में देना चाहता हूं।

इस प्रकार, महाराजा श्री छत्रशाल जी ने कहा कि मेरा यह पंच भौतिक तन आपके चरणों में सर्वदा प्रस्तुत है।

**एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी।
एती आए के पेसकसी करी, ओढ़ के पुरानी कमरी॥६॥**

महमूद गजनवी ने पुरानी कमली ओढ़कर इमाम मिस्री से कहा कि मैं आपके लिए सत्रह सौ (१७००) हाथी तथा एक लाख घुड़सवार सैनिक भेंट में दूंगा।

भावार्थ- औरंगजेब ने भी पुरानी कमली ओढ़कर फकीरी भेष में इमाम महंदी श्री प्राणनाथ जी के सामने यह प्रस्ताव रखा, कि मैं आपको सत्रह सौ हाथी तथा एक लाख घुड़सवार सैनिक भेंट में देना चाहता हूं।

महाराजा श्री छत्रशाल जी ने सत्रह तत्त्वों (दस इन्द्रियां, पांच प्राण तथा बुद्धि और चित्त) का सूक्ष्म शरीर, एक लाख घोड़ों के समान वेग से गमन करने वाला मन, अति विनम्र होकर श्री प्राणनाथ जी के चरणों में समर्पित किया।

**आप होए के नंगे पाए, तले की सफ में खड़ा आए।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस॥७॥**

महमूद गजनवी नंगे पांव होकर दातांगज लाहौरी की मस्जिद में गया और अपने गुलाम साथी अयाज के साथ नमाज पढ़ने वालों के पीछे खड़ा हो गया। वह बहुत विनम्रता पूर्वक अपना शीश झुकाकर इमाम से यह प्रार्थना करने लगा, कि हिन्दुस्तान पर मेरी विजय के लिए आप अल्लाह से दुआ कर दीजिये।

भावार्थ- औरंगजेब बादशाह अपनी राजसी वेशभूषा छोड़कर एक फकीर के भेष में नंगे पांव आकर शेख वाजिद के तकिये में श्री जी के चरणों में आया और विनम्रता पूर्वक कहने लगा, कि मैं जानता हूं कि आप इमाम महंदी हैं। आप मुझे अर्शे अजीम की नेमतों की बकसीस दीजिये।

महाराजा श्री छत्रशाल जी अति विनम्रता पूर्वक सुन्दरसाथ के समूह में मात्र सुन्दरसाथ बनकर रहते थे, महाराजा बनकर नहीं। उन्होंने अपना शीश श्री जी के चरणों में रख दिया और अपनी आत्म जागृति के लिए प्रार्थना की। श्री प्राणनाथ जी के प्रति श्री छत्रशाल जी के समर्पण के सम्बन्ध में श्री बीतक साहिब में इस प्रकार कहा गया है-

अपनो आपा सब दियो, और दियो सब साज ।
आरती निछावर करके, कही धन धन दिन है आज ॥
एही टीका एही पांवडो, एही निछावर आए ।
श्री प्राणनाथ के चरण पर, छत्ता बलि बलि जाए ॥
अब तो कछू ना हमारो, दे चुके हम सीस ।
आपा रह्यो न आप बस, करो जानों सो बकसीस ॥

श्री बीतक साहब 60/54, 55, 59

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ ।
दुनिया थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया ॥८॥

महाराजा श्री छत्रशाल जी ने श्री जी से प्रार्थना की कि मुझे सांसारिक मोह से मुक्त कर परमधाम के आनन्द में संतुष्ट कीजिये और सुन्दरसाथ के समूह में सम्मिलित कीजिये। उनकी प्रार्थना पर श्री प्राणनाथ जी ने उन्हें सुन्दरसाथ जी के समूह में शामिल कर लिया और माया के बन्धनों से मुक्त कर दिया।

पारः १ अलिफ लाम मीन सूरः बकरः २ आयत १०७ “अलम् तऽलम् अत्रल्लाह लह मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंवलियिव्व ला नसीरिन्” अर्थात् आपको ज्ञात नहीं कि आकाश व पृथ्वी की राजकीयता (बादशाहत) या शासकियता परब्रह्म की है। उसके अतिरिक्त व्यक्ति का कोई भी सहायक नहीं है।

पा. ३ सू. ३ आ.२६ “कुलिल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तुअतिल्मुल्क मन् तशाअु व तन्जिअुल्मुल्क मिम्मन् तशाअु व तुइज्जु मन् तशाअु व तुजिल्लु मन् तशाअु बि यदिकल्खैरु इन्नक अला कुल्लि शैइन् कदीरुन्” कहो कि ऐ खुदा! बादशाह के मालिक। आप जिसे चाहे बादशाही बख्शो और जिससे चाहे बादशाह छीने लेवे जिस को चाहे इज्जत बख्श दे और जिसको चाहे जलील करे। हर प्रकार की भलाई आपके ही हाथ में है और बेशक आप हर चीज पर कादिर सामर्थ्यवान हैं।

तोअजमंतिसा में सही, गजनवी को बकसीस भई ।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥९॥

आयत में कहा गया है कि महाराजा श्री छत्रशाल जी (महमूद गजनवी) के ऊपर इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की कृपा हुई। महाराजा श्री छत्रशाल जी कहते हैं कि मैं अब सब के संशय मिटाकर इमाम महंदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान को संसार में उजागर करूंगा।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी ने महाराजा छत्रशाल जी के ऊपर इतनी अपार कृपा की कि श्री श्यामा जी के स्वामित्व के चालीस वर्षों में से चौबीस वर्ष महाराजा श्री छत्रशाल जी के तन से पूरे हुये। इसके साथ ही सात वर्षों तक उनके तन से आवेश लीला भी हुयी। इस प्रकार उन्हें सभी सुन्दरसाथ में प्रमुख (अमीरूल मोमिनीन) माना गया है। श्री बीतक साहब में श्री जी की श्री छत्रशाल जी के ऊपर हुई कृपा को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है-

विजिया अभिनन्द बुध जी, ब्रह्म सृष्टि सिरताज ।

हाथ हुकम छत्रसाल के, दियो सो आपनो राज ।।बी. सा. 60/63

कुरान पार: २ सूर: बकर: २ आयत २४७ “व काल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्लाह कद् बअस लकुम् तालूत मलिकन् कालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अलैना व नह्नु अहक्कु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्त सअतम्-मिनल्मालि काल इन्नल्लाहस्तफाहु अलैकुम् व जादह बस्ततन् फिल्इल्मि वल्जिस्मि वल्लाहु युअ्ती मुल्कह मय्यशाअु वल्लाहु वासिअुन अलीमुन्”। और पैगंगर ने उनसे कहा कि खुदा ने तुम पर तालूत (छत्ता) को बादशाह मुर्करर किया है। वे बोले कि उसको हम पर कैसे हुकूमत मिल सकती है और इससे तो हुकूमत के हम ही हकदार हैं। और जब कि उसको तो माल से भी कुछ ऐसी अमीरी नसीब हैं। पैगम्बर ने कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द फरमाया है। उसने इल्म भी बख्शा है। अल्लाह जिसे चाहे बादशाही बख्शे वही बसअत वाला और जानने वाला है।

देऊं कुरान की साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सब्द।

छठे सिपारे में एह सनंध, ईसा नुसखे का खावंद।।१०।।

महाराजा श्री छत्रशाल जी कहते हैं कि बिना कुरान की साक्षी दिये मैं एक भी शब्द नहीं कहूंगा। कुरान के छठे सिपारे में कहा गया है कि सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूहुल्लाह) भवसागर से पार करने वाली तारतम ज्ञान रूपी महान औषधि के स्वामी हैं।

भावार्थ- पार: ६ सूर: ४ सूर:निशा आयत १७१ “या अह्लल्किताबि ला तग्लू फी दीनिकुम् व ला तकूलू अल्लाहि इल्लल्-हक्क इन्नमल्-मसीहु इसब्नु मर्यम रसूलुल्लाहि व कलिमतुह व कफा बिल्लाहि वकीलन्” ऐ अहले किताबवालो! अपने दीन की बात में अपनी तरफ से एक भी शब्द न बढ़ाओं और अल्लाह के लिये सत्य के सिवा एक शब्द भी मत कहो। ईसा मरियम के बेटे है। वह खुदा के रसूल है। वह अल्लाह का हुक्म लेकर के आया है। आप अल्लाह और उनके पैगम्बरों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि अल्लाह तीन है। अनेक अल्लाह का विचार छोड़ दो। इससे सबका भला होगा। एक मात्र पूज्य अल्लाह ही है। हम सब

अल्लाह की पवित्र सन्तान हैं। और खुदा ही धरती और आकाश को बनाता है और सभी ब्रह्माण्डों को संभालने वाला भी है।

**और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिल में धरी।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित॥११॥**

अब मैं तीसरी साक्षी देता हूँ। कुरान के ग्यारहवें सिपारे में ऐसा लिखा है कि धर्मग्रन्थों के वास्तविक रहस्य ब्रह्ममुनियों के पास हैं। उन ग्रन्थों के गुह्य ज्ञान का अधिकार इन्हें ही है।

**बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल॥१२॥**

मुहम्मद स. के देह त्याग के ६६० वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् परब्रह्म पर अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले ब्रह्ममुनि परमधाम से अवतरित हुये। उनके साथ श्री श्यामा जी का भी अवतरण हुआ। श्री श्यामा जी के दूसरे तन में ही श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप प्रगट हुआ।

**बंदगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवें इन सूल।
ए दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए॥१३॥**

श्री प्राणनाथ जी का यह स्वरूप साक्षात् परब्रह्म का स्वरूप है, जो सबकी बंदगी (भक्ति) को स्वीकार करेंगे। जो इन स्वरूप की पहचान करके इनकी बंदगी करेगा, उसे हजार गुना फल मिलेगा। श्री श्यामा जी के द्वारा धारण किया हुआ यह दूसरा तन (मिहिरराज जी का) है, जिसमें अक्षरातीत आवेश रूप से लीला कर रहें हैं। कुरान के गुह्य अर्थों से ही इस रहस्य को जाना जा सकता है।

भावार्थ- पा. २ सू. २ आ. १८६ “व इजा सअलक इबादी अत्री फ इत्री करीबुन् अजीबु दऽवतद्दाइ इजा दआनि फल्यस्तजीबूली वल्युअ्मिन् बी लअल्लहुम् यर्शुदून” “और जब कोई मेरे बारे में पता करे तो उनसे कहो- मैं तो तुम्हारे समीप हूँ। जब कोई पुकारता है तो मैं प्रत्येक पुकारने वाले की प्रार्थना को स्वीकार कर लेता हूँ। इसलिए उनको भी चाहिए कि मेरा आदेश माने और मुझपर ईमान लेकर आये ताकि सभी को अच्छी राह मिले।

कुरान पा. ३ सू. २ आ. २८१ “वत्तकू यौमन् तुर्जअून फीहि इलल्लाहि सुम्म तुवप्फा कुल्लु नफ्सिम्-मा कसबत् व हुम् ला युजूलमून” तुम उस दिन से डरो जब खुदा के हुक्म से लौटकर आओगे। उस समय हरेक शख्स को उसके किये का पूरा-पूरा बदला मिलेगा और किसी को कोई भी नुकसान नहीं होगा।

पारः ६ सूरः ५ आयत ६५ “व लौ अन्न अहलल्-किताबि आमनू वत्तकौ ल कफ्फरना अनहुम् सय्यिआतिहिम् व ल अदखलनाहुम् जन्नातिन्नभीमि” अगर तुम अहले किताब के ऊपर ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो सबकी बुराईयां दूर होती और जन्नत के बागों में दाखिल होते।

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर।

नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर ॥१४॥

चौथी साक्षी नूरनामे की है। उसमें लिखा है कि मुहम्मद स. के ६६० वर्ष ६ महीने व्यतीत हो जाने के पश्चात् ब्रह्मसृष्टियों के प्रमुख श्री श्यामा जी ने तारतम ज्ञान रूप महान औषधि को प्राप्त किया और इसे सब सुन्दरसाथ में फैलाया।

असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलम की किताबें कलाम।

एक रोज आए खाने किताब, कहा पोहोंचाओ नुसखा सिताब ॥१५॥

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में विद्यमान अम्राफील फरिश्ते ने तारतम ज्ञान के वचनों को श्री कुल्जुम स्वरूप के ग्रन्थों के रूप में प्रकट किया। जब एक दिन श्री लालदास जी ने पुस्तकालय में आकर कुरान को देखा तो उसमें वर्णित मूसा, हारून और फिरऔन का प्रसंग निकालकर श्री जी को दिया। उसे देखकर श्री प्राणनाथ जी ने श्री लालदास जी से कहा कि तारतम ज्ञान रूपी औषधि को छत्रशाल जी के पास शीघ्र पहुँचाओ।

भावार्थ-कुरान के सोलहवें पारे में मूसा, हारून और फिरऔन का प्रसंग है जिसमें मूसा श्री प्राणनाथ जी को कहा गया है, हारून को महाराजा छत्रशाल और फिरऔन को औरंगजेब कहा गया है। उसमें यह वर्णन है कि किस प्रकार मूसा की चमत्कारिक लाठी से बने हुये नील नदी के पुल से हारून के साथी पार हो गए और फिरऔन की सारी सेना डूब गयी अर्थात् कुल्जुम स्वरूप की वाणी महाराजा श्री छत्रशाल जी सहित सभी ब्रह्मसृष्टियों को भवसागर से पार करेगी और शैतान की सेना को डुबो देगी (नष्ट कर देगी)।

कु. पा. २ सू. २ आ. २४६-२५१

“फ लम्मा फसल तालूतु बिल्जुनूदि काल इन्नल्लाह मुब्तलीकुम् फ इन्नह मित्री कलीलम्-मिन्नुहुम् मुलाकुल्लाहि कम्पिन्
..... वल्लाहु मअस्साबिरीन(२४६) व लम्मा बरजू लि जालूत व जुनूहिदी कालू रब्बना अफ्रिग् अलैना अलल्-कौमिल्-काफिरीन(२५०) फ हज्मूहुम् बि इज्नील्लाहि

व कतल दावदु जालूत व आताहुल्लाहुल्लुमुल्म वल्हिकमत व अल्लमह मिम्मा यशाअु व लौ ला दफ्अुल्लाहिन्नास फज्जलिन् अलल् - आलमीन(२५१)” जब तालूत की फौजों ने खुदा के हुक्म से जो उनके हुक्म को नहीं मानते थे, उनको हराया। अल्लाह तो सब वालों का साथी है। और जब वे जालूत की फौजों के साथ युद्ध में आये तो खुदा से दुआ कि हे खुदा! हमको पूरी दृढ़ता प्रदान करे और हमारे पांव को पीछे हटने से रोके और हमें शत्रुओं से बचाये। फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुस्मनों को परास्त किया। और जालूत को दाऊद ने मार दिया। और आगे चलकर अल्लाह ने उसको बादशाही बख्शी और हिकमत दी और जो उसको सिखने की इच्छा थी उसको सिखा दिया और खुदा कुछ लोगों के द्वारा कुछ लोगों को हटाता न रहे तो पृथ्वी फसाद से भर जाये लेकिन अल्लाह तो संसार के लोगों पर हमेशा ही मेहरबान हैं।

महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान ।

जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया ।।१६ ।।

श्री जी श्री लालदास जी से कहते हैं कि कुरान में वर्णित महमूद गजनवी सुलतान ही महाराजा श्री छत्रशाल जी हैं। वे तारतम अवश्य ग्रहण करेंगे। महाराजा श्री छत्रशाल जी ने तारतम ज्ञान रूपी अमृतमयी औषधि को ग्रहण करने के पन्द्रह दिन पूर्व ही, अपने भतीजे देवकरण को लालदास जी और उत्तमदास जी के साथ श्री जी को सम्मानपूर्वक बुला लाने के लिए भेज दिया था।

भावार्थ- जिस दिन देवकरण जी, श्री लालदास जी और उत्तमदास जी के साथ श्री जी को लाने के लिए चलते हैं, उस दिन से लेकर श्रीजी के पन्ना होते हुये मऊ सहानियां पहुंचने तथा अफगन खां से युद्ध एवं ज्ञान ग्रहण करने तक में पन्द्रह दिन पूरे होते हैं।

तब अब्बल आखिर की मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान ।

और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात ।।१७ ।।

श्री जी के साथ ५००० की संख्या में सुन्दरसाथ पद्मावती पुरी धाम आए, जिसमें हिन्दू-मुसलमान सभी थे। ग्यारह वर्षों तक श्री पन्ना जी में श्री महामति जी के तन से होने वाली जागनी लीला में श्री पन्ना जी और उसके आसपास की अनेक जातियों के लोग सुन्दरसाथ के समूह में सम्मिलित हुये। सबने तारतम ज्ञान रूपी परमधाम की दिव्य औषधि को चारों ओर फैलाया।

भावार्थ- पद्मावती पुरी धाम में प्रारम्भ में आने वाले ५००० सुन्दरसाथ अब्बल (पूर्व) के सुन्दरसाथ थे। और पन्ना जी तथा आसपास की जागनी के सुन्दरसाथ आखिर (बाद) के सुन्दरसाथ थे।

केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान।

इत पांच सै जुलजुलाटहू, संग रसूल के असलू रूह॥१८॥

उनमें से बहुत से सुन्दरसाथ ने श्री प्राणनाथ जी को अपना सर्वस्व मानकर तन, मन एवं धन उनके ऊपर न्योछावर कर दिया। उस समय श्री पन्ना जी में श्री जी के साथ ५०० ब्रह्ममुनि थे।

भावार्थ- ऐसा माना जाता है कि श्री जी के साथ कुल पांच हजार सुन्दरसाथ थे जिसमें पांच सौ ब्रह्मसृष्टि, डेढ़ हजार ईश्वरीय सृष्टि तथा तीन हजार जीव सृष्टि के सुन्दरसाथ थे। उन्होंने अपना घर-द्वार हमेशा के लिये छोड़ दिया था और और धाम धनी की शरण में आ गये थे।

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत।

गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ॥१९॥

ग्यारहवीं-बारहवीं सदी का यही समय कियामत का समय है, जिसमें सबने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान की। इस समय ही परमधाम के ब्रह्ममुनियों को श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान एवं चितवनी के माध्यम से आत्मिक आहार उपलब्ध हुआ। महाराजा छत्रशाल जी से जाने-अनजाने जो भी अपराध हुए थे, उसे प्रियेश्वर अक्षरातीत ने क्षमा कर दिया। छत्रशाल जी ने श्री कुलजुम स्वरूप (तारतम ज्ञान) रूपी औषधि से स्वयं को निर्मल कर लिया।

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद।

लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए॥२०॥

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने बारह हजार ब्रह्मासृष्टियों को अपनी कृपा दृष्टि के द्वारा तारतम ज्ञान एवं चितवनी की प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग देकर माया के बन्धनों से मुक्त कर दिया। उन्हें युगल स्वरूप की शोभा रूप लाखों नगों से जड़ित पंच वस्त्रों (शिरोपाव) को धाम धनी ने भेंट में देकर संसार में सम्मानित किया, जिससे उनके लौकिक सुख-दुःख समाप्त हो गये तथा वे परमधाम के शाश्वत आनन्द में डूब गये।

भावार्थ- यद्यपि, पन्ना जी में उस समय मात्र ५०० ही ब्रह्ममुनि थे, किन्तु १२००० ब्रह्ममुनियों के कथन का आशय यह है कि ब्रह्मज्ञान एवं चितवनी का मार्ग उन सबके लिये भी

है, जो उस समय पन्ना जी में नहीं थे। सागर-शृंगार ग्रन्थ का ज्ञान ही वह शिरोपाव है, जिससे प्रत्येक सुन्दरसाथ के हृदय में युगल स्वरूप की शोभा अंकित हो जाती है।

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात ।

हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहेरबान ॥२१॥

इस संसार के परिमाण से परमधाम की ५० करोड़ योजन धरती जो पच्चीस पक्षों में जो नूरमयी बागों की शोभा से युक्त है, ब्रह्मात्माओं को धाम धनी ने परिक्रमा ग्रन्थ के ज्ञान रूप में उपहार स्वरूप दिया। इस प्रकार, श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान को आत्मसात् करने से ब्रह्मात्माओं की चारों ओर महिमा फैल गयी। इस संसार में आने पर ब्रह्मसृष्टियों की हृदय रूपी हवेलियां सुनसान थी, किन्तु कृपा के सागर अक्षरातीत श्री जी ने उन्हें चितवनी के मार्ग पर चलाकर पुनः युगल स्वरूप की शोभा से शोभायमान बना दिया।

भावार्थ- परमधाम का ऐसा कोई भी कोना नहीं है, जहां बाग बगीचे नहीं हों। यहां तक कि रंगमहल की दसवीं आकाशी में भी बाग बगीचों की शोभा आयी है। इस प्रकार परमधाम की बागों से भरपूर धरती का आशय २५ पक्षों की शोभा से है।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही ।

इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम ॥२२॥

कुर्आन में यह बात संकेतों में कही गयी है जिसे मैंने स्पष्ट करके दर्शाया है। तारतम ज्ञान से रहित कुर्आन के विद्वान इसे मात्र किस्से के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं और समाज को अज्ञानता के अन्धकार में भटकाने का अत्याचार करते हैं।

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरान के पेहेले हो गए ।

जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥२३॥

हे मुसलमानों! तुम कुर्आन का बाह्य अर्थ लेकर ही यह कहा करते हो कि ये तो कुर्आन के किस्से हैं जो बीत चुके हैं। जब वे जमाने रद्द (निरर्थक) हो गये हैं, तो कियामत के समय प्रकट होने वाले इन घटनाक्रमों के रहस्य को बीते हुए रद्द जमाने में मानने की भूल क्यों करते हो?

ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर ।

सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कहा ॥२४॥

कुर्आन के व्याख्या ग्रन्थ तफ्सीरे हुसैनी में वर्णित इमाम मिस्त्री तथा महमूद गजनवी का प्रसंग कियामत के समय ग्यारहवीं सदी में श्री प्राणनाथ जी एवं महाराजा छत्रशाल के

मिलन का घटनाक्रम है। जिस प्रसंग को कियामत के समय में घटित होना लिखा है, उसे ये मुस्लिम विद्वान कहते हैं कि यह घटना तो बीत चुकी है।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।

काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर॥२५॥

कुर्आन के बाह्य अर्थ लेने वाले मुसलमानों! अपने हृदय के कानों को खोलकर मेरी बात सुनो! तुम्हारी तरह मेरे ये सुन्दरसाथ अरबी साहित्य नहीं पढ़े हैं, किन्तु श्री कुल्जुम स्वरूप के माध्यम से ये कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को जानते हैं। कियामत (आखिरत) के इस स्वर्णिम समय में सबका न्याय करने के लिये स्वयं परब्रह्म इमाम महंदा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए हैं। अपने हृदय की आंखों को खोलकर इनका दर्शन करो और पहचानों।

ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल॥२६॥

छत्रशाल जी कहते हैं कि हे संसार के लोगों! अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर सच्चिदानन्द परब्रह्म के स्वरूप अपने प्राणेश्वर को पहचानो और उन पर विश्वास लाओ। उनकी छत्रछाया में आने वाले ब्रह्ममुनियों ने अपने हृदय को पवित्र कर लिया है और वे अब परमधाम के आनन्द से परितृप्त हो चुके हैं। तुम भी आनन्द के सागर में डूबकी लगाने का सौभाग्य प्राप्त करो।

॥ प्रकरण ॥४॥ चौपाई ॥१०५॥

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर।

आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान॥१॥

नूरनामों में मुहम्मद साहब की महिमा लिखी है जिसे देखिए। यद्यपि, मुसलमान अपने को कुर्आन का ज्ञाता कहते हैं किन्तु कुर्आन के गुह्य रहस्यों को बिल्कुल भी नहीं जानते हैं।

महंमद मुर्ग कहा आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान।

इन मुर्ग ने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल॥२॥

मुहम्मद (श्यामा जी) को आकाशी मुर्ग कहा गया है, जिसकी मैं स्पष्ट पहचान दे रहा हूँ। इस मुर्ग ने स्वच्छ जल में स्नान कर अपने पंखों को धोया।

**तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार॥३॥**

उस मुर्ग ने जब अपने पंखों को झटका तो उससे जो बूंदें गिरी, उन बूंदों से एक लाख बीस हजार पैगम्बर उत्पन्न हुए जिन्होंने परब्रह्म का संदेश संसार में फैलाया।

भावार्थ- श्यामा जी की आत्मा ही आकाशी मुर्ग है। उन्होंने इल्म (ज्ञान) के सागर में गोता लगाया, जिससे १२ हजार ब्रह्ममुनियों का प्रकटन हुआ और उन्होंने संसार में तारतम ज्ञान रूपी अमृत को प्रसारित किया। एक-एक ब्रह्ममुनि में १०-१० पैगम्बर की शक्ति मानी गयी है।

**कलाम अल्ला की तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल।
महंमद को करहीं औरों समान, इन दुनिया की ए पेहेचान॥४॥**

हे साथ जी! संसार के इन जीवों की बुद्धि देखिए, कि ये कुर्आन का इस प्रकार का बाह्य अर्थ करते हैं। इस संसार के लोगों की बुद्धि इतनी संकुचित है, कि वे मुहम्मद स. को भी अन्य पैगम्बरों के समान ही मानते हैं।

**जो कहावे महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमद को औरों समान॥५॥**

जो मुहम्मद स. के अनुयायी कहलाते हैं वे भी हृदय के ऐसे अन्धे हैं कि मुहम्मद साहब को पहचान नहीं पा रहे हैं। शरीयत पर चलने वाले ये मुसलमान मुहम्मद साहब को भी अन्य पैगम्बरों के समान ही मानते हैं।

**ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्ला की सुध न परी।
पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी॥६॥**

कुर्आन के बाह्य अर्थ लेकर ये मुसलमान भटक गये हैं। इन्हें कुर्आन की सुधि ही नहीं है। मुहम्मद साहब ने शरीयत के जिन नियमों का प्रचलन किया था, उसी को इन्होंने इस्लाम धर्म समझ रखा है।

**पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धर्या करज॥७॥**

जो शरीयत के ५२ नियमों-सिद्धान्तों का पालन करता है, तुम भ्रमवश उसी को ब्रह्ममुनि मान लेते हो। शरीर के १४ अंगों को धोना, नमाज पढ़ना, रोजा रखना आदि शरीयत

के नियम तो परब्रह्म के प्रति अपनी कृतज्ञता दर्शाने के लिये, तुम्हारे ऊपर ऋण की तरह थोपे गये हैं जिसके कारण तुम्हें विवश होकर करना पड़ता है।

भावार्थ- ५२ मसले (नियम) इस प्रकार हैं। अशहदु अल ला इलाह इल्लल्लाह अशहद अन्मा मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अर्थात् परब्रह्म एक जो क्षर अक्षर से भिन्न हैं एवं प्रशंसित (मुहम्मद स.) परब्रह्म के संदेश वाहक हैं।

१. कल्मा-ए-तैय्यब को सच मानकर (जानकर) कहना।
२. फ़रमान (कुरआन) के मायने जान लेना।
३. रूह को पाक-साफ करना।
४. पाँच वक्त की नमाज व रात की तहज्जुज की नमाज (चितवनी करना)।
५. दर्द-ए-खुदा को सह कर भी सच को रखना।
६. कुफ़्र की बात न सुनना।
७. अपनी करनी सिर लेकर (शिरोधार्य) कलाम (वचन) कहना।
८. आप (स्वयं) की पहचान प्राप्त करना।
९. रसूलल्लाह सल्ल. सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पहचान करना।
१०. वतन (परमधाम) की सुध-करना।
११. रसूलल्लाह सल्ल. कहां से आए इसका ज्ञान करना।
१२. रसूल अल्लाह सल्ल. किसके वास्ते आए जानना।
१३. अल्लाह ने कहा- हमने रसूलल्लाह स. को भेजा ऐसा मानना।
१४. परमधाम से कौन आया यह जान लेना?
१५. यह शऊर करना कि आने वाला कौन है?
१६. हरूफ (शब्द) को सच मानकर लेना।
१७. सार वस्तु की पहिचान करना।
१८. दिल देकर फरमान करना (मानना)।
१९. कुदरत (माया) को जानना।

२०. हृदय के अंदर यकीन रखना।
२१. दफा (विरक्त) नजरों से संसार को देखना।
२२. सार शब्द की पहचान करना।
२३. सबसे भिन्न रहना।
२४. दर्दी का साथ करना।
२५. भली बुरी (अच्छाई-बुराई) नहीं देखना।
२६. खुदा ताला के दण्ड का डर रखना।
२७. खूनी हत्यारे की सोहबत/साथ न करना।
२८. बेगाने को अपने समान समझना-जानना।
२९. सच को समान जानना।
३०. मोमिनों को संसार से भिन्न जानना।
३१. मोमिन, मुस्लिम काफिर को भिन्न जानना।
३२. मेहरबान दिल रखना।
३३. दिल में इश्क रखना।
३४. हृदय पर दाग लगने न देना।
३५. कुफ्र का संग न करना।
३६. खुदा तआला की आशिकी करना।
३७. सभी अंग स्वच्छ रखना।
३८. गुमान (अहं) न लाना।
३९. गरीबी (नम्रता) लेना।
४०. निर्गुण रहना।
४१. खान पान भी निर्गुण रखना।
४२. बदफैल न करना।
४३. मन में खुदा की तस्बीह (सुमरिनी) फरना।

- ४४. रात-दिन खुदा की बंदगी करना।
- ४५. दर्द ए दिल रखना।
- ४६. गलीत रखना।
- ४७. रसूलल्लाह स. से रूह लगाना।
- ४८. हराम छोड़ना।
- ४९. हक हलाल लेना।
- ५०. अपने आप को वश में रखना।
- ५१. दिल साफ रखना।
- ५२. ईमान कायम रखना।

और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी।

ए लानत लिखी माहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान ॥८॥

ये खतना कराने को ही मुसलमान होने का प्रतीक मानते हैं। यह प्रचलन भी मात्र दिखावा है और अज्ञान जनित है। कुर्आन में लिखा है कि इब्राहीम पैगम्बर को अपराध करने के कारण दण्ड मिला था। उस दण्ड को ही इन्होंने शरीयत का अनिवार्य अंग बना लिया है।

भावार्थ- कुर्आन पार: ३ सूर ३ आयत ६५-६८ “या अह्ललूकिताबि लिम तुहाज्जून फी इब्राहीम व मा इल्ला मिम्बऽदिही अफला तऽकिलून(६५)” हा अन्तुम् हाअुलाइ हाजज्जुम् फीमा लकुम् अन्तुम ला तऽलमून(६६) मा कान इब्राहीमु महूदिय्यव ला कान मिनल्-मुश्रिकीन (६७) इन्न औलन्नासि बि इब्राहीम वल्लाहु वलिय्युल्-मुअ्मिनीन(६८)”

ऐ अहले किताब वाले! तुम इब्राहिम के बारे में क्यों झगड़ते हो तथा तौरेत और इंजील तो उसके बाद ही उतरी हैं। क्या तुम इतनी भी बात नहीं समझते? देखो, तुम लोगों ने ऐसी बातों में झगड़ा तो किया ही था जिनकी बाबत तुमको कुछ जानकारी थी, मगर जिसकी बाबत तुमको कुछ भी इल्म नहीं उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो? जिस बात को अल्लाह जानता है उसको तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी, बल्कि वह तो सब को छोड़कर एक मात्र अल्लाह के आज्ञाकारी सेवक थे, और मुशरिकों में से भी न थे। बेशक इब्राहीम के जियाद नजदीकी तो वह लोग हैं जिन्होंने उनकी पैरवी-एक ईश्वर की भक्ति की,

और यह पैगम्बर (मुहम्मद स.) के ऊपर मुसलमान जो ईमान लाये हैं, क्योंकि अल्लाह तो ईमान वालों का दोस्त हैं।

पार: १ अलीफ् लाम् मीन् सूर: बकर २ आयत १३५-१३६ “व कालू कून हूदन् औ नसारा तह्त्तदू मिनल्-मुशरिकीन(१३५) कूलू आमत्रा बिल्लाहि व मा अनुजिल अहदिम्-मिन्हुम् व नहनु लह मुस्लिमून(१३६)” और यहूद और ईसाई, मुसलमानों से कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सच्चे रास्ते पर आ जाओगे। ऐ पैगम्बर! तुम इन लोगों से कहो नहीं, बल्कि हम इब्राहीम के दीन की पैरवी करते हैं जो एक अल्लाह के हो रहे थे और मुशरिकीन में से न थे। मुसलमानों! तुम यहूदी व नसारा से कह दो कि हम तो ईमान लाये हैं अल्लाह पर और उस पर जो हम पर उतारी गई है, और उस पर जो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और उनकी संतान पर उतारी गई, और मूसा और ईसा को जो किताब मिली उस को भी वैसे ही उतारा गया। जो दूसरे पैगम्बरों को उनके पालने वाले से मिला उस पर भी। हम इनमें से किसी एक में भी किसी तरह का फर्क नहीं करते, और हम उस एक अल्लाह के ही आज्ञाकारी हैं।

शरीयत यों कहे इब्राम, जिनों किए हैं बद फैल काम।

जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान॥९॥

शरीयत के मानने वाले ऐसा कहते हैं कि इब्राहीम पैगम्बर ने अपनी पत्नी सारा की दासी हाजरा के साथ दैहिक सम्बन्ध स्थापित किया था। सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने के कारण उनके विशिष्ट अंगों (दाढ़ी के बाल आदि) तथा वस्त्रों को दण्ड स्वरूप काट दिया गया था।

इब्राहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुनत बड़ी कर लई।

जिन दर्ई लानत ऊपर तकसीर, सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर॥१०॥

इब्राहीम पैगम्बर को इस प्रकार की सजा द्वारा धिक्कार मिली, किन्तु शरीयत के विद्वानों ने इब्राहीम के अपराध के बदले मिलने वाले दण्ड को ही मुल्लाओं, मीरों तथा फकीरों ने अपनाने में अपना गौरव मान लिया है।

भावार्थ- मूल कुर्आन में कहीं भी खल्ना का विवरण नहीं है मात्र हदीस में वर्णित है। यद्यपि हदीसों की प्रमाणिकता उसकी सत्यता पर निर्भर करती है। यह परम्परा यहूदी धर्म में भी प्रचलित है। बाकी स्थानों पर थोड़ी मात्र बोहरा समाज की महिलाओं की जनेन्द्रिय के अग्र भाग

की भी खत्ना की जाती है जो कि अफ्रीका के मिश्र प्रान्त से यहां (भारत में) यह परम्परा प्रचलन में आई है। महिलाओं में यह पीड़ा व क्रूरता का परिचायक है। मुस्लिम बोहरा समाज ने इस प्रथा को बहुत बड़ी उपलब्धि मानकर अपना लिया है।

**ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याही में कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपर की बानी, इनों सोई भली कर मानी ॥११॥**

ये लोग कुर्आन के कथनों का रहस्य नहीं जानते। धिक्कार के रूप में मिले हुए दण्ड को ही इन्होंने बहुत श्रेष्ठ मान लिया और अपनी शरीयत में सम्मिलित कर मुसलमान कहलाने का प्रतीक मान लिया।

द्रष्टव्य- इन्द्रिय निग्रह ही आध्यात्मिक सुन्नत है। मुसलमानों में शरीयत के नाम पर होने वाले बाह्य सुन्नत का अध्यात्म के कोई सम्बन्ध नहीं है। इब्राहीम को मिले हुए दण्ड को अनिवार्य रूप से सब पर थोपना कैसी बुद्धिमत्ता है?

**पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें ।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार ॥१२॥**

कुर्आन पढ़े हुए ये लोग स्वयं को ज्ञानी, विद्वान (आलिम, आरिफ) कहते हैं, किन्तु कुर्आन के किसी भी शब्द का गुह्यार्थ नहीं जानते हैं। यद्यपि, वे अपने मुख से चारों किताबों का नाम तो लेते हैं किन्तु उनके पास अन्तर्दृष्टि नहीं है, इसलिये वे उसके गुह्यार्थों पर विचार नहीं करते हैं।

भावार्थ- किसी भी शब्द का गुह्यार्थ न आना अतिशयोक्ति अलंकार की भाशा है।

**तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर ॥१३॥**

तौरेत, इंजील, जबूर और चौथी किताब कुर्आन है। ये चारों किताबें जिन-जिन पैगम्बरों के ऊपर उतरी है, उनके नाम बताता हूँ।

**मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ॥१४॥**

मूसा, ईसा, दाऊद और मुहम्मद स. ये सभी यहूदियों में ही आये हैं। मुहम्मद स. आखिरी पैगम्बर कहे गये हैं। उनके पश्चात् पैगम्बरों की परम्परा समाप्त हो गयी।

**मनसूख तीन कही ता मिने, फुरकान एक यों भने।
समझे ना किताबों के ताई, क्या लिख्या है माएनों माहीं।।१५।।**

चौथी किताब कुर्आन में कहा गया है कि पहले की तीन किताबें तौरैत, इंजील और जंबूर को परब्रह्म की ओर से रद्द (निरर्थक) किया जाता है। सामान्य लोग इस बात को नहीं जानते, कि इन तीनों किताबों के रद्द होने का आशय क्या है और इनके बाह्य अर्थों में गुह्य रहस्य क्या है?

भावार्थ- तौरैत, इंजील तथा जंबूर का सारा तत्व ज्ञान कुर्आन में आ गया है। इसके अतिरिक्त परमधाम की बातें भी कुर्आन में अवतरित हुई, जो तौरैत, इंजील तथा जंबूर में नहीं हैं। इस प्रकार तौरैत, इंजील तथा जंबूर को रद्द हुआ माना जाता है।

इस प्रकार, जब श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हो गया, तो उसमें कुर्आन के सभी गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण हो गया। इस प्रकार कुर्आन को भी रद्द माना गया। खुलासा १३/६० में यह बात स्पष्ट रूप से कही गयी है कि 'वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर।

**तौरैत लिखी ठौर बीसेक कही, सो जुदे जुदे नामों पर दई।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इनपर इसलाम।।१६।।**

तौरैत, ग्रन्थ को एक्कीस अलग-अलग नाम वाले पैगम्बरों ने मिलकर लिखा अर्थात् तौरैत एक्कीस पैगम्बरों के संदेशों का संकलन है। कुर्आन में कहा गया है कि परब्रह्म ने कियामत के आने का जो कथन किया है, उसके संकेतों को वे इमाम महंदी, श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ- वर्तमान बाइबल ग्रन्थ तौरैत तथा इंजील का संग्रह है। तौरैत, ग्रन्थ को पुराना विधान (ओल्ड टेस्टा मेन्ट) कहते हैं तथा इंजील को नवीन विधान (न्यू टेस्टा मेन्ट)। इसमें भी लूका, युहन्ना, मत्ती, मार्क मैथ्यू आदि अलग-अलग नौ लेखकों के विचारों का संग्रह है। वर्तमान समय में ओल्ड टेस्टामेन्ट में २९ की अपेक्षा २५ पैगम्बरों के नाम आते हैं।

**अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक।।१७।।**

अब प्रश्न यह है कि किस किताब को रद्द माना जाय और किस किताब को ग्रहण करने योग्य सत्य माना जाय? कुर्आन का बाह्य अर्थ लेने वाला कभी संशय रहित हो ही नहीं सकता। मैं तुमसे यह सत्य बात कहता हूँ कि जब तक गुह्य भेदों को नहीं जाना जायेगा, तब तक संशय से रहित हुआ ही नहीं जा सकता।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का सार तत्व यही है कि कुर्आन भी रद्द किताबों में से हैं, क्योंकि जब तक श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान नहीं होगा, तब तक कुर्आन के न तो गुह्य रहस्य जाने जा सकते हैं और न उसे पढ़ने वाला ही संशय रहित हो सकता है।

कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और।

अब को अव्वल को कलाम आखिरी, एनीकें तुम ढूंढो जाहेरी ॥१८॥

कुर्आन में लिखा है कि पूर्व में चार किताबें तौरेत, इंजील, जंबूर और कुर्आन चार स्थानों फिलिस्तीन, यरूशलम, मिश्र और अरब में अवतरित हुयी। जिस प्रकार एक आयत दूसरी आयत को रद्द करती है, उसी प्रकार श्री कुल्जुम स्वरूप में इनके विकल्प के रूप में चार और नयी किताबें कलश, रास, प्रकाश और सनद अवतरित हुईं। हे संसार के लोगों! अब तुम ही इस बात की अच्छी तरह से खोज करो कि किन किताबों को अव्वल का माना जाए और किन किताबों को आखिर का? अर्थात् कौन-से ग्रन्थ को रद्द किया गया और कौन-से ग्रन्थ को सत्य ठहराया गया?

भावार्थ- श्री कुल्जुम स्वरूप में अवतरित होने वाले कलश, रास, प्रकाश तथा सनद ग्रन्थ ही पूर्णतया सत्य ग्रन्थ हैं और परब्रह्म के द्वारा इनका अवतरण हुआ है।

किस्से कुरान के डारो तित, रद जमाने हो गए जित।

ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर ॥१९॥

कुर्आन में भिन्न-भिन्न किस्सों (कहानियों) की बातों को छोड़ दो क्योंकि ये बीते हुये समय की बातें हैं। यदि तुम इन्हें बीते समय की ही बातें मानते हो, तो ऐसा क्यों कहते हो कि कियामत के समय में इनका आशय स्पष्ट होगा।

भावार्थ- जब कुर्आन खुदाई इल्म है, तो उसमें बीते युग के किस्से-कहानियों के संग्रह का क्या औचित्य?

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे।

ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान ॥२०॥

कुर्आन के अट्ठारहवें सिपारे में लिखा है कि जो कुर्आन के बाह्य अर्थों को लेगा, वह शैतान से हार जायेगा। शैतान सबको बाहरी अर्थों में ही उलझा देता है। इस प्रकार जो लोग बाह्य अर्थों में भटककर गुह्य अर्थों से वंचित रह जाते हैं, वे कुर्आन के वास्तविक निर्देशों को न तो जान पाते हैं और न ही पालन कर पाते हैं।

भावार्थ- कुरान पार: १८ सूर: तुल-मुअमिनून २३ आयत ३४ “व लइन् अतऽतुम् बशरम् - मिसलकुम् इन्नकुम् इजल्लाखासिरून” यानि अगर आपने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया तो घाटे में पड़ गये।

पार: १८ सू. २३ आ. ६६ “कद् कानत् आयाती तुल्ला अलैकुम् फकुन्तुम् अला अऽकाबिकुम् तन्किसून” मेरी आयते तुमको पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती थीं और तुम उल्टे पांव फिर जाते थे अर्थात् कुर्आन की आयतों का बाह्य अर्थ लेकर अनर्थ करते थे क्योंकि सदमार्ग से विमुख होते थे।

जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान।

ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी ॥२१॥

कुर्आन के निर्देशों का उल्लंघन करने वाले निश्चित रूप से दोजक में जाएंगे। उन्हें कुर्आन में स्थान-स्थान पर धिक्कार लिखी है। कुर्आन के बाह्य अर्थ लेने वालों ने धिक्कार मिलने की बात को अपने हृदय में रख लिया है, इसलिए वे कुर्आन के बाह्य अर्थों से निकलने वाले मिथ्या अभिप्राय को ही बलपूर्वक पकड़े रहते हैं। और उसे छोड़ने के लिए किसी भी स्थिति में राजी नहीं होते।

भावार्थ- पा. १८ सू. २४ सूर: नूर आयत २१ “या अय्युहल्लजीन आमनू ला तल्लबिअू खुतुवातिशैतानि व मय्यत्तबिऽ खुतुवातिशैतानि फइन्नह यअमुरु बिल्फह्शाइ वल्मुन्करि व लौ ला फज्जुल्लाहि अलैकुम व रहमतुह मा जका मिन्कुम् मिन् अहदिन अबदन् ट’व लाकिन्नल्लाह युजक्की मय्यशाअु वल्लाहु समीअुन् अलीमुन्” ऐ मोमिनो! शैतान के कदमों पर नहीं चलना चाहिए क्योंकि जो उसके कदमों पर कदम रख करके चलेगा उसको भी वह बेशर्मी और बुरे काम ही बताएगा। अगर तुम्हारे ऊपर खुदा की कृपा और उनकी दया न होती तो कोई भी पवित्र नहीं हो सकता लेकिन खुदा जिसे चाहता है उसे पवित्र कर देता है। और खुदा सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।

अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरों में गिनो।

गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥२२॥

हे संसार के मुसलमानों! एक बात मैं और कह रहा हूं उसे सुनो, तुम मुहम्मद स. को और पैगम्बरों के समान क्यों मानते हो? श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्ममुनियों के इस संसार में आने पर ही मुहम्मद स. के स्वरूप की पहचान की जा सकती है और कुर्आन के गुह्य रहस्यों को जाना जा सकता है।

**एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफ़र ॥२३॥**

कुर्आन में परब्रह्म का संदेश देने वाले पैगम्बरों की संख्या १ लाख २० हजार बतायी गयी है। इनके अतिरिक्त ७ कलमे वाले प्रमुख पैगम्बर, नबी और इमाम हैं, जिनके अनुयायियों को धर्म ग्रन्थों का गुह्य अर्थ न जानने के कारण काफिर कहा गया है।

भावार्थ— सात कलमे वाले पैगम्बर इस प्रकार हैं— १. हजरत आदम सफीअुल्लाह, २. नूह नजीअुल्लाह, ३. मूसा कलीमुल्लाह, ४. इब्राहीम खलीलुल्लाह, ५. ईसा रूहुल्लाह ६. मुहम्मद रसूलल्लाह स., ७. अली वलीअुल्लाह, ।

**उनों करी बेफ़रमानी, ताथें गिरो सबों की रानी।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥२४॥**

इन पैगम्बरों के अनुयायियों ने अपने ग्रन्थों का बाह्य अर्थ लिया, जिससे वे वास्तविक आशय को न समझ सके और परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन किये। यही कारण है कि उन्हें दोजक में जाना पड़ा (रद्द कर दिया गया)। कुर्आन की अम-मयत-साअलून सूरत में इस कथन की वास्तविकता लिखी हुयी है।

भावार्थ— पार: ३० सूर: ७८ आयत २१-२२-२३ “इन्न जहन्नम कानत् मिरसादन् (२१) ल्’लित्तागीन मआबन्(२२) ल्’लाबिसीन फीहा अहकाबन्(२३)” यानि बेशक दोजख है। सरकशों का वही ठिकाना है। उसमें मुद्दतो पड़े रहेंगे। अर्थात् कुर्आन की अवहेलना करने वाले की सजा नर्क ही है।

**महंमद की जो उमत भई, दस बिध दोजख तिनकों कही।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर ॥२५॥**

महम्मद स. के जो भी अनुयायी हुये, उन्होंने भी कुर्आन का बाह्य अर्थ लिया। यही कारण है कि उनके लिए दस तरह की दोजक की बात कही गयी है। मुहम्मद स. के तिहत्तर फिरकों में बहत्तर फिरके दोजकी हुये। मात्र तिहत्तरवा फिरका ही ब्रह्ममुनियों का है, जो परमधाम जाएगा।

**कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफ़र हुए सही।
वाही सूरतमें कही पुलसिरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात ॥२६॥**

बताइए! वह कौन-सी सृष्टि है, जिसे परमधाम प्राप्त हुआ और कौन काफिर हुये, जिन्हें दोजक में जाना पड़ा? उसी अम-मयत-सालून सूरत में पुलसिरात का भी वर्णन है। वह कौन-सी सृष्टि है, जो बिजली की गति से पुलसिरात को पार कर जाएगी?

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों ने श्री कुलजम् स्वरूप के प्रकाश में चितवनी के द्वारा परमधाम का साक्षात्कार किया, जबकि श्री अक्षरातीत पर विश्वास न रखने के कारण जीवों को दोजक की अग्नि में जलना पड़ा। निराकार को पार करने के मार्ग को पुलसिरात के नाम से वर्णित किया गया है। ब्रह्मसृष्टियां अपने अटूट विश्वास और प्रेम के द्वारा बिजली के प्रकाश की गति से इस पुलसिरात से पार हो जाती हैं।

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसिरात की धार।

खास गिरो साहेबें सराहीं, गिरो दूजी पीछे लगी आई॥२७॥

वह कौन-सी सृष्टि है, जो घोड़े की गति से पुलसिरात को पार कर जाएगी? और कौन-सी सृष्टि है जो पुलसिरात की राह पर चलकर कट जाएगी? ब्रह्मसृष्टियों की महिमा स्वयं श्री अक्षरातीत प्रियतम भी करते हैं। इनके पीछे चलने वाली ईश्वरीय सृष्टियाँ हैं, जो अपने विश्वास और भक्ति के बल पर निराकार को पार कर जाएंगी।

भावार्थ- निराकार का मार्ग पुलसिरात है, जो तलवार की धार के समान तीखा है। इस पर कर्मकाण्ड अर्थात् नियम-शरीर के द्वारा चलने वाले जीव कट जाते हैं, क्योंकि वे पैरों से चल रहे हैं। इसका अभिप्राय यह है कि शरीर, इन्द्रियों तथा मन से होने वाली भक्ति से निराकार को पार नहीं किया जा सकता।

ईश्वरीय सृष्टि जहां ज्ञान और आत्मिक भक्ति के द्वारा घोड़े की भांति एक ही छलांग में पुल को पार कर जाती है, वहीं ब्रह्मसृष्टि अपने प्रेम के बल पर बिजली की भांति पल भर में पार कर जाती है।

और सैताने पीढ़ी फिराई, सो सब दोजख को चलाई।

ऐसे उलमा सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे॥२८॥

जीव सृष्टि को अज्ञान रूपी शैतान ने माया में फंसा दिया और उन्हें दोजक अर्थात् जन्म-मरण के चक्कर में भटकने के लिए विवश कर दिया। कुर्आन के सभी विद्वान (उलेमा) ऐसा कहते तो हैं, किन्तु इसके गुह्य अर्थ को कोई भी समझ नहीं पाता है।

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ।

बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़्या कुरान॥२९॥

कुर्आन के अट्ठारहवें सिपारे में ऐसा लिखा है, कि तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण कुर्आन के गुह्य रहस्यों को जाने बिना कुर्आन के विद्वान न तो कियामत के समय के

बारें में जान पाते हैं और न मुहम्मद स. की यथार्थ पहचान कर पाते हैं। इस अवस्था में उनका कुर्आन पढ़ना निरर्थक पड़ जाता है।

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान।

एह वास्ता पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब॥३०॥

कुर्आन के गुह्य अर्थों को जाने बिना इस प्रश्न का उत्तर कभी नहीं मिल सकता, कि यह कुर्आन किसके लिये आया? जब कुर्आन के गुह्य भेद स्पष्ट होते हैं, तभी इस प्रश्न का समाधान होता है कि यह मात्र परमधाम की ब्रह्मात्माओं को पहचान देने आया है।

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी सब मेहेर इमाम।

अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत॥३१॥

कुर्आन के बड़े-बड़े विद्वान जिन रहस्यों को नहीं जान सके, उसे इमाम मुहम्मद महदी अ. त. फ. श. श्री प्राणनाथ जी की कृपा दृष्टि से अरबी साहित्य से अनभिज्ञ सुन्दरसाथ जानते हैं, क्योंकि उनके हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश होता है। मुहम्मद स. ने पहले ही यह बात स्पष्ट कर दी थी कि जब कुरान के गुह्य भेद प्रकट हो जाएं, तब समझ लेना कि कियामत आ गयी है।

कुर्आन पार: ३० अम-म सूर ८० आयत ११-१२-१३ “कल्ला इन्नहा तज्किरतुन्(११) फमन् शाअ जकरह(१२) फी सुहुफिम् - मुकर्रमतिन्(१३)” देखिए यह (कुर्आन) सबके लिए नसीहत है। फिर जो चाहे उसे याद रखे, अदब के काबिले पन्नों में।

किन खोले न माएने कबू कुरान, पावें न हकीकत करें बयान।

पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन॥३२॥

आज दिन तक कभी भी किसी ने कुर्आन के गुह्य भेदों को यथार्थ रूप में नहीं जाना था। वे बाह्य अर्थों को ही कहते-सुनते रहे। यद्यपि कुर्आन पढ़कर बहुत से लोग स्वयं को ज्ञानी-विद्वान (आलिम-आरिफ) कहलाते तो हैं, किन्तु आज दिन तक किसी ने भी हरूफे मुक्तेआत या अन्य किसी गुह्य प्रसंग के एक भी शब्द का अर्थ नहीं खोला।

अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल।

जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत॥३३॥

अब मैं कुर्आन के गुह्य अर्थों के द्वारा वास्तविक सत्य (हकीकत) का वर्णन करने जा रहा हूं, जिससे परमधाम का द्वार खुल जाए अर्थात् परमधाम की प्राप्ति का मार्ग मिल जाए।

इससे परब्रह्म की पूर्ण पहचान प्रगट हो जाएगी। ऐसा होने पर ही कियामत के वास्तविक समय का निर्धारण होगा।

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम।

खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी॥३४॥

कुर्आन इस बात की साक्षी देता है कि कियामत के समय में सारा संसार एक सत्य (इस्लाम) को स्वीकार करेगा। हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के गुह्य भेदों को उजागर करेंगे और ब्रह्ममुनि अपने प्राणेश्वर की महिमा को संसार में फैलाएंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौ. में कुर्आन के अनुसार जिस इस्लाम धर्म की बात कही गयी है वह वहाबी विचारधारा के कट्टरपंथियों का इस्लाम नहीं है, जिसमें हिंसा और आतंकवाद के द्वारा शरीयत और अरबी भाषा को बलपूर्वक सबके ऊपर थोपने की मानसिकता पाली जाती है। यह वह इस्लाम (निजानंद) है जिसमें परमधाम की हकीकत और मारिफत (सत्य और परमसत्य) का ज्ञान है तथा संसार की सभी भाषाओं, सभी देशों तथा सभी मानवों के लिए समान भावना है। इसका तत्वज्ञान हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी सबके लिए एक समान है। इस इस्लाम में हिंसा और कर्मकाण्ड (शरीअत) के लिए कोई भी स्थान नहीं है।

लिखे सब माएने बातन, सो हनोज लों ना खोले किन।

सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन॥३५॥

कुर्आन के सभी अर्थ सूक्ष्म हैं जिन्हें आज दिन तक किसी ने भी स्पष्ट नहीं किया था। गुह्यार्थ प्रकट होने पर ही कुर्आन की सभी विशेषतायें प्रकट होती हैं। श्री जी के द्वारा श्री कुलजुम स्वरूप में गुह्य भेद प्रकट कर दिये जाने से, वे सबको विदित हो गये हैं।

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम।

तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद॥३६॥

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहली विशेषता यह है कि उनमें कुर्आन के गुह्यतम भेदों को उजागर करने की पूर्ण सामर्थ्य है। दूसरी विशेषता यह है कि धर्म की सच्ची राह पर चलने वाले ब्रह्ममुनियों के वे प्राणेश्वर हैं। तीसरी विशेषता यह है कि उनके स्वरूप में तीनों सूरतें बशरी, मल्की तथा हकी विद्यमान हैं और उन्होंने कियामत के समय में एक हिन्दू तन (श्री मिहिरराज जी का) धारण किया हुआ है।

**रसूल रूह अल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ॥३७॥**

कुर्आन में कहा गया है कि बशरी सूरत मुहम्मद स. मलायकी सुरत सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा हकीकी सूरत इमाम महंदा एक ही स्वरूप हैं जो श्री राज जी के द्वारा धारण किये गये हैं। श्री जी के स्वरूप में ये तीनों स्वरूप एकाकार होकर श्री राज जी के प्रेम का रसपान करा रहे हैं।

**आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए ॥३८॥**

आदम सफी उल्लाह, नूह नबीउल्लाह, मूसा कलीमुल्लाह, इब्राहीम खलीलुल्लाह, अली वली अल्लाह, मुहम्मदु रसूलुल्लाह और ईसा रूहुल्लाह ये सात कलमों वाले पैगम्बर हैं। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में इनकी शक्ति समाहित है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का आशय है कि इस ब्रह्मासाण्ड की सभी ज्ञान शक्तियां श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में समाहित हैं। इनसे श्रेष्ठ कोई और स्वरूप नहीं है।

पा. १७ सू. २२ आ. १०७ “व मा अर्सनाक इल्ला रहमततल-लिल आलमीन” अर्थात् ऐ (मुहम्मद!) हमने आपको तमाम दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है।

**जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर ।
सतरहें सिपारे यों कर कहा, बिना महंमद कोई आया न गया ॥३९॥**

संसार में जितने भी पैगम्बर हो गये हैं, सबकी महिमा श्री जी के स्वरूप में ही विलीन हो जाती है। कुर्आन के सत्रहवें सिपारे में कहा गया है कि मुहम्मद स. के अतिरिक्त न तो परमधाम से कोई आया है और न ही कोई परमधाम गया है (अन्तर्दृष्टि से जाकर साक्षात्कार कर पाया है)।

भावार्थ- उपरोक्त चौ. में मुहम्मद का तात्पर्य तीनों सूरतों बशरी, मल्की तथा हकी से है। इनका अवतरण परमधाम से हुआ है और इन्होंने परमधाम का साक्षात्कार किया है। कुर्आन के सि. १५ सू. १७ आ. १ में कहा गया है कि “सुब्हानल्लजी अस्रा बिअब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - हरामि इलल् - मस्जिदिल् - अक्सल्लजी बारकूना हौलह लिनुरियह मिन् आयातिना इन्नह हुवस्समीअुल् - बसीरु” वह पाक है। जो अपने बंदे को रातों रात मस्जिद हराम यानि काबे की मस्जिद से मस्जिद अक्सा यानि बैतुल मुकद्दस तक ले गया जिसके चारों तरफ हमने बरकतें रखी हैं और इसे ले जाने से मतलब यह था कि हम उनको अपनी कुदरत के कुछ नमूने दिखलावें। वैसे तो बेशक वही सब कुछ देखने और सुनने वाला है।

पार: २७ सिपारे ५३ आयत १-१७ “वन्नज्मि इजा हवा(१) मा जल्ल साहिबुकुम् व मा गवा(२) मा जागल्बसरु व मा तगा(१७)” तारे की कसम जब महम्मद साहेब नीचे आये तो न तो वह बहका और न बेराह चला। उन्होंने कभी भी मनमानी बातें नहीं की। उनको तो खुदा के हुक्म से भेजा जाता है। जिब्रील फरिस्ता ने उन्हें सिखाया। रसूल साहब को सब कुछ प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। वह आसमान के ऊँचे किनार पर थे। वह खुदा के नजदीक थे और आगे बढ़े। मुहम्मद स. और खुदा के बीच में दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। खुदा ने मुहम्मद स. को अपना संदेश दे करके भेजा। जो उन्होंने वहाँ पर देखा। उसमें कोई भी गलती नहीं थी। जो उन्होंने देखा उसके ऊपर तुम क्यों झगड़ते हो। यह जो कुछ भी उतर रहा था उसमें उन्होंने जिब्रील को देखा। अन्तिम हद की बेरी के पास हमेशा रहने की जगह बहिश्त है। सम्पूर्ण अर्श अजीम के अन्दर नूर - इलाही छा रहा था। महम्मद साहेब की दृष्टि वहाँ से न घूमती है न आगे बढ़ती है। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से अपने परवरदिगार का दर्शन किया।

पार: २७ सू. १७ आ. १ “वन्नज्मि इजा हवा व मा तगा” तारे की कस्त ..
..... उन्होंने परवरदिगार की बगे २२ निशानिया देखी।

**और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही।।४०।।**

कुर्आन के १८ वें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद के नाम से सभी पैगम्बर हैं। इन सभी पैगम्बरों की जो महिमा है, वह मुहम्मद स. की महिमा में एकाकार हो जाती है।

भावार्थ- कुर्आन सि. १६ सू. २५ आ. २६ में कहा गया है कि “अल्मुल्कु यौमइजिनिल् - हक्कु लिर्रह्मानि व कान यौमन अलल् - काफिरीन असीरन्” उस दिन सच्ची पादशाही खुदा की ही होगी, वह दिन काफिरों पर मुश्किल वाला होगा (महदी के जरीए)।

पार. १८ सू. २४ आ. ४८ “व इजा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लियह्कुम बैनहुम् इजा फरीकुम् - मिन्हुम् मुऽरिजून” और जब अल्लाह और पैगम्बर की तरफ बुलाये जाते हैं कि उनमें उनके आपस के झगड़ों का निबटारा कर दें तभी उनमें का एक काफिर मुँह मोड़ बैठता है।

**ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत।।४१।।**

छत्रशाल जी कहते हैं कि संसार के सभी हिन्दू-मुसलमान मेरी बात सुनें। प्राणेश्वर अक्षरातीत ने वेद-कतेब के गुह्यतम भेदों को श्री कुलजम् स्वरूप में प्रकट कर दिया है। जो उसका

चिन्तन कर अटूट विश्वास के साथ अपनी आत्मा को जागृत करेगा, उसे संसार में और अखण्ड धाम में परब्रह्म की ओर से अपार शोभा मिलेगी।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर ॥४२॥

महाराजा छत्रशाल जी कहते हैं कि इस प्रकार जागृत होने वाले सुन्दरसाथ का परमधाम में मूल सम्बन्ध (परात्म) है और वहां उनकी शोभा होगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १४७ ॥

**हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥१॥**

श्री प्राणनाथ जी सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे साथ जी! मैं परमधाम से केवल आपके लिये ही आया हूँ। मैं अपने साथ परमधाम का ज्ञान देने वाला श्री कुल्जुम स्वरूप भी लाया हूँ, जिसमें कुर्आन के सभी गुह्यतम भेद विद्यमान है। इसके अतिरिक्त इसमें तुम्हारे स्वरूप की पूर्ण पहचान भी दी गयी है। इसका चिन्तन करके तुम मेरे स्वरूप की यथार्थ पहचान करो।

**सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफत को न पोहोचे सब्द ॥२॥**

इस कुल्जुम स्वरूप में मुहम्मद स., कुर्आन, सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा अति पवित्र इमाम महंदी की (मेरी) महिमा का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त श्यामा जी के अंग रूप आप सभी ब्रह्ममुनियों की भी महिमा का वर्णन किया गया है, जिसे व्यक्त करने की सामर्थ्य संसार की किसी भी भाषा के किसी भी शब्द में नहीं है।

**सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढूं बिना फुरमान।
या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ॥३॥**

अब श्री महामति जी की आत्मा के द्वारा कहा जा रहा है- जो कुर्आन में लिखा है, मेरे द्वारा वही कहा जायेगा। मेरे कथन का कोई भी शब्द बिना कुर्आन का उद्धरण दिये बिना नहीं होगा। इसके अतिरिक्त मुहम्मद स. की कही हुई हदीसों का भी सन्दर्भ दिया जायेगा। मेरे इस कार्य से किसी को अच्छा लगे या क्रोध आये तो मुझे कोई भी चिन्ता नहीं है।

**दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक।
अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत ॥४॥**

मेरे द्वारा कुर्आन-हदीस की साक्षी देकर मात्र सत्य ही कहा जायेगा, जिसे संशय हो, उसे कुर्आन में जाकर देख लेना चाहिए। आज दिन तक संसार में मात्र शरीअत का ही साम्राज्य था किन्तु अब कुर्आन के गुह्य भेदों के स्पष्ट होने से हकीकत (यथार्थ सत्य) का मार्ग सबको प्राप्त हो गया है।

भावार्थ- श्री कुलजुम स्वरूप का प्रत्येक शब्द, श्री राज जी के आवेश के द्वारा कहा गया है। श्री महामति जी की आत्मा को उसे कहने की शोभा मिली है, किन्तु इस बड़े कियामतनामा ग्रन्थ में यह शोभा महाराजा छत्रशाल जी को स्वयं श्री महामति जी ने दी है। अम्नाफील फरिश्ते को आवेश की छत्रछाया में गुह्य रहस्यों को व्यक्त करने तथा प्रसारित करने की शोभा है। जिब्रील के द्वारा शरीर से शब्दों का प्रकटन होने की शोभा है।

**अब सबमें जाहेर हुई कियामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ॥५॥**

अब जब ग्यारहवीं सदी का समय है, तो कुर्आन के सभी भेद प्रकट हो गये हैं तथा कियामत के आने की बात भी सबमें फैल गयी है। कुर्आन के सोलहवें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद स. से पहले के किसी भी पैगम्बर ने हकीकत एवं मारिफत का ज्ञान नहीं पाया था।

**ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद ॥६॥**

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में जो भी योगी-यति, पीर-फकीर हैं, उनका चिन्तन निराकार तक ही सीमित है। जब तक मुहम्मद साहब इस संसार में नहीं आये थे, तब तक किसी ने भी इब्राहिम पैगम्बर की बनायी हुई अक्सा मस्जिद को नहीं छोड़ा था अर्थात् सभी निराकार की ही भक्ति करते रहे थे।

भावार्थ- श्री जी ने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा निराकार के पार के पार परमधाम का ज्ञान दिया है और सभी को कर्मकाण्ड (शरीयत) से छुड़ाकर चितवनी के ज्ञान द्वारा परमधाम की हकीकत और मारिफत का मार्ग दर्शाया है।

और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के ताई।

रसूल चले पाउं सिर दे, संग एक जबराईल ले॥७॥

मेयराजनामें में लिखा है कि जब मुहम्मद स. को मेयराज हुआ, तो वे जिब्रील फरिश्ते के साथ मन से भी अधिक तीव्र गति से चले।

भावार्थ- शिर पर पैर रखकर चलना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- मन से भी अधिक वेग से चलना। परब्रह्म का साक्षात्कार आत्मिक दृष्टि से ही होता है, जिसका वेग मन से भी अधिक माना जाता है।

चौद तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही।

निराकार कहिए सुन, एही बेचून बेचगून॥८॥

उन्होंने चौदह लोकों के इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को देखा। इसके पश्चात् वे उस मोह तत्व (ला मकान) में प्रवेश किये। जिसे हिन्दू-धर्मग्रन्थों में निराकार, महाशून्य तथा कतेब ग्रन्थों में बेचून-बेचगून कहा जाता है।

भावार्थ- यद्यपि बेचून-बेचगून का शाब्दिक अर्थ अनुपम-अद्वितीय ही होता है किन्तु तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) से रहित संसार के लोगों ने निराकार को ही परमात्मा मानकर ये विशेषण उसके साथ जोड़ा दिया है। यही कारण है कि उक्त चौपाई में निराकार को ही बेचून, बेचगून कहा गया है।

छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए।

जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और॥९॥

इस निराकार को पार करके वे बेहद मण्डल (जबरूत) में गये, जहां वे सत्स्वरूप से आगे परमधाम के नूर वन में प्रवेश कर गये। जिब्रील सत्स्वरूप में ही रुक गया। यह धाम निराकार से पूर्णतया भिन्न है।

भावार्थ- सत्स्वरूप अक्षर ब्रह्म के अहम् का स्वरूप है। अतः अक्षर धाम का क्रियात्मक स्वरूप सत्स्वरूप को ही माना जाता है। परमधाम के अन्दर अक्षर ब्रह्म का रंगमहल अवश्य है किन्तु अक्षर ब्रह्म की उसमें कोई भी लीला नहीं होती है। उनकी लीला का धाम बेहद मण्डल (जबरूत) है। सत्स्वरूप से आगे सर्वरस सागर की भूमिका आती है, जिसे परमधाम के ही अन्तर्गत माना जाता है।

आगे चल न सक्या क्योहीं कर, नूर तजल्ली जलावे पर।

तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक ॥१०॥

जिब्रील सत्स्वरूप से आगे नहीं जा सका। परमधाम के तेज से उसके पर (पंख) जलने लगे। परमधाम में एक मात्र मुहम्मद साहब ही पहुँचे। वहां अक्षरातीत श्री राज जी के सम्मुख पहुँचकर उन्होंने उनके श्री मुख से संकेतों में बहुत सी बातें सुनी।

भावार्थ- जिब्रील- इस ब्रह्माण्ड के पक्षी जैसा कोई स्वरूप नहीं है, जिसके पंख होते हैं। पंख जलना भी एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है- शक्ति रहित हो जाना, असमर्थ हो जाना। इसी प्रकार पंख होने का तात्पर्य है- सामर्थ्यवान्। पंख काट देने का अर्थ है- शक्ति को नष्ट कर देना।

लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंच में खाक।

गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत ॥११॥

श्री राज जी तथा मुहम्मद स. की वार्ता को कुर्आन में सांकेतिक भाषा में इस प्रकार लिखा है कि एक दरिया (सागर) है, जिसका जल मिश्री से भी अधिक मीठा और दूध से भी अधिक उज्ज्वल है। उसके किनारे एक वृक्ष पर एक मुर्ग अपनी चोंच में मिट्टी (खाक) लेकर बैठा है। इस खेल को देखने के लिये ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि ने पंचभूतात्मक मानव तन धारण किया है।

भावार्थ- जब श्री राज जी ने मेहर का दरिया दिल में लिया, तो रूहों के दिल में खेल देखने का ख्याल उपजा अर्थात् मेहर के सागर ने यह मोहसागर का खेल दिखाया है। इस मोह सागर के जल को मिश्री से भी मीठा और दूध से भी अधिक उज्ज्वल कहने का आशय है, कि इसमें श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान अवतरित हुआ है जिसकी ज्ञान धारा मिश्री से भी अधिक मीठी है। तारतम ज्ञान को आत्मसात् कर ब्रह्मात्माओं ने चितवनी के द्वारा धाम हृदय में युगल स्वरूप की छवि को बसा लिया है। परमधाम की वहदत (क्षीर सागर) का स्वाद मिलने से उनका हृदय दुध से भी अधिक उज्ज्वल (पवित्र) है। परब्रह्म के आदेश (हुक्म) रूपी वृक्ष पर विद्यमान श्यामा जी (मुर्ग) ने माया का पंचभौतिक (मिट्टी का) तन धारण किया हुआ है। उनके साथ इस मायावी जगत का खेल देखने के लिये जो ब्रह्मसृष्टियां तथा ईश्वरीय सृष्टियाँ आयी हैं, उन्होंने भी माया का नश्वर पंच भौतिक तन धारण किया है।

**और कहा देख दाहिनी तरफ, मोमिन के मुंह पर कुलफ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ॥१२॥**

जब मुहम्मद साहब परमधाम के रंगमहल-मूलमिलावे में पहुँचे, तो श्री राज जी ने उनसे कहा कि तुम अपनी दाहिनी ओर विराजमान श्यामा जी को देखो। इनके तथा ब्रह्मात्माओं के मुख पर फरामोशी है। मुहम्मद स. ने पूछा कि इनके मुख पर फरामोशी क्यों है? श्री राज जी ने उत्तर दिया कि तुम्हारी उम्मत ने माया का खेल देखने की इच्छा की है। इसलिये उनके ऊपर गुनाह लगा है और उनके मुख पर फरामोशी छायी है।

भावार्थ- श्री राज जी ने मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) की आत्मा में इश्क (प्रेम) का स्वरूप भर दिया जिससे उनमें तथा श्री राज जी में किसी भी प्रकार भेद नहीं रह गया। यही कारण है कि इस चौपाई के चौथे चरण में श्यामा जी के स्थान पर 'तेरी' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह सर्वविदित है कि ब्रह्मसृष्टियां श्यामा जी की अंग रूपा हैं, अक्षर ब्रह्म की नहीं। किन्तु अक्षर ब्रह्म को भी श्री राज जी एवं श्यामा जी का ही स्वरूप मानकर ऐसा कहा गया है, कि तुम्हारी उम्मत (ब्रह्मात्माओं) ने माया का खेल मांगने का अपराध किया है।

**इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब ॥१३॥**

मुहम्मद स. के यह पूछने पर कि इनकी फरामोशी कब हटेगी? श्री राज जी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे हृदय में इनकी फरामोशी को हटाने की कुंजी है। जब तुम सभी माया की नींद छोड़ोगे, तो इन सभी तनों पर छायी हुई फरामोशी (नींद) हट जायेगी। मेयरजनामः ग्रन्थ में यह सारी वास्तविकता लिखी हुई है किन्तु उसे वही प्राप्त कर सकता है, जिसको धाम धनी ने यह शोभा दी है अर्थात् श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी इसके रहस्य को नहीं जान सकता।

भावार्थ- इस खेल में अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं सभी के ऊपर फरामोशी का आवरण है। श्यामा जी की अंगरूपा सभी आत्मायें हैं। श्यामा जी और अक्षर ब्रह्म को एक ही स्वरूप (मारिफत की दृष्टि से) मानकर श्री राज जी कहते हैं, कि जब तुम्हें परमधाम का ज्ञान प्राप्त होगा तभी तुम संसार में जागृत होओगे, तत्पश्चात् परमधाम में अपने मूल तनों में भी जागृत हो पाओगे। फरामोशी हटाने का एक मात्र यही साधन है।

**और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियाँ में तुम॥१४॥**

इसके अतिरिक्त मुहम्मद स. ने श्री राज जी से नब्बे हजार हरफों में और भी बहुत सी बातें की तथा अपने हृदय में धारण किया। उन्हें शरीयत के तीस हजार हरफों, के रहस्य को संसार में प्रकट करने का आदेश हुआ।

**और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार॥१५॥**

तरीकत तथा हकीकत के शेष तीस हजार हरफों को खोलने का अधिकार उनकी इच्छा पर छोड़ दिया। मारिफत के जो तीस हजार हरफ थे, उन्हें पूर्णतया छिपाकर रखने का निर्देश हुआ, क्योंकि कियामत के समय में माफिरत के इन्हीं हरफों का भेद स्पष्ट करके इमाम महंदा श्री प्राणनाथ जी की पहचान होनी है और न्याय की लीला होनी है।

**सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान।
अमेत सालून में एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात॥१६॥**

इस प्रकार कुरान की हकीकत तथा मारिफत के भेदों को खोलकर कियामत के निशानों की पहचान करानी है और इसी समय कियामत का प्रकट होना सिद्ध होना है। इस बात को कुरान के अम-मयत-सअलून सिपारे में अनेक प्रकार से लिखा गया है।

**रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार।
जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए॥१७॥**

परमधाम में १२००० ब्रह्मसृष्टियां हैं। परब्रह्म की अंगस्वरूपा होने से जिनकी महिमा की कोई सीमा नहीं है। इन्हीं ब्रह्मात्माओं की इच्छा पूरी करने के लिए माया का यह खेल बना है। तथा उन्हें धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्य समझाने के लिए जागृत बुद्धि के फरिश्ते अस्त्राफील को आना पड़ा है। यही कारण है कि अस्त्राफील को सभी फरिश्तों में सर्वश्रेष्ठ कहलाने की शोभा प्राप्त हुयी है।

**सो रूहें दरगाह के माहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें।
सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल॥१८॥**

ये ब्रह्मसृष्टियां परमधाम के अन्दर रहती हैं। परब्रह्म की साक्षात् अंगस्वरूपा होने से इनसे अधिक कोई और उनके नजदीकी नहीं हैं। इनकी परात्म मानव की आकृति में है और परात्म की नकल भी मानव की आकृति है।

भावार्थ- परमधाम में सत अंग अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत का एक ही स्वरूप है। बेहद में रहने वाली ईश्वरीय सृष्टि, अक्षर ब्रह्म की सुरता है। इसी प्रकार, अक्षर ब्रह्म के मन (अव्याकृत) का स्वाप्निक रूप आदिनारायण है। इसी कारण आदिनारायण के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब स्वरूप जीव, जो मानव तन धारण करते हैं उनकी आकृति ईश्वरीय सृष्टि की नकल के रूप में होती है। अन्तर केवल इतना ही होता है, कि मानवीय तन पंचभूतात्मक होता है तथा बाल, युवा एवं वृद्धावस्था तीनों अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

इसके विपरीत ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि का तन नूरमयी होता है तथा मात्र किशोरावस्था में होता है। इसके अतिरिक्त यह भूख-प्यास, जरा-व्याधि तथा मृत्यु से भी पूर्णतया रहित होता है। यही कारण है कि किरन्तन ६१/४ में कहा गया है कि-

‘जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल ।’

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंद से उतारे ।

काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियाँ में विस्तरे ॥१९॥

कुरान के अट्ठारहवें सिपारे में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से अवतरित हुई हैं क्योंकि इनकी करनी और रहनी में श्री राज जी का प्रेम भरा होता है। ये धाम धनी का तारतम ज्ञान लेकर संसार में प्रसारित करती हैं।

और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे ।

फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर ॥२०॥

जो अज्ञान रूप अंधकार के मोहसागर से उत्पन्न होते हैं, उन जीवों को काफिर कहा जाता है। ये जीव, मन के अधीन होकर माया के उल्टे कामों में फंसे रहते हैं। इनकी कथनी और रहनी में अज्ञानता का घोर अंधकार भरा होता है।

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होए न्यारे ।

फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान ॥२१॥

उसी अट्ठारहवें सिपारे में लिखा है कि ईश्वरीय सृष्टि कुर्आन के ज्ञान से कभी अलग नहीं होती। इन्हें हकीकत (सत्य) के ज्ञान से पहचान देने के लिए ही कुर्आन अवतरित हुआ। इसे दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कहा गया है, कि फरिश्तों (ईश्वरीय सृष्टि) का अवतरण ही कुर्आन के ज्ञान को ग्रहण करने के लिए हुआ है।

भावार्थ- जिब्रील फरिश्ते की कुर्आन के अवतरण में विशिष्ट भूमिका है। इसी प्रकार अम्राफील भी कुर्आन के रहस्यों को प्रकट करने के लिए ही अवतरित हुआ है। यह फरिश्ता आज दिन तक कभी भी इस सृष्टि में नहीं आया था।

इसी प्रकार यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये, तो वेद में भी अक्षर ब्रह्म का ही विशेष ज्ञान है। जिसके गुह्य रहस्यों को सनकादिक, शिव या सुकदेव जैसी ईश्वरीय सृष्टि ही यथार्थ रूप में जानती हैं।

फौज फिरस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर।

और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥२२॥

अम्राफील फरिश्ते के पहले सूर में श्री कुलजम् स्वरूप का अवतरण हुआ है तथा धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्य उजागर हुये हैं। ईश्वरीय सृष्टि ने इस समस्त ज्ञानराशि को आत्मसात् कर लिया है। कुर्आन के तीसरे सिपारे की 'इन्ना इन्जुलना' सूरत में यह बात बहुत स्पष्ट रूप से लिखी हुयी है।

फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनी का हक।

उतरे लैलत कदर के माहें, तीन तक़रार रात के जाहें ॥२३॥

ईश्वरीय सृष्टि को भी महान गरिमा वाला कहा गया है। क्योंकि अक्षर की सृष्टि होने के कारण यह ब्रह्मात्माओं के निकटस्थ हैं। इनके साथ भी श्री राज जी का हुक्म (आदेश) सदा रहता है। लैलतूलकदर के तीनों भागों (व्रज, रास और जागनी) में ब्रह्मसृष्टि के साथ ईश्वरीय सृष्टि हमेशा ही रही है।

भावार्थ- जिस प्रकार ब्रह्मसृष्टियां श्री राज जी के आदेश (हुक्म) से बंधी होती है, उसी प्रकार ईश्वरीय सृष्टि भी उनके आदेश से बंधी होती है। उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का यही आशय है।

रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनी का ले उतरे।

रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे ॥२४॥

परमधाम से ब्रह्मसृष्टि तथा अक्षर धाम से ईश्वरीय सृष्टि धनी के जोश के साथ इस खेल में आयी हैं। श्री राज जी के तन कही जाने वाली ब्रह्मात्माएं जिस जागनी ब्रह्माण्ड में आयी हैं, वह ब्रह्माण्ड तारतम ज्ञान के प्रकाश से भरपूर कहा गया है।

**एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर ॥२५॥**

लैल तुल कद्र (माया की रात्रि) के पहले भाग में ब्रज में आये, जहां नन्द जी का निवास था। दूसरे भाग में श्री कृष्ण जी के द्वारा योगमाया के नित्य वृन्दावन में महारास हुई, जिसका वर्णन कूर्आन में नूह के यहां तूफान आने के रूप में है। तीसरे भाग में जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान से उजाला हुआ, जिसमें ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों ने तारतम ज्ञान का संदेश चारों ओर फैलाया।

भावार्थ- योगमाया के ब्रह्माण्ड को ही 'नौका' कहा गया है, जिसमें पहुँचने से ब्रह्मसृष्टियां प्रलय (तूफान) में सुरक्षित रहीं। इस रहस्य को नूह नबी कुछ अंशों में जानते थे, इसलिये उन्हें नूर नबी अल्लाह कहते हैं।

**खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥२६॥**

इस मायावी जगत में आने के बाद हजार महीने अर्थात् ८३ वर्ष ३६ (सवा तीन) महीने तक ईश्वरीय सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि पर श्री राज जी की कृपा बरसती रही, जिसका दोनों सृष्टियों ने रसपान किया। प्रियतम अक्षरातीत ने इन दोनों सृष्टियों को संसार में परमधाम का ज्ञान फैलाने का आदेश दिया तथा इन्हीं के हाथ से समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भावार्थ- वि. सं. १६६४ से १७४८ तक एक हजार माह अर्थात् ८३ वर्ष ३६ माह पूरे होते हैं जिसमें बेहद से लेकर परमधाम तक का अमृतमयी ज्ञान अवतरित होता है। इसे ही परब्रह्म की कृपा का बरसना कहा गया है।

**एक गाजी बनी असराईल नें, लोहा बांधा महिनें हजार ।
बीच राह खुदाए के, तरफ परवरदिगार ॥ श्री बीतक सा. 45/5**

इस चौपाई का भी प्रसंग वि. सं. १६६४ से वि. सं. १७४८ तक माना जाएगा क्योंकि इस अवधि में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी से लेकर श्री महामति जी एवं अन्य ब्रह्मात्माओं ने अपने प्राणप्रियतम को पाने के लिए माया से युद्ध किया किन्तु हजार महिने के तेरासी बरस, भाए महिना ऊपर चार ।

इन तें कहे बेहेतर, ताको मोमिन करो विचार ॥ श्री बीतक सा. 45/10

अर्थात् एक हजार महीने के तिरासी साल व सवा तीन माह (८३ वर्ष और ३६ माह) होते हैं। जागनी लीला का इससे भी अधिक श्रेष्ठ समय इसके बाद आता है। हे साथ जी! आप इसके विषय में विचार कीजिए।

उपरोक्त चौपाई हजार महीने का समय वि. सं. १६३८ से १७२२ तक होता है, क्योंकि वि. सं. १७२२ में श्री जी दीव बंदरगाह पधारे थे, जिसके बाद जागनी का तीव्र दौर चला, किन्तु बड़ा क्या. १/३६ तथा ६/२६ में जो परब्रह्म की कृपा के अवतरण का प्रसंग है, वह वि. सं. १६६४ से १७४८ तक ही होगा, क्योंकि इसमें बेहद से परमधाम तक का ज्ञान अवतरित होता रहा।

आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित।

याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित।।२७।।

कियामत की इस घड़ी में श्री प्राणनाथ जी के चरणों (श्री गुम्मत जी) में उन सभी ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों का मिलावा होना है जिन्हें तारतम ज्ञान का संदेश सारे संसार में फैलाने का निर्देश मिला है। इसी सिपारे की छत्तीसवीं सूरत को आप अच्छी तरह से देखें।

भावार्थ—कुरान पार अम-म ३० सूरत कद्र ६७/२५ आयत १-५ “ इन्ना अन्जलूलाहु फी लैलतिल् - कद्रि (१) व मा अद्राक मा लैलतुल् - कद्रि(२) लैलतुल् - कद्रि खैरुम् - मिन् अल्फि शहरिन्(३) तनज्जलुल्-मलाइकतु वर्खुहु फीहा बिइज्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्(४) सलामुन् हिय हत्ता मत्लइल् - फज्रि(५)” अर्थात् हमने यह कुर्आन कद्र की रात से उतारना शुरू किया। और तू क्या जाने कद्र की रात क्या है? कद्र की रात हजार महीनों से बढ़कर है। उसमें फरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से जमीन पर उतरते हैं। हर काम पर सलामती। वह रात सुबह ऊशाकाल तक सलामती की रहती है।

छोटा क्यामतनामा प्रकरण २ चौपाई २२ के भावार्थ से निम्नलिखित आयतों का अवलोकन करें।

तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे।

एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर।।२८।।

कुर्आन में परमधाम से बाहर परब्रह्म के द्वारा धारण किये हुये तीन स्वरूप कहे गये हैं, जो लैलतूलकद्र के तीनों भागों में ब्रह्मात्माओं के साथ रहे हैं। ब्रज लीला में बाल स्वरूप था, तो रास में किशोर स्वरूप और जागनी ब्रह्माण्ड में ज्ञानमयी स्वरूप हैं। जिनके द्वारा तारतम ज्ञान के प्रकाश में अज्ञानता की रात्रि का अंधकार मिटाकर प्रातःकाल का सवेरा किया गया है।

भावार्थ- 'अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदा' अर्थात् सिर के बालों से कोई वृद्ध नहीं होता, ज्ञान से परिपक्व व्यक्ति ही वृद्ध होता है। इस चौपाई के चौथे चरण में वृद्धावस्था का तात्पर्य ज्ञानमयी स्वरूप से है।

**दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याय इन ठौर।
पाँच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर ॥२९॥**

इसके अतिरिक्त कुर्आन में दो और स्वरूपों का वर्णन आता है, जिसमें एक स्वरूप मुहम्मद स. से कुर्आन का अवतरण होता है और दूसरे स्वरूप सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी से सभी ग्रन्थों के रहस्यों को स्पष्ट करने वाले तारतम ज्ञान रूपी कुंजी का अवतरण होता है। इसके पश्चात् श्री महामति जी के धाम हृदय में पांचों स्वरूप विराजमान होते हैं, जिसमें मूल बीज रूप तारतम का विस्तार श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में होता है। इसी स्वरूप को नूरी मुहम्मद या हकी स्वरूप भी कहते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त २८वीं चौपाई में वर्णित तीन स्वरूपों तथा २९वीं चौपाई में वर्णित दो स्वरूपों को मिलाकर पांचों स्वरूपों का वर्णन करना उचित नहीं है, क्योंकि २८वीं चौपाई में जो ज्ञानमयी (वृद्धावस्था) स्वरूप कहा गया है उसमें सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी दोनों स्वरूप आ जाते हैं।

इसी प्रकार, जो ब्रज का स्वरूप (आतम अक्षर जोश धनी धाम) है, वही रास का भी स्वरूप है। ऐसी स्थिति में जिन स्वरूपों (श्री देवचन्द्र जी, श्री प्राणनाथ जी) का वर्णन हो चुका है उन्हीं स्वरूपों को पुनः श्री महामति जी के धाम हृदय में कैसे माना जा सकता है? यथार्थता यह है कि वि. सं. १७३५ के पश्चात् ही ज्ञान का सवेरा होता है। अतः यह स्पष्ट है कि श्री महामति जी (अंकूर) के धाम हृदय में जिन पांच स्वरूपों का वर्णन है वे इस प्रकार हैं-

१. श्री राज जी का आवेश स्वरूप, २. आनन्द स्वरूप श्यामा जी, ३. हुक्म (आदेश) स्वरूप अक्षर ब्रह्म ४. जोश स्वरूप तथा ५. जागृत बुद्धि का स्वरूप।

उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में 'नूर' का आशय उस हकी स्वरूप से है जिन्हें 'नूरी मुहम्मद' कहा जाता है।

**वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ॥३०॥**

अक्षरातीत परब्रह्म ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में श्री मिहिरराज जी के जिस मानवीय तन को धारण किया है, वह पंचभौतिक तन है किन्तु इस शरीर के पांचों तत्व और

२५ प्रकृतियां अति पवित्र हैं। कुर्आन के आठवें सिपारे में यह वर्णन है जो प्रत्यक्ष रूप से लिखा हुआ है।

भावार्थ- २५ प्रकृतियां इस प्रकार हैं- पंच सूक्ष्म भूत (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध), पंच स्थूल भूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), पंच ज्ञानेन्द्रियां, पंच कर्मेन्द्रियां, चार अन्तः करण (मन, चित्त बुद्धि, अहंकार) तथा पच्चीसवां जीव।

कुर्आन के सिपारे आ ८ सूरः ७ आयत २७ “या बनी आदम ला यफूतिनन्नकुमुशैतानु कमा अख्रज अबवैकुम् मिनलजन्नति यन्जिअु अनहुमा लिबासहुमा लियुरियहुमाशयातिन औलियाअ लिल्लीन ला युअ्मिनून”

ऐ बनी आदम! देखिए कही शैतान बहका न दे। जिस तरह उसने तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकलवाया ताकि उनके द्वारा शैतान की पर्दा करने की बातों को जाहिर न कर दे। शैतान के भाईबन्द तुमको वहां से ताके रहते हैं, जहां पर तुम उसको न देख पाओ। हमने शैतान को उन्ही का दोस्त बनाया जो ईमान नहीं लाते।

पारः ८ सूरः ७ आयत ३४-३८ “व लिकुल्लि अुम्मतिन् अजलुन् फइजा जाअ अजलुहुम् ला यस्तअ्खिरून साअतंव्व ला यस्तक्दिमून(३४) या बनी आदम इम्मा यअ्तिन्नकुम् काल लिकुल्लिन् जिऽफुव्व लाकिल्ला तऽलमून(३८)” यह बनी आदम जब कभी हमारे पैगम्बर तुम्हारे पास आ करके सुनाये तो जो शख्स उस आयत पर मन से डरोगे और उनको मानोगे तभी तुम्हारा सुधार होगा। तो कभी भी डरपोक और उदास नहीं होओगे। जो इसको नहीं मानेगा वह हमेशा दोजक की आग में जलता रहेगा। ऐसा कौन दुष्ट होगा जो अल्लाह पर आरोप लगाये और उनकी आयतों को झूठलाये। जिसके भाग्य में जितना लिखा होगा उसको उतना ही मिलेगा। जब मृत्यु का समय नजदीक होगा तब उनसे पूछा जायेगा कि अल्लाह के स्थान पर तुम लोग जिसकी पूजा करते थे, वह वहां चले गये। तब सभी लोग कहेंगे वह गायब हो गया, क्योंकि वह काफिर था। जब सभी दोजक की अग्नि में जलने लगेंगे तो एक दूसरे को कोसने लगेंगे। इस प्रकार सभी लोग परवरदिगार से कहेंगे। इन्होंने ही हमें गुमराह किया था। इस कारण इनको हमसे अधिक दोजख की आग में सजा दो। तब अल्लाह कहेगा- सजा सबको बराबर मिलेगी। किसी को भी छूट नहीं होगी। सभी एक दूसरे को कहेंगे जैसे हम बुरे कर्मों की सजा भोग रहे हैं, उसी प्रकार तुम भी अपने किये की सजा भुगतो।

**एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील।
न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेर्या जाहेर कलाम अल्ला का हुक्म॥३१॥**

अज्ञान से ग्रसित मन वाले अजाजील की ही चेतना सभी प्राणियों के अन्दर पाप बुद्धि वाले जीव के रूप में है। यही कारण है कि श्री प्राणनाथ जी के मानवीय तन को देखकर जीव सृष्टि उनके स्वरूप की पहचान नहीं कर पा रही है और उन पर विश्वास करके प्रणाम नहीं कर रही है। उनकी हिन्दू वेशभूषा को देखकर ही दिल्ली में शरई मुस्लिम धर्माधिकारियों ने मक्के-मदीने से आने वाले प्रत्यक्ष वसीयतनामों को ठुकरा दिया था।

भावार्थ- शैतान, दज्जाल, इब्लीश, कलियुग आदि सभी शब्दों का आशय अज्ञान से होता है। मोह रूप अज्ञान में ही अजाजील (आदि नारायण) का प्रकटन होता है। जब अजाजील मोह सागर में स्वयं को भूला हुआ है, अपने मूल स्वरूप को नहीं जानता और न परब्रह्म को ही जानता है, तो ऐसी अवस्था में उसके प्रतिबिम्बित अंश रूप जीव स्वयं को और परब्रह्म को कैसे पहचान सकते हैं और उन्हें प्रणाम कर सकते हैं? इसी तथ्य को कुर्आन के उक्त कथानक द्वारा दर्शाया गया है। आदम के अन्दर अपनी रूह फूंकने का अर्थ ही है, कि उस मानवीय तन में परब्रह्म का स्वरूप विराजमान है, जिसे संसार के जीव जो अजाजील की चेतना के प्रतिबिम्बित रूप हैं, पहचान नहीं पा रहे हैं। इसी अपराध के कारण भावातिरेक में 'दज्जाल' शब्द का प्रयोग किया गया है अन्यथा जब अजाजील अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है, तो उसे दज्जाल या इब्लीश कैसे कहा जा सकता है? 'अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक'। सनंद ३६/६ का कथन यही सिद्ध करता है।

**माहें गया सबन को खाए, पढ़े ढूँढ़त जुदा ताए।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए॥३२॥**

सबके हृदय में विद्यमान यह अज्ञान सबको निगल रहा है अर्थात् विनाश (आध्यात्मिक पतन) की ओर ले जा रहा है। कुर्आन पढ़ने वाले लोग उसे बाहर खोजा करते हैं। शरीयत के ऊपर चलने वालों की पहचान में वह नहीं आता है। वह उन्हें कुर्आन के बाह्य अर्थों में ही भटकाता रहता है।

भावार्थ- दज्जाल को बाहर खोजने की मानसिकता ने ही पत्थर मारने की अन्ध परम्परा प्रचलित की है। हज करने वाले लोग एक निश्चित समय में पत्थर मारकर अपने कर्तव्य की इति श्री कर लेते हैं। वे सोचते ही नहीं कि दज्जाल तो उनके हृदय (दिल) में ही बैठा हुआ है। उसे मारने के लिये ज्ञान, विवेक एवं परब्रह्म के प्रेम का पत्थर चाहिए किन्तु क्या शरीयत के

मार्ग पर चलने वाले मुसलमान इस कसौटी पर स्वयं को खरा सिद्ध कर पायेंगे? यदि उनके पास कुर्आन के तत्व ज्ञान की दृष्टि है, तो मक्के जाकर लाखों निर्दोष जानवरों की कुर्बानी क्यों देते हैं? अपनी तृष्णाओं का त्याग करना ही सच्ची कुर्बानी है। निर्दोष जानवरों की हत्या का अल्लाह की इबादत से कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि कुर्आन के सि. १७ सू. २२ आ. ३७ में कहा गया है अल्लाह तक न तो पशुओं का मांस पहुंचता है और न रक्त, वहां तो केवल नेक बन्दगी ही पहुंचती है।

लंयनालल्लाह लुहूमुहा व ला दिमाअुहा वलाकिंय्यनालुहुत-तक्वा मिन्कुम कजालिक सख्खरहा लकुम लितुकब्बिरुल्लाह अला मा हुदाकुम् व बशिशरिल् - मुह्सिनीन” खुदा तक न तो पशुओं के गोस्त पहुँचते हैं और न इनके खून बल्कि उस तक तुम्हारी परहेजगारी पहुँचती है। इसी तरह खुदा ने उनको तुम्हारे ताबेह (काबू) कर दिया है ताकि इस बात के बदले की तुमको हिदायत बक्सी है। उसे बुजरगी से याद कर और ऐ पैगम्बर! नेक लोगों को खुश खबरी पहुँचा दो।

दाभ तुल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन।

बातुन माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत।।३३।।

दाब्-तुल-अर्ज (पृथ्वी का विशाल जानवर या मायावी) का सूक्ष्म अर्थ ही लेना चाहिए। क्योंकि इसमें मुख तो मनुष्य का है और शरीर गधे का है, जो मूर्खता (अज्ञानता) एवं विषय-विकारों से भरा हुआ है। कुर्आन के गुह्य अर्थों के प्रकाश में आने पर ही कियामत का आना सिद्ध हो सकता है। श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा ही इसकी वास्तकिता को जाना जा सकता है।

दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई बिध तिनकों लानत करी।

नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी।।३४।।

दज्जाल के कथानक में उसकी एक ही बाहरी आंख बतायी गयी है। उसकी अन्तर्दृष्टि नहीं होती है जिससे कि वह परब्रह्म के स्वरूप की यथार्थ पहचान कर सके। यही कारण है कि उसे कई प्रकार से धिक्कारा गया है।

भावार्थ- त्रिगुणात्मक जगत में होने के कारण संसार के जीवों में अज्ञान रूप दज्जाल का निवास है, जिसके कारण वे अपनी बाहर की दोनों आंखों से मात्र बाह्य जगत को ही देख पाते हैं। जब तक अज्ञान का आवरण नहीं हटेगा तब तक वे अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर परब्रह्म की पहचान कैसे कर पायेंगे?

**खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर।
पातसाही करे सबों के दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर॥३५॥**

संसार के जीवों के हृदय में अति शक्तिशाली अज्ञान रूपी दज्जाल बैठा है, जो नास्तिकता एवं विषय विकारों को लेकर सबके हृदय को अपने वश में किये हुए है और सबके ऊपर अपना शासन चला रहा है।

**दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर॥३६॥**

कुर्आन के सिपारे ६ सूर: ५ आयत ७८ में लिखा है कि सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूह अल्लाह) तारतम ज्ञान के द्वारा इस अज्ञान रूपी दज्जाल को मार डालेंगे क्योंकि यह सबका शत्रु बना हुआ है। यह किसी भी मानव में ज्ञान, भक्ति, विनम्रता एवं विश्वास आदि का भाव ही आने नहीं देता है और उन्हें सत्य मार्ग से भटकाता रहता है। कुर्आन का बाह्य अर्थ लेने वाले दज्जाल (अज्ञान) को बाहर ही ढूंढा करते हैं।

भावार्थ- “लुइनल्लजीन कफरु मिम्-बनी इस्राहील अला लिसानि दावद व आसीबुनि यर्मम जालिक बिमा असव्व कानू यऽतदून” जो लोग काफिर हुए उन पर दाउद और ईसाबिन मर्यम की जुबान से लानत की गई। यह इसलिए कि वे गुन्हेगार और हद से आगे बढ़ गये।

**करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस।
साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ़्यो जस॥३७॥**

कुर्आन में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह (श्यामा जी) का स्वामित्व ४० वर्षों तक होगा। उनके ज्ञान द्वारा सभी वर्गों-पन्थों के लोग एक सत्य को मानकर एकरस हो जायेंगे। ग्यारहवीं सदी के अन्तिम दस वर्षों वि. सं. १७३५ - १७४५ तक ब्रह्मसृष्टियों की गरिमा (बढ़प्पन, श्रेष्ठता) प्रकट होगी। इसके पश्चात् वि. सं. १७४५ - १७७५ तक संसार में तारतम ज्ञान का प्रसार करने से उनका यश फैलेगा। इस प्रकार श्यामा जी के स्वामित्व के चालीस वर्ष पूर्ण होते हैं।

**अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी।
दुनिया दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए॥३८॥**

श्री कुल्लुम स्वरूप के माध्यम से अखण्ड परमधाम का ज्ञान इस संसार में प्रकट हुआ। उसका चारों ओर प्रचार होने से सबने उसे अपने हृदय में आत्मसात् कर लिया। अपने

आत्म-कल्याण की भावना से संसार के लोग दौड़-दौड़कर श्री पद्मावती पुरी धाम पन्ना में विराजमान श्री प्राणनाथ जी का दर्शन करने आ रहे हैं। अब उन्होंने अपने वर्ण तथा भेष-भूषा का भी बन्धन छोड़ दिया है।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता में जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था का निर्धारण होता है, कर्म के आधार पर नहीं। यह एक सामाजिक एवं धार्मिक बुराई है, जिसके अन्तर्गत जन्मना ब्राह्मण को अनेक दोषों से युक्त होने पर भी आचारवान् शुद्र या वैश्य से श्रेष्ठ समझा जाता है। किन्तु श्री जी के चरणों में लोग अपनी जाति-वर्ण सब कुछ भूल कर आ रहे हैं। इसी प्रकार मुसलमान भी अपनी धार्मिक कट्टरता एवं वेश भूषा को छोड़कर श्री जी का दर्शन करने आ रहे हैं।

कह्यो न जाए धनी को विलास, पूरी साथ सकल की आस।

लीला विनोद करसी हाँस, ए सुख उमत लेसी खास॥३९॥

अक्षरातीत श्री राज जी, श्री पद्मावती पुरी धाम में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला कर रहे हैं। वे चर्चा के समय परमधाम के श्रृंगार में प्रत्यक्ष दर्शन दे रहे हैं। उनकी इस आनन्दमयी लीला के सुख का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता है। उन्होंने समस्त सुन्दरसाथ की आत्मिक इच्छाओं को पूर्ण किया है। बुद्ध गीता आदि ग्रन्थों में कहा गया है, कि परब्रह्म इस संसार में प्रकट होकर हास्य विनोद से युक्त ब्रह्मानन्द लीला की झलक दिखायेंगे, जिसका आनन्द ब्रह्मात्माओं को मिलेगा।

भावार्थ- हास्य-विनोद की लीला का तात्पर्य लौकिक हास्य-विनोद नहीं है अपितु वह लीला जिसमें ज्ञान के साथ-साथ प्रेम और माधुर्यता का ऐसा व्यवहार हो, कि द्वैत (स्वामी-सेवक, भक्त-भगवान्) का आभास न हो, अपितु सभी परमधाम के स्वलीला अद्वैत भाव में डूब जाय। श्री पद्मावती पुरी धाम में वि. सं. १७४० - १७५१ तक की होने वाली लीला में इसका प्रत्यक्ष रूप दिखायी पड़ता है। सभी सुन्दरसाथ ने इसी भाव से श्री जी को रिझाया भी।

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास।

इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास॥४०॥

सेवा तथा विनम्रता की प्रति मूर्ति कहे जाने वाले ब्रह्ममुनि सुन्दरसाथ तारतम ज्ञान के प्रकाश को चारों ओर इस प्रकार फैला रहे हैं जैसे पवन किसी सुगन्धि को चारों ओर फैला देता

है। जिस प्रकार किसी खेत में आग लग जाने पर वह अन्न की फसल सहित सम्पूर्ण घासों को भी जला देती हैं, उसी प्रकार तारतम ज्ञान के विवेक से ब्रह्ममुनियों के हृदय में विद्यमान काम-क्रोध आदि विकार रूपी घासों तथा लोकेशणा (लौकिक प्रतिष्ठा) रूपी अन्न की फसल को पूर्णतया भस्मीभूत कर दिया है। अब उनके हृदय में प्रेम की ऐसी अमृत धारा बह रही है, कि अपने प्राणेश्वर बिना वे इस संसार में एक भी श्वास लेने में सक्षम नहीं हैं।

भावार्थ- दास (सेवक) में विनम्रता तथा सेवा का गुण होना अनिवार्य है। ब्रह्ममुनियों को दासानुदास कहने का आशय यह है कि उन्होंने विनम्रता और सेवा के शिखर पर पहुँचकर अपना आसन जमा लिया है।

**जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस।
पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल-सरात ॥४१॥**

सभी ब्रह्ममुनि अपने प्राणेश्वर के प्रेम बन्धन में इस प्रकार फंस गये हैं कि विरह की अग्नि ने उनके शरीर का रक्त भी सुखा दिया है तथा मांस भी गला दिया है। बारहवीं सदी में उन्होंने तीस वर्षों तक चारों ओर वर्षा की भाँति तारतम ज्ञान का प्रचार किया है। इसके पश्चात् जीव सृष्टि के कर्म काण्ड के ७० वर्ष आने वाले हैं।

**सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥४२॥**

बारहवीं सदी के तीस वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् श्री जी के अन्तर्धान होने के कारण ब्रह्मसृष्टियाँ विरह की अग्नि में जलती रहीं। इसी अन्तराल में ईश्वरीय सृष्टि भी जागृत होकर धाम चलने की तैयारी में संलग्न हुई। जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के प्रकाश में जीव सृष्टि ने विरह की अग्नि में जलकर स्वयं को निर्मल किया।

**आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध ॥४३॥**

इसके पश्चात् तेरहवीं सदी में अस्म्राफील ने जीव सृष्टि को जागृत बुद्धि के ज्ञान से निर्मल करके अक्षर ब्रह्म की दृष्टि में योगमाया की बहिस्तों में अखण्ड होने का सौभाग्य प्रदान किया।

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए ॥४४॥

महाराजा श्री छत्रशाल जी कहते हैं, कि धाम धनी श्री प्राणनाथ जी के आदेश से संसार के सभी जीव अपनी-अपनी करनी के अनुसार बहिस्तों का अखण्ड सुख प्राप्त करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १९१ ॥

**हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां॥१॥**

परमधाम की सुहागिनी आत्माओं! इस खेल में तुम्हारी जो शोभा हुई है, उसका वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता। श्री प्राणनाथ जी की सानिध्यता में जो ब्रह्मात्माएं जागृत होकर आयी हैं, उन्हें प्रियतम अक्षरातीत ने विशेष शोभा दी है।

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई के पहले और तीसरे चरण में जो सुहागनियां और माननियां शब्द हैं, वे बहुवचन में हैं। इसलिये इसमें सभी आत्माओं को सम्बोधित करके कहा गया है। यदि पहले चरण में केवल महाराजा श्री छत्रशाल जी के लिए सम्बोधन होता तो सुहागिनियों के स्थान पर मात्र सुहागिनी शब्द होता।

**कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनो का पैगंमर।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कहा अल्ला कलाम॥२॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि श्री श्यामा जी के चरण कमल मेरे सिर पर हैं अर्थात् मेरे ऊपर उनकी अपार कृपा है। वे मेरे पथप्रदर्शक (हादी) हैं, उनका तारतम ज्ञान सभी धर्मों (मत-पन्थों) को सत्य की पहचान देने वाला है। मैं वही कुछ कहूंगा, जो कुरान में कहा है।

**रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दर्ई ताम।
मैं सिर पर एलिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम॥३॥**

बशरी, मलायकी तथा हकीकी सूरत का एकाकार स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का है, जिन्होंने कुलजुम स्वरूप के रूप में परमधाम का अलौकिक ज्ञान दिया है, जो मेरी आत्मा का आहार है। मैंने तारतम ज्ञान के वचनों को अपने सिर पर धारण किया है। इन तीनों सूरतों ने श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परमधाम की सम्पूर्ण निधियों की कुंजी मुझे प्रदान की है।

**ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द॥४॥**

मेरे कथनों की साक्षी कुर्आन के सिपारों, सुरतों तथा उतरने वाली आयतों में लिखी हुयी है। इसके अतिरिक्त मैं मुहम्मद स. की कही हुयी हदीसों की साक्षी देता हूं। इन दोनों के अतिरिक्त और किसी के कहे हुये की मैं साक्षी नहीं दूंगा।

**बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ॥५॥**

शरीअत के मानने वाले मुसलमान बावन नियमों का पालन करते हैं। इनके पालन करने का विधान कियामत के आने के पहले तक था। इन नियमों के द्वारा लोगों ने अपने हृदय को पवित्र एवं सच्चा करने का प्रयास किया।

**ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत ॥६॥**

कुर्आन के वास्तविक सत्य का बोध होने पर ही शरीयत की बंदगी का फल प्राप्त होता है। जब श्री प्राणनाथ जी ने परमधाम का ज्ञान प्रकट कर दिया, तो कियामत के आने का यही समय निश्चित होता है।

**और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी ॥७॥**

कुर्आन के पांचवे सिपारे में जो लिखा है, उसे आप अच्छी तरह से देखें। उसमें लिखा है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म की हिन्दुओं पर अपार कृपा हुई है। वे स्वयं ही श्री मिहिरराज नामक हिन्दू तन में अपने आवेश स्वरूप से विराजमान होकर लीला कर रहे हैं।

**सब पैगंमर आए इत, कहा सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदों के घर ॥८॥**

श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में सभी पैगम्बर आ गए हैं, इसलिये भारतवर्ष अब नबियों का देश हो गया है। यह तो सर्वमान्य है कि आज दिन तक जितने भी पैगम्बर हुए हैं सभी यहूदियों (हिन्दुओं) में हुये हैं।

**ज्यों अव्वल त्योहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर ॥९॥**

जिस प्रकार पहले सभी पैगम्बर यहूदियों में आए हैं, उसी प्रकार इस आखिरत के समय में इमाम महंदी का प्रकटन हिन्दू तन में हुआ है, जिनमें सभी पैगम्बरों की शोभा समाहित हो जाती है। सम्पूर्ण कुर्आन में यही बात दर्शायी गयी है, जिसे आप अच्छी तरह से देखिए।

भावार्थ- मुहम्मद स. से पहले तक के सभी पैगम्बर यहूदियों में आये हैं। हिन्दू धर्म का विकृत रूप पारसी धर्म हुआ, जिससे यहूदी मत निकलता। उसी यहूदी मत से ईस्लाम और ईसाई मत निकले हैं। इस्लाम की स्थापना से पूर्व स्वयं मुहम्मद स. भी इब्राहीम पैगम्बर के वंशजों अबःबेल लफवी ल यहूदी कबीला में थे इसलिए उन्हें भी यहूदी ही कहा जाएगा।

लोक ढूँढे माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान।

अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही॥१०॥

संसार के लोग अभी भी ईमाम महंदी को मुसलमानों में खोज रहे हैं, जो कुर्आन में लिखा हुआ है, वह उनको समझ में नहीं आ रहा है। कुर्आन के पहले सिपारे में इस बात की पहचान दी गयी है, जिसे अब मैं अच्छी तरह कहने जा रहा हूँ।

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम।

जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरान से किए दूर॥११॥

कुर्आन में अलिफ-लाम-मीम ये जो तीन अक्षर हैं, ये तीनों अक्षर एक ही सच्चिदानन्द परब्रह्म के परिचायक हैं। जिन्होंने इस रहस्य को नहीं समझा, उन्होंने कुर्आन ही नहीं समझा और उससे इन्हें निकालकार अलग कर दिया।

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यों बंध विवेक।

कलाम अल्लाएं ऐसी कही, आलम आरिफ की हुज्जत नारही॥१२॥

इन तीनों अक्षरों का रहस्य एकमात्र परब्रह्म ही जानते हैं। इन तीनों अक्षरों में ऐसी रहस्यमय गुथी है जिसे परब्रह्म के अतिरिक्त कोई भी नहीं जानता, ऐसा कुर्आन में कहा गया है। ऐसी स्थिति में कुर्आन के ज्ञानी-विद्वान (अलिम-आरिफ) यह दावा कर ही नहीं सकते कि वे अलिफ-लाम-मीम का अर्थ जानते हैं।

भावार्थ- श्री कुलजुम स्वरूप में इन तीनों अक्षरों का रहस्य इस प्रकार स्पष्ट किया गया है

अलिफ कह्या मुहम्मद को, रूह अल्ला ईसा लाम ।

मीम मेंहदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ॥ खुलासा 15/22

अलिफ, बसरी सूरत को कहा गया है जिसमें सत् अंग अक्षर ब्रह्म का स्वरूप था। मल्की सूरत में परब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी का स्वरूप है। मीम, महंदी के लिए प्रयोग हुआ है, जिसमें स्वयं अक्षरातीत (चिद्घन स्वरूप) अपने आवेश स्वरूप से लीला कर रहे हैं।

इस प्रकार अलिफ-लाम-मीम का तात्पर्य सच्चिदानन्द परब्रह्म (ईमाम महंदी/श्री प्राणनाथ जी) होता है।

**और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारे में एह बयान।
इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार ॥१३॥**

कुर्आन के दूसरे सिपारे में ऐसा लिखा गया है कि जिस स्वरूप के द्वारा इन तीनों हरूफों का रहस्य खोला गया है, उनके स्वरूप के सम्बन्ध में अपने हृदय में विचार कीजिये।

**ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब।
सो माएने रुजू उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए ॥१४॥**

इन भेदों को खोलने की शोभा नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी की है। उन्होंने कुरान, हदीस, वेद, शास्त्र सबके गुह्य भेदों को खोला है। उन भेदों को प्रकट करने वाला ही ब्रह्मसृष्टि कहलाने का अधिकारी है।

**महंमद की इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमत को नहीं कोई सक ॥१५॥**

परमधाम के इन ब्रह्ममुनियों को श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की वास्तविक पहचान है। ये कुर्आन के रहस्यों को अच्छी तरह से समझते हैं। जिस तरह से परमधाम में ये श्री राज जी को पहचानते हैं, उसी तरह से इस नश्वर जगत में उन्हीं के स्वरूप में श्री प्राणनाथ जी को पहचानते हैं। इस धारणा में उन्हें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।

**जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत।
माहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस ॥१६॥**

मूल स्वरूप श्री राज जी ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में कलश ग्रन्थ का अवतरण किया है। जिसमें यह स्पष्ट लिखा है कि श्री प्राणनाथ जी ही सारे संसार को अखण्ड मुक्ति का सुख देंगे। कुर्आन के उन्तीसवें सिपारे में लिखा है कि परब्रह्म जिसे शोभा देते हैं, उससे कोई प्रतिद्वंद्विता (द्वेष) कैसे कर सकता है?

भावार्थ-कलश में ब्रह्माण्ड के अखण्ड होने के सम्बन्ध में कहा गया है कि-

हम जाहेर के चलसी, सब भेले निज घर ।

वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर ॥

वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड ।
हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड ॥
मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार ।
बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार ॥

कलश हिन्दुस्तानी 23/78, 84, 104

**आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर ।
जो गिरो बनी असराईल की भई, सो औलाद याकूब की कही ॥१७॥**

संसार में श्री श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) का अवतरण हुआ, जिनके इब्राहीम पैगम्बर की तरह दो पुत्र हुए, इस्माईल (बिहारी जी) और इस्हाक (श्री मिहिरराज जी)। ये हिन्दू तनों में आये। कुर्आन में असराईल को इस्हाक के नाम से लिखा है। इस्हाक के पुत्र याकूब की शोभा श्री मिहिरराज जी को मिली। इसलिए बनी असराईल अर्थात् सुन्दरसाथ को कुर्आन में याकूब के पुत्र कहा जाता है।

भावार्थ—कुरान पार: १५ सू. १७ बनी इस्राईल आयत १०४ “व् कुल्ना मिम्बऽदिही लिबनी इस्राईलस्कुनल् - अर्ज फइजा जाअ वऽदुल् - आखिरति जिअ्ना बिकुम लफीफन्” अर्थात् और उसके बाद बनी इस्राईल से कहा देश में शान्ति से रहो। जब आखिरत का समय आयेगा तो हम, तुम सबको जमा करके ले जायेंगे।

**हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहमद ।
संग रोसन तौरैत कुरान, सो रान्या जाए न हुई पेहेचान ॥१८॥**

श्यामा जी (रूह अल्लाह) के दूसरे तन में जब मुहम्मद स. आकर मिले, तो श्यामा जी का नाम अहमद हुआ। इनका दूसरा तन श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रसिद्ध हुआ, जिनके द्वारा कलश तथा सनद ग्रन्थ का अवतरण हुआ। जिसने इस स्वरूप (श्री प्राणनाथ जी) को नहीं पहचाना, उसका पतन हो गया।

**भाए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत ।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥१९॥**

हिन्दुओं का यह बहुत बड़ा सौभाग्य है, कि कियामत के समय में स्वयं परब्रह्म ने एक हिन्दू तन (मिहिरराज) में अवतरित होकर उन्हें शोभा दी है। हिन्दुओं में परब्रह्म इमाम महंदा

श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट हुए हैं, जो इनके ऊपर संशय लाता है, वह काफिर (नास्तिक) है।

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।

ए सुन वाका जो न ल्यावें ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान ॥२०॥

उल्लू को सूर्य का उगना अच्छा नहीं लगता क्योंकि अंधेरे में देखने वाले उल्लू को प्रकाश अपना शत्रु लगता है, उसी प्रकार अज्ञानता के अन्धकार में भटकने वाले जीवों को श्री जी के रूप में परब्रह्म का प्रत्यक्ष दर्शन और उनके तारतम ज्ञान का प्रकाश अच्छा नहीं लगता। श्री कुलजुम स्वरूप के इस कथन को सुनकर भी जो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप पर विश्वास नहीं लाते हैं, उन्हें चमगादड़ तथा उल्लू के समान ही माया के अन्धकार में भटकने वाले कोरा जीव समझना चाहिए।

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान।

जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे ॥२१॥

शरीयत पर चलने वाले ये मुसलमान स्वयं को मुहम्मद स. के प्रति अटूट ईमान रखने वाला कहते हैं। यदि ये अद्वैतवाद के सिद्धान्त को मानते हैं और स्वयं को ब्रह्मसृष्टियों के समान कहते हैं।

जो होए इस्क आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत।

सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम ॥२२॥

तथा इनके हृदय में परब्रह्म के लिए प्रेम और अटूट विश्वास भी हो जाए, तो भी ये ब्रह्मसृष्टियों की समानता नहीं कर सकते क्योंकि अपने प्राणेश्वर को जिस तरह ब्रह्मसृष्टियों ने पहचान कर उनके प्रेम में अपना त्याग किया है, उस तरह से इन्होंने न तो ईमाम महदी को पहचान कर त्याग किया है और न बसरी सूरत मुहम्मद स. को। इस प्रकार कुर्आन में लिखा हुआ है।

भावार्थ - पार: ३ सूर: ३ आयत ६१ “फ मन् हाज्जक फीहि मिम्बऽदि मा जाअक मिनल्इल्मि फ कुल् तआलौ नद्अु अब्नाअना व अब्नाअकुम् व निसाअना व निसाअकुम् व अन्फुसना व अन्फुसकुम् सुम्म नब्तहिल् फ नज्अल् अऽनतल्लाहि अलल्काजिबीन” यह प्रसंग पैगम्बर इस्लाम हजरत मुहम्मद मुस्तफा रसूल अल्लाह सल्ल. के नसारों (इसाई) व यहूदियों के रब्बी (धर्म गुरुओं) के मध्य शास्त्रार्थ के उपरान्त का है। जिसमें यह निश्चित किया गया कि

यदि तुम सच्चे हो तो अपने बेटों और स्त्रियों को ले आओ और हम अपने अहले बैत (पारिवारिक जन)। तब आप रसूले अकरम स. अपने घर से अपनी बेटी फातिमा, बीबी, दामाद अली मुर्तजा, नाती हसन व हुसैन के साथ शास्त्रार्थ स्थल पर पहुंचे। लेकिन दूसरी ओर के विद्वान झूठे होने की वजह से अपने पारिवारिक जनों को लेकर नहीं आएँ। इसी प्रकार मुस्लिमों के एक समुदाय ने मुहम्मद स. के स्वरूप को न ही पहचाना और ना ही उनके पारिवारिक जनों को पहचाना।

सिपारे तीसरेमें कही, पांच वज्हे की पैदास भई।

दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन ॥२३॥

कुर्आन के तीसरे सिपारे में पांच तरह की पैदाइश का वर्णन किया गया है। यह सारी सृष्टि परब्रह्म के “कुंन” कहने से उत्पन्न हो गयी। एक सृष्टि एक हाथ की है तथा एक सृष्टि दो हाथों की कही गयी है।

भावार्थ- इस में तीन तरह की पैदाइश है। दो तरह की अलग जगह पर है। एक कुंन की दूसरी नूर आला नूर। इसी के बारे में तफसीरे हुसैनी में दर्ज है कि पांच तरह की पैदाइश है।

पार: ३ सू. ३ आयत ५६ “इन्न मसल औसा इन्दल्लाहि क मसलि आदम खलकह मिन् तुराबिन् सुम्म काल लह कुन् फ यकूनु” अर्थात् निश्चित रूप से खुदा के सामने ईसा की मिसाल आदम की, जैसे खुदा ने मिट्टी से आदम के शरीर को बनाया और उसको आदेश दिया कि ‘हो जा’ तब वह मनुष्य हो गया।

पा. ३ सूर: बक्र २ आ. २५६-२६७ “औ कल्लजी मर अला कर्यतिव्व हिय खवियतुन् अला अुरुशिहा काल अन्ना युह्यी हाजिहिल्लाहु बऽद मौतिहा फ अमातहुल्लाहु मिअत आमिन् सुम्म बअसह काल कम् लबिस्त काल लबिस्तु यौमन् औ बऽज यौमिन् काल बल्लबिस्त मिअत आमिन् फन्जुर इला तआमिक व शराबिक लम् यतसन्नह वन्जुर इला हिमारिक व लि नज्अलक आयतल्लिन्नासि वन्जुर इला हिमारिक व लि नज्अलक आयतल्लिन्नासि वन्जुर इलल्लइजामि कैफ नुन्शिजुहा सुम्म नक्सूहा लहमन् फ लम्मा तबय्यन लह काल अऽलमु अन्नल्लाह अला कुल्लि शैइन कदीरुन्(२५६) व इज् काल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कैफ तुहयिल्मौता काल अव लम् तुअमिन् काल बला व लाकिल्लियत्मइन्न कल्बी काल फखुज् अर्बअतम् - मिनत्तैरि फ सुरूहन्न इलैक सुम्मज्अल् अला कुल्लि जबलिम् - मिनहुन्न जुज्अन् सुम्मदुहुन्न यअ्तीनक सऽयन् वऽलम् अन्नल्लाह अजीजुन् हकीमुन्”(२६०) पूर्वोक्त आयत का वर्णन सुनकर पैगम्बर इब्राहिम अ. ने खुदा से कहा कि हे मेरे परवरदिगार!

आप मुझे यह दिखायें कि मूर्दों को कैसे जिन्दा करते हैं? तब अल्लाह ने कहा क्या तुमको इस बात में विश्वास नहीं है? उन्होंने कहा कि है तो लेकिन मैं अपनी आंखों से एक बार देख करके अपने दिल की तसल्ली करना चाहता हूँ। अल्लाह ने कहा ठीक है। तुम चार पक्षी लेकर आओ और उनको अपने पास हिला-मिला लो। फिर एक-एक पहाड़ी पर एक-एक का भाग रख दो। फिर उनको अपनी तरफ बुलाओ तो वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। इसको देख करके जान लेना कि खुदा सर्व सामर्थ्यवान और सर्वविद् है।

इस प्रकार खुदा की कुदरत से वह पंछी पुनः उड़ने लगे। तब परवरदिगार ने कहा ऐ पैगम्बर इब्राहीम खलील् अल्लाह! देख मेरी कुदरत। इसी की व्याख्या में कहा गया है कि यह एक हाथ से पैदाईस है, जिससे तात्पर्य उम्मत ऐ मुहम्मदी है। दूसरी दो हाथ से जिससे तात्पर्य उम्मत मंहदी व ईसा है। एक कुन्न से है जो जीव सृष्टि है और इसके अतिरिक्त एक फरिश्तों की जमात हैं।

एक सरूप कहा एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम॥२४॥

मुहम्मद स. को एक हाथ वाला स्वरूप तथा उनके अनुयायियों को एक हाथ की सृष्टि कहा गया है। इसी प्रकार सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी को दो हाथ वाला स्वरूप कहा गया है तथा उनके दर्शये हुये मार्ग पर चलने वालों को दो हाथ की सृष्टि कहा गया है। मुहम्मद स., श्री श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) और इमाम मंहदी (श्री प्राणनाथ जी) ये तीन नाम अलग-अलग अवश्य हैं, किन्तु ये परब्रह्म के एक ही स्वरूप हैं।

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही।

दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर॥२५॥

इस खेल में एक समूह ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) का है, जो मूल परमधाम की रहने वाली हैं। दूसरी सृष्टि ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्तों) की है, जो ब्रह्मसृष्टि की पड़ोसी है। इनका मूलघर अक्षरधाम (सत्स्वरूप) है।

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध।

नूह नबी के बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन॥२६॥

कुर्आन के तीसवें सिपारे में यह वास्तविकता लिखी है किन्तु उसे तब तक नहीं जाना जा सकता, जब तक हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश न हो जाय। नूह नबी के तीन बेटे साम, सलाम और अमीन कहे गये हैं।

**मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए।
एतीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥२७॥**

श्री कृष्ण जी (साम) ने ब्रह्ममुनियों को योगमाया रूपी किस्ती पर महाप्रलय में सुरक्षित रखा तथा जीवों को प्रलय में लय कर दिया। नूह नबी के तीनों पुत्रों साम, हाम और याफिस संसार में अलग-अलग स्थान पर आए और मिलकर मानवीय सृष्टि की रचना की।

भावार्थ- 'सलाम' को ही 'हाम' कहा गया है तथा 'अमीन' को ही "याफिस" कहते हैं।

**चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥२८॥**

अरब और ईरान में चन्द्रमा के समान प्रकाश करने वाले साम (श्री कृष्ण जी) की बहुत अधिक महिमा है। भला मुहम्मद स. (श्री कृष्ण जी) के अतिरिक्त और दूसरा चन्द्रमा कौन हो सकता है जो कुर्आन के ज्ञान के द्वारा अरब में प्रकाश करे?

**पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए।
हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, एजो पूज्या हिन्दुओं साहेब जान ॥२९॥**

पहले श्री कृष्ण जी ने ब्रह्मसृष्टियों को योगमाया में ले जाकर रास की लीला की। इसके पश्चात् कुर्आन का अवतरण करके रसूल कहलाये। हिसाम (हाम) को हिन्दुस्तान का चन्द्रमा कहा गया है जिसे (श्री विष्णु को) हिन्दुओं ने परमात्मा मानकर पूजा की।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता के अनुसार नारायण के चार व्यूह माने जाते हैं १. वासुदेव २. संकर्षण ३. प्रद्युम्न ४. अनिरुद्ध। संकर्षण के अवतार हाम (बलराम) जी माने जाते हैं। इसी प्रकार वेद व्यास जी को भी नारायण (विष्णु) के अवतारों में माना जाता है, जिन्होंने गीता, भागवत आदि का ज्ञान हिन्दुस्तान में फैलाया। यद्यपि बलराम जी तथा वेद व्यास जी के पिता अलग-अलग हैं, किन्तु नारायण का अंश होने के कारण कथानक की संगति बैठायी गयी है।

**याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥३०॥**

नूह का तीसरा पुत्र याफिस (कल्याण जी) तुर्किस्तान आया, किन्तु उसे कोई भी पहचान नहीं सका। याजूज, माजूज को इन्हीं याफिस का पुत्र कहा गया है। कुर्आन में इनकी तीन फौज तूलुअ (उदय या प्रातःकाल), ताब (प्रचण्ड या दोपहर), और शब (रात्रि) अर्थात्

प्रातः, दोपहर एवं सायंकाल मानी गयी है। ऐसा कहा गया है कि ये फौजें सारे संसार को खा जायेंगी।

भावार्थ- उपरोक्त कथन आलंकारिक है। याजूज दिन को कहते हैं तथा माजूज रात को कहते हैं। याफिस पैगम्बर की सन्तान इतनी क्रूर कैसे हो सकती है कि वह सारी दुनिया को मारकर खा जाये?

इसका सूक्ष्म अर्थ यह है कि याजूज शरीयत का मार्ग है और माजूज तरीकत का। प्रातः, दोपहर तथा सायंकाल शरीर, इन्द्रियों तथा वाणी (वचन) से होने वाले कर्मकाण्ड की भक्ति के प्रतीक हैं। शरीयत तथा तरीकत की बन्दगी 'इन्सा अल्ला ताला' (परब्रह्म चाहे तो) नहीं कहलवा पाती अर्थात् यह सर्वस्व समर्पण का मार्ग नहीं बता पाती, जिससे जुल्करनैन (साईरस) या सिकंदर द्वारा खड़ी की गयी भावात्मक 'अष्ट धातु की शरीर रूपी दिवाल' टूट सके या शरीर के मोह से परे होकर आत्मा अपने प्राणेश्वर को पा सके। कियामत के समय तारतम ज्ञान के द्वारा हकीकत-मारिफत का ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे चितवनी में डूबने पर समर्पण-प्रेम का भाव प्रबल होता है तथा शरीर से आत्मदृष्टि हट जाती है अर्थात् अश्टधातु की दिवाल टूट जाती है। उसके लिये संसार रहते हुए भी नहीं रहता है। इसे ही संसार को खा जाना कहते हैं। इस सम्बन्ध में किरंतन ६/४ का यह कथन देखने योग्य है-

लगी वाली और कछु ना देखे, पिण्ड ब्रह्माण्ड वाको है री नाहीं ।

ओ खेलत प्रेमें पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं ॥

पारः १६ सूरत १८ आयत ८३ “व यस्अलूनक अन् जिल्कूर्नैन कुल् सअतूल् अलैकुम् मिन्हु जिक्ूरन्” अर्थात् और लोग उनसे जुल्करनैन का हाल पूछते हैं। तुम कहो तब तुम कहना। मैं इसके विषय में थोड़ा वर्णन करके सुनाता हूँ।

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखे खोल ।

नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम ॥३१॥

कुर्आन के तीसरे सिपारे में बातें लिखी हैं, जिन्हें कुर्आन के विद्वान अपने हृदय की आंखों को खोलकर देख नहीं पाते हैं। नूह (वसुदेव जी) के पुत्र साम (श्री कृष्ण जी) की बड़ी महिमा है, जिन्हें हिन्दू लोग श्री कृष्ण जी के नाम से तथा मुसलमान मुहम्मद स. के नाम से पूजा करते हैं।

**स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबको न पाइए सोए।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई॥३२॥**

श्री कृष्ण जी (मुहम्मद साहब) इस संसार दो वस्तुएं लाये हैं, जो इस ब्रह्माण्ड में कहीं भी नहीं है। एक तो उन्होंने यह बताया कि परब्रह्म मात्र एक है तथा वह कियामत के समय इमाम महंदा अ. त. फ अ. श. के स्वरूप में प्रकट होगा। दूसरे उन्होंने परब्रह्म के आदेश से कुरआन के द्वारा शरीयत का मार्ग चलाया।

**पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन।
ए दोनो बात खुदाए से होए, इनको पूजेगे सब कोए॥३३॥**

मुहम्मद स. के दोस्तों ने उनसे दो बातें पूछी कि कियामत कब होगी तथा बहिश्तें कब मिलेंगी? मुहम्मद स. ने उत्तर दिया कि जब परब्रह्म स्वयं इमाम महंदा अ. त. फ. श. बनकर आयेंगे तभी कियामत प्रकट होगी और संसार को बहिश्तें मिलेगी। ऐसा होने पर सारा संसार उनकी पूजा करेगा।

**तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली॥३४॥**

‘तोफतल कलाम’ नामक पुस्तक के ८ वें प्रकरण में ऐसा लिखा है कि कियामत के समय जब इमाम महंदा प्रकट होंगे, तो सभी पैगम्बरों के अनुयायी उनसे मिलेंगे तथा अखण्ड शान्ति का मार्ग पूछेंगे, क्योंकि उनके हृदय में अपने अपराधों के कारण प्रायश्चित के दुःख की अग्नि जल रही होगी।

**जलती सब पैगंमरों पे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें ना भई।
हाथ झटक के कहा यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर॥३५॥**

दुःखों की अग्नि में जलती हुई दुनियां जब अपने पैगम्बरों के पास जाकर अखण्ड शान्ति की मांग करेगी कि आप हमें मलकूत ला-मकान (बैकुण्ठ, निराकार) से परे अखण्ड धाम का मार्ग बताइये, तो वे आध्यात्मिक शान्ति के लिये कोई भी औषधि नहीं दे पायेंगे। अर्थात् पैगम्बरों के पास इसका उत्तर नहीं होगा। अन्त में वे हाथ झटक कर कहेंगे, कि हम सभी पैगम्बर इस बात से लज्जित हैं कि हमारे पास निराकार से परे अखण्ड धाम का ज्ञान नहीं है।

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।

सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई ॥३६॥

वे पैगम्बर समस्त संसार के लोगों को यही उत्तर देंगे कि एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ही श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से आपको अखण्ड धाम का ज्ञान देंगे और आपको दुःखों से छुड़ाकर शाश्वत शान्ति देने का महानतम कार्य करेंगे। दुःखों की अग्नि में जलती हुई दुनियां श्री प्राणनाथ जी की शरण में आयी है। 'श्री जी साहब जी' ने अपने तारतम ज्ञान से उन्हें परमधाम का मार्ग बताकर दुःखों की दावाग्नि से छुड़ाया है।

सबोंको सुख महंमदें दिए, भिस्त में नूर नजर तले लिए।

कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ॥३७॥

इस प्रकार इमाम महंमदी अज्जल्लाह तआत फर्जहु अलशरीफ श्री प्राणनाथ जी ने बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों में संसार के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति का सुख दिया। महाराजा छत्रशाल जी सबके प्रति अपनेपन की भावना से कहते हैं कि हे संसार के लोगों! प्रियतम परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में साक्षात् विराजमान हैं। उनके चरणों में आकर अखण्ड सुख लेने का अवसर मत खोओ।

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप ॥३८॥

श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से अज्ञान की रात्रि नष्ट हो गयी हैं तथा प्रातः काल का उजाला फैल गया है। अब किसी भी प्रकार का कोई धार्मिक वाद-विवाद नहीं रह गया है। इस समय प्राणेश्वर अक्षरातीत की शरण में न आने की जो भूल करेगा, उसे अन्त में (न्याय के दिन) बहुत अधिक पश्चाताप करना पड़ेगा।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २९ ॥

इस प्रकरण में चितवनी के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत ।

मोमिनो का लिख्या मजकूर, सो ए कहू सब देखो जहूर ॥१॥

कुर्आन के अन्तिम ३०वें सिपारे की १७ वीं सूरत में कुर्आन की वास्तविकता के साथ परमधाम के ब्रह्ममुनियों के विषय में लिखा गया है, जिसका मैं वर्णन करने जा रहा हूँ। आप उसके विषय में विचार कीजिए।

**पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगी में सोई॥२॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्ममुनियों ने माया के बन्धनों से मुक्ति पाकर प्रियतम के दीदार की अपनी आत्मिक इच्छा को पूर्ण किया। इसी प्रकार जो कोई ब्रह्मात्माओं के पदचिह्नों पर चलता है, उसे ही सच्ची बन्दगी (प्रेममयी भक्ति) करने वाला कहा जाता है।

**रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर॥३॥**

कुर्आन में कहा गया है कि परब्रह्म की भक्ति करने वाले को चाहिए कि वह बुरे कार्यों को करने से डरे, जिससे उसे परब्रह्म के सम्मुख लज्जित न होना पड़े। अपने मन को परब्रह्म को प्रणाम करने अर्थात् ध्यान में एकाग्र करना चाहिए। इस प्रकार की बन्दगी परब्रह्म को स्वीकार होती है और उसकी आत्मिक दृष्टि परमधाम में परब्रह्म के सम्मुख पहुँचती है।

**पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत।
ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई॥४॥**

मुहम्मद सः एकान्त में बन्दगी करते (नमाज पढ़ते) समय आकाश की ओर देखकर परब्रह्म से दुआ मांगा करते थे (प्रार्थना किया करते थे)। उस समय परब्रह्म की ओर से आयत आयी कि हे मुहम्मद! तुम ऊपर क्यों देखते हो? अपने हृदय में देखों तथा अपनी आत्मिक दृष्टि से प्रणाम (सिज्दा) करो। ऐसी आयत आने पर मुहम्मद साहब ने आकाश की ओर देखना बन्द कर दिया तथा अपनी आत्मिक दृष्टि (आत्म स्वरूप) से बन्दगी करना प्रारम्भ कर दिया।

**किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब॥५॥**

इसके पश्चात् मुहम्मद स. ने अनन्त शोभा वाले अपने मूल घर परमधाम में ध्यान किया तथा अपने आत्म स्वरूप से परब्रह्म के चरणों में प्रणाम किया। लवाब ग्रन्थ में लिखा है कि इस प्रकार की बन्दगी करने से सर्वदा ही अखण्ड आनन्द प्राप्त होता है।

जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर।

ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए॥६॥

अनादि परमधाम में अक्षरातीत का निवास है। अतः अपनी आत्मिक दृष्टि को परब्रह्म के चरणों में बनाये रखना चाहिए। जब अपने हृदय में परमधाम की शोभा को देखने की इच्छा होती है तभी इस प्रकार ध्यान द्वारा आत्मिक दृष्टि से परब्रह्म को प्रणाम किया जाता है।

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली।

निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाँ बाँ नजर॥७॥

जब ध्यान द्वारा परब्रह्म को प्रणाम करने से परमधाम का आनन्द मिलता है तब शरीरगत (नियम) के सज्दे भूल जाते हैं अर्थात् कर्मकाण्ड (नियम पालन) की भक्ति बन्द हो जाती हैं। बन्दगी (नमाज) के समय अपने हृदय में आत्मिक स्वरूप से परमधाम का ध्यान करने से लोगों ने शरीरगत की नमाज के समय अपने दायें-बायें शैतान को देखना बन्द कर दिया अर्थात् तारतम्य ज्ञान के प्रकाश में लोगों ने शरीरगत की नमाज बन्द कर परमधाम की चितवनी (ध्यान) करना प्रारम्भ कर दिया।

हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम।

हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल॥८॥

श्री राज जी की कृपा दृष्टि से श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा रंगमहल-मूल मिलावे का ज्ञान प्राप्त हो गया। वहाँ की चितवनी करने से आत्मिक दृष्टि श्री राज जी के चरणों में पहुँची और उनका दर्शन करके आनन्दित हुई।

सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज।

छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम॥९॥

जब ब्रह्ममुनियों ने चितवनी के द्वारा मिलावे में श्री राज जी के चरणों में प्रणाम किया, तो उनके ऊपर से उस हुक्म (आदेश) का बन्धन छूट गया, जो इस संसार में आते समय प्राणेश्वर अक्षरातीत ने दिया था। ऋण पूरा करने की भाँति कर्मकाण्ड की भक्ति करने का बोझ भी उनके शिर से हट गया और ब्रह्ममुनि परमधाम के प्रेम में डूबकर सांसारिक इच्छाओं से रहित हो गये।

भावार्थ- परमधाम से खेल में आते समय श्री राज जी ने कहा था कि तुम मुझे माया में जाकर भूल नहीं जाना। खेल में आकर ब्रह्मात्माएं उस आदेश का बोझ तब तक ढो रही थी, जब तक चितवनी के द्वारा उनका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो गया। इसके पश्चात् ही उनका यह दावा हो सकता है, कि माया में भी हमने आपको भुलाया नहीं। इसे ही हुक्म के बन्धन से छूटना (मुक्त) होना कहा गया है।

**सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।
पेहेले था बेहेरुल्लहैवान, तब तो तिनमें था फुरमान॥१०॥**

इसलिये अब मैं सत्य और असत्य को अलग करके परब्रह्म की सच्ची प्रेम लक्षणा भक्ति की व्याख्या करता हूँ। पहले अरब की धरती पर पशु वृत्ति थी, अतः कुर्आन के ज्ञान द्वारा सबको शरियत के मार्ग पर चलाया गया।

**अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर॥११॥**

अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में चितवनी करने से ब्रह्मात्माओं का हृदय प्रेम का सागर (इश्क का दरिया) हो गया है। इस अवस्था में अपने आराध्य के प्रति किसी के भी मन में संशय रह ही नहीं सकता है। जब हृदय में प्रेम के सागर की लहरें उमड़ती हैं, तो प्रितयम से प्रत्यक्ष वार्ता होती है और नूरमयी परमधाम का अखण्ड आनन्द स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है।

**सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आगूँ धरिया आन।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर॥१२॥**

अपनी आत्मिक दृष्टि (सूरता) को दायें-बायें अर्थात् संसार में या दज्जाल को खोजने में न लगाकर शिर के आगे रखो (ज्ञान दृष्टि से प्रेम के सहारे परमधाम की ओर ले चलो)। जो अपने दोनों हाथों से अर्थात् पूर्ण विश्वास से युगल स्वरूप के चरणों को पकड़े रह सकता है, वहीं श्री राज जी से प्रत्यक्ष वार्ता करने में सक्षम हो सकता है।

भावार्थ- शिर ज्ञान एवं निष्ठा का प्रतीक है। चितवनी करते समय सूरता को शिर के आगे रखने का अभिप्राय है- संसार से अपने मन को हटाकर केवल मूल मिलावे एवं युगल स्वरूप की शोभा देखने का भाव बनाये रखना। इसके साथ प्रेम की रसधारा का होना अनिवार्य है। दोनों हाथों से युगल स्वरूप के चरणों को पकड़ कर खड़ा रहने का आशय यह है, कि अटूट विश्वास, प्रेम एवं समर्पण के साथ मूल मिलावे में अपनी एकाग्रता को बनाये रखना, तुरन्त संसार में वापस नहीं आ जाना।

हुआ साहेबसों परस, दिल से छूटी हवा हिरस।

भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक॥१३॥

प्रियतम का दीदार होने के पश्चात् हृदय में किसी भी प्रकार का लोभ या तृष्णा नहीं रह जाती है। आत्मा अपने प्राणेश्वर के प्रेम रूपी सागर में डूब जाती है और उनके हृदय में विद्यमान प्रेम, एकत्व, मूल सम्बन्ध आदि के मारिफत (परम सत्य) सम्बन्धी गुह्य रहस्यों को जान जाती है।

सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान।

एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई॥१४॥

उपरोक्त चौपाईयों में चितवनी की प्रक्रिया को ज्ञान द्वारा दर्शाया गया है। इसकी विशेषता परमधाम एवं श्री राज जी के प्रेम में डूबना (गलतान) होना है। इस लक्ष्य को जो प्राप्त करे लेते हैं, वे निश्चय ही ब्रह्ममुनि होते हैं। ऐसा कुरआन में कहा गया है।

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज।

मिले वाही के तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब॥१५॥

इस प्रकार प्रेममयी चितवनी का यह मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ अनन्य प्रेम-लक्षणा-भक्ति है, जिसमें हमारा समय अपने जीवन के आधार, मुकुटमणि प्राणेश्वर की अनन्त शोभा को निहारने में व्यतीत हो जाता है। जो इस प्रेममयी चितवनी के इच्छुक होते हैं और इस मार्ग पर चलते हैं, उन्हें ही श्री राज जी का सच्चा प्रेमी (दोस्त) कहलाने का अधिकार है।

जब तें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेब सों भेंटी।

जो लों कछू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप॥१६॥

हे आत्मा! जब तूं संसार की आशा-तृष्णा को छोड़ देगी, तो तेरा प्रियतम अक्षरातीत से मिलन हो जाएगा। जब तक तुम्हारे अंदर संसार की कुछ भी अहम् की ग्रन्थि है, तब तक तूं अपने प्राणेश्वर का मधुर दर्शन (शर्बते ए दीदार) नहीं कर पाएगी।

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे।

तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा॥१७॥

जब तक किसी भी व्यक्ति के अंदर शरीर के सौन्दर्य, पद-प्रतिष्ठा, विद्या, धन आदि का कुछ भी अहंकार है, तब तक वह व्यक्ति अखण्ड सुख का रसास्वादन नहीं कर सकता।

इसलिये अपनी भक्ति के अहंकार को प्रदर्शित करने वाले माला, गुदड़ी, चिप्पी, यज्ञोपवीत (जनेऊ) आदि को छोड़ दो। इसके अतिरिक्त अपने मन में छिपी हुयी तृष्णा तथा लौकिक सुखों के लोभ का भी परित्याग कर दो।

**दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक।
या हंस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए॥१८॥**

हिन्दू और मुसलमान की साम्प्रदायिक कट्टरता रूपी संसार को छोड़कर एक अक्षरातीत सच्चिदानन्द परब्रह्म की छत्रछाया में आ जाओ। प्रियतम के प्रेम में हंसते हुये संसार का मोह छोड़ दो अन्यथा रोते हुये तो छोड़ना ही पड़ेगा। मेरे इस कथन में किसी भी प्रकार का संशय न रखो।

**जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई॥१९॥**

यदि तुम यह कार्य कर लेते हो, तो तम्हारे हृदय में परमधाम की सुगन्धि आने लगेगी अर्थात् तुम्हें परमधाम का अनुभव होने लगेगा। जितने भी मिथ्या-बूरे कर्म हैं, उन्हें करने वालों को कुरआन में क्रोध पूर्वक काफिर कहा गया है।

**केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक॥२०॥**

इस्लाम के सुन्नी या अहले सुन्नत समुदाय के द्वितीय इमाम (धर्मगुरु) सालवी (द्वितीय) मलिक कहते हैं, कि परब्रह्म ने ब्रह्मसृष्टियों तथा काफिरों के सम्बन्ध में एक नयी आयत अवतरित की है। इसमें स्वयं परब्रह्म ने कहा है कि मेरे इस कथन में कोई संशय नहीं है, कि एकमात्र वह सच्चिदानन्द अक्षरातीत ही सबसे महान है।

**और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे।
याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम॥२१॥**

संसार में जो व्यक्ति ऐसी अनन्त महिमा वाले परब्रह्म से अपना मन हटा लेता है तथा सांसारिक कार्यों को ही अपने हृदय में प्राथमिकता देता है एवं उसी में आनन्द की अनुभूति करता है तो वह इस छल से भरे संसार-चक्र में ही फंसा रहता है।

**साफ कौल इनोके फैल, यामें नाहीं जरा मैल।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक॥२२॥**

इन ब्रह्ममुनियों की कथनी और करनी अत्यन्त निर्मल होती है। इनके हृदय में जरा भी विशय विकार नहीं होते। इस प्रकार जो कोई परब्रह्म के अंगरूप ब्रह्ममुनि हैं, उन्हें स्वयं को परब्रह्म के प्रति समर्पित करना होगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौ. में 'जकात' का सूक्ष्म अर्थ परब्रह्म के प्रति समर्पित करना है। स्थूल अर्थ में भी जिसके मन में मानव समाज के लिये समर्पण की भावना होती है, वही धन राशि देता है। तरीकत की दृष्टि से १/४० वां भाग देना होता है किन्तु हकीकत की दृष्टि से तो आपना सर्वस्व ही धनी के चरणों में न्योछावर करना होता है।

**देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार॥२३॥**

प्रियतम अक्षरातीत सबसे महान हैं। उनके चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करना प्रत्येक ब्रह्मात्मा का कर्तव्य है। चाहे कोई सुन्दरसाथ छोटी उम्र का हो, या बड़ी उम्र का, स्त्री हो या पुरुष, समर्पण का यह नियम तो अनिवार्य रूप से प्रत्येक ब्रह्मसृष्टि के लिये है।

**ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाहीं तिन काम॥२४॥**

परमधाम की जो इस प्रकार की ब्रह्मसृष्टियां हैं, उन्हें श्री प्राणनाथ जी के चरणों में अटूट निष्ठा रखनी है। पाप कर्मों से सम्बन्धित जो भी बातें हैं, ब्रह्मसृष्टियों को चाहिए कि उन्हें किसी भी स्थिति में अपने निकट न आने दें।

**या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी॥२५॥**

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि अपने हृदय में कभी भी इस तरह का भाव नहीं लाती, कि यह व्यक्ति अपना है तथा यह पराया है। अपितु वह सबके साथ परमधाम का मूल सम्बन्ध मानकर समान व्यवहार करती है और आत्मिक प्रेम करती है। वह ऐसा इसलिये करती है, क्योंकि वह जानती है कि वह अपने प्राणेश्वर के हाथों बिक चुकी है और अपने प्रियतम की अंगरूपा सभी ब्रह्मात्माओं से आत्मिक प्रेम रखना उसका नैतिक उत्तरदायित्व है।

**दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिनकी मिलक।
निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना॥२६॥**

मेयरज नामा में वर्णन है कि मुहम्मद स. ने अपनी दायीं ओर परब्रह्म की अंगरूपा श्यामा जी को देखा। सभी ब्रह्मात्मायें उन्ही श्यामा जी के तन हैं। ये ब्रह्मसृष्टियां ही ब्रह्ममुनि (मोमिन) हैं। ये इस संसार के सुखों को स्वप्न के समान मानते हैं और इस बात का पूर्णतया ध्यान रखते हैं कि उनकी इन्द्रियां विषयों की ओर आकर्षित न होने पायें।

भावार्थ—आंख सुन्दर रूप को देखना चाहती है, तो नासिका सुगन्धि के पीछे भागती है। इसी प्रकार त्वचा को कोमल स्पर्श चाहिये, तो जिह्वा को स्वादिष्ट व्यंजन। कान भी मधुर ध्वनि के पीछे भागता है। ब्रह्ममुनि इन इन्द्रियों को बाह्य जगत में भटकने से रोकते हैं तथा इनके साथ इनके राजा मन को भी अन्तर्मुखी करके अपने हृदय-धाम में अपने आराध्य का ध्यान करते हैं।

**इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर।
इन भांत की जो है औरत, तिन पाया रोज सरत॥२७॥**

इस प्रकार, इन ब्रह्मात्माओं ने अपने हृदय में धैर्य धारण किया होता है और वे विषयों के आकर्षण से प्रभावित नहीं होती, अपितु अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से अधिक आकर्षण, उन्हें अन्य किसी में भी दिखायी नहीं देता। इसका परिणाम यह होता है कि उनके हृदय में कोई विषय जनित विकार पैदा ही नहीं होता और वे प्रत्येक प्रकार के अपराध से सुरक्षित हो जाती हैं। इन्हीं दिव्य गुणों वाली ब्रह्मसृष्टियों ने कियामत के समय अपने आराध्य श्री प्राणनाथ जी को पाकर स्वयं को उनके प्रति न्योछावर किया होता है।

**और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम॥२८॥**

इन ब्रह्मात्माओं को इन्द्रियों के विषयों में किसी भी प्रकार के सुख का अनुभव नहीं होता, क्योंकि इनका ध्यान हर पल अपने सर्वस्व कहे जाने वाले युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी के चरणों में ही होता है। इन्हें यह अच्छी तरह से ज्ञान होता है कि इन्द्रियों के विषयों में भागना बुरा कर्म है और पाप है।

जो ए काम ढूँढे बदफैल, काफ़र चाहे उलटी गैल।

ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर॥२९॥

इसके विपरीत संसार के जीव ब्रह्मसृष्टियों से उल्टे मार्ग पर चलते हैं। ये बूरे काम खोजते रहते हैं। इस प्रकार दूसरे प्राणियों के प्रति अत्याचार करने वाले ये काफिर कियामत के समय को नहीं जान पाते हैं और इमाम महंदा श्री जी की पहचान न करने से इस दुःखमयी संसार चक्र में भटकते रहते हैं।

और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन।

इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत॥३०॥

अति पवित्र हृदय वाले जो ब्रह्ममुनि हैं, जिनके हृदय में प्रियतम परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास होता है, उन्हें परब्रह्म ने श्यामा जी के नेतृत्व में घरोहर के रूप में इस संसार में भेजा हुआ है। इन्हीं पवित्र हृदय वाले ब्रह्ममुनियों को कुर्आन में संकेतों में ब्रह्मांगनायें (हूरें) कह कर वर्णित किया गया है।

भावार्थ- कुर्आन के बाह्य अर्थों में भटकने वाले मौलवी-मुल्ला परब्रह्म की अंग रूपा ब्रह्मात्माओं को ही हूरें समझते हैं और उन्हें अपनी पत्नी के रूप में देखने की कोशिश करते हैं। आतंकवादियों को इन्हीं का लालच देकर भड़काया जाता है।

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक।

याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल॥३१॥

ये ब्रह्ममुनि परब्रह्म की अमानत के रूप में इस संसार में अवतरित हुए हैं। पूर्णतया संशय रहित ये ब्रह्ममुनि अपनी इन्द्रियों को उनके विशयों से दूर रखकर अन्तर्मुखी होते हैं तथा परात्म की भावना से अपने प्राणेश्वर के प्रेम रूपी जल में चितवनी के द्वारा स्नान करते हैं। यही इनकी वास्तविक प्रेम लक्षणा भक्ति है।

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खालक।

निगाह रखे खड़ा रहे आप, सुरत आयत करे मिलाप॥३२॥

इन ब्रह्मात्माओं के धाम हृदय में प्रियतम अक्षरातीत का निवास होता है। जीव-सृष्टि में कोई-कोई महापुरुष इसी भाव से अपने कथनों में अपने हृदय में परब्रह्म का निवास मानते हैं, जब कि वे स्वाप्निक होते हैं और मोह सागर में उत्पन्न हुए होते हैं। एक ब्रह्ममुनि सर्वदा ही

इस बात का ध्यान रखता है, कि उसकी इन्द्रियां अपने राजा मन के आदेश पर विषयों की ओर आकर्षित न होने पावें। वह परब्रह्म के प्रति एक निष्ठ प्रेम एवं अटूट विश्वास के साथ दृढ़ता पूर्वक स्थित रहता है। ब्रह्ममुनियों का समूह आपस में श्री कुलजुम स्वरूप के प्रकरणों तथा चौपाईयों के सम्बन्ध में गहन चिन्तन करता है।

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूँ ना फिरे।

रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत॥३३॥

ब्रह्ममुनि आत्म-निरीक्षण एवं विवेक के द्वारा मन को विषयों में भटकने से रोकते हैं और युगल स्वरूप की प्रेममयी चितवनी में निरन्तर लगे रहते हैं। वे किसी भी स्थिति में चितवनी से विमुख नहीं होते हैं। उनके हृदय में अपने प्राणेश्वर के प्रति अटूट सम्मान भरा होता है। अपने समय पर चितवनी वे अवश्य करते हैं। श्री जी ने श्री कुलजुम स्वरूप में जो भी निर्देश दिया है, उसका वे निष्ठा-पूर्वक पालन करते हैं।

मुलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई आखिर।

ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान॥३४॥

परमधाम के ब्रह्ममुनि परात्म की भावना से परमधाम में विराजमान युगल स्वरूप की चितवनी करते हैं तथा श्री प्राणनाथ जी को उन्हीं का आवेश स्वरूप मानकर उनकी सेवा करते हैं, उनकी आपस में चर्चा करते हैं तथा दिव्य लीलाओं की महिमा गाते हैं। ईश्वरीय सृष्टि के जो सुन्दरसाथ हैं, उनका भी संकेतों में वर्णन किया गया है। वे भी अटूट विश्वास के साथ श्री जी की सेवा एवं बन्दगी में तल्लीन रहते हैं।

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक।

गिरो मोमिन जमें करें, छे सिफते वारसी धरें॥३५॥

ब्रह्मसृष्टियों के द्वारा की जाने वाली प्रेममयी चितवनी का मार्ग सर्वोपरि है। ईश्वरीय सृष्टि के द्वारा अटूट श्रद्धा-विश्वास के साथ युगल स्वरूप का ध्यान किया जाता है। ब्रह्ममुनि स्वाभाविक रूप से इन छः निधियों अटूट विश्वास, प्रेम, अखण्ड ज्ञान, जोश, परब्रह्म की मेहर तथा आदेश के उत्तराधिकारी होते हैं और इन्हें अपने हृदय में संभाल कर रखते हैं।

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम।

जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक॥३६॥

परब्रह्म की निधियों के उत्तराधिकारी जो ब्रह्ममुनि हैं, वे संसार के विषयों, तृष्णाओं तथा लौकिक पद-प्रतिष्ठा से सर्वदा दूर रहते हैं। जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी को श्री अक्षरातीत

के रूप में पहचाना है। वे चितवनी के द्वारा अपने प्राणेश्वर के निकटस्थ होने का अधिकार प्राप्त कर लेते हैं अर्थात् उनका साक्षात्कार कर लेते हैं।

**जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई।
लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास ॥३७॥**

श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में रहकर जिन ब्रह्मात्माओं ने परमधाम का ज्ञान ग्रहण किया तथा चितवनी के द्वारा प्रत्यक्ष उसकी अनुभूति की, श्री जी ने उन्हें सब सुन्दरसाथ में बड़ी ऊंची शोभा दी। जिस ईश्वरीय सृष्टि ने महारास के समय में ब्रह्मसृष्टि के एक-एक तन में दो-दो की संख्या में बैठकर अनन्त आनन्द का रसपान किया था, उन्होंने इस जागनी लीला में भी श्री जी की कृपा सृष्टि से अखण्ड सुख के उत्तराधिकार को प्राप्त किया।

भावार्थ- ईश्वरीय सृष्टि परमधाम का ज्ञान ग्रहण कर चितवनी के द्वारा परमधाम के २५ पक्षों और श्री राज जी का दर्शन कर सकती है। किन्तु निस्वत के स्वरूपों श्री श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं के स्वरूपों का साक्षात्कार नहीं कर सकती।

उपरोक्त चौपाई के पहले चरण में 'भिस्त बिलंदी' का तात्पर्य परमधाम से है, जबकि इसी चौपाई के तीसरे चरण में 'भिस्त' का आशय सत्स्वरूप की पहली बहिस्त से है, जिसमें परमधाम की सम्पूर्ण ब्रह्मानन्द लीला का प्रतिबिम्ब पड़ेगा। ईश्वरीय सृष्टि इसी बहिस्त के सुख का अधिकार प्राप्त करेगी।

**बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर।
और काफर दोजख में जल, देखें भिस्ती मरें जल ॥३८॥**

सत्स्वरूप की पहली बहिस्त में ब्रह्मसृष्टियों के जीव ब्रह्मात्माओं का प्रतिबिम्बित रूप धारण कर अखण्ड होंगे, जिसमें परमधाम की लीला का प्रतिबिम्ब पड़ेगा। बेहद मण्डल की शेष सात अन्य बहिस्तों वाले इन्हें ही ब्रह्मात्माओं का स्वरूप मानेंगे। सत्स्वरूप में दूसरी बहिस्त ईश्वरीय सृष्टि की होगी। इन दोनों बहिस्तों के अतिरिक्त पूर्व की चार अन्य बहिस्तें तथा बाद की सातवीं को छोड़कर बाद की आठवीं बहिस्त में अव्याकृत के स्थूल में जीव प्रायश्चित रूपी दोजक की अग्नि में जलकर अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होंगे। प्रायश्चित की अग्नि में जलने वाले ये काफिर जीव जब सत्स्वरूप की पहली बहिस्त में ब्रह्मात्माओं के प्रतिबिम्ब तथा अन्य बहिस्तों वालों को देखेंगे तो दुःख और लज्जा की अग्नि में और अधिक जलेंगे।

भावार्थ- चौपाई ३८ तथा ३९ में जो मोमिन शब्द आया है उसका तात्पर्य परमधाम के मोमिन नहीं अपितु उनके प्रतिबिम्बित स्वरूपों से है, जो सत्स्वरूप की पहली बहिस्त में होंगे। खेल की

समाप्ति के पश्चात् तो परमधाम की आत्मायें अपने मूल तनों में जागृत हो जायेंगी किन्तु उन्हें बेहद की बहिश्तों वाले कदापि नहीं देख सकेंगे। उन ब्रह्मात्माओं के जो प्रतिबिम्बित स्वरूप पहली बहिश्त में होंगे, शेष सभी सातों बहिश्तों वाले उन्हें ही परमधाम की ब्रह्मात्माएं समझेंगे। श्री मिहिरराज जी का जीव श्री राज जी का स्वरूप बनेगा तथा श्री देवचन्द्र जी का जीव श्यामा जी। सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में इन्हें ही युगल स्वरूप मानकर सभी पूजा करेंगे तथा यही स्वरूप सबका न्याय करेगा। श्री कुलजम् स्वरूप में इस सम्बन्ध में इस प्रकार कहा गया है।

मेरे गुण अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार । क. हि. 23/104

आगे हुई ना होसी कबहुं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई ।

सब पूजें प्रतिबिम्ब हमारे, सो भी अखण्ड में ऐसी भई ॥ कि. 81/3

तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान ।

तिन सबके खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान ॥ श्रृं. 29/126

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिम्ब मोमिनों नाम ।

सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम ॥ श्रृं. 21/88

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख ।

यों कहा बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल ॥ ३९ ॥

सभी सात बहिश्तों वाले दोजक की अग्नि में जलते हुए जीवों को देखकर करुणा से दुःखी होंगे। सत्स्वरूप की पहली बहिश्त के प्रतिबिम्बित स्वरूप जब इन दोजक में जलने वाले जीवों की ओर अपनी कृपा दृष्टि से देखेंगे, तो उसी पल संसार के उन समस्त जीवों को अव्याकृत के स्थूल में आठवीं बहिश्त में अखण्ड मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। जादिल मिसल नामक ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है, कि वास्तविक ईमान ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों में होता है।

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।

भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ॥ ४० ॥

महाराजा छत्रशाल जी का कथन है कि संसार के जो जीव श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं करते हैं तथा उनके दर्शये हुए मार्ग पर नहीं चलते हैं, वे दोजक की अग्नि में जलेंगे। सातों बहिश्तों वालों के अखण्ड सुखों को जब दोजक में जलने वाले जीव जैसे-जैसे देखेंगे तो वैसे-वैसे लज्जा एवं प्रायश्चित्त की अग्नि में और अधिक दुःखी होंगे।

प्रश्न- संसार में हजारों मत मतान्तर है तथा सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या ७ अरब ४० करोड़ है। तारतम ज्ञान का प्रकाश सब तक तो पहुँच नहीं पायेगा, ऐसी स्थिति में वे कैसे श्री प्राणनाथ जी की पहचान कर पायेंगे और परमधाम के मार्ग पर चल पायेंगे? उन पन्थों में भी बहुत से सच्चे हृदय वाले धार्मिक लोग होंगे जिन तक तारतम ज्ञान न पहुँचने से वे प्राणनाथ जी का नाम भी नहीं सुन पाये होंगे। ऐसी स्थिति में क्या उन्हें भी दोजक की अग्नि में जलना पड़ेगा?

उत्तर- परमात्मा की न्याय व्यवस्था के अनुसार अति उत्तम जीवों को किसी न किसी प्रकार से तारतम ज्ञान अवश्य प्राप्त हो जायेगा। किन्तु अपने आलस्य अथवा साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण जो अपनी साम्प्रदायिक पद्धति के अनुसार ही ध्यान साधना करते रहेंगे और पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे, वे अपने ईष्ट के धाम को प्राप्त होंगे, जैसे राधा-कृष्ण की भक्ति करने वाले चौथी-पांचवी बहिश्त में तथा शून्य समाधि लगाने वाले सातवीं बहिश्त (बेहद के शून्य मण्डल) में जायेंगे। सभी मत-पन्थों के धार्मिक व्यक्ति अति कठोर साधना करके भी तीसरी से सातवीं बहिश्त तक में ही जा पायेंगे, किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में सामान्यतः प्रतिदिन २-४ घण्टे की नियमित चितवनी करने वाला ऐसा व्यक्ति (जीव) जो स्वयं को ब्रह्मात्मा मानता हो और ब्रह्मसृष्टियों के प्रेम, समर्पण के मार्ग पर चलता हो, वह सत्स्वरूप की पहली बहिश्त का अधिकारी बन सकता है। ऐसा व्यक्ति जो मात्र १५ मिनट भी तारतम पाठ, सेवा-पूजा में अपना समय लगाता है, वह भी कठोर साधना करने वाले योगियों की सातवीं बहिश्त को प्राप्त करेगा।

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस।

इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास।।४१।।

ब्रह्ममुनि परमधाम के अधिकारी हैं क्योंकि वे अनादि काल से परमधाम में रहते आये हैं। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के नजरी पुत्र श्री मिहिरराज जी के तन में लीला करके परब्रह्म ने उन्हें अपना स्वरूप (श्री प्राणनाथ) बनाया और संसार के लोगों को अखण्ड मुक्ति देने वाले विशेष स्वरूप के रूप में शोभा दी।

खैच किया सबोंके आगे, मोमिन इनपे पेसवा लागे।

बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर एपाक साफ कही जात।।४२।।

संसार के बैकुण्ठ-निराकार आदि की मान्यताओं में भटकने वाली ब्रह्मात्माओं को श्री प्राणनाथ जी ने अपनी कृपा दृष्टि एवं तारतम ज्ञान के प्रकाश से निकाला तथा उन्हें परमधाम का ज्ञान एवं चितवनी का मार्ग देकर सब में अग्रगण्य कर दिया। ब्रह्ममुनियों ने उनके स्वरूप

की पहचान करके स्वयं को उनके ऊपर समर्पित कर दिया तथा उन्हें अपना पथ प्रदर्शक माना। यद्यपि इनका स्थूल शरीर, इन्द्रियां तथा कारण शरीर सभी की तरह पंच भूतात्मक ही हैं, किन्तु ये परब्रह्म के आवेश स्वरूप के विराजमान होने से अत्यन्त पवित्र और स्वच्छ हैं (आन्तरिक तथा बाह्य दृष्टि से)।

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कहा असल।

आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़या पाक करार।।४३।।

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के दो पुत्र कहे गये हैं। नस्ली (वंशानुगत) पुत्र बिहारी जी को वंश पुत्र माना गया है तथा श्री मिहिरराज जी को असली नजरी उत्तराधिकारी पुत्र कहा गया है। धाम धनी ने उनके ही तन से परमधाम के श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान रूप में वह आनन्द का स्रोत प्रवाहित किया है, जो अति पवित्र है तथा हृदय को शान्ति देने वाला है। इसे ही ब्रह्ममुनि ने आत्मसात् किया है।

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार।

तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान।।४४।।

तारतम ज्ञान रूपी महानतम् औषधि को लेकर कृपा स्वरूपा श्यामा जी ने अपने दूसरे तन के रूप में इन्हें दृढ़ता पूर्वक धारण किया है। इसी तन से श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हुआ है। श्री महामति जी के धाम हृदय में बशरी, मल्की तथा हकी स्वरूप एकाकार होकर प्रत्यक्ष रूप से लीला कर रहे हैं।

सिफत तीनों की जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई।

ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी।।४५।।

यद्यपि, तीनों सूरतों की महिमा अलग-अलग है, फिर भी श्री राज जी ने हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी को सारी शोभा प्रदान की है। बशरी सूरत मुहम्मद स. के द्वारा कुर्आन का अवतरण हुआ, तो मल्की सूरत सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तारतम ज्ञान लेकर आये। अति पवित्र हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा कतेब एवं वेद के गुह्यतम् रहस्यों को उजागर किया।

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी।

एकसरूप अवस्थातीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन।।४६।।

कुर्आन के शब्दों का मात्र बाह्य अर्थ लेने वाले उसके गुह्य रहस्यों को समझ नहीं पाते हैं। इसे तो मात्र संकेतों में ही कहा गया है। जिस प्रकार एक ही व्यक्ति की तीन अवस्थायें

बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा वृद्धावस्था होती है, उसी प्रकार श्री राज जी के एक ही हुक्म (आदेश, इच्छा) से धारण किये गये स्वरूप की तीन अवस्थायें हैं। बशरी सूरत में बाल्यवस्था के समान ज्ञान है। मल्की सूरत में युवावस्था जैसे धर्म शास्त्रों के रहस्यों का ज्ञान हैं किन्तु हकी सूरत में वेद-कतेब के गुह्य रहस्यों सहित परमधाम की मारिफत (सर्वोच्च पहचान) का ज्ञान है। इसलिये इस स्वरूप को वृद्धावस्था (परिपक्व ज्ञान) वाला कहा गया है।

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी।

खोली राह आखिर बाग की, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी ॥४७॥

इन तीनों स्वरूपों में ज्ञान की ज्योति क्रमशः बढ़ती गयी है। बशरी स्वरूप में दूज के चन्द्रमा के समान परमधाम का ज्ञान अवतरित हुआ, तो मल्की स्वरूप में पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान। इसी प्रकार हकी स्वरूप में दोपहर के सूर्य के समान ज्ञान का प्रकाश हुआ। श्री पन्ना जी में होने वाली लीला में (आखिरी भाग में) परमधाम के सम्पूर्ण बागों सहित पच्चीस पक्षों का ज्ञान परिक्रमा ग्रन्थ के रूप में अवतरित हुआ। इस प्रकार सामान्य अवस्था से बढ़ते-बढ़ते वे पूर्ण ब्रह्म कहलाने तक की महानतम् शोभा को प्राप्त हुए।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का आशय यह है कि वि. सं. १७१२ से पहले वे मात्र श्री मिहिरराज जी थे। वि. सं. १७१२-१५ के बीच उनके तन से मिहिरराज जी छाप के कुछ कीर्तन उतरे, किन्तु अभी आत्मा में पूर्ण जागृत अवस्था नहीं आयी थी। हब्से में वि. सं. १७१५ में रास, प्रकाश तथा शटक्रतु एवं कलश गुजराती की दो चौपाईयों का अवतरण हुआ। वि. सं. १७३५ के समय वे विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप एवं आखरुल इमाम मुहम्मद महंदा के रूप में शोभायमान हुए तो वि. सं. १७४०-५१ तक पन्ना जी में परमधाम के सम्पूर्ण ज्ञान के अवतरित होने एवं आवेश लीला के द्वारा प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देने से सबने उन्हें पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप में पहचाना। यही 'तंग सेती से बुजुर्गी अवस्था' में पहुँचना है।

बिध बिध की न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत फुरमाई।

लड़के सेती पोहोंचे ज्वान,रख्या कदम हक बयान ॥४८॥

इस स्वरूप के द्वारा मूल स्वरूप श्री राज जी ने परमधाम की आत्माओं के लिये तारतम ज्ञान की अनेक निधियां अवतरित की। रास, प्रकाश, कलश तथा कीर्तन के रूप में गुह्य रहस्यों से भरपूर हिन्दू धर्मग्रन्थों का ज्ञान दिया। इसी प्रकार, सनद, खुलासा, मारिफत सागर तथा कियामतनामा के रूप में कुर्आन पक्ष का गुह्यतम ज्ञान प्रकट किया। खिल्वत, परिक्रमा,

सागर तथा शृंगार के द्वारा परमधाम की शोभा-शृंगार तथा लीला का आनन्द देने वाले आनन्द की कई धाराएं प्रवाहित की। शटखती और सिंधी के द्वारा विरह का रसपान कराया। वि. सं. १७१२ से पहले उनके ज्ञान की अवस्था बाल्यावस्था जैसी थी। सूरत में जागनी लीला के समय ज्ञानदृष्टि से वे युवावस्था में थे। श्री पद्मावती पुरी धाम में पहुँचकर जब उन्होंने युगल स्वरूप की शोभा शृंगार के रूप में सागर, शृंगार का अवतरण किया तब उनकी ज्ञान की परिपक्व अवस्था हो गयी और उनका ज्ञान रूपी सूर्य प्रचण्ड तेज से चमकने लगा।

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक।

लायक खुदाए के करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त ॥४९॥

इनके तन से परमधाम के दिव्य ज्ञान श्री कुलजुम स्वरूप का जब अवतरण हुआ, तो इस गौरव से इन्हें महानतम् कहा गया। इनके द्वारा सभी प्राणी अखण्ड होंगे, इसमें नाम मात्र भी संशय नहीं करना चाहिये। इनकी महिमा साक्षात् परब्रह्म के बराबर है। ऐसा लगता है कि प्रियतम अक्षरातीत ने अपना दोस्त (प्रेमी) बनाकर इन्हें मायावी जगत में भेजा है।

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी, कायम सितारों आसमान जिमी।

पीछे आदम के पैदा भया, जात पाक से दोस्त कहा ॥५०॥

परब्रह्म के द्वारा बनाये हुए सृष्टि रचना के शाश्वत नियमों से इस धरती, तारों से युक्त आकाश एवं भगवान विष्णु के बैकुण्ठ लोक को बनाया गया है। इस संसार में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के पश्चात् श्री जी के रूप में जो स्वरूप प्रकट हुआ है, उसे कुर्आन में परब्रह्म का दोस्त कहा गया है। परब्रह्म की अंगस्वरूपा (हक जात) महामति जी के धाम हृदय में स्वयं धाम धनी के द्वारा आवेश स्वरूप से लीला करने के कारण यह स्वरूप अति पवित्र है।

भावार्थ- कुर्आन पा. ३० सूर: ७६ आ. १४-१५ फइजा हुम् बिस्साहिरति(१४) हल् अताक हदीसु मूसा(१५) उस वक्त सभी लोग हशर के मैदान में जमा होंगे, भला तुम को मूसा की हिदायत पहुँची है।

यहाँ मूसा यानि (श्री जी) मेहमत साहब में पाँचों शक्तियों के समावेश को कहकर उनको ही इमाम महमत जाने जाना (श्री प्राणनाथ जी) रूहुल्लाह कहा गया गया है। तथा श्री जी को ही ईमाम - ए गैब, इमाम ए ज़माँ, इमाम मल मुंतज़र एवं हजरत आखरूल इमाम महम्मद महदी साहिबुज्जमाँ, जाने जाना या अजल अल्लाह तआला फर्जहू अल शरीफ कहा गया है। क्योंकि अल्लाह नूरूल अतः नूर है। वह साक्षात् संसार में पदार्पण नहीं कर सकते हैं।

उनकी शक्तियों के स्वरूप को ही मेहमत रूहुल्लाह कहा गया है, जो कि धाम धनी का स्वरूप है। मात्र तन का परदा ही अलग-अलग कहा गया है क्योंकि जहां स्वप्न है वहां स्वरूप का ही महत्व होता है।

उन्हें ही अज्जल्लाह तआला फर्जहु अलशरीफ कहा गया है क्योंकि अल्लाह सल अता नूर है वह साक्षात् संसार में पदार्पण नहीं कर सकते हैं। उनकी शक्तियों के स्वरूप को ही मेहमत रूहुल्लाह कहा है जो कि साक्षात् धाम धनी का स्वरूप है। मात्र तन का पर्दा ही कहा गया है क्योंकि जहां रूप न हो स्वरूप का ही महत्व होता है। तथा श्री जी को ही इमाम-ए गैब, इमाम ए जमां, इमाम मल मुंतजर एवं हजरत आखरूल इमाम मुहम्मद महंदी साहिबुज्जमां, महमत रूहुल्लाह, जान ए जाँ, या इमामे अस्म, इमामे फज्र इत्यादि कहा गया है।

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई।

मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत ॥५१॥

वेद-कतेब दोनों पक्षों के ग्रन्थों में परब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी की बहुत अधिक महिमा के प्रमाण भरे हैं। इन्होंने ही इस संसार में श्री देवचन्द्र जी का तन धारण किया। इनके ऊपर श्री राज जी ने जो अपार प्रेममयी कृपा की है, उसकी महिमा का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है। श्री राज जी ने उन्हें तीन बार दर्शन दिया तथा तारतम ज्ञान प्रदान किया।

भावार्थ-पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र में सुन्दरी एवं सद्गुरुम्' कहा गया है। इसी प्रकार पुराण संहिता में कहा गया है कि-

सुन्दरी चेन्दिरा नामाभ्याम् चन्द्र सूर्ययोः ।

माया अन्धकार विनाशाय प्रति बुद्धे भविष्यतः कलौयुगे ॥

अर्थात् कलियुग में माया के अज्ञान रूप अन्धकार को दूर करने के लिये श्यामा जी एवं इन्द्रावती (महामति) के द्वारा चन्द्र (देवचन्द्र) तथा सूर्य (मिहिरराज) नाम वाले तन धारण किये जायेंगे। संस्कृत में 'मिहिर' शब्द का अर्थ 'सूर्य' होता है। इसी प्रकार कुर्आन पा. ३० सू. ६१ आ. १-२ "वश्शम्सि व जुहाहा(१) वल्कमरि इजा तआहा(२)" सूरज की कस्म और रोशनी की और चांद की जब उसके पीछे निकले ऐसे ही इमाम के पीछे है, ईसा का जहूर होगा।

पा. ३० सू. ८६ आ. २२ "व'व जाअ रब्बुक वल्मलकु सप्फन् सप्फन्" यानि और आपका परवरदिगार (जलवाफरोश प्रकट होगा) और फरिश्ते लाइने बनाकर मौजूद होंगे।

पा. ३० सू. ८१ आ. २०-२१ "जी कुव्वतिन् अिन्द जिल्अर्शि मकीनिन्(२०) म'मुताअिन् सम्म अमीनिन्(२१) यानि जो ताकत वाला अर्श के मालिक से यहाँ ऊँचे दर्जे वाला सरदार और अमानत दार है।

**जो कहा इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर।
इनका रंग है तकव्वल, सिर बिलंदी ताल सकल॥५२॥**

श्यामा जी के तारतम ज्ञान का प्रकाश उनके द्वारा धारण किये दूसरे तन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में दिखायी पड़ता है। माया से युद्ध लड़ने के लिये परमधाम का दिव्यतम् ज्ञान प्रकट करने वाले श्री जी सच्चे शूरवीर की भांति है। इनके ज्ञान का रंग अमिट है अर्थात् जो व्यक्ति श्री कुलजम् स्वरूप के ज्ञान के आभा मण्डल में आ जायेगा, वह एकमात्र उसी का होकर रह जायेगा। श्री प्राणनाथ जी के शिर पर आध्यात्मिक ज्ञान का जो मुकुट है, उसकी तेजस्विता के समक्ष संसार के सभी मत पन्थों का ज्ञान धुंधला सा दिखता है।

द्रष्टव्य- श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म के द्वारा धारण किया गया है। इनकी महिमा के लिये संसार में कोई भी शब्द नहीं है। उन्हें सच्चे शूरवीर कहना लोक दृष्टि से आलंकारिक रूप से है।

**और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक।
ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन॥५३॥**

श्री प्राणनाथ जी के ही चरणों में १२ हजार ब्रह्मसृष्टियों तथा २४ हजार ईश्वरीय सृष्टि का मेला होगा। इस शोभा को इन्होंने अपने लिये बन्धन माना। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति इन्हें सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी से हुई जिसे उन्होंने स्वयं श्याम जी के मन्दिर में अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से प्राप्त किया।

**एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कहा अमोल॥५४॥**

इस प्रकार, इस स्वरूप का प्रकटन हुआ। बशरी, मल्की तथा हकी ये तीनों सूरतें परब्रह्म के आदेश (इच्छा) द्वारा धारण की गयी है। इन तीनों की महिमा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी में ही एकाकार हो जाती है अर्थात् इनकी महिमा का गायन कर लेने पर अन्य किसी की भी महिमा गायन की आवश्यकता नहीं रह जाती है। इस स्वरूप को आलंकारिक रूप से अनमोल चेतन मोती कहा गया है।

**इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहू कानों सुनाए।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे॥५५॥**

श्री प्राणनाथ जी की महिमा का शब्दों में आंकलन या कथन नहीं हो सकता, क्योंकि वह असीम आकाश या सागर की जलराशि की भांति अनन्त है। किसी के कानों में भी उसे पूर्ण

रूप से सुनने की सामर्थ्य नहीं है। इतना होने पर भी यदि कोई अपने बौद्धिक बल के अहंकार में श्री प्राणनाथ जी की महिमा को शब्दों में मूल्यांकित (आंकलन) करने का प्रयास करता है तो उसे प्रायश्चित्त की अग्नि में जलना पड़ेगा। इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति उसे सुनने की सामर्थ्य रखने का दावा करने की कोशिश करता है, तो वह भी प्रायश्चित्त की अग्नि में जलने के लिये विवश हो जायेगा।

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई को पढ़कर मन में यह संशय होता है कि क्या श्री प्राणनाथ जी की महिमा का गायन करना बन्द कर दिया जाय? इसका समाधान यह है कि उपरोक्त चौपाई में श्री जी की महिमा का मूल्यांकन करने को अपराध माना गया है, महिमा गायन करने को नहीं। परमधाम में विराजमान श्री राज जी की जैसी अनन्त महिमा है, वैसी ही अनन्त महिमा इस संसार में प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की है क्योंकि यह स्वरूप स्वयं श्री राज जी ने ही अपने आवेश स्वरूप से धारण किया है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति गंगोत्री के दिव्य जल को एक गिलास में भरकर यह तो कहने का अधिकार रखता है, कि यह गंगोत्री का दिव्य जल है किन्तु यह कदापि नहीं कह सकता कि सम्पूर्ण गंगोत्री का जल इसी गिलास में आ गया है। इसी प्रकार अपनी हथेली में कोई भी सातों सागरों के जल को न तो रख सकता है और न अपनी दोनों भुजाओं से समस्त आकाश का आलिंगन कर सकता है। ये दोनों कार्य अंशमात्र में ही सम्भव हो सकता है, पूर्ण रूप में नहीं। उसी प्रकार श्री प्राणनाथ जी की अनन्त महिमा को सीमा बद्ध करने का बौद्धिक प्रयास एक कुत्सित अपराध है, जिसे इस चौपाई में प्रायश्चित्त की अग्नि में जलने के दृष्टान्त से वर्णित किया गया है।

दुर्भाग्यवश, आज तथाकथित कुछ स्वयंभू विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा श्री प्राणनाथ जी की महिमा को निम्नतर बनाने का जो फैशन चल पड़ा है, वह अक्षम्य अपराध की श्रेणी में आता है। श्री जी को संत, कवि, महापुरुष, श्री देवचन्द्र जी के शिष्य आदि कहकर भी जब इन्हें सन्तोष नहीं हुआ, तो इन्होंने स्वयं को तो अन्तर्राष्ट्रीय सन्त कहा और श्री जी को राष्ट्रीय सन्त। कोई मंच से यह दावा करता है कि श्री प्राणनाथ जी ने तो मात्र पांच हजार सुन्दरसाथ को ही जगाया था, हमारे महाराज जी ने तो लाखों को जगाया है। किसी का कथन है कि श्री प्राणनाथ जी भी १२००० पारायण नहीं करवा सके, जो हमारे गादीपति महाराज जी ने कर दिखाया है।

यह कैसी विकृत मानसिकता है? क्या कोई अरबपति मुसलमान मुहम्मद साहब की गरीबी का मजाक उड़ा सकता है या कोई ईसाई अपने यीशू का इस प्रकार उपहास उड़ाकर

स्वयं को गौरवान्वित समझने का दुस्साहस कर सकता है? एक बढ़ई और एक दर्जी के पुरुषार्थ से बनायी हुई गादी में न तो कोई बौद्धिक शक्ति होती है और न आध्यात्मिक शक्ति, किन्तु वर्तमान समय में गादी का भय दिखाकर उसका महिमा मण्डन किया जाता है। उस पर अधिष्ठित होने वाले व्यक्ति को श्री प्राणनाथ जी या श्री देवचन्द्र जी के समकक्ष या भावातिरेक में उनसे भी बड़ा कहने का प्रयास किया जाता है, जो अक्षम्य अपराध है। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी को आचार्य परम्परा में सम्मिलित कर लेने तथा स्वयं को उनके समकक्ष बनाने से जागनी यात्रा नहीं चल पायेगी। आज आवश्यकता है कि समाज अज्ञानता के अन्धकार में भटकना बन्द करे और श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करके तारतम ज्ञान एवं चितवनी को समस्त संसार में प्रसारित करने का दृढ़ संकल्प ले। इसी में सबका हित है। अन्यथा गादीवाद की अन्धी खाई में गिरकर समाज इस अवस्था को भी प्राप्त हो सकता है कि वह अकर्मण्यता, अशिक्षा एवं नास्तिकता का मूर्तिमान स्वरूप दिखने लग सकता है अथवा अपने अतीत के गौरवमयी इतिहास को भी खो सकता है।

बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक।

जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान॥५६॥

अन्य धर्मग्रन्थों तथा महापुरुषों के कथनों में परब्रह्म को अनन्त प्रेम का स्वरूप कहा गया है। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का स्वरूप स्वयं परब्रह्म के द्वारा धारण किया गया है, अतः इन्हें संसार के सभी महापुरुषों से अलग समझना चाहिए। इनके हृदय में परब्रह्म के आनन्द अंग के स्वरूप श्यामा जी का निवास होने से इन्हें अति पवित्र स्वरूप वाला वर्णित किया गया है।

हद सबोंकी करी जुबांन, क्या कोई कहे ए सिफत जहान।

अब कहूं मैं इनकी बात, जो कहा आदम पाक जात॥५७॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा संसार के सभी धर्मग्रन्थों एवं महापुरुषों के ज्ञान की सीमा निर्धारित कर दी है कि किसकी पहुँच कहाँ तक है? सारा संसार इस स्वरूप की महिमा का वर्णन कैसे कर सकता है? जिस सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्यामा जी हैं, अब मैं उनकी महिमा का वर्णन किस प्रकार करूँ?

सो अफताली महंमद का भया, जो आदम ऐसा बुजरक कहा ।

ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूल की कही हद ॥५८॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का स्वरूप ऐसा महान है कि इस स्वरूप को हकी सूरत का भी पथ प्रदर्शक कहा गया है। श्री महामति जी को दिशा-निर्देश देने के लिये ही यह स्वरूप प्रकट हुआ है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि श्री महामति जी के धाम हृदय में जिस स्वरूप श्री प्राणनाथ जी (इमाम महंदी) ने विराजमान होकर लीला की है, उसमें तीनों सूरतों की महिमा समाहित हो जाती है।

भावार्थ- 'श्री प्राणनाथ' का तात्पर्य अक्षरातीत परब्रह्म से हैं। श्री महामति जी के धाम हृदय में 'प्राणनाथ' विराजमान हैं। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने श्री मिहिरराज जी या महामति जी को तारतम ज्ञान या निर्देशन दिया, श्री प्राणनाथ जी को नहीं, क्योंकि निर्देशक तो एक मात्र श्री प्राणनाथ जी ही है। जब वे श्री देवचन्द्र जी के धाम हृदय में विराजमान होते हैं तभी वे सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहलाते हैं।

जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए ।

ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख ॥५९॥

जब सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी की महिमा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता, तो श्री प्राणनाथ जी की महिमा को कैसे कहूँ? इन दोनों में एक ही अक्षरातीत श्री राज जी ने लीला की है, अतः इनकी महिमा एक समान है। इन दोनों के स्वरूप में लीला करने वाला परमधाम के श्री राज जी का आवेश स्वरूप ही है, जो परमधाम के प्रेम का रस सबको पिला रहा है। हे साथ जी! आप इनमें विराजमान आवेश स्वरूप को अपनी अन्तर्दृष्टि से पहचानिए।

ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम ।

और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्यांत ॥६०॥

यद्यपि तीनों सूरतों को अलग-अलग मुहम्मद साहब, ईसा रूह अल्लाह (आदम) या श्री देवचन्द्र जी एवं श्री महामति जी आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है, किन्तु ये तीनों सूरतें एकाकार होकर आखिरी इमाम या श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होती हैं। इनके अतिरिक्त संसार के अन्य सभी महापुरुष रूप प्राणी मृतकों की भांति अज्ञान रूपी नींद में सो रहे हैं। जब परब्रह्म, इमाम महंदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में परमधाम के ज्ञान रूपी अमृत रस का रसास्वादन करा देंगे, तो इस ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जायेगा और यह अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगा।

सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर।

जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर।।६१।।

प्रत्यक्ष रूप में दिखायी देने वाली जितनी वस्तुएं हैं, सभी प्रलय में नष्ट हो जाने वाली हैं। जिन्होंने धर्मग्रन्थों के मात्र बाह्य अर्थ को ही ग्रहण किया है, वे शरीर एवं उससे होने वाले कर्मकाण्ड से ऊपर नहीं जा सके हैं।

जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कहा तिन पर।

करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान।।६२।।

जिनकी दृष्टि बहिर्मुखी होती है, वे अपनी आत्मा एवं परब्रह्म के स्वरूप की पहचान नहीं कर पाते हैं। उन्हें कियामत के समय प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा। श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाने के लिये श्री राज जी के आदेश से इस पृथ्वी लोक एवं सात आकाशों वाले नश्वर ब्रह्माण्ड की रचना की गयी है।

पा. २६ सू. ६७ आ. ३ “अल्लजी खलक सब्अ समावातिन् तिबाकन् मा तरा फी खल्किर्ह्मानि मिन् तफावुतिन् फर्जिअिल् - बसर हल् तरा मिन् फुतूरिन्” अल्लाह ही है जिसने फिर उसने ऊपर तले सात आसमान बनाए। क्या तूं रहमान की कही बात में कुछ कमी देखता है या कोई दरार नजर आता है।

सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते।

अब खुदाए ने यों कर कहा, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या।।६३।।

कुर्आन में संकेतों में यह बताया गया है कि फरिश्तों के इस संसार में कियामत के आने का समय सात हजार वर्षों के पश्चात् होगा।

पा. ८ सू. ७ आ. ५४ इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी खलकस्समावाति वल्अर्ज की सित्ति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि युग्शिल्लैलन्नहार यत्लुबुह हसीसन् दवश्शम्स वल्कमर वन्नूजूम मुसख्खरातिम् - बिअम्रिही अला लहुल्खल्कु वल्अम्रु बतारकल्लाहु रब्बुल् - आलमीन” “ निःसंदेह खुदा ही है जिसने आसमानों और जमीन को छः (६) दिन में पैदा किया फिर अर्श (तख्त) पर जाकर विराजमान हुआ। वही रात से दिन को ढक लेता है, वह जल्दी से उसे खा लेती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमां तथा तारों को उत्पन्न किया है कि वह सब अल्लाह की हुक्मबरदारी में लगे हैं। यह मान लेना चाहिए कि हरेक पदार्थ को अल्लाह ने ही बनाया हुआ है। और आदेश भी अल्लाह का ही है। वही सारे संसार का पालन कर्ता और बड़ी बरकत वाला है। यह रब्बिल आलमिन बरकत वाला है।

पा. १२ सू. ११ आयत ६ “व मा मिन् दाब्बतिन् फिल्अर्जि इल्ला अलल्लाहि रिज्कुहा व यऽलमु मुस्तकर्हा व मुस्तौदअहा कुल्लुन् फी किताबिम् - मुबीनिन्” और जमीन में चलता-फिरता ऐसा कोई जीवधारी नहीं है जिसकी रोजी अल्लाह ही के जिम्मे न हो, और जिसके रहने की जगह और सौंपे जाने की जगह वह न जानता हो। सब कुछ लौह महफूज में दर्ज है।

“कुन फयकुन पारः ३ सूरः ३ आयत ५ “इस काहाल फिर फरमाया हो जा तो वह (इंसान उत्पन्न) हो गए। परब्रह्म ने कुर्आन में यह भी कहा है कि मैं ‘कुन्न’ से पैदा होने वाले धरती एवं आकाश के इस ब्रह्माण्ड से सर्वथा अलग है।

जेती कोई पैदाइस कुन, मोको तिन थें जानो भिन।

मैं ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ॥६४॥

कुन्न से उत्पन्न होने वाली जो भी जीव सृष्टि है, मुझे तुम उनसे अलग जानो। मैं न तो इनके अन्दर हूँ और न इनके साथ हूँ। इन जीवों के हृदय माया में बेसुध होते हैं अर्थात् ये न तो अपने स्वरूप को जानते हैं और न माया से परे हो पाते हैं।

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरो में नाहीं आप।

मैं इनों सो नहीं गाफिल, ए दुख सुख में रहे मिल ॥६५॥

कुर्आन में परब्रह्म ने कहा है, कि मेरा सांसारिक जीवों से मिलाप नहीं है। इन्हें मेरे विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है। ऐसे अज्ञानी जीव मुझे प्राप्त नहीं कर पाते। मैं इनकी तरह अज्ञान दशा में नहीं हूँ अर्थात् मैं पूर्ण रूप से जागृत अवस्था में हूँ। संसार के जीव माया के सुख एवं दुःख में भटकते रहते हैं।

सिरक इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं।

ऊपर से उतर्ग्या पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ॥६६॥

मैं इनकी नास्तिकता अथवा बहुदेव पूजा को अच्छी प्रकार से जानता हूँ। मेरा ज्ञान न होने से इन जीवों में नाम मात्र भी पवित्रता नहीं होती है। कुर्आन में कहा गया है कि परमधाम से अखण्ड ज्ञान रूपी जल का अवतरण हुआ, जिससे ब्रह्मसृष्टि एवं ईश्वरीय सृष्टि रूपी वृक्षों के बागों का बहुत भला हुआ अर्थात् तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्मसृष्टियों एवं ईश्वरीय सृष्टि ने आत्मिक आनन्द प्राप्त किया।

भावार्थ- पा. ६ सू. ७ आ. १६७ “वल्लजीन तद्भून् मिन् दूनिही ला यस्ततीभून् नस्सकुम् व ला अन्फुसहुम् यन्सुखन्” और जिनको तुम खुदा के सिवा पुकारते हो वह न तो तुम्हारी मदद की ताकत रखते हैं और न खुद की मदद कर सकते हैं। (मूर्तिया जड़ पदार्थ हैं व असमर्थ हैं।)

मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार।

इबन अब्बास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान।।६७।।

मुझे इन ब्रह्मात्माओं को महान शोभा देनी है। परमधाम के ज्ञान रूपी जल से इनके हृदय को बहुत आनन्द मिलेगा। अब्बास के पुत्र मुस्लिम ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि परमधाम का ज्ञान रूपी जल इन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिये ही आया है (आयेगा)।

भावार्थ- पा. १५ सू. १७ आ. ८५ “व यस्सअलूनक अनिरूहि कुलिरूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा अूतीतुम् मिनल्लुमि इल्ला कलीलन्” और मूसा से रूह के विषय में प्रश्न करते हैं तो कह देना कि रूह मेरे परवरदिगार ही की तरफ से आती हैं और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म-ज्ञान दिया गया है।

पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर।

पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और।।६८।।

कुर्आन में कहा गया है कि जिब्रील के पंख पर परमधाम से पांच नहरें (शक्तियां) अवतरित हुईं। इन पांचों की लीला अलग-अलग स्थानों पर हुई। इमाम महंदी श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त इसके भेद को अन्य कोई भी नहीं जानता है।

भावार्थ- पा. २६ सू. ७४ आयत ३६-४० सूर: मुदस्सिर

इल्ला असहाबल् - यमीनि(३६) फी अत्रातिन् यतसाअलून(४०) हक तआला ने ५ खिलकते पहनाये मोहबत मुहब्बत मारिफा तोहीद इमान इस्लाम “कुल्लु यमीन फी जन्ना-तिन यत सा अलून” मगर दाहिनी तरफ वाले लोग वे बहिश्त के बागों में (नहरों में) पूछते होंगे।

पा. २६ सू. ७६ आ. २१ “आलियहुम् सियाबु सुन्दुसिन् खुज्रुब्ब इस्तब्रकुन् टव हुल्लू असाविर मिन् फिज्जतिन् व सकाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरन्” उनके तन पर अतलश के कपड़े हैं तथा वे चाँदी के कंगन पहने हुए हैं। और उनका परवरदिगार उन्हें पाकीजा शराब पिलायेगा।

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में।

हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥६९॥

अखण्ड धाम से पांच स्वरूप रूपी पांच नहरों का अवतरण हुआ। ये पांचों नहरें श्री महामति जी के धाम हृदय रूपी सच्चे झरने में विराजमान हो गयीं। इन पांच नहरों के नामों में हिन्दुस्तान, बलख और मिश्र का नाम आता है। इन स्वरूपों से प्रकट होने वाले ज्ञान के द्वारा पत्थर के समान कठोर हृदय वाले जीवों को भी आनन्द मिला।

भावार्थ- हिन्दुस्तान में इमाम महंदा श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हुआ, जिनमें श्री राज जी की आवेश शक्ति अर्थात् नूर की लीला हुई। तफसीरे हुसैनी में वर्णन कि जबराईल अर्श से फर्श पर पांच दरिया लेकर चला जिनमें से एक हिन्दुस्तान में दूसरा बलख यानि अफगानिस्तान में, तीसरा दजला, चौथा फरात (इराक) अरबिस्तान में, पांचवां (मिस्र) अफ्रीका में ले आया। तथा अपने दोनों बाजूओं में मोमिनों की जमात को लेकर उतरा। बलख नवतनपुरी को कहा गया है, जहां परब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी का प्रकटन हुआ। मिश्र का तात्पर्य मदीने से है, जहां सत् अंग अक्षर ब्रह्म की आत्मा के स्वरूप मुहम्मद स. आये।

ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत पाया सबन।

दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥७०॥

कियामत के समय श्री महामति जी के धाम हृदय में इन पांचों नहरों (स्वरूपों) का मिलन हुआ। तब सभी ने आपस में विचार किया कि अब संसार को अखण्ड सुख का लाभ देना चाहिए। दजला और फरात इन दो नहरों को अलग कहा गया है। शब्दों का बाह्य अर्थ लेने से इन्हें एकत्रित नहीं माना गया है, क्योंकि गुह्यार्थ में वे भी श्री महामति जी के धाम हृदय में ही विराजमान हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में दजला और फरात से आशय जिब्रील तथा अस्माफील से है, जिनका मूल निवास सत्स्वरूप है। सत्स्वरूप की बहिश्त में परमधाम का ही प्रतिबिम्ब है, इसलिये कुर्आन में कहीं कहीं परमधाम को बहिश्त कह दिया गया है, जिसकी झलक श्री कुल्जुम स्वरूप में भी देखने को मिलती है। दजला और फरात को अलग कहने का आशय यह है कि जिब्रील और अस्माफील परमधाम से न आकर सत्स्वरूप से आये हैं। यहां दजला और फरात को ब्रज-रास मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि ब्रज में जो स्वरूप (आतम अक्षर जोस धनी धाम) था, वही रास में भी था। यहां तक कि 'तहां रास लीला करके, आए बरारब स्याम'

से यह स्पष्ट है कि अरब में वही अक्षर की आत्मा प्रकट हुई, जो ब्रज-रास में थी। इस प्रकार श्री महामति जी के धाम हृदय में सत् अंग-अक्षर ब्रह्म, आनन्द अंग-श्यामा जी, चिद्धन स्वरूप श्री राज जी का आवेश (नूर), जोश, स्वरूप जिब्रील तथा जागृत बुद्धि के स्वरूप इम्राफील का मिलन हुआ।

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे।

कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी॥७१॥

रंगमहल ही वह पर्वत है, जिसमें विराजमान मूल स्वरूप श्री राज जी के हृदय (स्रोत) से परमधाम के अखण्ड ज्ञान रूपी जल (श्री कुलजुम स्वरूप) का अवतरण हो रहा है। श्री महामति जी के धाम हृदय रूपी झरने में परमधाम का ज्ञान रूपी जल आकर शोभायमान हो रहा है। श्यामा जी का स्वरूप ही अखण्ड ज्ञान की वर्षा करने वाला वह बादल है तथा श्री महामति जी का धाम हृदय उसे आत्मसात् करने वाला पवित्र स्थल। इसी ज्ञानमय जल से संसार के सभी प्राणियों ने अखण्ड मुक्ति के आनन्द का जीवन पाया है।

भावार्थ- मारिफत (परम सत्य) स्वरूप श्री राज जी का हृदय ही तारतम ज्ञान, प्रेम एकत्व आदि सम्पूर्ण निधियों का मूल स्रोत है। रंगमहल या परमधाम के सम्पूर्ण पक्ष उनके हृदय के ही व्यक्त (हकीकत) स्वरूप हैं। 'बादल बरस्या रह अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन' खि. ६/२६ के इस कथन से स्पष्ट है कि श्यामा जी का हृदय ही वह बादल रूप रसना है, जिससे श्री कुलजुम स्वरूप का प्रकटीकरण होता है।

उतस्या पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जे कछू ए चाहे।

इन वीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप॥७२॥

श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में अवतरित होने वाला यह दिव्य ज्ञानमयी जल ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम, ईश्वरीय सृष्टियों को अक्षर धाम (सत्स्वरूप) तथा जीव सृष्टि को निराकार से परे बेहद में ले जाने वाला है। इस जल को पीकर अर्थात् आत्मसात् करके, उसके अनुसार आचरण करने वाला व्यक्ति परब्रह्म का प्रत्यक्ष दर्शन, वार्ता, अखण्ड सुख की प्राप्ति आदि सभी कुछ उपलब्धि कर सकता है, जो उसकी आत्मिक इच्छा के रूप में प्रकट होता है। श्री कुलजुम स्वरूप की ज्ञान शक्ति के रूप में स्वयं अक्षरातीत श्री राज जी हैं जो श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर लीला कर रहे हैं, फिर भी वे संसार से बहुत दूर हैं और मायावी जीवों की पहुँच से पूर्णतया परे हैं।

**इन समें उतस्या आजूज, और संग इनके माजूज।
पीछे उतस्या जबराईल, लेवे सबको न करे ढील॥७३॥**

कियामत की इस मनोहर वेला में श्री कुल्जुम स्वरूप के दिव्य ज्ञान के प्रकाश में याजूज और माजूज अर्थात् शरिअत एवं तरीकत का रहस्य सबको विदित हो चुका है। सभी समर्पण से परिपूर्ण प्रेम लक्षणा भक्ति रूप प्रेममयी चितवनी के मार्ग पर चलकर अष्ट धातु रूपी शरीर एवं ब्रह्माण्ड से स्वयं को परे कर रहे हैं तथा आत्मिक आनन्द में विहार कर रहे हैं। इसके पश्चात् जिब्रील फरिश्ता भी अवतरित होकर सभी को परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान की छत्रछाया में ला रहा है। इस कार्य में वह नाम मात्र भी लापरवाही (अकर्मण्यता) नहीं दिखलाता।

भावार्थ- यदि याजूज और माजूज का बाह्य अर्थ दिन और रात्रि ही किया जाय, तो ये तो सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही है। कियामत के समय ही इनके प्रकट होने का क्या औचित्य है? वस्तुतः तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब हकीकत एवं मारिफत (ज्ञान-विज्ञान) का मार्ग प्राप्त हो जाता है तो प्रेम एवं समर्पण के द्वारा अष्टधातु की दिवाल टूट जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप अखण्ड आनन्द का द्वार मिल जाता है। कियामत से पूर्व जब तक तारतम ज्ञान का अवतरण ही नहीं हुआ था, तब तक सभी कर्मकाण्ड एवं उपासना (शरिअत तथा तरीकत) में ही उलझे हुए थे। संसार के लोग अहंकार की ग्रन्थि को तोड़कर न तो समर्पण के स्वर्णिम पथ पर चलते थे और न शरीर एवं संसार से परे हो पाते थे। श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा समर्पण, विरह-प्रेम के मार्ग ने उन्हें याजूज-माजूज के उन बन्धनों से मुक्त कर दिया है, जो आज दिन तक छिपकर सभी को अपने आगोश (आलिंगन) में जकड़े हुए थे। इसे ही याजूज-माजूज का प्रकट होना कहते हैं।

**एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम॥७४॥**

नवतनपुरी ही मक्का है, जिसमें चाकला मन्दिर की गादी पर काले पत्थर के समान कठोर हृदय वाले बिहारी जी आसीन (विद्यमान) हैं। इसी नवतनपुरी में श्री मिहिरराज जी भी हैं, जिनके धाम हृदय में अक्षरातीत श्री राज जी का निवास है। इनके ही तन से श्री कुल्जुम स्वरूप (कुर्आन) के ग्रन्थों रास, प्रकाश, शट्क्रतु आदि का अवतरण हुआ है। इनके ही अन्दर श्यामा जी (इब्राहीम पैगम्बर) का भी निवास है। इनके द्वारा अवतरित होने वाले ब्रह्मज्ञान की निर्मल धारा में स्नान करने वाले ब्रह्ममुनि परमधाम के आनन्द में विहार करते हैं।

**पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रहेवे किन।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए॥७५॥**

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक जो भी योगी-यति, पीर-पैगम्बर हो गये हैं उनमें से कोई भी ऐसा नहीं बचा है, जो श्री जी की आध्यात्मिक छत्रछाया में नहीं आया हैं। अस्माफील ने अपने तारतम ज्ञान के एक सूर में संसार के अज्ञान रूप अहंकार को नष्ट कर दिया तथा दूसरे सूर में श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान फैलाकर समस्त ब्रह्माण्ड के लिये अखण्ड मुक्ति की प्राप्ति का सौभाग्य प्रदान किया।

**ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी।
बागोंने ताजगियां पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई॥७६॥**

इन पांच स्वरूपों के एकाकार स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के द्वारा प्रकट होने वाले श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से संसार ने अखण्ड मुक्ति का सुख पाया। परमधाम के बाग कहे जाने वाले ब्रह्ममुनियों ने श्री प्राणनाथ जी के द्वारा तारतम ज्ञान का रस प्राप्त कर परमधाम के आनन्द सागर में गोता लगाया।

**सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर॥७७॥**

ब्रह्ममुनियों को परमधाम का बाग कहा गया है। इनकी कृपा से ही संसार के जीवों ने भी परब्रह्म को अपना आराध्य माना और बेहद का सुख प्राप्त किया। सत्य और झूठ को अलग-अलग करके मैं इस रहस्य को और भी अधिक स्पष्ट कर देता हूँ।

**उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई॥७८॥**

कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों को अंगूर का बाग और ईश्वरीय सृष्टि को खजूर का बाग कहा गया है। जीव सृष्टि को अन्न की खेती के समान कहा गया है। ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से ही जीव सृष्टि को भी अखण्ड धाम की मुक्ति प्राप्त करने का गौरव मिला।

भावार्थ- अंगूर का फल कोमल एवं रस से भरा होता है। यही कारण है कि उसकी उपमा ब्रह्मसृष्टियों से की गयी है, क्योंकि उनके हृदय में कोमलता एवं प्रेम का मधुर रस पर्याप्त मात्रा में होता है। 'मोमिन दिल कोमल कहा, तो अर्स पाया खिताब' श्रृं. २०/१५ का कथन यही

सिद्ध करता है। खजूर भी मीठा होता है किन्तु उसमें अंगूर की भांति कोमलता एवं रसीलापन नहीं होता। अतः उसकी उपमा ईश्वरीय सृष्टि से की गयी है, जो ईमान (विश्वास) की मिठास से तो परिपूर्ण होती है किन्तु उसमें ब्रह्मसृष्टियों के प्रेम की अपेक्षा भक्ति की प्रधानता होती है। अन्न की खेती को जीव सृष्टि से ऊपमा देने का कारण यह है कि उसमें छिलका होता है और उसे पकाये बिना खाना भी कठिन होता है अर्थात् जीव सृष्टि का हृदय कठोर, शुष्क एवं काम, क्रोध, अहंकार आदि विकार रूपी छिलकों से ग्रसित होता है।

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत।

तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज इन ठौर ॥७९॥

कियामत के समय ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि श्री प्राणनाथ जी के द्वारा अखण्ड आनन्द का रसपान करके अपने-अपने धाम जायेगी। जीव सृष्टि भी बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगी तथा श्री जी को अक्षरातीत मानकर उनकी आराधना करेगी।

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई।

एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर ॥८०॥

इस ब्रह्माण्ड की समस्त जीव सृष्टि ने अखण्ड मुक्ति का फल प्राप्त किया। बाग कही जाने वाली ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि ने अपने अखण्ड धाम का सुख प्राप्त किया। श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा श्री राज जी के नूर स्वरूपी प्रेम, आनन्द, एकत्व आदि की दिव्य वर्षा हुई। छत्रसाल जी कहते हैं कि हे साथ जी! प्राणेश्वर अक्षरातीत की इस दिव्य लीला को देखिए।

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥८१॥

जो तारतम ज्ञान का प्रकाश लेकर अटूट विश्वास के साथ प्रियतम अक्षरातीत के सम्मुख हुआ, उसकी प्रियतम के दीदार (दर्शन), वार्ता तथा आनन्द की सहभागिता की इच्छा पूर्ण हुई।

॥ प्रकरण ॥८॥ चौपाई ॥३१०॥

लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए।

कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए ॥१॥

कुर्आन में परब्रह्म के कहे हुये वचन हैं जिसके सिपारों, सूरतों तथा आयतों में स्थान-स्थान पर कियामत की पहचान बतायी गयी है। हे साथ जी! आप कुर्आन खोलकर उन्हें देखिए।

**अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरानथें किन।
सो रूहअल्ला के इलम से, जाहेर हुई सबन॥२॥**

आज दिन तक कर्आन से कोई यह जान नहीं पाया था कि कियामत का वास्तविक समय क्या है? किन्तु अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में कियामत के समय तथा उसके निशानों की स्पष्ट पहचान सबको हो गयी है।

**सबो सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर॥३॥**

कुर्आन के सभी सिपारों में कियामत का संकेतों में वर्णन लिखा हुआ है। किन्तु कुर्आन के इस गुह्य रहस्य को श्री प्राणनाथ जी की कृपा के बिना कैसे जाना जा सकता है।

**आगूं नव सदीय के, कहा होसी रूहों मिलाप।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप॥४॥**

कुर्आन में लिखा है कि नवी (नौवीं) सदी के पश्चात् परमधाम की आत्माओं का जागनी लीला में मिलन होगा। यह मिलन बहुत महान गरिमा वाला होगा और इस लीला में स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म आखरूलज्जमां इमाम महदी, श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट होकर सबको दर्शन देंगे।

भावार्थ- पा. १७ सू. २२ आ. ४७ “ व यस्तऽजिलूनक बिल्अजाबि व लंय्युख्लिफल्लाहु वऽदह व इन्न मौमन् इन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुद्दून” और यह लोग अजाब (सजा) के लिये जल्दी कह रहे हैं कि कहां है तुम्हारा खुदाई अजाब क्योंकि खुदा अपने वायदे के खिलाफ नहीं करता है। बेशक परवरदिगार का एक दिन तुम्हारे हिसाब से हजार वशों के बराबर है।

कुर्आन पा. ६ सू. ५ आ. २० “व इज् काल मूसा लि कौमिही याकौमिज्कुरु निऽमतल्लाहि अलैकुम् इज् जअल फीकुम् अम्बियाअ व जअलकुम् मुलूकन् द'व आताकुम् मालम् युअ्ति अहदम्मिनल्-अलामीन” और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि ऐ भाईयों! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो कि उसने तुममें पैगम्बर पैदा किये और तुमको बादशाह भी बनाया और तुमको वह नेमतें दीं जो दुनिया जहान के लोगों में से किसी को नहीं दीं।

**बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे।
गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे॥५॥**

जब दसवीं सदी में सवा नौ वर्ष बाकी रहेंगे अर्थात् हिजरी सन् नौ सौ नब्बे वर्ष तथा नौ महीने बीत जाएंगे, तो उस समय परब्रह्म पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले ब्रह्ममुनियों के समूह को लेकर श्री राज जी के आनन्द अंग श्री श्यामा जी का प्रकटन श्री देवचन्द्र जी के तन में होगा।

भावार्थ— हिजरी साल ६६० में देवचन्द्र जी का जन्म हुआ और १० वर्ष पश्चात् ११ माह, ग्यारहवें वर्ष में परमात्मा की खोजबीन की। अतः ६६० + ६ वर्ष + १ वर्ष एवं + ३ माह = १००० फज्र पूर्ण होता है। कुर्आन, हदीस में इसको अलिफ सानी कहा है जिसका अर्थ होता है १ हजार १ में आने वाला। मुस्लिम सेख अहमद सरहिन्दी को मुजदिद अलिफ कहते हैं। जबकि उनका जन्म ६२७ हिजरी में हुआ। जो कि १ हजार से ७३ वर्ष कम है। अतः मारवाड़ में प्रदुर्भाव करने वाले श्री देवचन्द्र जी सच्चे अलिफसानी है। यानि १ हजार वर्ष में प्रगट होने वाले श्री विजयाभिनन्द या दूसरे ईसा रूहुल्लाह का पहला जामा।

**रूहअल्ला रोसन ज्यादा कहा, दूजा अपना नाम।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम॥६॥**

कुर्आन में यह भी लिखा है कि श्री श्यामा जी के दूसरे तन (श्री मिहिरराज जी) में ज्ञान का प्रकाश अधिक होगा। इस स्वरूप में उन्हें इमाम महदी के रूप में जाना जाएगा और जो इन्हें परब्रह्म का स्वरूप मानकर स्वयं को समर्पित करेगा, उसे अपनी बंदगी का हजार गुना फल मिलेगा।

भावार्थ— एक की बंदगी का हजार गुना फल मिलने का कथन आलंकारिक है। इसका आशय यह है कि तारतम ज्ञान के अवतरण से पहले सारा संसार परब्रह्म की पहचान के बिना शरीयत और तरीकत के द्वारा भक्ति किया करता था। उसकी स्थिति आंख बंदकर फल तोड़ने जैसी थी, किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में अब परब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला की पहचान हो गयी है तथा यह भी विदित हो चुका है कि जिसको हम सृष्टि के आरम्भ काल से खोजते आ रहे हैं, वही परब्रह्म अब अपने आवेश स्वरूप से श्री महामति जी के धाम हृदय में लीला कर रहे हैं, तो उनके मन में प्रेम, समर्पण और विरह की भावना वैसे ही प्रज्ज्वलित हो जाती है, जैसे ब्रज में अपने सामने श्री कृष्ण जी को पाकर गोपियों के हृदय में प्रेम उमड़ पड़ता था।

इस प्रकार स्वाभाविक है कि निद्रा अवस्था में जितने समय में भक्ति की जाती है, जागृत अवस्था में उतने ही समय की भक्ति हजार गुना फल देती है।

बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित।

हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरान में तित॥७॥

कुर्आन में लिखा है कि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर ग्यारहवीं सदी (वि. सं. १७४५ तक) में परमधाम का सम्पूर्ण ज्ञान अवतरित होगा। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी के द्वारा श्री राज जी की अखण्ड निधियों को वि. सं. १६७८ से १७४५ तक आत्मसात् करके सुन्दरसाथ को निर्देशित किया गया। यह प्रसंग कुर्आन में जैसा का तैसा लिखा है।

पा. ३० सू. ६७ आयत ३-४ “लैलतुल - कदरि खैरुम् मिन् अल्फि शहरिन्(३) तनज्जलुल्-मलाइकतु वर्सुहु फीहा विइज्जि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्(४)” शब्द कद्र हजार माह से बेहतर है। इसमें फरिश्ते व रूहें हर काम के लिए अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते हैं।

एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन।

मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन॥८॥

श्री श्यामा जी ने जो श्री देवचन्द्र जी का पहला तन धारण किया, उसमें उनके दो पुत्र हुये। वंशानुगत पुत्र (नसली) बिहारी जी हुए और धर्मपुत्र (नजरी) श्री मिहिरराज जी। कुछ समय के पश्चात् बिहारी जी गादीपति बनकर सत्यधर्म से अलग हो गये और दूसरे पुत्र श्री मिहिरराज जी को सन्तानवे वर्ष के पश्चात् अर्थात् वि. सं. १७३५ में सनद ग्रंथ के रूप में परमधाम की अखण्ड निधि प्राप्त हुयी।

भावार्थ- गादी पर विराजमान होने के पश्चात् बिहारी जी आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान से पूर्णतया दूर ही रहे। वि. सं. १६३८ में श्री श्यामा जी ने श्री देवचन्द्र जी का पहला तन धारण किया। उसके सन्तावने वर्ष के पश्चात् इस तन में वि. सं. १७३५ में सनद ग्रन्थ का अवतरण हुआ।

किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत।

महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत॥९॥

अनूपशहर में श्री महामति जी के धाम हृदय से श्री राज जी के जोश एवं आवेश द्वारा अखण्ड ज्ञान देने वाले सनद ग्रन्थ का अवतरण हुआ। इसी ज्ञान के आधार पर ब्रह्मात्माओं ने

औरंगजेब बादशाह से धर्मयुद्ध किया। जब सूरत से श्री जी जागनी कार्य के लिये निकले तो इस अन्तराल की यह महान घटना है।

भावार्थ- 'गैब' का तात्पर्य मन, बुद्धि से परे त्रिगुणातीत स्थान से है। इसका आशय परमधाम से होता है।

सामान्यतः जब तारतम ज्ञान का अवतरण होता था, तो यही समझा जाता था कि श्री महामति जी कह रहे हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि मूल स्वरूप अक्षरातीत ही अपने आवेश स्वरूप से महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर कह रहे थे, जिसको मुख से व्यक्त करने में जिब्रील और अस्माफील की विशेष भूमिका थी। इस तथ्य को श्री कुलजुम स्वरूप की इन चौपाईयों से जाना जा सकता है-

ये नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार ।

ये सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार ॥ कलश हि. 24/34

तुम देखत हो मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर ।

अंतरगत ब्रह्माण्ड तें, सदा साहेब के हजूर ॥ कीर्तन 65/18

ए बात होत बका मिने, हम खिलवत के माहें। सागर 98/३६ का कथन भी इसी ओर संकेत करता है।

उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण में 'गैब' से अवतरित होने का यही आशय है।

पाँच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दर्ई।

ए साल निन्यानवे लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई॥१०॥

अक्षरातीत, परमधाम तथा श्री प्राणनाथ जी की पहचान देने के लिए श्री राज जी के आदेश से पांच ग्रन्थों रास, प्रकाश, शटरूती, कलश तथा सनंद ग्रन्थ का अवतरण हुआ। इस समय तक (दूसरे तन) श्री श्यामा जी को तन धारण किये हुये निन्यानवे वर्ष हो चुके थे अर्थात् वि. सं. 9७३७ का समय था। जब श्री जी रामनगर में जागनी लीला कर रहे थे, इस लीला काल में परमधाम के गुह्य ज्ञान को प्रकाशित करने वाले अनेक प्रकरण अवतरित हुये।

लकब इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल।

जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल॥११॥

रामनगर में श्री श्यामा जी के दूसरे तन तक की अवधि सौ साल की हो गयी थी अर्थात् वि. सं. 9७३८ का समय था। इस समय उन्हें कतेब पक्ष के इद्रीस की शोभा मिली।

इसके तीन वर्ष पूर्व ही अनूपशहर में सनद ग्रन्थ के तीस प्रकरण परब्रह्म के आदेश से अवतरित हुये थे, जिनमें कुर्आन के तीस सिपारों का भाव दर्शाया गया था।

भावार्थ— सनद ग्रन्थ के ४२ (ब्यालिस) प्रकरणों में १२ (बारह) प्रकरण वेद पक्ष से सम्बन्धित हैं तथा ३० (तीस) प्रकरण कुर्आन से सम्बन्धित हैं। जिस प्रकार इद्रीस पैगम्बर ने कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों को सिलकर चादर का निर्माण किया था, उसी प्रकार श्री जी ने वेद-कतेब में छिपे हुए ज्ञान के मोतियों को एकत्रित कर तारतम ज्ञान के सूत्र में एक ऐसी माला का निर्माण किया, जिसको धारण करने वाला सरलतापूर्वक अक्षरातीत की पहचान कर सकता है।

यद्यपि श्री प्राणनाथ जी की उपमा किसी से नहीं दी जा सकती, किन्तु इद्रीस पैगम्बर की तरह ज्ञान रत्नों के संचयन के कारण लौकिक भावों में उन्हें इद्रीस की उपमा दी गयी।।

सरह इरब्सास ११२ पारा ३० आयत १-३ तफ्सीर हुसैनी पन्ना -६१८ में बयान है।

नोट : इस भावार्थ में दी गयी कुर्आन की आयतों और तफ्सीर हुसैनी का बयान देखने के लिए प्रकरण १८ चौपाई ४ के भावार्थ का अवलोकन करें।

**टोना कहा महंमद पर, अग्यारे गाँठ लगाए।
वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए॥१२॥**

सरह इरब्सास ११२ पारा ३० आयत १-३ में कहा गया है कि एक यहूदी युवती ने मुहम्मद स. के बालों की चोरी की और उस पर ग्यारह गांठें लगाकर उनका अहित करने की भावना से टोना कर दिया। इस कथानक का सूक्ष्म आशय यह है कि जब तक ग्यारहवीं सदी नहीं आ जाती, तब तक मुहम्मद स. के बालों में लगायी गयी ग्यारह गांठें भी नहीं खुलेगी और टोना अर्थात् इस भ्रम रूप जगत से मुक्त होकर कोई अपनी आत्मा को जागृत भी नहीं कर सकता है।

भावार्थ— पार: ३० सूर: फलक ११३ “कुल् अअूजु बिरब्बिल् - फलकि(१) मिन् शरि मा खलक(२) व मिन् शरि गासिकिन् अिजा वकब(३) व मिन् शरिन्नफ्फासाति फिल्अुकदि(४) व मिन् शरि हासिदिन् अिजा हसद(५)” अर्थात् ऐ पैगम्बर! कहो कि पनाह (शरण) लेता हूँ सुबह के मालिक की, तमाम सृष्टि की बुराईयों से, और अंधेरी रात की बुराई से जबकि वह छा जाय, और ताबिज गण्डों पर पढ़ पढ़कर फूँकने वालियों (औरतों) की बुराई से, और ईर्ष्या (हसद) करने वाले की बुराई से जब वह ईर्ष्या करे।

पार: ३० सूर: फलक ११४ “कुल् अअूजु बिरब्बिन्नासि(१) मलिकिन्नासि(२) इलाहिन्नासि(३) मिन् शरिल् - वसूवासि अल्खन्नासि(४) अल्लजी युवसूविसु फी

सुदूरिन्नासि(५) मिनल्जिन्नति वन्नासि(६)” अर्थात् ऐ पैगम्बर! कहो कि मैं शरण माँगता हूँ लोगों के परवरदिगार की, लोगों के बादशाह (अल्लाह) की, लोगों के पूज्य (इलाह) की, उस शैतान की बुराई से जो प्रेरणा दे और छिप जावे, वह शैतान जो लोगों के दिलों में वसबसा (दुष्प्रेरणा) डालता है, जिन्नों में से हो या आदमियों में से इन सबकी बुराईयों से पनाह माँगता हूँ।

सूर: फलक आयत १-५, सूर नास आयत १-६ कि उपर्युक्त दोनों सूरों को मिलाकर कुल ११ आयते बनती है। जिसकी व्याख्या तफसीरे हुसैनी के पृष्ठ संख्या ६१८ में कहा गया है। बड़ा कयामतनामा प्रकरण १७ चौपाई संख्या ४ के भावार्थ में “तफसीर ए हुसैनी पन्ना -६१८ का बयान” के अवलोकन करें। इन ११ आयतों को पढ़ने से मुहम्मद साहब के ऊपर किया गया जादू उतरता गया। बातिनी में इससे तात्पर्य ११ वीं सदी में प्रकट होने वाले इमाम महदी और उनके ज्ञान के प्रादुर्भाव से है।

**दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठे सब।
आमर महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब॥१३॥**

जब ग्यारहवीं सदी पूर्ण होती है, तो टोने की सभी ग्यारह गांठें खुल जाती हैं। इस प्रकार मुहम्मद स. ने जो परब्रह्म का निर्देश व्यक्त किया था, कि कियामत के समय इमाम महदी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म आएंगे और उनका अलौकिक तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) भी प्रकट होगा। मुहम्मद स. का वह कथन अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ है और सभी ब्रह्ममुनियों ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में परमधाम की अनुभूति की है।

**दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी कयामत।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत॥१४॥**

कुर्आन में जो दस और दो बारह बुजों का वर्णन किया गया है वह बारहवीं सदी में कियामत के आने के लिये दर्शाया गया है। शब्दों के बाह्य अर्थ में बंधे रहने वाले कुर्आन के विद्वान कियामत के इस महान समय को भला कैसे जान सकते हैं?

**दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक।
आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक॥१५॥**

कुर्आन के सूरा अल फज्र में कहा गया है कि दसवीं और ग्यारहवीं सदी में दो महान महिमा वाले सद्गुरु (हादी) का प्रकटन होना है। ये कियामत अर्थात् आखिरी संयम में अपने अलौकिक ज्ञान से समस्त जगत को परब्रह्म के चरणों में पहुँचायेंगे।

भावार्थ- सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का जन्म वि. सं. १६३८ हिजरी सन् ६६० अर्थात् दसवीं सदी में हुआ था। इसी प्रकार श्री मिहिरराज जी का जन्म वि. सं. १६७५ अर्थात् हिजरी सन् १०२७ में ग्यारहवीं सदी में हुआ था। इस प्रकार का कथन तीसरे सिपारे में भी वर्णित है।

पारः ३० सू. ८६ आ. १-४ इन आयतों का अर्थ प्रकरण २२ चौपाई संख्या ४८ में देखें।

**इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफ़सीर।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर॥१६॥**

कियामत की घड़ी में होने वाली जागनी लीला के समय की भी स्पष्ट विवेचना कर देता हूँ। इसमें ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष, बारहवीं सदी के तीस वर्ष तथा आगे पुलसिरात के सत्तर वर्ष आते हैं।

**इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब।
पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब॥१७॥**

ग्यारहवीं के अन्तिम दस वर्षों अर्थात् वि. सं. १७३५-१७४५ में ब्रह्मसृष्टियों ने परमधाम का मार्ग अपनाया। बारहवीं के तीस वर्षों (वि. सं. १७४५-१७७५ तक) में विशेष रूप ईश्वरीय सृष्टि के साथ जीव सृष्टि की जागनी हुई। इसके पश्चात् आगे के सत्तर वर्षों (वि. सं. १७७५-१८४५ तक) में कर्मकाण्ड की प्रधानता रही तथा ईश्वरीय सृष्टि के साथ जीव सृष्टि में तारतम ज्ञान का प्रकाश पहुँचा (पहुँचेगा)।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण में कथित फरिस्तों का तात्पर्य ईश्वरीय सृष्टि से है, भगवान विष्णु से नहीं क्योंकि उनके द्वारा तारतम ज्ञान ग्रहण करते ही ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जायेगा।

**पीछे तेरहीं में उठ खाड़े, सुख कायम पोहोंचे सब।
आठों भिस्त विवेकसों, हुए नजरो न छूटे अब॥१८॥**

इसके पश्चात् तेरहवीं सदी में संसार के जीव तारतम ज्ञान से जागृत होकर परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास (ईमान) रखने के कारण अखण्ड सुख का अनुभव करेंगे। अपने-अपने विवेक के अनुसार आचरण करके जब सभी जीव महाप्रलय के पश्चात् आठों बहिस्तों में पहुँचेंगे, तो वे अक्षर ब्रह्म की दृष्टि से एक पल के लिये भी दूर नहीं होंगे अर्थात् यह सारा ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म की दृष्टि में बेहद मण्डल में अखण्ड हो जायेगा।

॥ प्रकरण ११ ॥ चौपाई ॥३२८॥

**चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी में दिल में रखी।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत॥१॥**

कुर्आन के चौथे सिपारे में लिखे हुए ज्ञान के गहन प्रकाश को मैंने अपने हृदय में धारण कर लिया है। उसके गुह्य रहस्यों को अब मैं ब्रह्मसृष्टियों के लिये प्रकट कर रहा हूँ, क्योंकि उसे स्पष्ट करने का यही उचित समय है।

**केतों के मुंह उजले भाए, केतों के मुंह काले कहे।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर॥२॥**

चौथे सिपारे में इस प्रकार लिखा है कि कियामत के समय कुछ लोगों के मुख उज्ज्वल हो जायेंगे, तो कुछ के मुख काले हो जायेंगे। बहुत से इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) पर विश्वास लायेंगे, तो कई उनसे विमुख भी रहेंगे।

**हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे॥३॥**

परब्रह्म ने अपने आदेश से श्री कुल्जुम स्वरूप के ग्रन्थ रास, प्रकाश एवं कलश का अवतरण किया है। इससे काफिर (बिहारी जी) नाराज हैं और उसको छिपाये रखने का निर्देश देते हैं (न फैलाने के लिये क्रोध पूर्वक कहते हैं)। जो रास और कलश ग्रन्थ को नहीं मानता है, वह निश्चित रूप से काफिर (नास्तिक) हैं, परब्रह्म के आदेश को नहीं मानने वाला है।

**काफर दिल में कीना आनें, अंजील तौरेत पर मार ताने।
जो खुदाए का पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर॥४॥**

बिहारी जी श्री कुल्जुम स्वरूप के अवतरण से बहुत ही नाराज हैं। वे रास (इंजील) तथा कलश (तौरेत) के ऊपर व्यंग्य करते हुए कहते हैं, कि यह कलश नहीं अपितु क्लेश (दुःख रूपी) है। परब्रह्म के संदेश वाहक को न मानने वाला निश्चित रूप से नास्तिक (अवज्ञाकारी) है।

**जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें।
उनसे जो हूए मुनकर, सोई गिरो कही काफर॥५॥**

जो लोग अपने मुख से तो कहते हैं कि हम पैगम्बर एवं कुर्आन को मानते हैं किन्तु कियामत के आने पर उन्हें विश्वास नहीं होता है। वे अपनी शरिअत को थोपने के नाम पर

सत्य धर्म के प्रति कपट रखते हैं और सत्य को स्वीकार नहीं करते हैं, वे निश्चित रूप से काफिर (नास्तिक) हैं।

भावार्थ- इस प्रकरण की चौ. ३ और ४ में बिहारी जी तथा उनके अनुयायियों को काफिर कहा गया है किन्तु इस पांचवी चौपाई में औरंगजेब और उसके धर्माधिकारियों शेख इस्लाम, आकिल खान, रिजवी खान आदि तथा औरंगाबाद के फतह मुहम्मद आदि को काफिर कहा गया है, जो मात्र शरीयत को ही बलपूर्वक थोपना चाहते हैं। उन्हें किसी भी स्थिति में हकीकत-मारिफत का ज्ञान स्वीकार नहीं है। आगे की छठी तथा सातवीं चौपाई में भी यही प्रसंग है।

मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत।

फंद माहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी पड़े कुफार॥६॥

जिन्होंने परब्रह्म के आदेश से भेजे हुए वसीयतनामों एवं रुक्कों के माध्यम से कियामत के आने के संदेश को ठुकरा दिया, उन कट्टर पन्थी लोगों ने इमाम महदी (श्री जी) के रूप में आये हुए परब्रह्म की सानिध्यता का स्वर्णिम अवसर खो दिया। वे माया के दुःखमयी बन्धनों में बंध गये तथा नास्तिकता एवं मृत्यु के भंवर (चक्र) में फंसकर विनाश को प्राप्त हो गये।

उस्तुवार न पाई सुंनत, ए जो हुए बदबखत।

सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन॥७॥

इमाम महदी के स्वरूप में आने वाले परब्रह्म की पहचान न कर पाने वाले ये कट्टर पन्थी लोग दुर्भाग्यशाली हैं क्योंकि सत्य-धर्म पर दृढ़ता से चलने वाले ब्रह्ममुनियों का मार्ग (हकीकत-मारिफत) इन्हें प्राप्त नहीं हो सका है। कुर्आन में ब्रह्ममुनियों को ब्रह्मज्ञान के तेज से परिपूर्ण उज्ज्वल मुख कहा गया है। उन्होंने सत्य का मार्ग अपने समूह से पाया होता है अर्थात् परब्रह्म के द्वारा उनके समूह में सत्य ज्ञान प्रकट किया जाता है, जिसे वे आत्मसात् कर लेते हैं।

नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्त का दिन।

अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत॥८॥

कुर्आन-हदीसों में कहा गया है कि नवीं सदी के पश्चात् दसवीं, ग्यारहवीं सदी में अखण्ड ज्ञान का प्रकाश होगा और सबको बहिश्तें मिलेंगी। दसवीं सदी के पश्चात् तेरहवीं सदी में संसार को बहिश्तें प्राप्त होगी। इस प्रकार मुहम्मद स. की कही हुई सभी बातें सत्य सिद्ध होगी।

भावार्थ- अरबी भाषा में अरफा का अर्थ ६ होता है। इसका दूसरा अर्थ मिलन भी होता है। शरीयत की दृष्टि से देखा जाय तो रमजान के महीने में ६वीं तारीख (अरफा) के पश्चात् ईद्-ऊल जुहा अर्थात् बकरीद का त्योहार होता है, जिसमें अपनी तृष्णाओं तथा अहंकार को त्याग कर परब्रह्म से प्रेम करने का व्रत लेने का नियम होता है किन्तु इसका विकृत अर्थ करके निरपराध पशुओं का वध किया जाता है। हकीकत की दृष्टि से नवमी सदी के पश्चात् दसवीं सदी में श्यामा जी का परमधाम की आत्माओं के साथ इस संसार में प्रकटन होता है, जिसके लिये अरफा ईद शब्द का प्रयोग होता है। 'नवमी आगे अरफा ईद कही' का यही आशय है। बी. सा. २/१८, १९ का यह कथन इसी सन्दर्भ में है-

जब जनमे मारवाड़ में, घर अति आनन्द नर नार ।

यह बधाई ब्रह्माण्ड में, त्रिगुण समेत विस्तार ॥

सुखदाई सबन को, अखण्ड करन हार ।

विश्व बन्दे अक्षर लों, सुकें परीक्षित सो कह्यो विचार ॥

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप।

होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार ॥१८॥

ग्यारहवीं सदी में जागनी लीला के प्रकाश में परमधाम की आत्माओं का मिलन होगा। इस समय श्री महामति जी के धाम हृदय में तीनों सूरतों बसरी, मल्की तथा हकी का मिलन होगा और इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबको परब्रह्म का साक्षात् दर्शन होगा।

ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके।

सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त ॥१०॥

ये ब्रह्ममुनि परमधाम के रहने वाले हैं। संसार का कोई भी इनकी समानता नहीं कर सकता है। इनका मुख परमधाम के ज्ञान से सर्वदा ही उज्ज्वल रहता है। ये परब्रह्म के प्रेम में निरन्तर डूबे रहने वाले हैं। इन्होंने संसार में अपने प्राणेश्वर को पाने के लिये तरह-तरह के कष्टों को सहन किया है।

जो गुजरया बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत।

ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मै कहे महंमद ॥११॥

श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्मात्माओं के मध्य जागनी लीला में जो कुछ भी घटित हुआ है, उसकी वास्तविकता मुहम्मद स. के द्वारा कहे गये कुर्आन में संकेतों में लिखी हुई है। श्री

महामति जी कहते हैं कि श्री कुलजम स्वरूप में जितनी भी १८७५८ चौपाई कही गयी है, उन्हें परब्रह्म ने अपने आवेश स्वरूप से मेरे धाम हृदय में बैठ कर कहा है, जिसे संसार यही मानता है कि मैंने उन्हें कहा है। यथार्थता यह है कि मैंने उन्हें केवल व्यक्त किया है (पढ़ा है) आन्तरिक रूप से कहने वाले स्वयं श्री राज जी हैं।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३३९ ॥

ए रोज नहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप।

कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥१॥

कुर्आन के ग्यारहवें सिपारे में यह बात स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी है कि नवमी सदी के पश्चात् ब्रह्मात्माओं का जागनी लीला में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी से मिलन होगा। इस कथन के विपरीत कुछ भी नहीं हो सकता अर्थात् यह कथन कभी भी मिथ्या नहीं हो सकता।

भावार्थ- पा. ११ सू. १० आयत ६०-६१ “व जावजूना बिबमी इस्राईलल् - वहूर फअत्बअहुम् फिरऔनु व जुनूदुह बग्यंव्व अद्वन् हत्ता इजा अद्रकहुल् - गरकु काल आमन्तु अन्नह ला इलाह इल्लल्लजी आमनत् बिही बनू इस्राईल व अना मिनल् - मुसूलिमीन(६०) आलूआन व कद् असैत कब्लु व कुन्त मिनल् - मुफूसिदीन(६१)” और हमने इस्राईल की औलाद को दरया के पार उतार दिया। फिर और और उसके लश्करियों ने जियादती और दुश्मनी से उनका पीछा किया, यहाँ तक (नौबत आई) कि जब फिरऔन (अपने लश्कर सहित) डूबने लगा तब बोला कि मैं ईमान लाया कि उसके सिवाय कोई और पूजित नहीं जिस पर इस्राईल के बेटे ईमान लाये हैं, और मैं अब आज्ञाकारियों में हूँ। (इसका जवाब मिला कि) अब (तू) यों बोला? और पहले (बराबर) हुक्म के खिलाफ करता रहा और हमेशा फसादियों में रहा। यह प्रसंग मूसा पैगबर हासून व फिरोन का कहा है कि श्री जी, छत्रशाल जी और औरंगजेब पर घटित होता है जो तफसीरे हुसैनी जिल्द अव्वल पृष्ठ संख्या १२ में लिख है और याद करो (ऐ मूसा) उसे भी कि फाड़ा हमें साथ तुम्हारे यानि तुम्हारी निजात (मुक्ति) के वास्ते दरिया-ए-कुलजुम, जब फिर्ओन से तुम भागे थे। और दरिया तुम्हारे सामने था। और दुश्मन का लश्कर तुम्हारे पीछे था फिर छुड़ाया हमने तुम्हें उस लश्कर के जर्र से, और डुबोया हमने फिर्ओन के लोगों को, हालांकि देखते थे तुम कि दरिया को कि क्यों कर फटता था, या फिर्ओन वालों को तुम देखते थे, कि किस तरह डूबते थे ‘मैं दई कुलजम तुमको किया सबों गरक’ बी. सा. का कथन यही सिद्ध करता है।

**ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नैक खूब कारन।
बीच राह हक के एक, तिन नेकों का बदला नेक॥१२॥**

यह इस कारण से लिखा गया है कि जो अच्छे और पवित्र हृदय वाले लोग हैं, उन्हें कियामत के समय अपने अच्छे कार्यों का बदला अत्यधिक अच्छाई के रूप में मिलेगा। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने परब्रह्म के प्रेम मार्ग पर चलकर दिखाया है। उनके दर्शाये हुए निजानन्द के स्वर्णिम मार्ग पर जो भी चलेगा उसे परमधाम के अलौकिक आनन्द का रसास्वादन प्राप्त होगा।

**उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए॥१३॥**

इस स्वरूप से भी अधिक ज्ञान का प्रकाश श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में श्यामा जी के दूसरे तन की लीला में हुआ है। श्री जी के इस स्वरूप से सबको आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का अत्यधिक लाभ प्राप्त होना है। यह बात मुहम्मद स. ने 'बोहोतात' ग्रन्थ में कही है जिसके रहस्य को श्री जी ने ब्रह्ममुनियों में प्रकट किया है।

**तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक॥१४॥**

श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप साक्षात् अक्षरातीत का ही आवेश स्वरूप है। यदि कोई इनके स्वरूप की पहचान करके इनकी भक्ति करता है, तो वह उसके द्वारा की गयी पूर्व की भक्ति से हजारों गुना अधिक कल्याणकारी होती है। परब्रह्म स्वरूप श्री जी उस व्यक्ति को इस प्रकार आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने का सौभाग्य प्रदान करते हैं।

द्रष्टव्य— उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन लोगों को आत्ममन्थन करना चाहिए जो स्वरूप की पहचान न करके मात्र रूप के आधार पर ही अपनी धारणा निश्चित करते हैं और श्री प्राणनाथ जी का पहले नाम लेने में भी झिझक का अनुभव करते हैं।

**नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल॥१५॥**

मुहम्मद स. के देह त्याग के पश्चात् जब नौ सौ वर्ष और नौ महीने व्यतीत हो गये, तो परमधाम से परब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्री श्यामा जी का अवतरण हुआ। वि. सं. १७१२ में

उन्होंने श्री मिहिरराज जी का दूसरा तन धारण किया। इसी तन में अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की लीला हुयी जिन्होंने सबकी भक्ति को स्वीकार किया।

**सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर॥६॥**

श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट होने वाला अक्षरातीत का यह स्वरूप संसार के सभी लोगों को उनकी भक्ति के स्तर के अनुरूप हजार गुना अधिक फल देगा। इस तरह का अलौकिक कार्य करने वाला आज तक इस सृष्टि में कोई भी नहीं हुआ है। इनकी छत्रछाया में आने वाला स्वयं ही परब्रह्म के प्रेम मार्ग पर चलने का प्रयास करने लगता है।

**खिलाफ राह चलें काफिर, दुनियां को देखावें डर।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन॥७॥**

परब्रह्म को न मानने वाले नास्तिक (काफिर) ब्रह्ममुनियों से उल्टा मार्ग अपनाते हैं और संसार के अन्य लोगों को भी निजानंद के दिव्य मार्ग पर न चलने के लिए डराते हैं। कुर्आन में कियामत के इसी समय का वर्णन है, जिसमें परमधाम के ब्रह्ममुनियों को प्रगट होना है।

**होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त।
कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी है तब॥८॥**

जागनी लीला में दज्जाल अर्थात् माया से युद्ध के लिये जब श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा आह्वान किया जाता है, तो परमधाम के ब्रह्ममुनि अपनी लौकिक तृष्णाओं को छोड़कर श्रद्धा, विश्वास, विरह, प्रेम और ज्ञान के मार्ग पर चलने में कष्ट उठाते हैं। इसी प्रकार, सम्पूर्ण ईश्वरीय सृष्टि भी ब्रह्ममुनियों का अनुसरण करती हैं। ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों को निर्देशन देने के लिए परब्रह्म की तरफ से कुर्आन में आयत का अवतरण हुआ।

भावार्थ- पा. ११ सू. १० आ. ६६ “व लौ शाअ रब्बुक लआमन मन् फिल्अर्जि कुल्लुहुम् जमीअन् अफअन्त तुक्ऱिहुन्नास हत्ता यकून् मुअ्मिनीन” अर्थात् और अगर आपका परब्रह्म हमें चाहता तो जितने लोग संसार के है सभी ईमान ले आते और क्या तुम लोगों पर जबरदस्ती करना चाहते है कि वह मोमिन हो जाए। व अन अकिम नजर मिनल मु शिशकीन” और हे मुहम्मद! दीन इस्लाम की जैसी की जो और मुशिरकों में कदापि न होना। यह प्रसंग जागनी लीला का है।

**ना रवा मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएं।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥९॥**

ब्रह्मात्माओं का हृदय ही उनका धाम है जिसमें उनके प्राणेश्वर का निवास है। परमधाम के ब्रह्ममुनि अपने आराध्य को अपने धाम हृदय में प्रेममयी चितवनी के द्वारा देखते हैं और अपने जीव के शङ्क विकार रूप शत्रुओं को जीत लेते हैं। वे इसके लिए बाह्य जगत के कर्मकाण्डों में नहीं फंसते, क्योंकि कर्मकाण्ड (शरीयत) का मार्ग न तो ब्रह्मसृष्टियों के लिए है और न वे उसमें फंसना चाहते हैं। इसके विपरीत जीव सृष्टि का हृदय ज्ञान, प्रेम, श्रद्धा, समर्पण से रहित होने के कारण शुष्क और वीरान बना रहता है। कर्मकाण्डों में उलझे रहने के कारण उनमें ज्ञान और प्रेम की निरन्तर कमी रहती है। परिणामस्वरूप उनके पत्थर के समान कठोर हृदय में प्रियतम की छवि नहीं बस पाती।

**जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद किबला ॥१०॥**

कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों के लिए यह निर्देश दिया गया है कि कियामत के समय जब तारतम ज्ञान का प्रकाश मिल जाये, तो उस समय बहिर्मुखी होकर कर्मकाण्डों के जाल में फंसने की आवश्यकता नहीं है अपितु अन्तर्मुखी होकर अपनी आत्मा के धाम हृदय में अपने प्राणेश्वर की शोभा में स्वयं को डुबो देना है। ऐसा करने पर प्रत्येक मानव समुदाय में ऐसे बहुत से लोगों का समूह एकत्र हो जाएगा, जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा होगी कि मुझे रंगमहल, मूलमिलावे की शोभा दिख जाये।

भावार्थ—उपरोक्त ८वीं, ९वीं, १०वीं चौपाई का यही निर्देश है कि वर्तमान समय में दस-दस करोड़ के भव्य मन्दिरों का निर्माण करने की अपेक्षा ध्यान कक्षों का निर्माण अधिक उचित है। जिसमें सुन्दरसाथ चितवनी के मार्ग पर चलकर परमधाम के प्रेम, आनंद और शोभा का रसपान कर सके।

**जिन सिर कहा वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे ॥११॥**

इस नश्वर जगत में ब्रह्मात्माओं का हृदय ही उनका धाम है, जिसमें चितवनी करना छोड़कर वे बाह्य जगत के कर्मकाण्डों में नहीं उलझते। इसके विपरीत संसार की जीव सृष्टि अक्षरातीत को पाने के लिये शरीयत और तरीकत का आधार लेती हैं। तथा उनकी बौद्धिक चतुराई से उसी को ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करती हैं।

जो कोई गामके हैं, तिनको इलम दीनका कहे।

सवा नव बरस दसमी के बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥१२॥

परमधाम के रहने वाले जो भी ब्रह्ममुनि हैं, उन्हें सत्यधर्म का मार्ग दर्शाने के लिये श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान दिया गया है। जब दसवीं सदी में सवा नौ वर्ष शेष थे, तभी वि. सं. १६३८ में श्री श्यामा जी के नेतृत्व में परमधाम के इस ब्रह्ममुनियों का अवतरण हुआ। वहीं से इनकी लीला की चर्चा प्रारम्भ होती है।

॥ प्रकरण ॥११॥ चौपाई ॥३५१॥

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़से केहेनी।

मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥१॥

कुर्आन की टीका तफसीर-ए-हुसैनी को प्रारम्भ से ही सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है उसमें कुर्आन के कथनों की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि बसरी, मलकी और हकी इन तीनों सूरतों पर कियामत का मुद्दा (आधार) है। इन तीनों स्वरूपों को ही कियामत के समय अग्रगण्य कहा गया है।

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक।

सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित ॥२॥

यद्यपि बाह्य रूप से इन तीनों सूरतों को परब्रह्म के आदेश से अवतरित होने वाले संदेशवाहक के रूप में देखा जाता है। किन्तु आन्तरिक दृष्टि से देखने पर यह विदित होता है कि इन सूरतों को श्री राज जी ने ही धारण किया है। हे साथ जी! जब कुर्आन के गुह्य भेद खुलेंगे तो आप स्वयं ही अपनी आंखों से देखेंगे कि ये तीनों सूरतें श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में एकाकार हो जाती हैं। कुर्आन में सभी पैगम्बरों की जो महिमा लिखी है वह वस्तुतः इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की ही महिमा है।

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल।

ए इलम ले रूह अल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया ॥३॥

कुर्आन का अवतरण करने के कारण मुहम्मद स. को संदेशवाहक (रसूल) अवश्य कहा गया है किन्तु उसके गुह्य रहस्यों को खोलने की शोभा इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की

है। मलकी स्वरूप सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) लेकर आए। अपने दूसरे तन की लीला में तारतम ज्ञान द्वारा कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को स्पष्ट करके वे इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के रूप में प्रकट हुये।

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।

पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम ॥४॥

जब दसवीं सदी में सवा नौ वर्ष बाकी थे, उस समय वि. सं. १६३८ का समय था। परब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्री श्यामा जी का अवतरण उसी समय हुआ। उसके पश्चात् जो तीसरा हकी सूरत का स्वरूप प्रकट हुआ, उसे ही आखिरी इमाम कहा जाता है। अध्यात्म जगत में जिनकी उपमा सूर्य से की जाती है। इसी प्रकार मलकी सूरत (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) की उपमा पूर्णमासी के चन्द्रमा से की जाती है।

भावार्थ- श्री श्यामा जी के पहले तन में श्री कुल्जुम स्वरूप का अवतरण न होने से जागनी की वास्तविक लीला नहीं हो सकी। इसलिए उन्हें पूर्णमासी का चन्द्रमा कहा गया है।

सुन्दरबाईएँ देखिया, दिल के दीदो माहें ।

बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें । सनंध 41/16

ब्रह्मसृष्ट हुती वृज रास में, प्रेम हुतो लक्ष बिन ।

सो लक्ष अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन ॥

जो लों मुतलक इलम न आखिरी, तो लों क्या करे खास उम्मत ।

पहचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत ॥ श्रृंगार 1/47, 48

श्री कुल्जुम स्वरूप के ये उपरोक्त कथन यही दर्शाते हैं कि श्री प्राणनाथ जी को दोपहर का सूरज क्यों कहा जाता है।

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊ आड़ा अंतर।

उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी ॥५॥

श्री छत्रशाल जी कहते हैं कि मैं कुर्आन के उद्धरण देकर आपके हृदय के ऊपर पड़े हुये संशय के आवरण को हटाना चाहता हूं। इसलिए हे साथ जी! आप मेरे कथनों को अन्तर्दृष्टि से देखिए (विचार कीजिए)। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के पश्चात् जिस स्वरूप ने सब सुन्दरसाथ को दृढ़तापूर्वक जागनी के अलौकिक पथ पर चलाया है उस स्वरूप की संपूर्ण महिमा साक्षात् परब्रह्म के समान ही कही गयी है।

**बुनियाद रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार ॥६॥**

श्री राज जी के आदेश से बशरी सूरत ने जब कुर्आन को अवतरित किया, तो उन्हें संदेश वाहक कहा गया। परब्रह्म के उसी आदेश स्वरूप ने जब हकी सूरत के रूप में कुर्आन के गुह्यतम भेदों को उजागर कर दिया, तो उन्हें इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी कहा गया। सभी धर्म ग्रन्थों में इन्हीं की महिमा गायी गयी है। ब्रह्ममुनियों को इनके पुत्र या दोस्त (मित्र) की उपमा दी गयी है, जो बहुत ही सजगता पूर्वक अपने प्राणेश्वर की पवित्र हृदय से आराधना करते हैं।

भावार्थ— नाम, भाषा, लीला अथवा स्थान भेद के कारण तीनों सूरतों में बाह्य रूप से ही भेद है, आन्तरिक रूप से नहीं, क्योंकि ये तीनों सूरतें श्री राज जी के आदेश से ही परमधाम से अवतरित हुई हैं। परमधाम के एकत्व (वहदत) के सिद्धान्त से आन्तरिक (मारिफत) की दृष्टि से तीनों का एक ही स्वरूप है।

**एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखाबरे।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ॥७॥**

कुर्आन में सांकेतिक रूप से श्यामा जी के पहले तन (श्री देवचन्द्र जी) की अपेक्षा दूसरे तन (श्री महामति जी) की लीला की महिमा को अधिक बताया गया है। श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा परमधाम के अनुपम ज्ञान का आनन्द दिया है। उनके लीला स्थान पद्मावती पुरी धाम के गुम्मत जी मन्दिर की देहली (चौकठ) की धूलि पर सारा संसार नतमस्तक होगा, क्योंकि उसके अन्दर ध्यानावस्था में अभी भी श्री महामति जी विराजमान हैं जिनके पवित्र धाम हृदय में ब्रह्मात्माओं के प्राणेश्वर कृपा सागर अक्षरातीत विराजमान है।

भावार्थ— यद्यपि, अन्तर्धान लीला से पूर्व ही कियामतनामा की इस चौपाई का अवतरण हो गया था, किन्तु सर्वदा एक रस रहने वाले परब्रह्म की लीला में काल का बन्धन नहीं होता है। अतः इसका इस प्रकार अर्थ किया गया है।

**आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी।
मिल्या कहाँ मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ॥८॥**

श्री प्राणनाथ जी तारतम ज्ञान के द्वारा परब्रह्म की पहचान कराने में अग्रगण्य हैं, सबके आराध्य हैं। आवेश स्वरूप होने से मूल स्वरूप श्री राज जी के सबसे अधिक निकटस्थ हैं अर्थात् उन्हीं के साक्षात् स्वरूप हैं। परमधाम की स्पष्ट पहचान कराने वाले हैं। ऐसा कहा

जाता है कि मूल स्वरूप श्री राज जी ने इन्हें ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों के सम्पूर्ण आध्यात्मिक साम्राज्य का स्वामित्व प्रदान किया है।

**उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत।
बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई॥९॥**

श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप परमधाम की सबसे बड़ी सम्पदा श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान के साथ प्रकट हुआ है। लोक रीति के अनुसार पुत्र या मित्र रूप में ब्रह्ममुनियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों का समूह इनके साथ है। ईश्वरों के ईश्वर अक्षरातीत के स्वामित्व को दर्शाने के लिये उनके प्रतिनिधि (आवेश) स्वरूप में ये सबके आराध्य रूप में प्रकट हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे इनका स्वरूप अक्षरातीत परब्रह्म की गरिमा के स्तम्भ रूप में ही अवतरित हुआ है।

**जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन।
मोती कहा डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक॥१०॥**

मूल स्वरूप श्री राज जी ने श्री महामति जी के धाम हृदय से श्री कुल्जुम स्वरूप का अवतरण करके उन्हें संसार में शाश्वत शान्ति का मार्ग (दीन ए-इस्लाम) दर्शाने का आदेश दिया। इसके साथ ही श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा सबके हृदय में अटूट विश्वास रूपी सम्पदा भी दी। कुरआन के कथनानुसार रंगमहल का मूल मिलावा अनुपम शोभा वाला एक डिब्बा है, जिसमें बैठे हुए ब्रह्ममुनि मोती के समान हैं। इस संसार में श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप इन मोतियों में चमकते हुए सितारे की भांति अद्वितीय शोभा से जगमगा रहा है।

**दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान॥११॥**

यदि ज्ञान के क्षेत्र में वर्चस्व की दृष्टि से देखा जाय तो श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप अज्ञानता के अन्धकार से परिपूर्ण इस जगत में तपते हुए सूर्य के समान प्रकाशमान हो रहा है। श्री जी कृपा (मेहर) के प्रत्यक्ष मूर्तिमान स्वरूप हैं। इनके स्वरूप में श्री राज जी का नूर (तेजस्विता, ओजस्विता, ज्ञान, प्रेम, सौन्दर्य, आभा आदि) क्रीड़ा कर रहा है। श्री प्राणनाथ जी की अनुपम महिमा के सम्बन्ध में कहे हुए इन संकेतों की पहचान तब होती है, जब अटूट श्रद्धा-विश्वास के साथ उनके शरणागत हुआ जाता है और उनकी कृपा का पात्र बना जाता है।

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, अली सेर इन दरगाह का जान ।

इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना ॥१२॥

श्री जी ब्रह्ममुनियों को दिशा-निर्देश देने वाले हैं। जागृत बुद्धि के घोड़े पर सवार हैं। विक्रम सं. १७३५ में हरिद्वार के महाकुम्भ के अवसर पर होने वाले आध्यात्मिक तत्त्व ज्ञान के युद्ध में विजय प्राप्त कर 'श्री विजयाभिन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप' की शोभा से शोभायमान हुए हैं। परमधाम के सिंह कहे जाने वाले महाराजा छत्रसाल इनकी सेवा में तल्लीन हैं। कियामत के समय का यह ऐसा स्वर्णिम युग है, जिसमें सबने श्री प्राणनाथ जी को अपना आराध्य माना है और सभी उनकी छत्रछाया में आकर अखण्ड मुक्ति का आशीर्वाद मांगते हैं।

इन गुलजारी की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए।

सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ॥१३॥

परमधाम के अलौकिक फूलों के बाग के समान अक्षरातीत के हृदय से प्रकट होने वाले श्री कुलजुम स्वरूप की ज्ञान-सुगन्धि आत्मा एवं हृदय दोनों को ही जगमगा देती है। जागृत बुद्धि का यह ज्ञान समस्त संसार में एक परम सत्य का उद्घोष कर रहा है।

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत ।

जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥१४॥

पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान परमधाम के ज्ञान की शीतल चांदनी फैलाने वाले सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं सूर्य के समान अपने प्रखर तेज से अज्ञानता के अन्धकार का समूल उच्छेदन (विनाश) करने वाले श्री प्राणनाथ जी, मूल स्वरूप श्री राज जी की विभूति (सम्पदा) स्वरूप हैं। श्री जी के स्वरूप में अखण्ड धाम की चार और शक्तियां सम्मिलित हैं। एक जिब्रील फरिश्ता है, जो ब्रह्मात्माओं के लिये वकील की भूमिका निभाता है। वह ब्रह्मात्माओं के हृदय में तारतम ज्ञान से सजगता बनाये रखता है और उन्हें माया में फंसने नहीं देता। इसी प्रकार, अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि इस्लामी भी उनके हृदय में विद्यमान है।

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।

एइमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत ॥१५॥

श्री महामति जी के धाम हृदय में अपने तारतम ज्ञान के साथ श्यामा जी विराजमान है। परब्रह्म के आदेश स्वरूप मुहम्मद स. (अक्षर ब्रह्म) भी सर्वदा विराजमान रहते हैं। ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि सर्वदा ही उनके साथ रहती है। इस प्रकार इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की अनुपम महिमा है।

**ढूढेगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥१६॥**

ऐसा भी समय आयेगा जब समस्त संसार में श्री प्राणनाथ जी अनुपम महिमा फैल जायेगी। उस समय प्रत्येक व्यक्ति हर पल श्री जी की छत्रछाया में रहकर अखण्ड पद (अखण्ड मुक्ति) को प्राप्त करने का इच्छुक होगा। तत्कालीन समस्त जगत में परमधाम के ज्ञान की धूम मची होगी। उस गरिमामयी समय में प्रत्येक व्यक्ति श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की वास्तविक पहचान पाकर स्वयं को बेहद के अखण्ड पद में स्थित करना चाहेगा।

**इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत ॥१७॥**

श्री महामति जी के ऊपर प्राणेश्वर अक्षरातीत का असीम प्रेम है। यह स्वरूप वेद-कतेब दोनों पक्षों के गुह्यतम रहस्यों को जानने वाला है। परब्रह्म की कृपा से हिन्दू-मुसलमान दोनों को ही श्री जी की सानिध्यता में रहने का यह सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। अब वेद-कतेब दोनों पक्षों के लोग श्री प्राणनाथ जी की कृपा से अखण्ड मुक्ति का महानतम् लाभ प्राप्त करेंगे।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ और श्री राज जी एकार्थवाची शब्द हैं। 'महामति' आत्मा की शोभा का नाम है। इस प्रकार हम ऐसा कह सकते हैं कि महामति के प्रियतम श्री राज जी या श्री प्राणनाथ जी हैं। इस प्रकरण में प्रसंगानुसार कहीं, श्री महामति जी के प्रति आत्म परक सम्बोधन है, तो कहीं आवेश स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के लिये परब्रह्म परक।

**सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब ॥१८॥**

इस स्वरूप में परमधाम के सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्रकट हुआ है। श्री महामति जी ने यह शोभा विरह, समर्पण और प्रेम की अग्नि में स्वयं को तप्त करके प्राप्त किया है। मूल स्वरूप श्री राज जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप के १४ ग्रन्थों का अवतरण इनके ही मुखारविन्द से किया है। रास, प्रकाश, शटर्कतु तथा कलश ग्रन्थ के अवतरण से जागनी कार्य के लिये इनकी अन्तर्दृष्टि बहुत शीघ्र ही खुल गयी।

**जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम।
तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब तमामियत पाई बड़ी ॥१९॥**

इन चार ग्रन्थों के अवतरण के पश्चात् प्रियतम अक्षरातीत ने अपने आदेश से उपहार स्वरूप सनद ग्रन्थ को प्रकट किया, जिसमें कुर्आन के तीस सिपारों का भाव हीरे-मोतियों के

समान मनोहर भाषा में व्यक्त किया गया है। इसके परिणाम स्वरूप सुन्दरसाथ में अपने निज स्वरूप को यथार्थ रूप में जानने की प्रबल इच्छा हुई और सबने पूर्णानन्द को प्राप्त किया।

**पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत ॥२०॥**

कुर्आन के प्रथम ग्रन्थ सनद के पूर्ण रूप से अवतरित होने पर सुन्दरसाथ ने उसे आत्मसात् किया और स्वयं को मूल स्वरूप श्री राज जी की शरण में प्रस्तुत कर दिया। हकीकत एवं मारिफत (ज्ञान-विज्ञान) के मार्ग का अनुशरण करते हुए बहुत से सुन्दरसाथ ने चितवनी में स्वयं को डुबो दिया, जिसमें उनकी यह प्रेम लक्षणा भक्ति स्वीकार की गयी और उनकी जागनी हुई।

भावार्थ- परब्रह्म के द्वारा बन्दगी कबूल (स्वीकार) करने का आशय है, उनका साक्षात्कार करना। इस सम्बन्ध में सनद ग्रन्थ ४२/२७ की यह अन्तिम चौपाई बहुत ही महत्वपूर्ण है-

मेहेंदी हदां कर दई, घर इमाम बताई राह ।

पोहोंचे अर्स मेयराज को, हंस मिलियां रूहें खुदाए ॥

**लिखना बाकी जिलद का है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर ॥२१॥**

जो अगला ग्रन्थ कीर्तन है, उसकी व्याख्या सनद ग्रन्थ के भावों के आधार पर (तले) होनी चाहिए। कीर्तन के प्रकरण अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग प्रसंगों में अवतरित हुए हैं। सनद ग्रन्थ से कीर्तन ग्रन्थ के उन प्रकरणों की कड़ियां मिली हुई हैं, जिसके वास्तविक भेद श्री महामति जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जानता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में 'महंमद फकीर' का प्रयोग मात्र श्री महामति जी के लिये ही हो सकता है, श्री प्राणनाथ जी के लिए नहीं, क्योंकि श्री प्राणनाथ का आशय अक्षरातीत से है।

**पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक ।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥२२॥**

कुर्आन के पहले ग्रन्थ सनद से महिमामयी कियामत का समय निर्धारित हुआ। ब्रह्ममुनियों ने इसी ग्रन्थ से अक्षरातीत की पूर्ण पहचान की। इस समय तक श्यामा जी को संसार में आये हुए ६७ वर्ष व्यतीत हो चुके थे अर्थात् वि. सं. १७३५ का समय था। इस

समय वे अपने दूसरे तन (मिहिरराज जी) में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप तथा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी के रूप में प्रसिद्ध (जाहिर) हुए।

भावार्थ- श्री कुलजुम स्वरूप में कुर्आन से सम्बन्धित चार ग्रन्थ है- सनंद, खुलासा, मारिफत सागर और कियामतनामा। पहला ग्रन्थ सनद है, जिसका वर्णन इस चौपाई में किया गया है।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत।

आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर ॥२३॥

मेड़ते में मुल्ला की बांग सुनकर अन्तःप्रेरणा द्वारा कल्मा एवं तारतम के एकीकरण का संकेत हुआ। कालान्तर में वि. सं. १७३६ में अनूप शहर में सनद ग्रन्थ के रूप में अखण्ड ज्ञान का अवतरण हुआ। दिल्ली में औरंगजेब और उसके धर्माधिकारियों से ब्रह्ममुनियों के द्वारा धर्म युद्ध करते हुए, जब आठ महीने व्यतीत हो गये, तब कुर्आन पक्ष के इस प्रथम ग्रन्थ का अवतरण हुआ।

पा. ३ सू. ३ आ. ८५ “व मय्यब्तिगैरल-इस्लामि दीनन् फ लंय्युक्बल मिन्हू व हुव फिल्आखिरति मिन्ल्खासिरीन” अर्थात् और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा वह हर्गिज कबूल नहीं किया जाएगा। ऐसा शख्स आखिरत में नुकसान उठाने वालों में होगा।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।

आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ॥२४॥

श्री प्राणनाथ जी के साथ जागनी लीला में भाग लेने वाले सुन्दरसाथ को सामाजिक, आर्थिक एवं रोग जनित कष्टों का सामना करना पड़ा। कुर्आन की टीका करने वाले तफ्सीरे हुसैनी के लेखक मुल्ला कमालुद्दीन हुसैन बिन अली वाइज काशमी ने कहा है कि मुहम्मद स. के द्वारा लाये गये कुर्आन के वास्तविक रहस्य श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के द्वारा स्पष्ट किये जायेंगे।

भावार्थ- सुन्दरसाथ को जागनी लीला में उदयपुर में वैरागी भेष धारण करना पड़ा, तो मन्दसौर में आठ माह तक भिक्षा मांगकर गुजारा करना पड़ा। आगे की यात्रा में भी भिक्षा का सहारा रहा। औरंगजेब की शाही फौज ब्रह्ममुनियों को कैद करना चाहती थी। आकोट में मिर्गी की बीमारी ने बहुत से सुन्दरसाथ को धाम चलने के लिये विवश कर दिया।

**ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बजरकी भेली भई।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों में हकीकत ॥२५॥**

अब तक इस प्रकरण में श्यामा जी के दूसरे तन में लीला करने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की वास्तविकता दर्शायी गयी है। इस स्वरूप में पांच शक्तियों- जोश शक्ति जिब्रील, आनन्द अंग श्यामा जी, श्री राज जी की आवेश शक्ति, अक्षर ब्रह्म की आत्मा तथा इम्राफील ने सम्मिलित रूप से विराजमान होकर लीला की है। आगे मैं कियामत के समय की वास्तविकता पर प्रकाश डालूंगा।

॥ प्रकरण ॥१२॥ चौपाई ॥३७६॥

**ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए ॥१॥**

उपरोक्त प्रकरण में कुर्आन के पहले पारे का वर्णन किया गया है। अब मैं सोलहवें सिपारे में वर्णित जिकरिया के प्रसंग को इसके साथ जोड़कर बता रहा हूं। उस सिपारे में जिकरिया और एहिया का जो प्रसंग लिखा है, वह तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म की कृपा के बिना समझा नहीं जा सकता।

**न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल ॥२॥**

कुर्आन में वर्णित जिकरिया पैगम्बर कहते हैं कि मेरे परवरदिगार साहेब! मैं तेरी याद और बंदगी में अब तक नहीं था। मैं भक्ति का सारा मार्ग भी भूल गया था। मेरी आशा भी धूमिल हो चुकी थी, फिर भी मुझ नासमझ की प्रार्थना को आपने स्वीकार किया।

भावार्थ- जिकरिया पैगम्बर का तात्पर्य सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी से है, जिन्हें आने वाले समय में जागनी कार्य के लिए एक ऐसे उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी, जो तारतम ज्ञान के द्वारा ब्रह्मात्माओं को जगा सके। मूल स्वरूप श्री राज जी के द्वारा उनकी इच्छा की पूर्ति हुयी और उन्हें श्री मिहिरराज जी के रूप में ऐसा धर्मपुत्र प्राप्त हुआ, जो उनकी अपेक्षाओं पर पूर्णतया खरा उतरा।

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई।

भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ॥३॥

जिकरिया पैगम्बर कहते हैं कि हे परब्रह्म! आपने मेरी प्रार्थना को स्वीकार किया। इससे मैं बहुत अधिक आनंदित हूं। आपने एहिया के रूप में मुझे जो धर्मपुत्र दिया है उसमें आपकी सारी विशेषताएं विद्यमान हैं। हे साथ जी! कुर्आन के इन कथनों का गंभीरतापूर्वक विचार कीजिए। इसी प्रकार, सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने भी जागनी कार्य के लिए योग्य उत्तराधिकारी की इच्छा की थी।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर।

पीछे मेरे मोहीम खौरात, जो वर पाए करे दीन की बात ॥४॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि धाम धनी! निश्चित रूप से मुझे इस बात का भय है, कि मेरा शारीरिक पुत्र (बिहारी जी) तो अवश्य है किन्तु उसमें जागनी कार्य को आगे बढ़ाने की सामर्थ्य नहीं है। मुझे ऐसा धर्मपुत्र चाहिये, जो मेरे अन्तर्धान होने के पश्चात् सबमें तारतम ज्ञान का प्रकाश करे और आपकी कृपा की छत्रछाया में सत्यधर्म को उजागर करे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत।

पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत ॥५॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि मेरे आराध्य! मेरे अन्तर्धान होने के पश्चात् मुझे ऐसा उत्तराधिकारी चाहिये, जो सुन्दरसाथ के मध्य मेरे ज्ञान के स्वामित्व को स्वीकार कराता रहे अर्थात् सबमें तारतम ज्ञान का प्रकाश करता रहे।

ना जनने वाली मेरी औरत, अठानवे बरस की मजल है इत।

और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर ॥६॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि मेरी उम्र उठ्ठानवे (६८) वर्ष की हो चुकी है। उम्र के इस पड़ाव में मेरी स्त्री के पुत्र नहीं हो सकता। अब आप मेरी प्रार्थना को अस्वीकार न कीजिये और मुझे पुत्र दीजिये। निश्चित रूप से इस कार्य का होना आपके हाथ में है।

भावार्थ- वि. सं. १७३६ से इसी कारण मूल स्वरूप साहेब में अधिकांश प्रकरणों के अन्त में “महामति कहे ऐ मोमिनो” का संबोधन है। श्री महामति जी (महमत साहिब) के नेतृत्व में

जागनी का प्रबल दौर चला, जिसमें अनूपशहर में प्रकाश हिन्दुस्तानी और कलश हिन्दुस्तानी का अवतरण हुआ। औरंगजेब के धर्माधिकारियों को भी उन्हें इमाम महदी अ. के रूप में स्वीकार करना पड़ा। उदयपुर में भी जागनी की विशेष लीला हुयी तथा मंदसौर में बहुत कठिनाईयां सहन करते हुये भी जागनी कार्य से किसी ने मुख नहीं मोड़ा।

**फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।
लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझसे हकीकत ॥७॥**

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि हे धाम धनी! मेरा पुत्र ऐसा होना चाहिये जो आपके आदेशानुसार धर्म का कार्य करे। वह तारतम ज्ञान के प्रकाश में मुझसे सत्य ज्ञान का मार्ग ग्रहण करे और सुन्दरसाथ में जागनी कार्य का नेतृत्व करे।

ए मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ॥८॥

ब्रह्ममुनियों का यह समूह ही परमधाम की सम्पदा है जिन्हें जागृत करने के लिए मुझे ऐसे धर्मपुत्र की आवश्यकता है, जो मुझसे आध्यात्मिक तत्वज्ञान ग्रहण करे और उन्हें जगाए।

॥प्रकरण॥ १३॥ ३८४॥

**औलाद याकूब कहा इस्हाक, इनों का कबीला है पाक।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर ॥१॥**

कुर्आन में याकूब को इस्हाक पैगम्बर का पुत्र कहा गया है। उनकी वंशावली पवित्र हृदय वाले पैगम्बरों की है। इस प्रकरण से पूर्व के प्रकरण में जिकरिया के नाम से जो वर्णन किया गया था, उसे ही इस प्रकरण में दूसरे रूप से व्यक्त किया जा रहा है।

भावार्थ- कुर्आन के इस कथानक में इस्हाक़ श्री देवचन्द्र जी हैं और याकूब श्री महामति (मेहमत साहिबुज्जमां) हैं। वंशावली का आशय ब्रह्ममुनियों से लिया गया है।

**ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी ॥२॥**

कुर्आन के अलग-अलग सिपारों के प्रसंगों (कड़ियों) को जोड़कर जो तथ्य कहा जा रहा है, उससे मैं सत्य और झूठ को अलग-अलग स्पष्ट करके बता रहा हूं। इस प्रकरण में जो कहा जा रहा है, वह पूर्व के प्रकरण में कहा जा चुका है। किन्तु इस प्रकरण में कहने का प्रसंग कुछ और है, लेकिन सत्य वही है। ऐसा मानकर इसे अपने हृदय में आत्मसात् करना चाहिए।

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा महंमद फकीर ।

खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कहा ॥३॥

महाराजा श्री छत्रशाल जी कहते हैं, कि श्री महामति जी के चरणों की सानिध्यता से मुझे यह शिक्षा मिली है, कि बिना यथार्थ व्याख्या के गुह्य रहस्यों को नहीं पाया जा सकता। जब श्री मिहिरराज जी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आए और उनसे तारतम ज्ञान ग्रहण किये तो उन्हें उनका विशिष्ट शिष्य और धर्मपुत्र माना गया है। इसी को कुर्आन में जिकरिया के नजरी पुत्र एहिया के प्रसंग के रूप में वर्णित किया गया है।

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम ।

कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया ॥४॥

कुर्आन में श्री श्यामा जी को परब्रह्म के आनन्द अंग के रूप में वर्णित किया गया है तथा यह भी कहा गया है, कि यहिया ने उनके हृदय में परब्रह्म की छवि का अनुभव किया और उन्हें अपना आराध्य माना। कुर्आन तथा अन्य किताबों में ऐसा कहा गया है कि परब्रह्म से पुत्र की कामना करने के कारण उन्हें अत्यधिक जिक्र करने वाला (वर्णन करने वाला) जिकरिया कहा गया है।

भावार्थ- पा. ३ सू. ३ आयत ३७-४१ “फ तकब्बलहा रब्बुहा बि कबूलिन् हसनिंव अम्बतहा नबातन् हसनन् टव कफ्फलहा जकरिय्या कुल्लमा दखल अलैहा जकरिय्यलू-मिह्राब वजद अिन्दहा रिज्कन् काल या मर्यमु अत्रा लकि हाजा कालत् हुव मिन् अिन्दिल्लाहि अित्रल्लाह यर्जुकु मय्यशाअु बिगैरि हिसाबिन्(३७) हुनालिक दआ जकरिय्या रब्बह काल रब्बि हब्ली मिल्लदुन्क जुरिय्यतन् तय्यिबतन् अित्रक समीअुद्दुआअि(३८) फ नादतुहुल् - मलाअिकतु व हुव काअिमुय्युसल्ली फिल्मिह्राबि अित्रल्लाह युबशिशरुक बियह्या मुसद्दिक्कम्- बिकलिमतिम् - मिनल्लाहि व सय्यिदंव्व हसूरंव्व नबिय्यम् - मिनस्सालिहीन(३९) काल रब्बि अत्रा यकूनु ली गुलामुंव्व कद् बलगनियल्किबरु वमूरअती आकिरुन् काल कजालिकल्लाहु यफ्अलु मा यशाअु(४०) काल नब्बिज्अल्ली आयतन् काल आयतुक अल्ला तुकल्लिमन्नास सलासत अय्यामिन् अिल्ला रम्जन् वज्जुर्बबक कसीरंव्व सबिह् बिल्अशिथि वल्अब्कारि(४१) फिर उसके पालनकर्ता ने मर्यम को खूबी से कबूल फर्मा लिया और उसको खूब ऊँचा उठाया, और जकरिया को उसका संरक्षक बना दिया। जब जकरिया मर्यम के पास उसकी मेहरबान (इबादतगाह) में जाते तो मर्यम के पास खाने की चीज मौजूद पाते। यह हाल देखकर एक दिन जकरिया ने पूछा कि ऐ मर्यम! यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है?

मर्यम ने कहा यह अल्लाह के यहाँ से आता है। अल्लाह बेशक जिसको चाहता है, बेहिसाब रोजी देता है। अल्लाह के इस चमत्कार से प्रभावित होकर उसी जगह जकरिया ने अपने पालनकर्ता से दुआ की, और कहा कि ऐ परवरदिगार! अपनी जनाब से मुझको भी पाक औलाद इनायत कर। बेशक तू सबकी दुआएँ सुनता है। अभी जकरिया! इबादतगाह में नमाज पढ़ रहे थे कि उनको फिरिश्तों ने आवाज दी कि जकरिया! अल्लाह तुमको एक पुत्र यहिया के पैदा होने की खुशखबरी देता है, और वह अल्लाह के एक फैज यानी अल्लाह की देन आसा अ. की तसदीक करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की संगत से अलग रहेंगे और नेकों (बन्दों) में से वे पैगम्बर होंगे। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे कैसे लड़का पैदा हो सकता है जबकि मुझपर बुढ़ापा आ चुका है और मेरी बीवी बाँझ है। फर्माया गया कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, कर देता है। जकरिया ने अर्ज किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे इत्मीनान के लिए कोई निशानी दे। अल्लाह ने फर्माया कि निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे, सिवाय इशारा से करने के। और अपने परवरदिगार की कसरत से याद भजन करते रहो और उसी की सुबह और शाम तस्बीह (माला फेरते रहा) करो।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या।

इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर ॥५॥

कुर्आन में कहा गया है कि सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के वंशानुगत शरीर जन्म पुत्र बिहारी जी थे, वे आध्यात्मिक जीवन से अलग ही रहे। इस प्रकार कुर्आन में कई अलग-अलग प्रसंगों में इस तथ्य को कहा गया है, जिसका वर्णन मैं कहाँ तक करूँ?

हादिएं इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया।

हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे ॥६॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि हे मेरे आराध्य! आपने अपनी कृपा से ऐसी लीला की है कि मेरे धर्मपुत्र मिहिरराज जी ने मेरे जागनी कार्य का उत्तरदायित्व संभाल लिया है। आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार की। इससे मैं बहुत अधिक आनन्दित हूँ।

पारः १६ सू. मरियम १६ आयत ७-१० “या जकरिय्या अित्रा नुबश्शिरुक बिगुलामिनिसुम्ह यह्या लम् नज्अल् लह मिन् कब्लु ममिय्यन्(७) काल रब्बि अत्रा यकूनु ली गुलामुंव्व कानतिम्-रअती आकिरंव्व कद् बलगूतु मिनल्किबरि अितिय्यन्(८) काल कजालिक काल रब्बुक हुव अलय्य हय्यिनुंव्व कद् खलक्तुक मिन् कब्लु व लम् तकु शैअन्(९) काल

रब्बिजूअल्ली आयतन् काल आयतुक अल्ला तुकल्लिमत्रास सलास लयालिन् सविय्यन्(१०) अर्थात् जकरिया! हम तुझे एक लड़के की खुश खबरी देते हैं, जिसका नाम एहिया होगा। और इससे पहले हमने इस नाम का कोई ऐसे सुलक्षणों वाला पैदा नहीं किया। जकरिया ने कहा कि ऐ परवरदिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मेरी बीवी बाँझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो चुका हूँ! हुक्म हुआ, ऐसा ही होगा, तुम्हारा परवरदिगार कहता है कि यह तो मेरे लिए आसान है और मैं पहले तुझको भी पैदा कर चुका हूँ, जबकि तुम कुछ चीज न थे। जकरिया ने निवेदन किया कि ऐ परवरदिगार! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे। कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात दिन तक भले चंगे रहकर भी लोगों से बात नहीं कर सकोगे।

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक।

पीछे इस के सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर॥७॥

जिकरिया पैगम्बर रो-रोकर परब्रह्म से प्रार्थना करते हैं कि आपने जो मुझे पुत्र दिया है, उसकी पहली विशेषता यह होनी चाहिये कि उसके ज्ञान में किसी तरह का संशय नहीं होना चाहिये। वह ऐसे कार्य करे जिससे आप प्रसन्न हों। इसके अतिरिक्त उसमें यह भी विशेषता होनी चाहिये, कि जिस प्रकार मैं एकमात्र आपकी आराधना करता हूँ, वह भी आपकी ही आराधना (सिज्दा) करे।

करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे।

इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे॥८॥

उस समय जिब्रील फरिश्ते ने जिकरिया पैगम्बर से कहा कि हे जिकरिया! आपके ऊपर परब्रह्म की विशेष कृपा है। आपने परब्रह्म की भक्ति कर पुत्र के लिए जो प्रार्थना की है, उसे परब्रह्म ने पूर्णरूप से स्वीकार कर लिया है और आपकी सारी प्रार्थना को अपने हृदय में बसा लिया है।

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कहा।

ए बेटा तुझे बकसिया, कहा नाम उसका एहिया॥९॥

हे जिकरिया! मैं आपको आनन्दित करने वाला एक शुभ समाचार दे रहा हूँ। परब्रह्म ने ऐसा कहा है कि आपको एक पुत्र प्रदान किया जाता है, जिसका नाम यहिया होगा।

पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक।

बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल॥१०॥

श्री छत्रशाल जी कहते हैं कि हे साथ जी! परब्रह्म ने जिस यहिया को पैदा किया,

उसके विषय में विचार कीजिये। उसके विषय में ही परब्रह्म का कथन है कि उसका नाम मेरा ही नाम होगा। जादलमिस्त नामक ग्रन्थ में भी लिखा है कि यहिया पैगम्बर में परब्रह्म के समान ही सारी शोभा विद्यमान थी और उनका नाम भी परब्रह्म का नाम था।

आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम।

बोहोत हुए कहा इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म ॥११॥

इस एहिया पैगम्बर से पहले इस नाम वाला अन्य कोई भी पैगम्बर नहीं हुआ है। इनके समान महान कार्य भी अन्य किसी ने नहीं किया है। यद्यपि, संसार से पैगम्बर तो बहुत अधिक हुए हैं, किन्तु कोई भी शरीरधारी मानव इनके समान महान नहीं हुआ।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में मैं एहिया का आशय श्री प्राणनाथ जी से है। इस सम्बन्ध में बाइबल का भी कथन है- He will persuade all over the world. वह (एहिया) संसार के सभी देशों को परब्रह्म के प्रति नतमस्तक करेगा।

बल्कि एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक।

ना कछू मेहेतारी ने पाले, बाप के ना हुए हवाले ॥१२॥

यह श्री प्राणनाथ जी (एहिया) सबसे महान हैं। परब्रह्म ने एहिया को अपने समान बनाया है। श्री मिहिरराज जी का लोकरीति के अनुसार न तो माता ने पालन पोषण किया और न पिता ने ही प्रारम्भिक शिक्षा दी।

भावार्थ- बीतक से यह स्पष्ट होता है कि श्री मिहिरराज जी का जीवन माता-पिता के लाड-प्यार में अवश्य बीता, किन्तु माता-पिता उन्हें जो शिक्षा-संस्कार दे सकते थे, उससे कई गुना अधिक उन्हें सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों की सानिध्यता से मिला। यही कारण है कि परब्रह्म से उपहार स्वरूप मिलने वाले ब्रह्मज्ञान की गरिमा को दर्शाने के लिये यहां लौकिक सम्बन्धों से मिले ज्ञान को नगण्य माना गया है।

इमाम सालवी नकल आई, आगूं इस थें नकल फुरमाई।

पीछे उस के ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे ॥१३॥

इमाम सालवी ने अपने ग्रन्थ में कहा है कि हम इस बात को प्रमाणित करते हैं (साक्षी देते हैं) कि जिकरिया (श्री देवचन्द्र जी) ने अपने बाद एक ऐसे पुत्र की कामना की थी, जो उनके सत्य धर्म की महानता को संसार में प्रकट करे।

पीछे उस के एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे।

भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार ॥१४॥

मेरा पुत्र मेरे देह त्याग के पश्चात् मेरे समान ही परब्रह्म की भक्ति करे तथा परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम का ज्ञान देवे। परब्रह्म ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया तथा जिस प्रकार अलग-अलग भाषाओं में उनके अनन्त (बहुत से) नाम हैं, उसी प्रकार उन सभी नामों की शोभा श्री प्राणनाथ जी (एहिया) को प्रदान की और उन्हें पूर्णरूप से अपना स्वरूप बना लिया।

आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कहा मेहेमूद।

आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥१५॥

कियामत के समय अपने सभी कार्यों को करने के लिये श्री प्राणनाथ जी पूर्ण रूप से सामर्थ्यवान हैं। इनका यह आवेश स्वरूप श्री राज जी से पूर्णतया अरस-परस है अर्थात् एक रस है। इन्हें आखिरी मुहम्मद भी कहा जाता है। कियामत के समय में सारी महिमा एकमात्र श्री प्राणनाथ जी की है। श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा ब्रह्मसृष्टियों की अनुपम गरिमा को प्रकट किया है।

इस्म धरे का माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह।

ए तिस वास्ते ऐसा कहा, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥१६॥

यहिया को परब्रह्म के सभी नाम प्रदान किये जाने का अर्थ यह है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि में कोई भी मानव शरीरधारी व्यक्ति, श्री प्राणनाथ जी के समान नहीं है। ऐसा इसलिये कहा गया है कि इस स्वरूप से होने वाली जागनी लीला में इनसे ऐसा कोई भी कार्य नहीं हुआ, जिसे धर्म विरुद्ध (अपराध) कहा जा सके।

द्रष्टव्य- यद्यपि सत्य धर्म का आचरण करने वाले हरिश्चन्द्र जी जैसे बहुत से धर्मात्मा पुरुष हो चुके हैं, किन्तु वे जीव सृष्टि के थे और परब्रह्म के आवेश से रहित होने के कारण उनकी उपमा श्री प्राणनाथ जी से नहीं की जा सकती है।

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे।

मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥१७॥

जिकारिया ने कहा- मेरे आराध्य! मेरे यहां पुत्र कैसे पैदा हो सकता है? मेरी पत्नी तो वयोवृद्धा है। वह पुत्र पैदा करने की स्थिति में नहीं है।

**अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इन सेती।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर॥१८॥**

अब मुझे ऐसी आशा हो गयी है कि मुझे परब्रह्म की कृपा से ऐसा पुत्र प्राप्त होगा, जिससे स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया जा सकता है। पहले मुझे परब्रह्म की ऐसी अनुपम कृपा की जानकारी नहीं थी और न धर्म कार्य को आगे बढ़ाने की चिन्ता थी, जो इस समय मेरे हृदय में है।

**मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आपसों हुई पेहेचान।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए॥१९॥**

जिकरिया (श्री देवचन्द्र जी) कहते हैं- मेरे सर्वस्व! यद्यपि मैं गरीब और शक्तिहीन हूँ, फिर भी मुझे यह ज्ञान हो चुका है कि मुझे पुत्र प्राप्ति की शोभा मिलने वाली है। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरा यह पुत्र संसार में आपकी पहचान कराने वाला हो। आपकी महिमा फैलाने में वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करे।

**कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कहा जो तुम।
ए बात यों ही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे॥२०॥**

जिकरिया की बात सुनकर फरिस्ते ने परब्रह्म के आदेश से कहा कि हे जिकरिया! जो तुमने स्वयं को वृद्ध एवं शक्तिहीन कहा है, वह पूर्णतया सत्य है।

**ए तेरे खुदाए ने कहा, पैदा करने काम फरजंद का भया।
कहा बीच इस सिनसे, आसान खुदा के दो सकसों से॥२१॥**

किन्तु, तुम्हारे परब्रह्म ने तुम्हारे यहां पुत्र पैदा होने का आदेश दिया है। यह सुनकर जिकरिया ने पूछा कि वह कब पैदा होने वाला है? फरिस्ते ने उत्तर दिया, कि इसी वर्ष वह पैदा होगा। परब्रह्म के लिये यह कार्य बहुत ही सरल है। वे अपने दोनों स्वरूपों से सन्तान पैदा करेंगे अर्थात् बशरी सूरत और मल्की सूरत को एक तन (श्री महामति जी के हृदय) में एकत्रित करके हकी सूरत रूप पुत्र एहिया को उत्पन्न करेंगे।

**तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूद सेंती बूंद में लिया।
बुजरकी सों खुदाए ने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही॥२२॥**

इस प्रकार, परब्रह्म ने अपने वचन (वायदे) के अनुसार जिकरिया (श्री देवचन्द्र जी) को एहिया नामक सच्चा पुत्र प्रदान किया। श्री मिहिरराज जी के नश्वर तन में परमधाम की

अपनी आत्मा का प्रवेश कराकर उनके धाम हृदय में अपनी शक्ति को भी विराजित कर दिया और उन्हें अपनी वह सारी शोभा दी जिसके सम्बन्ध में उन्होंने वचन दिया था। इस प्रकार, जिकरिया को मनोवांछित पुत्र प्राप्त हुआ।

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल ।

ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे ॥२३॥

अपनी वृद्धावस्था के कारण जिकरिया को पुत्र प्राप्ति की कोई आशा नहीं थी किन्तु पुत्र प्राप्ति की सूचना से वे बहुत अधिक प्रसन्न हुए। इस बात को प्रत्यक्ष रूप में किसी ने भी नहीं जाना। वि. सं. १७१२ के पश्चात् जब श्यामा जी की आत्मा ने श्री देवचन्द्र जी का तन छोड़कर श्री मिहिरराज जी के तन (श्री महामति जी के धाम हृदय) में प्रवेश किया और जब उनके तन से 'तेहज वाणी ने तेहज चरचा' (रास १/७६) की लीला होने लगी, तब सभी ने इस रहस्य को समझा।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे ।

मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह ॥२४॥

जिकरिया (श्री देवचन्द्र जी) कहते हैं कि मेरे धाम धनी! मुझे पुत्र देने का आपका वचन कैसे सत्य होगा? मेरा वंशानुगत (शरीरज) पुत्र जो बिहारी जी है, मुझे नहीं लगता कि वह धर्म का उत्तरदायित्व संभाल सकेगा।

कह्या खुदाए ने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।

मरदोंसे बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥२५॥

परब्रह्म ने उत्तर दिया कि तुम्हारा पुत्र बिहारी जी मेरी वास्तविकता को संसार में प्रकट नहीं कर पायेगा। वह ब्रह्ममुनियों से ब्रज, रास, एवं तुम्हारे तन से होने वाली जागनी लीला तथा परमधाम की लीला का वर्णन नहीं कर सकेगा।

भावार्थ- रात्रि की तीन लीलाओं का आशय ब्रज, रास एवं सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तन से होने वाली लीला से है। इस सम्बन्ध में क. हि. २३/७५ का यह कथन देखने योग्य है-

एक सुख सुपन के, दूजे जागते ज्यों होए ।

तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन देए ॥

वि. सं. १७३५ से पहले तक रात्रि की लीला थी। जब वि. सं. १७३५ से श्यामा जी के ४० वर्ष प्रारम्भ होते हैं तभी खिल्वत, परिक्रमा, सागर एवं श्रृंगार का अवतरण होता है।

परमधाम का ज्ञान देने वाले इन चारों ग्रन्थों के प्रकटन के पश्चात् ही दिन की लीला अर्थात् परमधाम की जागनी लीला प्रारम्भ होती है। इसके पूर्व की तीनों लीलाएं ब्रज, रास तथा श्री देवचन्द्र जी के तन से होने वाली लीला सभी रात्रि की अथवा स्वप्नमयी लीला है।

**ए बटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तक़रार, दिन फ़जर का ख़बरदार ॥२६॥**

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के देहज पुत्र बिहारी जी की यह वास्तविकता है। कुर्आन के रहस्य को विलक्षण प्रतिभा वाले ब्रह्ममुनि धर्म योद्धा ही जानते हैं। ये ही लैल तुल कद्र की रात्रि के तीनों भागों तथा दिन के समय की चौथी जागनी लीला को यथार्थ रूप में जानते हैं।

ए क्या जाने फ़रजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी ॥२७॥

वंशानुगत पुत्र बिहारी जी सत्य धर्म के संदेश को प्रसारित करने के सम्बन्ध में भला क्या जान सकते हैं? यह शोभा तो परब्रह्म ने श्री देवचन्द्र जी के धर्मपुत्र श्री मिहिरराज को दी है।

॥ प्रकरण ॥१४॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

**छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद।
बड़ी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए ॥१॥**

हे साथ जी! अपने प्राणेश्वर की प्रेममयी भक्ति (चितवनी) एकान्त में छिपकर ही करनी चाहिए। ऐसा करने वाले ब्रह्ममुनियों को प्रियतम की निकटता का आनन्द मिलता है अर्थात् उनके दर्शन एवं वार्ता का रस मिलता है। सबसे बड़ी अनन्य परा प्रेम लक्षणा भक्ति छिप कर ही होती है, इसे अपने परिचित-अपरिचित सभी लोगों से छिपाकर ही किया जाता है **भावार्थ**— शरीयत की बन्दगी प्रायः सामूहिक होती है और संसार में प्रचारित हो जाती है, किन्तु हकीकत-मारिफत (चितवनी) का मार्ग एकान्त में ही फलीभूत होता है।

**बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम।
बरस निन्यानवे कही हरम, साथ ईसा के समझियो मरम ॥२॥**

हे साथ जी! आप इस रहस्य को समझिए कि वि. सं. १६३८ में श्री देवचन्द्र जी के उमरकोट में जन्म होने से लेकर वि. सं. १७३७ में रामनगर पहुँचने तक ६६ वर्ष होते हैं।

इतने समय तक श्यामा जी को अपने दूसरे तन में भी परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति की ही शोभा रही। उदयपुर में सुन्दरसाथ के ऊपर औरंगजेब के होने वाले आक्रमण से व्यथित होने के कारण आपको बहुत अधिक लज्जा का अनुभव हुआ। मन्दसौर में आठ माह तक भिक्षा का अन्न ग्रहण करने का भी कष्ट सहा, किन्तु रामनगर में शेख खिज्र के अतिरिक्त अन्य किसी के सामने अति संवेदनशील होकर आपने कभी भी अपने ब्राह्मी स्वरूप का स्वतः परिचय नहीं दिया।

द्रष्टव्य- यद्यपि श्री जी ने सूरत में लालदास जी को अन्न ग्रहण करने के लिये तथा औरंगाबाद में राजा भावसिंह को धर्म रक्षा के लिये अपने स्वरूप का सांकेतिक परिचय अवश्य दिया, किन्तु स्पष्ट रूप में नहीं। इतना अवश्य हुआ कि लालदास जी, अब्बल खां, जहान मुहम्मद तथा भावसिंह ने उनके स्वरूप को पहचान तो लिया, किन्तु स्वयं श्री जी ने अपने मुख से अपने विषय में स्पष्ट रूप से नहीं बताया।

सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही।

बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ॥३॥

श्री देवचन्द्र जी की आयु वृद्धावस्था की हो गयी थी किन्तु उनमें धर्म कार्य के लिये धर्मपुत्र पाने की प्रबल इच्छा बनी रही। वे अपनी अस्वस्थ अवस्था में भी पुकार लगाते रहे कि कोई मिहिरराज जी को बुलाकर लाये, किन्तु उनकी धीमी आवाज को बिहारी जी तथा उनके सहयोगियों ने सुनकर भी अनसुना कर दिया।

पाँच जिल्दे इन् मजले पाई, तो लों बात करी छिपाई।

जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार ॥४॥

रामनगर तक श्री महामति जी के तन से रास, प्रकाश, शटऋतु, कलश तथा सनंद इन पांच ग्रन्थों का अवतरण हो चुका था। यहां तक श्री जी ने हिन्दू-मुस्लिम (वेद-कतेब) के एकीकरण की बात को छिपाये रखा। उदयपुर, मन्दसौर तथा औरंगाबाद में उन्होंने एकीकरण की बात को कहा भी किन्तु उसे सुनकर क्रियान्वित करने वाला ब्रह्ममुनि राजा सामने नहीं आया।

भावार्थ- उदयपुर के राणा तथा रामनगर के राजा जीव सृष्टि के पुरुष थे। भावसिंह ईश्वरीय सृष्टि में थे। अब्बल खां, शेख खिज्र तथा जहान मुहम्मद के पास राज सत्ता नहीं थी, इसलिये ब्रह्मसृष्टि होते हुए भी वे यह कार्य नहीं कर सके। वस्तुतः यह शोभा महाराजा छत्रसाल जी को ही मिलनी थी।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर।

ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूं बात॥५॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तारतम ज्ञान की पुकार ऐसी दिव्यता से परिपूर्ण है कि यदि कोई चाहता तो उससे अपनी, अपने प्रियतम और अपने मूल घर की पहचान कर सकता था। छत्रसाल जी कहते हैं कि अब मैं दूसरे तन से होने वाली हकी सूरत की लीला की बात कहता हूँ, उसे ध्यान पूर्वक सुनिए।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार।

खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर॥६॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि हे धाम धनी! मेरी पुकार सुनिये। वृद्धावस्था के कारण मेरी अस्थियां बहुत ही निर्बल हो गयी हैं। मेरा शरीर रूपी यह घर मेरुदण्ड की अस्थियों पर ही टिका हुआ है। वृद्धावस्था के कारण अस्थियों सहित सभी अंग सुस्त (ढीले) हो गये हैं।

भावार्थ—यद्यपि, रामनगर में श्री मिहिरराज जी के तन की आयु ६२ वर्ष की है किन्तु श्यामा जी के द्वारा धारण किये गये पहले एवं दूसरे तन की कुल आयु लगभग ६६ वर्ष की हो चुकी है। जब तक श्री मिहिरराज जी के तन से परमधाम की चार किताबों खिल्वत, परिक्रमा, सागर और शृंगार का अवतरण न हो, तब तक किसी सुन्दरसाथ की आत्मा को पूर्ण रूप से जागृत होने का सौभाग्य नहीं मिल सकता था। यहां तक कि संसार भी श्री जी को अक्षरातीत के रूप में मानने के लिये पूर्ण रूप से तैयार नहीं था। इसकी एक झलक आकोट में भी देखने को मिली, जब जागनी लीला में मिलने वाले लगातार कष्टों के कारण सुन्दरसाथ का श्री जी एवं स्वयं के ब्रह्मात्मा होने के स्वरूप पर भी विश्वास डगमगाने लगा था। उन्हें पुनः विश्वास की चादर ग्रहण कराने के लिये श्री जी को विवश होकर प्रबोधित करना पड़ा था। इस प्रकरण की चौ. ६ और ७ में वृद्धावस्था का वर्णन आलंकारिक है। इसका भाव यह है कि जागनी लीला में तीव्रता लाने के लिये श्यामा जी का हृदय पुकार रहा है कि मेरे प्राणेश्वर! इस संसार में मुझे आये हुए ६६ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। आपके निर्देश के अनुसार मैंने दूसरा तन भी धारण कर लिया है। तब आप परमधाम का ज्ञान कब प्रकट करेंगे और सुन्दरसाथ को कब जगायेंगे? मेरे द्वारा धारण किये हुए तन को आप अपनी शोभा से कब शोभायमान करेंगे? क्या यूँ ही सारा समय बीतता रहेगा?

**कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत॥७॥**

श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि मेरे आराध्य! मेरे शरीर की उम्र पूरी होने जैसी हो गयी है, फिर भी इससे जागनी का कार्य अच्छी प्रकार हो रहा है। भले ही मेरे सिर के बाल सफेद क्यों न हों किन्तु मेरे हृदय और मस्तिक, ज्ञान की ज्योति को फैलाने में अभी भी सक्रिय है।

भावार्थ- मनुष्य की उम्र प्रायः १०० वर्ष मानी जाती है। श्यामा जी के द्वारा मानवीय तन धारण किये हुए ६६ वर्ष बीत जाने पर भी लक्ष्य अभी अधूरा दिख रहा है। यही कारण है कि अक्षरातीत श्री राज जी की शीघ्र कृपा-दृष्टि के लिये यह करुण पुकार की गयी है। जीव सृष्टि के महापुरुषों ने छोटी आयु में ही महान कार्य कर दिखाये हैं। आदि शंकराचार्य जी ने मात्र ३२ वर्ष की आयु में आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाया। इसी प्रकार सन्त ज्ञानेश्वर २१ वर्ष, स्वामी रामतीर्थ ३६ वर्ष, स्वामी विवेकानन्द ३६ एवं चैतन्य महाप्रभु ने ५२ वर्ष तक की उम्र में चमत्कारिक कार्य किया। ऐसी अवस्था में परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति यदि लक्ष्य प्राप्त न कर सके, तो इस प्रकार के शब्दों में सम्बोधित करना स्वाभाविक है। बालों का श्वेत हो जाना अति वृद्धावस्था का सूचक है।

**अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल॥८॥**

मेरे प्राणेश्वर! भले ही मेरा शरीर वृद्ध क्यों न हो गया हो किन्तु आपकी महिमा को संसार में फैलाने एवं ब्रह्मात्माओं को जगाने के लिये मेरी सदा तरुणावस्था ही रहेगी। जिस प्रकार अग्नि सूखी घास को जला देती है, उसी प्रकार मेरे हृदय में ब्रह्मज्ञान की जो दिव्य ज्वाला धधक रही है, उससे इस ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण अज्ञान भस्म हो जायेगा। दूसरा तन धारण कर वृद्ध होने पर भी मैंने तारतम्य ज्ञान की ज्योति को विस्मृत नहीं किया है। सच तो यह है कि उस ज्ञान के ज्योति की झलझलाहट से मेरा हृदय निरन्तर ही प्रसन्नता का अनुभव करता रहता है।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जाहें।

याद किया माहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान॥१॥

कुर्आन के सोलहवें सिपारे में सौ वर्षों की एक मंजिल (जागनी यात्रा) का यह प्रसंग है अर्थात् श्री देवचन्द्र जी के जन्म से लेकर दूसरे शरीर की लीला के सौ साल के पश्चात् उस तन को इद्रीस की उपमा मिलती है। हे साथ जी! कुर्आन के इस प्रसंग को हृदयंगम कीजिये।

भावार्थ- कुर्आन के सोलहवें सिपारे के सूरे मरियम की ५६ वीं आयत में यह प्रसंग वर्णित है- “वज्कुर फिल्किताबि इद्रीस इन्नह कान सिद्दीकन् नबिय्यन्” (कुरान पा. १६ सू. १६ आ. ५६) “और किताब में इद्रीस का जिकर भी कीजिए। वह भी निहायत सच्चे नबी थे।

बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था।

अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कह्या इस ठाम॥२॥

राजा उग्रसेन की पुत्री देवकी के पुत्र श्री कृष्ण जी थे। उनके पिता वसुदेव जी (नूह पैगम्बर) तथा दादा शूरसेन (लूत पैगम्बर) थे। कुर्आन में श्री कृष्ण जी को अबनूस कहा गया है। रामनगर में श्री महामति जी को इद्रीस की शोभा प्राप्त हुयी।

ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन।

अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम॥३॥

कुर्आन में ऐसा लिखा है कि इद्रीस पैगम्बर दर्जी का कार्य करते थे। उन्होंने कपड़ों के छोट-छोटे टुकड़ों को जोड़कर एक सुन्दर चादर तैयार कर दी। उसी प्रकार श्री महामति जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में वेद-कतेब के गुह्य अर्थों को स्पष्ट कर, सत्य धर्म की दिव्य चादर तैयार की, जिसके द्वारा संसार को सबसे पहले परमधाम के सत्य का बोध हुआ। इस महान कार्य के कारण उन्हें इद्रीस की शोभा मिली।

तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल।

बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछेआदम के सौ बरीस॥४॥

श्री श्यामा जी के दूसरे तन में वि. सं. १७३६ में वास्तविक सत्य का उद्घोष करने वाला सनद ग्रन्थ अवतरित हुआ। जिसमें कुर्आन के तीस सिपारों का भाव तीस प्रकरणों में अवतरित हुआ। श्री देवचन्द्र जी के जन्म के सौ वर्षों के पश्चात् वि. सं. १७३८ में श्री महामति जी को इद्रीस कहलाने की शोभा मिली, जिसका वर्णन कुर्आन के सोलहवें सिपारे में किया गया है।

**तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान ॥५॥**

समस्त जन समुदाय ने मुक्त कण्ठ से यह स्वीकार किया कि श्री महामति जी सत्य का उद्घोष करने वाले इद्रीस की तरह हैं। ये निश्चित रूप से ही हमें परब्रह्म का सत्य ज्ञान देंगे। श्री महामति जी ने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा सबको परमधाम की पहचान करायी है और चितवनी के द्वारा उनकी आत्मिक दृष्टि को चौथे आकाश परमधाम में पहुंचाकर परब्रह्म के दर्शन का मार्ग सुलभ करा दिया है।

पैगंमर की दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ॥६॥

मुहम्मद स. ने परमधाम में जाकर जिस परब्रह्म का साक्षात्कार किया था, उसकी प्रामाणिकता श्री कुलजुम स्वरूप से सिद्ध हो गयी। मुहम्मद स. तथा इद्रीस पैगम्बर के जो कथन कुर्आन में दर्शाये गये हैं, वे भी श्री प्राणनाथ जी की लीला में समाहित हो गये।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ४२५ ॥

**कह्या आम सिपारे माहें, अग्यारै सदी लिखी है जाहें।
हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत ॥१॥**

कुर्आन के तीसवें सिपारे जिसे आ-म सिपारा कहते हैं उसमें ग्यारहवीं सदी का वर्णन लिखा हुआ है। महाराजा श्री छत्रशाल जी कहते हैं कि अब मैं अपने प्राणेश्वर सद्गुरु के आदेश से संकेतों में कहे हुए कुर्आन के कथनों का रहस्य स्पष्ट करता हूं, जिससे कियामत की पहचान हो सके।

भावार्थ—कुर्आन के तीसवें सिपारे की ८६ वीं सूरात सूरे फज्र की आयत २ व ३ में यह प्रसंग वर्णित है—

पा. ३० सू. ६७ कद्र आयत ३ “लैलतुल् - कद्रि खैरुम - मिन अल्फि शहरिन्” अर्थात् शबे कद्र हजार माह से बेहतर है यानि (१००० / १२ (३५५ दिन का इस्लामी वर्ष हिजरी) = ८३ १/४ साल) ८३ साल ४ महीने अर्थात् ११वीं सदी। इसका वर्णन एक दिन हजार वर्ष के बराबर है।

पा. ३० सू. ८६ आ. २-३ “व लयालिन् अशिरिन्(२) द'वश्शफूइ वल्वतिर(३)” अर्थात् और दस रातों की और जुप्त और ताक की (कस्म) अल्लाह की एक रात सौ वर्ष की हैं। कुल

१०११००=१००० वर्ष होते हैं व पार: १७ सूर: २२ आ. ४७ “व यस्तऽजिलूनक बिल्अजाबि व लंयुख्लिफल्लाहु वऽदह व इन्न मौमन् इन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिमा तअुद्दून” अर्थात् और तुमसे अजाब की जल्दी कर रहे और खुदा वायदा हर्गिज खिलाफ नहीं करता है और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नजदीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुताबिक हजार वर्ष के बराबर है।

दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बाँध्या सरत एती।

नाम हजरत के सेहर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई॥२॥

मुहम्मद स. ने परब्रह्म से प्रार्थना की कि मेरे हाथ से कियामत का रहस्य खुले। इस सम्बन्ध में परब्रह्म की ओर से कुर्आन में जो सांकेतिक रूप से कहा गया है, वह इस प्रकार है कि एक यहूदी लड़की ने मुहम्मद स. के ऊपर टोना करने के उद्देश्य से उनके बालों की चोरी की और उन बालों की रस्सी बनाकर उनमें ग्यारह गांठें लगा दी।

रस्सी रखी कूएं के माहें, ऊपर पत्थर दिया ताहें।

जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर॥३॥

उस लड़की ने रस्सी को कुएं के अन्दर रखा तथा उस रस्सी के ऊपर पत्थर रख दिया। जब टोने के प्रभाव से मुहम्मद स. के सिर में दर्द होने लगा, तो जिब्रील फरिश्ते ने सारी वास्तविकता मुहम्मद स. को बता दी। मुहम्मद स. के निर्देश पर हजरत अली जाकर कुएं के अन्दर उतर गए।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक का सूक्ष्म अर्थ यह है कि ब्रह्मात्माओं की सुरता ही रस्सी है। मोहसागर का यह ब्रह्माण्ड ही कुआं है जिसमें ब्रह्मात्माओं की सुरता रूपी रस्सी को उतारा गया है। ग्यारह गांठें ग्यारहवीं सदी का प्रतीक हैं। रस्सी के ऊपर नींद (फरामोशी) का पत्थर रख दिया गया है, जिससे किसी की आत्मा जागृत नहीं हो पाती। हजरत अली ‘महाराजा श्री छत्रशाल जी’ हैं, जिन्हें श्री जी ने अपने हुक्म का स्वरूप बनाकर कियामत का संदेश चारों ओर फैलाने का निर्देश दिया।

अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारें सदी हुई नजर।

अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर॥४॥

आलम हजरत अली कुएं में उतरकर रस्सी को बाहर ले आए। रस्सी में ग्यारह गांठों को देखकर मुहम्मद स. को यह विदित हो गया, कि ग्यारहवीं सदी में कियामत आनी है। उस

समय परब्रह्म की ओर से ग्यारह आयतों का अवतरण हुआ, जिससे सभी ग्यारह गांठें खुल गईं। इस प्रकार परब्रह्म ने जिब्रील के द्वारा ग्यारहवीं सदी के पश्चात् कियामत होने का संदेश भेजा।

भावार्थ- पा. ३० सू. ११२ आयत १-३ “कुल् हुवल्लाहु अहदुन्(१) अल्लाहुस्समदु(२) लम् यलिद् व लम् यूल्द(३)” अर्थात् वह खुदा एक है और अद्वितीय है। अल्लाह ही सबका आधार है। उसका कोई आधार नहीं। खुदा से न कोई जन्मा है और न वह किसी से जन्मा है। Page ६१८ तफसीर ए हुसैनी लिखा है कि एक यहूदी का लड़का रसूल साहेब की खिदमत में मशगूल था। लवेध बिन आसम यहूदी की लड़की उससे इसरार (विनती) और मुबालका करके रसूल साहेब के बाल मुबारिक मांग ले गई। और हजरत का नाम लेकर एक रस्सी पर जादू फूंक के चाह-जरबान में एक पत्थर के नीचे दबा दिया। जबराईल ने हजरत सैयद को खबर की। हजरत ने अली से कहा तो कुएं में जाकर देखा कि उसमें ११ गिरहें लगी थीं। तो हक तआला भेजी आयतें और जबराईल ने ये सूरते पढ़ीं तो हर आयत के साथ उस रस्सी की एक गिरह खुल गई। अकबा-बिन-आमर ने हजरत मुहम्मद से रिवायत की है। (ग्यारहवीं सदी में हक का जाहेर होने का वर्णन किया है)

यानि पनाह मांगने वालों के वास्ते इन दो सूरतों के मिसल कोई पनाह नहीं। कुछ पनाह लेता हूं मैं सुबह पैदा करने वाले की। और बाज ने कहा कि फलक वो चीज है जो फटे। जैसे गुठली दरख्त उगने की जगह से फट जाती है। और जैसे पत्थर और जमीन पानी निकलने से राख हो जाती है। या दोजख में एक कैदखाना है और बाहर तकदीर उसके खुदा की पनाह मांगना चाहिए। बुराई से चीज जो पैदा हुई है।

और बुराई से अंधेरी रात के जब उसका अंधेरा आए सब चीजों पर या आप्ताब (सूर्य) की बुराई से जब वो गरूब (छिपा) करे या चांद की बुराई से जब निकले और ग्रहण बैठे या सुरिया (सुरैया) की बुराई से जब गिरे तो वो बीमारियों की कसरत और इददत का महल है और उसका तलूफ रंजों और बीमारियों की किल्लत का वक्त है। और सर से फूंकने वालियों को यानि उन औरतों की बुराई से जो जादू के कलमें कहती है। और फूंकती है गिरोहों में और बुराई से हस्द करने वालों के जब वो अपना हस्द जाहिर करे, उसके मुआफिक अम्ल करे। इस वास्ते कि अगर छुपाए तू उसके हस्द का गर्द उसी पर फिर आए तो इससे यहूद मुराद है कि हजरत मुहम्मद पर हस्द रखते थे। जो सबसे बुरी सिफ्त है। (दुनिया की हद निराकार है जबकि मोमिन का घर परमधाम है)

इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई।

उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल ॥५॥

इन्हीं ग्यारह आयतों को पढ़ने के लिए मुहम्मद स. को आदेश हुआ। जैसे-जैसे आयत पढ़ते गये वैसे-वैसे एक-एक गांठ खुलती गयी। अली वली के मोजिजे को देखकर उमर रजि. ने इन आयतों की नकल करके कहा, कि हे रसूल अल्लाह सल्ल.! ये सारी आयतें तो बहुत ही विचित्र हैं। इनसे तो जादू का प्रभाव ही समाप्त हो गया।

वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर।

इनसे पनाह पकड़ी मैं, सो तिनकी फजर करी हैं जिने ॥६॥

परब्रह्म ने यहूदी लड़की के टोने को नश्ट करने के लिए जो आयतें भेजीं, उनसे सभी गांठें खुल गईं। और मुहम्मद स. जादू के बंधन से मुक्त हो गये। अर्थात् कियामत के समय में परमधाम के ज्ञान के प्रकाश से ब्रह्मात्माओं के ऊपर छाया माया की फरामोशी हट जाएगी। माया का खेल देखने की इच्छा ही उस यहूदी लड़की का किया हुआ जादू है, जिसने श्री श्यामा जी सहित सभी ब्रह्मात्माओं को अपने बंधन में कर लिया है। श्री छत्रशाल जी की आत्मा का कथन है कि मैंने इस घटनाक्रम से सीख लेकर उस प्राणेश्वर अक्षरातीत की शरण ली है, जिन्होंने कियामत के समय में परमधाम के ज्ञान से अज्ञानता की रात्रि को समाप्त कर दिया है और प्रातःकाल का उजाला कर दिया है।

फलक चीज केहेते हैं एक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक।

महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास ॥७॥

यद्यपि आकाश तो एक ही है, किन्तु प्रातःकाल सूर्योदय के समय प्रकाश बढ़ता जाता है तथा सन्ध्याकाल में सूर्यास्त के समय प्रकाश की तीव्रता कम होती जाती है। इस प्रकार जैसे एक ही आकाश के लालिमा भेद से दो स्वरूप दिखायी पड़ते हैं, उसी प्रकार श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी एक ही अक्षरातीत के द्वारा धारण किये गये दो स्वरूप हैं। यदि विवेक दृष्टि से देखा जाये, तो इनमें आन्तरिक रूप से कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही स्वरूप हैं। श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में उस परमधाम की राह दिखायी है, जहां प्रियतम अक्षरातीत की लीला, शोभा, प्रेम एवं आनन्द का अनन्त सागर लहरा रहा है।

पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास ॥८॥

परमधाम के इस अनुपम ज्ञान को ग्रहण करने में जो पीछे रह जाता है या अस्वीकार कर देता है, उसके विषय में यही मान लेना चाहिए कि उसका हृदय पत्थर के समान कठोर है तथा घास के समान वह अत्यन्त संकीर्ण विचारधारा का व्यक्ति है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं, कि वह मोह सागर में उत्पन्न होने वाला माया का कोरा जीव है।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३३ ॥

**सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए सूरत रोसन।
खास उमत आगे करो बयान, ले रोसनी मारो सैतान ॥१॥**

कुर्आन के तीसवें सिपारे का आधा भाग जब पूर्ण होता है, तो वहां १८वीं सूरत समाप्त होती है। वहां मक्की सूरत में प्रातःकाल के उजाले (फज्र) का वर्णन है। मैं उसे ब्रह्मसृष्टियों के समक्ष दर्शा रहा हूँ। उसके ज्ञान से मुझे अज्ञान रूपी दज्जाल को मारना है।

**सौगंद खाई बीच होनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ॥२॥**

मुहम्मद स. ने कुर्आन-हदीसों में सौगन्ध खाकर कहा है। कि जब कियामत के समय प्रातःकाल के उजाले (फज्र) की लीला होगी, उस समय स्वयं परब्रह्म इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के रूप में आयेंगे। मुहम्मद साहब के दोस्तों ने उनके प्रार्थना कि उस समय हमें भी उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो। जो भी व्यक्ति फज्र की इस लीला में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करके उनकी प्रेममयी भक्ति करेगा, उसे परब्रह्म के दर्शन एवं आनन्द का अनुभव होगा तथा उसके जीव के हृदय को अखण्ड शान्ति मिलेगी।

भावार्थ- पार: ३० अम-म सूरता शम्स ६१ आयत १-३ “वश्शमसि व जुहाहा वल्क-मरिजा तलाहा वन्नहारि इजा जल्लाह” यानि- सूरज की कस्म और उस रोशनी की ओर चांद की जब उसके पीछे निकले और दिन की जब उसे चमका दे। यहां पर आकाश में सूर्य का वर्णन इमाम महदी साहिबुज्जमाँ की महिमा दर्शाता है।

पार: ३० सूर: ६२ आयत १-२ “वश्शमसि व जुहाहा(१) वल्कमरि इजा तलाहा(२)” अर्थात् रात की कस्म जबकि वह दिन को ढाँक ले, और दिन को कस्म जब वह खूब रोशन हो।

पेहेला रोज कौल हरमत, सो हादी देखावे रोज कयामत ।

जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर ॥३॥

पहले दिन अर्थात् दसवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का प्रकटन हुआ, जिन्होंने संसार में तारतम ज्ञान को अवतरित करने की शोभा प्राप्त की। वे दूसरे तन में विराजमान होकर श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में कियामत के प्रकट होने की पहचान करा रहे हैं। बारहवीं सदी के जिस समय में फज्र (उजाले) की लीला प्रारम्भ हुई है उसमें ब्रह्मात्माओं की अन्तर्दृष्टि खुल गयी है। यह बात पहले से ही कुर्आन में संकेतों में बतायी गयी है।

भावार्थ- पा. ३० सूर: ८६ फज्र आयत १-३ “वल्फूजि(१) व लयालिन् अशूरिन्(२) ववशफूअि वल्वतूरि(३)” फज्र की कस्म और दस रातों और जुफ्त और ताक की

पार: ३० सूर: ८६ वलद आयत । “वव जाअ रब्बुक वल्मलकु सप्फन् सप्फन्”(२२) और तेरा परवरदिगार सामने मौजूद होगा और फरिश्ते पांति की पांति (अल्लाह के हुक्म की राह देख रहे होंगे।)

या अय्यतुहन्नप्सुल्-मुत्मअिन्नतु(२७) अर्रजिअी अिला रब्बिकि राजियतम्-मर्रजियतन्(२८) फदखुली फी अिबादी(२६)

(और सुख-दुःख हर हालत में अपने अल्लाह से संतोश रखने वाली रूह से कहा जायगा कि) ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह (शान्त आत्मा!) (२७) अपने परवरदिगार की ओर लौट चल, तू उससे राजी और वह तुझसे राजी। (२८) फिर मेरे नेक (नेक और प्यारे) बन्दों में जा मिल, (२६)

ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात ।

इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात ॥४॥

इस जागनी लीला में पहला दिन दसवीं सदी का है। उसे रात के समान कहा गया है क्योंकि उसमें किसी को भी परब्रह्म की पहचान नहीं हुई। दसवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का प्रकटन हुआ। इस दसवीं सदी के पश्चात् ग्यारहवीं सदी अर्थात् वि. सं. १७३५ से १७४५ में ज्ञान के उजाले से प्रातःकाल की लीला हुई थी। इसमें परब्रह्म के दोस्त कहे जाने वाले तीनों स्वरूपों बसरी, मलकी तथा हकी ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर परमधाम के अनुपम ज्ञान को प्रकट किया।

**दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त ।
कह्या अरफे का अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन ॥५॥**

श्री श्यामा जी ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर विरह-प्रेम के कठोर मार्ग को अपनाया, जिससे श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हुआ। इसके प्रकाश में परमधाम के पच्चीस पक्षों में आत्मिक दृष्टि से भ्रमण करने वाले तथा अत्यन्त विनम्र स्वभाव वाले ब्रह्ममुनियों को अपने प्राणेश्वर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दसवीं सदी अरफा है, जिसके बाद ग्यारहवीं सदी को कुर्आन में ईद अर्थात् प्रसन्नता का दिन कहा गया है। यही वह अनमोल समय है, जिसमें परमधाम के ब्रह्ममुनियों ने परमधाम के ज्ञान सागर में गोता लगाकर स्वयं को धन्य-धन्य किया है।

**पढ़ना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत ।
पाक होवे सबोंका दम, तब जाहेर हुई ईद खसम ॥६॥**

कियामत के समय श्री कुलजुम स्वरूप की चौपाईयों से प्रियतम अक्षरातीत की स्तुति करके आत्म-कल्याण की प्रार्थना करने पर वह अवश्य स्वीकार होती है। इसी प्रकार परमधाम की प्रेममयी चितवनी (ध्यान) करने वाले ब्रह्ममुनियों की सभी आत्मिक इच्छायें (दर्शन आदि) अवश्य पूर्ण होती हैं। यह तारतम ज्ञान संसार के सभी जीवों के हृदय को पवित्र करने वाला है। उन पवित्र हृदय वालों के मध्य ग्यारहवीं सदी में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अक्षरातीत प्रकट होंगे, जो सबके लिये अति आनन्ददायक समय होगा।

**पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली ॥७॥**

इस जागनी लीला में पहला दिन दसवीं सदी का है, जो कियामत के प्रकट होने से सम्बन्धित है। कुर्आन में सांकेतिक रूप से १००० वर्षों को परब्रह्म का एक दिन कहा गया है। मुहम्मद साहब के दोस्तों ने जब उनसे पूछा कि कियामत कब आयेगी तो उन्होंने अपनी दो अंगुलियों को खड़ा करके यह संकेत दिया, कि जब दसवीं-ग्यारहवीं सदी में दो स्वरूपों (दो सूरतों) का आगमन होगा, तब कियामत आयेगी। दसवीं सदी में मल्की स्वरूप श्री देवचन्द्र जी जी आये तथा ग्यारहवीं सदी में हकी सूरत का प्रकटन हुआ।

**दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही ।
कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, आग्यारमी में ऊग्या दिनें ॥८॥**

वि. सं. १७१२ ग्यारहवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के धाम गमन के पश्चात्, मल्की स्वरूप का हकी स्वरूप श्री महामति जी के धाम हृदय में मिलन हुआ। दोनों

स्वरूपों के एकाकार होने के पश्चात् ब्रह्मात्माओं की जागनी हुई। दसवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का जो स्वरूप प्रकट हुआ, उसमें पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान परमधाम का ज्ञान प्रकट हुआ, किन्तु ग्यारहवीं सदी में श्री महामति जी के तन से श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में सूर्य के समान उजाला करने वाला ज्ञान अवतरित हुआ, जिसने रात्रि के अन्धकार को हटा कर दिन कर दिया।

रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही।

भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्ला सों मिल ॥९॥

वि. सं. १७३५ से पूर्व ग्यारहवीं सदी में श्री कुलजुम स्वरूप के ग्रन्थों रास, प्रकाश, शटक्रतु, कलश एवं सनद का अवतरण अलग-अलग प्रसंगों में हुआ। इसके पश्चात् दो स्वरूपों (मल्की तथा हकी) ने मिल कर प्रातःकाल का उजाला किया अर्थात् विक्रम सं. १७३५ के पश्चात् श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्ष प्रारम्भ हुए जिसमें श्री पन्ना जी में वि. सं. १७४०-१७४८ के मध्य खिल्वत, परिक्रमा, सागर एवं शृंगार का अवतरण होने से रात्रि का अन्धकार मिट गया एवं सवेरा हो गया। श्री महामति जी के धाम हृदय में श्यामा जी रूपी बादल के विराजमान होने पर परमधाम के अलौकिक ज्ञान की वर्षा हुई। इसी ज्ञान वर्षा को परमधाम का प्रकाश कहा गया है, जिससे संसार की अज्ञानता की रात्रि नष्ट हुई एवं प्रातःकाल हुआ।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन।

सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान ॥१०॥

श्री श्यामा जी रूपी बादल के बरसने से श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हुआ, जिसे ब्रह्मात्माओं ने आत्मसात् किया, किन्तु जिन जीवों ने अपने अज्ञान एवं अहंकार के कारण उसे स्वीकार नहीं किया, न्याय के दिन वे अत्यन्त लज्जित होंगे तथा प्रायश्चित स्वरूप उनकी आंखों से बड़े-बड़े आंसू गिरेंगे। वे दहाड़ मारकर रोयेंगे और परेशान (व्याकुल) होंगे। अज्ञान से परिपूर्ण संसार की समस्त सृष्टि की ऐसी ही अवस्था होगी।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

साखी-तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन।

रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन ॥१॥

कुरान में तीन अति महिमावान् दिन कहे गये हैं। वे तीनों स्वरूपों की लीला के दिन हैं। मुहम्मद स. से लेकर कियामत के समय तक ये तीन दिन पूरे होते हैं, जिन्हें आपको बताया जा रहा है।

याद करो खुदाए के ताई, तकबीर कहां दिन गिने हैं जाहीं।

ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक॥२॥

हे संसार के लोगों! तुम परब्रह्म को श्रद्धा पूर्वक याद करो और उनके हृदय में जो तीन दिनों की गणना है, उसका तुम विचार करो। ये तीनों दिन बहुत ही गरिमामयी हैं। ये तीनों दिन इस प्रकार हैं- १. मुहम्मद स. के जन्म से लेकर दसवीं सदी तक पहला दिन यानि ईद-ए-मिलादुन्नबी, ईदुलफितर हैं। २. वि. सं. १६३८-१७१२ तक अर्थात् दसवीं ग्यारहवीं सदी तक दूसरा दिन है, जिसे ईद ए फितर का दिन कहते हैं। ३. वि. सं. १७१२ से १७५१ तक (ग्यारहवीं-बारहवीं सदी) तीसरा दिन है, जिसे ईद जुहा अर्थात् सर्वस्व समर्पण (कुर्बानी) का दिन कहते हैं, जिससे अपनी तृष्णाओं एवं अहंकार को प्रेम की वेदी पर न्योछावर कर दिया जाता है। निर्दोश पशुओं की हत्या को कुर्बानी नहीं कहते हैं। इस तीसरे दिन की लीला में संसार को परब्रह्म का दर्शन प्राप्त होना है।

भावार्थ- पार: २६ सूर: ४८ आयत ८ “इन्ना अर्सलनाक शाहिदं व मुबशिशरं व नजीरन्(८)” हमने (ऐ मुहम्मद स.) आपको हक जाहिर करने वाला और खुश खबरी सुनाने वाला व खौफ दिलाने वाला भेजा है।

पार: २८ सू. ६१ आयत ६ “व इज् काल इसबनु मर्यम या बनी इस्राओल इत्री रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिकल्लिमा बैन यदय्य मिनत्तौराति व मुबशिशरम् - बिरसूलिंय् अती मिम्बउदिस्मुह अह्मदु फलम्मा जाअहुम् बिल्बय्यिनाति कालू हाजा सिह्रुम् - मुबीनुन्(६)” और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल। मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि तौरात जो मुझसे पहिले उतरी (किताबे-इलाही) है उसकी तसदीक (पुष्टि) करता हूँ और एक पैगम्बर की खुशखबरी देता हूँ जो मेरे बाद आएगा जिनका नाम अहमद होगा, तो कहा वह तो खुदा जादू है।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई।

अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन॥३॥

इमाम अबू हनीफा या आजम रह. का कथन है कि ग्यारहवीं सदी के पश्चात् बारहवीं सदी में प्रातःकाल (फज्र) की नमाज पढ़ी गयी अर्थात् परमधाम के सर्वोच्च ज्ञान (मारिफत) के प्रकाश में सबने परब्रह्म का ध्यान किया। दसवीं सदी (अरफा) से लेकर असर ईद (ग्यारहवीं सदी में तारतम मिलने तक) दोनों सदियों में परब्रह्म के दो स्वरूपों का प्रकटन हुआ, जिन्होंने तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

भावार्थ- जो मुसलमान हज करने मक्का जाते हैं, वे हाजी कहलाते हैं। वे हज के नियमों का पालन करते हुए अर्फात के मैदान में एकत्रित होते हैं और दो समय की नमाज एक साथ पढ़ते हैं। जोहोर और अम्र सुन्नी और शिया में इसी विषय के संदर्भ को लेकर मत-भेद है क्योंकि सुन्नी पांच वक्त की नमाज अलग-अलग वक्त पढ़ते हैं, जबकि शिया फजर की सुबह और जोहोर व अम्र की एक साथ और मगरिब और ईसा की एक साथ नमाज पढ़ते हैं।

पार: २६ सूर: ७१ आयत १६ ऽव जअलल् - कमर फीहिन्न नूरंब्ब जअलश्शमूस सिराजन् अर्थात् उनके बीच चन्द्रमा को उजाले के लिए और सूर्य को चिराग बनाया।

पार: २६ सूर ७५ आ. १, ८, ९

“ला’ उक्सिमु बियौमिल्-कियामति (१) व खसफल् - कमरु(८) व जुमिअश्शमूसु वल्कमरु(९) हमको कियामत के दिन की कसम। और चन्द्रमा में ग्रहण लग जायगा, और सूरज और चन्द्रमा जमा हो जायेंगे।

पार: ३० सूर: फज्रि ८६ आयत १-२ “वल्फज्रि(१) व लयालिन् अश्रिन्(२)” “फज्र की कसम दस रातों की अर्थात् दस राते बराबर हजार साल और दो तनों की लीला एक सौ पचास साल १२वीं सदी की लीला।

सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर ताई असर इन।

बाधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन ॥४॥

बारहवीं सदी जो प्रातःकाल के दिन का समय है, उसके पीछे दसवीं सदी तक अर्थात् दसवीं से बारहवीं सदी तक श्री श्यामा जी की लीला दो तनों में हुई। सारे संसार ने इस स्वरूप के प्रकट होने के सम्बन्ध में बड़ी आशा बांध रखी थी। इस प्रकार तीनों दिनों की लीला में ब्रह्मात्माओं ने तीनों स्वरूपों की पहचान की और स्वयं को परब्रह्म के प्रेम में समर्पित किया।

इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम।

सिताबी फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ॥५॥

इस सम्बन्ध में इमाम शाफई रह. का कथन है कि जब श्यामा जी (रुह अल्लाह) के द्वारा दूसरा तन धारण किया जायेगा, तो उस स्वरूप की शोभा परब्रह्म के समान होगी। यदि कोई व्यक्ति कियामत के सम्बन्ध में संशय करता है अथवा जल्दी जानना चाहता है, तो उसे कुर्आन में वर्णित कियामत के दिनों का हिसाब कर लेना चाहिए।

**अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे।
बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब॥६॥**

ग्यारहवीं सदी के स्वरूप श्री देवचन्द्र जी एवं बारहवीं सदी के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी में एक ही अक्षरातीत की लीला पहचान कर, जो स्वयं को उनके प्रति समर्पित करता है, उसके ऊपर माया का कोई भी गुनाह (पाप, अपराध) नहीं लगता है। अरब के कुछ ऐसे भी नासमझ (अल्पबुद्धि वाले) लोग हैं, जो कियामत का समय जानने में या तो जल्दबाजी करते हैं अथवा संशय लाते हैं।

**गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कहा यों कर।
सिताबी होवे रुखसद, तुझ पर गुनाह नाहीं कद॥७॥**

हुसैन के पुत्र इमाम जैनुल आबदीन अ. जो शिया (इस्लाम) के चौथे इमाम थे, उन्हें ध्यानावस्था में परब्रह्म ने इस प्रकार कहा, कि इमामत का उत्तरदायित्व न संभालने के कारण तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं लगेगा। अब तुम्हारे और मुहम्मद हन्फिया के दोनों पंथ शीघ्र ही अलग हो जाएंगे। ब्रह्मसृष्टियों का समूह तो कियामत के समय आएगा और इमाम महदी भी उसी समय आएंगे।

भावार्थ— कर्बला के भयानक रक्तपात को देखकर जैनुल आबदीन का मन संसार से खिन्न हो गया और वे एकांत में वर्षों-वर्षों तक परमात्मा की भक्ति में लीन रहे, जिसमें उन्हें उपरोक्त इल्हाम प्राप्त हुआ था। इसका सार यह है कि सच्चे हृदय से बंदगी करने पर जिस प्रकार जैनुल आबदीन को ब्रह्मसृष्टियों के विषय में पता लग गया, उसी प्रकार संसार के लोगों को भी शुद्ध हृदय से परमात्मा की बंदगी में रहना चाहिये।

**और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं।
तिनको कछुए नहीं आजार, तेहेकीक योंही है निरधार॥८॥**

यदि कोई व्यक्ति स्वयं को मायावी प्रपंचों से अलग रखना चाहे तो उसे तीन रातों ब्रज, रास और जागनी के स्वरूप श्री कृष्ण जी, श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पूर्ण पहचान करनी चाहिये और इनके स्वरूप में लीला करने वाले एक अक्षरातीत की सच्चे हृदय से आराधना करनी चाहिये। ऐसा करने वाले को संसार में कुछ भी कष्ट नहीं होता। निश्चित रूप से इस बात में किसी तरह का संशय नहीं करना चाहिये।

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे।

जो कोई खतरों से फिरया होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए॥९॥

संसार में जो व्यक्ति इन्द्रियों के विषय भोगों के प्रति संयम रखता है और नियम पूर्वक परब्रह्म की भक्ति करता है, वह हजारों प्रकार के गुनाह (पाप) करने से डरता रहता है। संसार में जो भी व्यक्ति कष्टों से मुक्त होना चाहता है, उसे संयमित जीवन व्यतीत करते हुए परब्रह्म की भक्ति करनी चाहिये। तभी उसे अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाए का डर।

कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर॥१०॥

मनुष्य की जितनी उम्र शेष बची है, उसमें बुरे कार्य करने में परब्रह्म के दण्ड का भय रखना चाहिये क्योंकि मनुष्य के शुभ और अशुभ कर्म न्याय की लीला में सबके सामने प्रगट हो जाएंगे और उसके प्रायश्चित्त स्वरूप दण्ड भुगतना पड़ेगा। तभी सबको अखण्ड मुक्ति मिल सकेगी।

भावार्थ- ज्ञानदृष्टि से होने वाली कियामत में तो कोई अपने बुरे कर्मों को छिपाकर दण्ड से बच भी सकता है किन्तु योगमाया में होने वाली न्याय की लीला में कोई भी अपने शुभ-अशुभ कर्मों को छिपा नहीं सकेगा। अपने अशुभ कर्मों का प्रायश्चित्त करने के पश्चात् ही उसे अखण्ड मुक्ति का अधिकार प्राप्त होगा। उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण का यही आशय है।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ४५३ ॥

तारीख नामा

इस प्रकरण में कियामत का समय दर्शाया है।

जिनको कयामत की है सक, क्यों कर उठसी एह खलक।

बात नहीं ए बरकरार, काफर न देखें ए विस्तार॥१॥

परमधाम के अलौकिक ज्ञान के द्वारा संसार के जीवों का अज्ञान-निद्रा में सोना छोड़कर जागृत होने के सम्बन्ध में नास्तिक लोगों को संशय रहता है। वे यही सोचा करते हैं कि भला, कियामत के समय में यह सारा संसार कैसे जागृत हो जाएगा? उनकी यह बात बिल्कुल ही उचित नहीं है। वास्तविकता यह है कि परब्रह्म को न मानने वाले काफिरों को इसका रहस्य ही मालूम नहीं है।

न देखें अपना हवाल, कई पैदा किए आदमी डाल।

खुदा खाकपाकसे पैदा किया, तिन बूंद का एविस्तार कर दिया ॥२॥

वे काफिर लोग स्वयं अपनी अवस्था के विषय में नहीं सोचते कि उनके जैसे असंख्यों व्यक्तियों को किस प्रकार मानवीय गर्भ से उत्पन्न किया गया? परब्रह्म के आदेश से समस्त प्राणी जगत की उत्पत्ति पंच भूतात्मक ही है। मन रूप एक बूंद से ही चर-अचर सहित समस्त जगत की उत्पत्ति हुई है।

भावार्थ- पृथ्वी तत्व में शेष अन्य चारों तत्व जल, अग्नि, वायु तथा आकाश कारण रूप से विद्यमान रहते हैं इसलिये पृथ्वी तत्व से बने हुए प्रत्येक पदार्थ को पंच भूतात्मक ही कहते हैं।

बूंद का कथन आलंकारिक भाषा है। एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किये थिर चर । श्रृं. ११/४५ में परमधाम से स्थूल बूंद का आना सम्भव नहीं है। यहां लाक्षणिक भाव में ही बूंद का आशय समझा जायेगा।

इसी प्रकार, कतरे से पैदा हुआ, इनसे उपजे दोए ।

तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रुह सोए ॥ सनद ३७/७

स्पष्ट है कि कतरे (बूंदे) का आकार इतना सूक्ष्म है कि उसे आंखों से नहीं देखा जा सकता। इसी प्रकार अक्षर अव्याकृत का मन स्वात्मिक रूप में बूंद रूप में नारायण का रूप धारण करता है, जिससे अनन्त सृष्टि का उद्भव होता है।

आधुनिक विज्ञान के विग बैंग का सिद्धान्त ही यही है कि एक आलपीन की नोक से भी अधिक सूक्ष्म भाग में विस्फोट से करोड़ों ग्लैक्शियों वाली इस अनन्त सृष्टि का विस्तार हुआ है। सामान्य रूप से इसे भी बूंद के दृष्टान्त से वर्णित किया जायेगा।

एही तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही।

जिन सेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद ॥३॥

इस सम्पूर्ण सृष्टि की जो उत्पत्ति कही गयी है, उसका भी मैं अच्छी प्रकार से स्पष्टीकरण कर देता हूँ। जिस स्वरूप से इस समस्त संसार को अक्षरातीत की पहचान होनी है, उसे नश्वर जगत् के प्रपंचों से निकाल कर परब्रह्म ने परमधाम की अखण्ड सम्पदा उनके हृदय में स्थापित की।

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबू न आवे बुध।

इनमें खुदाए किए दोए, कयामत काम दूजे से होए॥४॥

संसार में कुछ लोग अज्ञानावस्था में ही होते हैं। उनमें कभी भी विवेक पैदा नहीं होता। परब्रह्म ने श्री देवचन्द्र जी को दो पुत्र दिये। दैहिक (वंशानुगत) पुत्र बिहारी जी में धार्मिक भावना थी ही नहीं। कियामत (अखण्ड ज्ञान को प्रसारित करने) का काम उनके दूसरे पुत्र श्री मिहिरराज जी से हुआ।

साहेब चाहे सो करे, निपट माहें नजर में धरे।

ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार॥५॥

परब्रह्म अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते हैं। वे अपनी कृपा-दृष्टि से सामान्य व्यक्ति को भी सरलतापूर्वक महान बना सकते हैं। श्री राज जी ने मेराज में मुहम्मद स. से पहले ही कह दिया था, कि कियामत के समय में ब्रह्मात्माओं का जागनी लीला होगी।

खावंद होए के करसी काम, तिनका अव्वल से धरिया नाम।

बाहेर ल्याया तुमारे ताई, छिपा लड़का था पेट माहीं॥६॥

जिसमें एक ब्रह्मात्मा (श्री महामति जी) के द्वारा मेरा स्वरूप धारण करके जागनी लीला का सारा कार्य किया जाएगा। धर्मग्रन्थों में पहले से ही इनका नाम लिखा है। हे संसार के लोगों! श्री मिहिरराज जी नामक यह बालक तो केशवराय जी के घर में सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा था, किन्तु तुम्हारे कल्याण के लिए मैंने उसे पारिवारिक प्रपंचों से बाहर निकाला और उसमें आवेश स्वरूप से विराजमान होकर मैं ही लीला कर रहा हूँ।

भावार्थ- संस्कृत में “मिहिर” शब्द का अर्थ सूर्य होता है। इस सम्बन्ध में पुराण संहिता में सोलह श्लोकों को मिलाकर एक श्लोक की रचना होती है, जिसमें लिखा है-

सुन्दरी चेन्दिरा नामाभ्याम् चन्द्रसूर्ययोः ।

मायान्धकार विनाशाय प्रतिबुद्धे भविष्यतः कलौयुगे ॥

अर्थात् परब्रह्म जिन दो तनों में विराजमान होकर लीला करेंगे, उन दोनों के नाम सूर्य और चन्द्र से होंगे, श्री देवचन्द्र जी एवं श्री मिहिरराज (सूर्य)।

निहायत था नातवान, ना वर पाएगी ना काम पेहेचान।

सब तरबियत तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया॥७॥

यह बालक पहले ज्ञान की संपदा से रहित था। इसे परमात्म तत्व की कोई पहचान नहीं थी और न धर्मकार्य करने का ज्ञान था, किन्तु मैंने इसके हाथों में अपनी सारी शक्ति सौंप दी है, जिसके कारण इसने अपनी ज्ञान शक्ति से तुम सबको आनंदित किया है।

**तूं था बीच कौम जाहिल, तित खुदाए ने दई अकल।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ॥८॥**

अब श्री मिहिरराज की तरफ से स्वयं को सम्बोधित करके कहा जा रहा है, कि मिहिरराज! तू तो ज्ञान से रहित एक मूर्तिपूजक समाज में पैदा हुआ था, किन्तु तेरे प्राणेश्वर अक्षरातीत ने तेरे धाम हृदय में विराजमान होकर अपनी जागृत बुद्धि से तुझे सिंचित कर दिया। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष (वि. सं. १७३५ से १७४५ तक) तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष (वि. सं. १७४५ से १७७५ तक) इन चालीस वर्षों की लीला में सोलह वर्ष में आपने मेरे तन से परमधाम की सम्पूर्ण सम्पदा अवतरित की।

**तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान ॥९॥**

श्री राज जी के द्वारा ब्रह्ममुनियों (ब्रह्मात्माओं) को सम्बोधित करते हुए मूल मिलावे में कहा गया था कि तुममें से ऐसा व्यक्तित्व प्रकट होगा, जो अपनी अन्तर्दृष्टि से परमधाम पहुंचकर अर्थात् मेरा साक्षात्कार कर अखण्ड ज्ञान प्राप्त करेगा और परमधाम में दूसरों को जगाने के लिए हुए वचन को पूरा करेगा। वह ब्रह्ममुनियों की जागनी लीला का नेतृत्व करेगा तथा अपने ज्ञान और प्रेम की शक्ति से दुःखी और अशांत जगत का सारा परिवेश ही बदल देगा, अर्थात् सबके हृदय में ज्ञान और प्रेम की सरिता प्रवाहित कर उन्हें अखण्ड आनन्द में डुबो देगा।

॥ प्रकरण ॥२०॥ चौपाई ॥४६२॥

**लिख्या आम सिपारे सूरत, आठई माहें मजकूर कियामत।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान ॥१॥**

कुर्आन के तीसवें सिपारे की अट्ठासीवीं ८८ सूरत में कियामत का वर्णन है।

“हल् अताक हदीसुल्-गाशियति”(१) अर्थात् भला तुमको ढांप लेने वाली (कियामत) का हाल मालूम हुआ है। अनन्त आकाश के स्वामी परब्रह्म की सौगन्ध खाकर अपनी दो अंगुलियां दिखाते हुए संकेतों में मुहम्मद स. ने कहा कि बारहवीं सदी में निश्चित रूप से कियामत होगी।

**दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए।
दस ऊपर दोए बुरज जो कही, इनमें हादी उमत मजकूर भई ॥२॥**

दसवीं तथा बारहवीं सदी में सद्गुरु (हादी) के दो स्वरूपों श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हुआ। उन्होंने ब्रह्मसृष्टियों को अपने ज्ञान से परमधाम का मार्ग दिखाया। दसवीं सदी के ऊपर जो दो बुजों का वर्णन है, उसका आशय दो स्वरूपों के द्वारा ग्यारहवीं तथा बारहवीं सदी में ब्रह्मात्माओं की जागनी लीला है।

**दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांद की सोए ॥३॥**

दस और दो का अभिप्राय दूसरा भी होता है। जिन ब्रह्ममुनियों के लिये संकेतों में यह बात कही गयी है, एकमात्र वे ही इसके रहस्य को जानते हैं। जिस प्रकार, पूर्व की चौपाई में दस और दो का तात्पर्य दसवीं सदी से लेकर ग्यारहवीं सदी में दो स्वरूपों के प्रकट होने से है, उसी प्रकार यहां दस और दो का संकेत १२ बुजों से हैं अर्थात् बारहवीं सदी में कियामत होगी। यह गिनती चन्द्र-गणना के आधार पर की गयी है

भावार्थ-चन्द्रमा और सूर्य के आधार पर समय की गणना की परम्परा है, जिसे हम्शी और शम्शी कहते हैं। यहां पर वही प्रसंग है।

**या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत ॥४॥**

समुद्र एवं आकाश सभी परब्रह्म के आदेश से बने हैं और ये कभी भी परब्रह्म के निर्देशों का उल्लंघन नहीं करते। मुहम्मद स. ने समुद्र एवं आकाश के स्वामी परब्रह्म की सौगन्ध खाकर कहा, कि बारहवीं सदी में कियामत होगी और उसी समय साक्षात् परब्रह्म इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होंगे।

**फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ॥५॥**

मुहम्मद साहब ने बार-बार परब्रह्म की सौगन्ध खाकर यह बात कही। उन्होंने कुर्आन के कथनों की साक्षी भी दी। परब्रह्म से कुछ भी छिपा नहीं है। वह सबके कार्यों को देखता है तथा सबके मन की बातों को जानता है।

भावार्थ- इस चौपाई में उन कट्टर पन्थियों की ओर संकेत किया गया है, जो इस्लाम का सच्चा अनुयायी होने का दावा करते हैं तथा आतंक के सहारे सारे विश्व में अपनी शरीयत को थोपना चाहते हैं। सच तो यह है कि इन्हें न तो मुहम्मद स. के कथनों पर विश्वास है और न ही कुर्आन पर। यदि इन्हें सच्चा विश्वास होता तो ये बारहवीं सदी में कियामत तथा इमाम महदी के प्रकट होने की बात मान लेते।

**गवाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही ।
एक कौल बीच बंदा कहा, पैगंमर भी एही भया ॥६॥**

मुहम्मद स. ने परब्रह्म के वचन रूप कुर्आन की साक्षी दी तथा उनकी सौगन्ध भी खाकर कहा कि बारहवीं सदी में कियामत होगी तथा इमाम महदी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म आयेंगे। उन्होंने अपने एक कथन में इमाम महदी को खुदा का बन्दा भी कहा है। सबको परमधाम का संदेश देने वाले एहिया पैगम्बर भी ये ही हैं।

भावार्थ- इमाम महदी हुज्जतुल्लाह तो ब्राह्मी (खुदाई) स्वरूप हैं। मे'राज (श्री मिहिरराज जी) के तन में परब्रह्म का आवेश स्वरूप विराजमान होने पर ही उन्हें इमाम महदी साहिबुज्जमाँ या श्री प्राणनाथ जी कहा गया। इसके पूर्व वे मिहिरराज जी हैं, जिन्हें हब्बो में अपने प्राणेश्वर के विरह में तड़पना पड़ता है। उनके इसी स्वरूप को उपरोक्त चौपाई में 'खुदा का बन्दा' कहकर सम्बोधित किया गया है। इस सम्बन्ध में बी. सा. १७/४७, ६८ का यह कथन देखने योग्य है-

**लगे चरचा करने, वरनन वानी सरूप ।
यों करते दिल खुला, बैठे दिल सुन्दर रूप अनूप ॥
श्री महामति कहे ए मोमिनो, ए हादी मेहेंदी माम ।**

कुर्आन के सि. ६ सू. ७ आ. १५८ "कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमीअनिल्लजी लह मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि ला इलाह इल्ला हुव युह्यी व युमीतु फआमिनु बिल्लाहि व रसूलिहिन्नबिय्यिल् - अुम्मियिल्लजी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअूहु लअल्लकुम् तह्तदून" अर्थात् कह दीजिए। कि लोगों! मैं तुम सबकी तरफ खुदा का भेजा हुआ हूँ जो आसमानों व जमीन का बादशाह है। उसके सिवा कोई भी माबूद (पूज्या) नहीं है। वही जिंदगी बख्शता है और वही मौत देता है। हे लोगों! खुदा पर और उसके रसूल पैगम्बर ए उम्मी पर जो खुदा पर और उसके तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं। इमान लाओ और उनकी पैरवी करो, ताकि हिदायत पाओ।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ ४६८ ॥

अमेतसालून

कुर्आन के तीसवें सिपारे में एक सूरत है, जिसे अमेत सालून कहते हैं। इसमें दस प्रकार की दोजक का वर्णन है- पा. ३० सूर: ७८ आयत २१-३०

“इन्न जहन्नम कानत् मिरसादन्(२१) लू’लित्तागीन मआबन्(२२) ल’लाबिसीन फीहा अह्काबन्(२३) ला यजूकून फीहा बरदंव्व ला शराबन् (२४) इल्ला हमीमंव्व गस्साकन्(२५) जजाअंविफाकन्(२६) इन्नहुम् कानू ला यर्जून हिसाबन्(२७) व’व कज्जबू बिआयातिना किज्जाबन्(२८) व कुल्ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन्(२९) फजूकू फलन् नजीद-कुम् इल्ला अजाबन्(३०)” अर्थात् बेशक दोजक गुनहगारों के लिये है। सरकशों का वही ठिकाना है। उसमें मुद्दतों पड़े रहेंगे। न वहां ठंडक का और न पीने का मजा चक्खेंगे, सिवाय गर्म पानी और पीब के अर्थात् उनको कुछ पीने को वहां नहीं मिलेगा। यह उनके आमाल का पूरा बदला है। यह लोग हिसाब आखिरत की उम्मीद ही न रखते थे, और हमारी आयतों को ढिठाई से झुठलाते ही रहते थे और हमने हर चीज को लिख रक्खा है। तो उस दिन इनसे कहा जायेगा कि अपने किये का अब मजा रखो। हम तुम पर अजाब ही बढ़ाते जाएंगे।

महंमदे जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत।

पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान ॥१॥

मुहम्मद स. ने संसार को कियामत के आने की दावत दी और उसका भय भी दिखाया, जिससे कि लोग बुरे कार्यों से बचें। उन्होंने अरब के सभी लोगों को कुर्आन पढ़वाया, किन्तु काफिर लोग इन तीन बातों कियामत के आने, उसके भय एवं कुर्आन की शिक्षाओं को नहीं मानते।

काफर पूछें मोमिनों से ले, ना पूछे रसूल को दिल दे।

खुदाए ताला ने कहा यों कर, किस चीज से पूछें काफर ॥२॥

काफिर लोग शुद्ध हृदय से मुहम्मद स. से कोई प्रश्न नहीं पूछते थे, अपितु छिपकर उनके मित्रों (यारों) से पूछा करते थे। ऐसी अवस्था में परब्रह्म की ओर से आयत आयी कि इन नास्तिकों को किस बात पर संशय है?

भावार्थ- मुहम्मद स. के समय में परमधाम के ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) का अवतरण नहीं हुआ था, किन्तु हदीस आदि में मुहम्मद स. के मित्रों को मोमिन कहा गया है, जिसके कारण उपरोक्त चौपाई में भी उनके मित्रों को मोमिन कहकर सम्बोधित किया गया है।

‘हुकम के अमल में, ना कोई उतरे मोमिन’ बी.62/33

का यह कथन यही सिद्ध करता है।

तिन बखत नारूहें बका की, तो गुह्य अर्स जाहेर क्यों होए। सनंद 24/63

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग। सनंद 24/64

रूहें गिरो तब इत आई नहीं, तो यों करी सरत।

कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत ॥खु. 2/28

श्री कुल्जुम स्वरूप के ये कथन उपरोक्त तथ्य को प्रमाणित करते हैं।

कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक।

रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर ॥३॥

कुर्आन सत्य ज्ञान देने वाला महान ग्रन्थ है, फिर भी नास्तिक लोग उसमें संशय करते थे। वे द्वेष के वशीभूत होकर मुहम्मद स. को कवितायें बनाने वाला, मिथ्यावादी एवं जादू से सम्मोहित करने वाला कहा करते थे।

ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत।

कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे ॥४॥

मुहम्मद स. अति महान हैं। परब्रह्म ने अपनी ओर से उन्हें नबुवत प्रदान की है। कुर्आन के वचनों तथा परमधाम में इस स्वरूप की बहुत महिमा है। फिर भी इस संसार में कोई तो उन्हें सम्मान पूर्वक परब्रह्म का पैगम्बर (संदेशवाहक) मानता था, तो कुछ ऐसे भी लोग थे जो उन्हें शायर और दिवाना कहते थे।

कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें।

एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत ॥५॥

कुछ लोग तो कियामत को मान भी लेते थे किन्तु कुछ ऐसे असभ्य लोग भी थे, जो मुहम्मद स. के सामने आकर व्यंग्यपूर्वक कहते थे, कि भाईयों! बचो! कियामत आ गयी है। वे यह भी ताना मारते थे कि देखो! ये मुसलमानों के समुदाय में नबी कहलाते हैं और कहते हैं कि कियामत के समय मैं ही पुनः आकर सबको संसार चक्र से मुक्त करूंगा तथा अखण्ड मुक्ति दूंगा।

**केतेक साहेब सों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात॥६॥**

कुछ लोगों ने तो परब्रह्म का ही अस्तित्व मानने से मना कर दिया, तो कुछ ने कियामत आने की बात स्वीकार नहीं की। कुछ लोगों को यह संसार ही अखण्ड लगता है, कुछ कुर्आन, कियामत एवं बहिश्त के सम्बन्ध में संशय करते हैं।

**खुदाए की सौंह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही।
पेहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी॥७॥**

मुहम्मद स. ने परब्रह्म की सौगन्ध खाकर कहा कि निकट समय में ही कियामत का आना निश्चित है। उन्होंने संसार के लोगों से यह भी कहा कि तुम पहले अपने मनोभावों एवं विश्वास के सम्बन्ध में सोचो, कि वे कैसे हैं? परब्रह्म ने मेयराज में मुहम्मद साहब से कियामत एवं इमाम महदी के आने के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा है, वह कभी भी मिथ्या नहीं हो सकता।

**जिमी को कहा बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान।
पहाड़ मेखां कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार॥८॥**

कुर्आन में धरती को बिछौना कहा गया है, जिस पर तीनों सृष्टियों (जीव, ईश्वरीय तथा ब्रह्म) को रखा जा सके। पर्वतों को कील कहा गया, जिससे धरती में दृढ़ता बनी रहे। इस प्रकार, इस पृथ्वी पर परब्रह्म के आदेश से स्त्री-पुरुषों का समूह पैदा किया गया।

पा. २७ सू. ५५ आ. ५३, ५४ “फबिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज्जिबानि(५३) मुत्तकिअीन अला फुरुशिम् - बताइनुहा मिन् इस्तबूरकिन् व जनल् - जन्नतैनि दानिन्(५४)” ऐसे बिछौने जिनके स्तर अतलस के हैं। तकिया लगाये हुये होंगे और दोनों बागों के मेवे करीब हैं।

**तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे॥९॥**

कुर्आन में परब्रह्म का कथन है- हे मनुष्यों! यह पृथ्वी इसलिये है कि तुम्हारी वंशावलि इस पर सुरक्षित रहे। तुम्हारे अन्दर कोई काले रंग का है, तो कोई गोरे रंग का। कोई छोटे कद का है तो कोई बड़े कद का। कोई बहुत अच्छे कार्य करने वाला है, तो कोई बुरे कार्य करने वाला। रातें इसलिये बनायी हैं कि तुम नींद लेकर तरोताजा बने रहो।

**रात निकोइयों को भाने, कूवत हैवानी की आने।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर॥१०॥**

रात, तमोगुण और रजोगुण से ग्रस्त जीवों को पतन की ओर ले जाती है और उनमें पाशविक (अज्ञानमयी) प्रवृत्तियों की और अधिक वृद्धि करती है। रात्रि में ऐसे जीवों से भक्ति नहीं हो पाती है। अज्ञानता का अन्धकार इनके सभी आध्यात्मिक भावों को छिपा देता है, जिसके परिणाम स्वरूप ये प्रेम-भक्ति में डूब कर अपने आराध्य से आत्मिक वार्ता नहीं कर पाते हैं।

**साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे।
इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन॥११॥**

फतवा-ए-आलमगीर ग्रन्थ के लेखक का कथन है, कि अपनी प्रेममयी चितवनी से रात्रि को भी अपने अधीन करने वाले अर्थात् पूरी रात्रि ध्यान-भक्ति करने वाले ब्रह्ममुनियों के चरणों में यह मायावी रात रहती है तो जीवों को अज्ञानता एवं भोग-विलास के अन्धकार में ढकेलती है। अक्षरातीत के प्रत्यक्ष तन कहे जाने वाले इन ब्रह्ममुनियों से उनके मायाजन्य शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि छिप नहीं पाते हैं। वे अपनी ज्ञान एवं ध्यान की अग्नि से उन्हें जलाकर भस्म कर देते हैं।

**रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम।
दिन के ताई कहा बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार॥१२॥**

रात्रि के समय परब्रह्म का ध्यान करने वालों को शेखुल इस्लाम (शान्ति का अग्रदूत या संवाहक) कहते हैं। वे संसार के लोगों से छिपकर रात्रि के एकान्त में अपने आराध्य की ध्यान द्वारा आराधना करते हैं और आनन्द में मग्न रहते हैं। दिन का समय तो बाजार के कोलाहाल की भांति अशान्त होता है, जिसमें शरीयत (कर्मकाण्ड) के मार्ग पर चलने वाले अपनी जिस्मानी एवं नफ्सानी अर्थात् शरीर और इन्द्रियों से होने वाली भक्ति का प्रदर्शन करते हैं और अपने हृदय के साथ एक प्रकार से अन्याय करते हैं, क्योंकि इस प्रकार की दिखावे की भक्ति उनके जीव का कोई कल्याण नहीं कर सकती।

**ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार।
कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन॥१३॥**

महाराजा छत्रशाल जी कहते हैं कि जो ब्रह्ममुनि रात्रि का समय अपने प्राणेश्वर के ध्यान में व्यतीत कर देते हैं, उन पवित्र हृदय वाले सुन्दरसाथ के ऊपर मैं स्वयं को समर्पित

करता हूँ। कुर्आन-हदीसों में जो फज्र (ज्ञान से सवेरा होने) का दिन कहा गया है, ब्रह्ममुनि उसकी खोज में रहते हैं, जिससे वे अपने प्रियतम का दर्शन प्राप्त कर सकें।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर चितवनी का विरोध करते हुए अपनी शरीयत का झंडा खड़ा करने वालों को आत्म मंथन करना चाहिए, कि वे किस दिशा में जा रहे हैं?

इनहीं में ढूढ़ें हासिल, इस दिन उमत की फसल।

इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान॥१४॥

वे श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति खोजते हैं। कियामत की इस मधुर घड़ी में ही ब्रह्मसृष्टियों की जागनी की सफल फसल तैयार हुयी है। सातों आकाश इनकी गरिमा और आदेश की छत्रछाया में हैं। इन्हें समस्त सृष्टि के महापुरुषों से श्रेष्ठ समझना चाहिए।

भावार्थ- परमधाम में प्रिया-प्रियतम (माशूक-आशिक) एक ही हैं। इस आधार पर समस्त प्रकृति मंडल को ब्रह्मात्माओं के अधीन कहा गया है। अन्यथा बाह्य रूप से इस प्रकृति मण्डल में अक्षरातीत के सत् अंग अक्षर ब्रह्म का आदेश कार्य करता है। इस अनन्त सृष्टि के सभी लोकों में ज्ञान, वैराग्य एवं तप-त्याग से भले ही कोई कितना ही श्रेष्ठ क्यों न हो, किन्तु उसकी गरिमा ब्रह्ममुनियों से अधिक नहीं हो सकती क्योंकि वे साक्षात् परब्रह्म के अंगरूप हैं।

और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले।

पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन॥१५॥

समस्त जीव सृष्टि इनकी कृपा की आकांक्षी है। जीव सृष्टि को न्याय के दिन अपने कर्मों के अनुसार प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा। कियामत का यह समय ब्रह्मात्माओं के लिए है, जिसमें प्रियतम परब्रह्म ने ज्ञान रूपी सूर्य के समान श्री प्राणनाथ जी रूप में अपना आवेश स्वरूप प्रकट किया है। इन्हीं के हृदय से श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हुआ है।

इनों के साथ उतर्या बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल।

तिनकी पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास॥१६॥

इन ब्रह्मात्माओं के साथ बादल स्वरूप श्री श्यामा जी का अवतरण हुआ। उनके हृदय से (दूसरे तन में) तारतम ज्ञान रूपी बादल से जो १८७५८ चौपाईयों के शब्द रूप जल की वर्षा हुयी, उससे पृथ्वी पर अन्न और घास की उत्पत्ति हुयी। कुर्आन में सांकेतिक रूप से यह कथन तीनों सृष्टियों की जागनी से सम्बन्धित है।

भावार्थ- जिस प्रकार वर्षा होने पर अन्न और घास आदि उग जाते हैं, उसी प्रकार श्री कुल्जुम स्वरूप की ज्ञान रूपी वर्षा के जल से ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि ने अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान की। इसे ही तीनों सृष्टियों की ज्ञान द्वारा जागृति होना कहते हैं।

गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास।

फरिस्ते जौ गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ॥१७॥

कुर्आन में सांकेतिक भाषा में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि को क्रमशः गेहूं, जौ और घास कहकर वर्णित किया गया है। सभी जीवों को घास कहने का आशय यह है कि कुछ घासों बहुत कोमल होती हैं तथा कुछ रूखी और स्वादहीन। कोमल घासों का तात्पर्य जीव सृष्टि के योगियों, यतियों और ज्ञानी महापुरुषों से है। तथा रूखी, कटीली एवं स्वादहीन घासों से आशय नास्तिकों एवं आसुरी स्वभाव के जीवों से है।

भावार्थ- कुर्आन में पा. ३० सू. ७८ आ. ३८ “यौम यकूमूर्हु वल्मलाइकतु सप्फन् ल'ला यतकल्लमून इल्ला मन अजिन लहुर्रह्मानु व काल-सवाबन्” अर्थात् जिस दिन रूहे, फरिस्ते सफ बांधकर खड़े हो तो कोई बोल न सकेगा। मगर जिस को रहमान इजाजत बख्शे और उसने भी बात दुरुस्त कही हो।

पार: २७ सूर: रहमान ५५ आयत ११-१२ “फीहा फाकिहतुन् ट'वन्नख्लु जातुल् - अक्मामि(११) वल्हब्बु जुल्अस्फि वर्रैहानु(१२)” अर्थात् उसमें मेवे और खजूर के पेड़ हैं। जिनके खोशों पर गिलाफ होते हैं। और अनाज जिस के साथ भुस होता है और खुशबुदार फल है। यहां पर अंगूर और खजूर की उपमा मोमिन व मुस्लिम के समकक्ष है।

पार: २७ सूर: ५५ आयत ५२ “फीहिमा मिन् कुल्लि फाकिहतिन् जौजानि” अर्थात् उसमें सब मेवे दो दो किस्म के हैं।

मोती दरियाव से काढ्या महंमद, इन बिध इत लिख्या सब्द।

घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान ॥१८॥

कुर्आन में इस प्रकार लिखा है कि परब्रह्म ने इस मोहसागर से अनमोल मोती के रूप में आखिरी मुहम्मद हकी सूरत को निकाला अर्थात् श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप उस अनमोल मोती के समान है, जिसकी गरिमा का वर्णन करने की सामर्थ्य संसार के किसी भी शब्द में नहीं है। अज्ञानता के अंधकार से भरे हुए पशुरूप जीवों को ही घास या चारे से उपमा दी गयी है।

ब्रह्मसृष्टि को परमधाम से तथा ईश्वरीय सृष्टि को अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से अवतरित हुआ मानना चाहिये।

**याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए।
इनो के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम ॥१९॥**

कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम के आनन्दमयी बाग के वृक्ष कहा गया है। इनकी संगति से ईश्वरीय सृष्टि को भी अखण्ड परमधाम का सुख मिला। इनका सम्पूर्ण कार्य और व्यवहार श्री राज जी के आदेश से ही होता है। क्योंकि ये श्री राज जी के हृदय के अंग हैं और इन्होंने अपना सम्पूर्ण हृदय श्री राज जी को समर्पित किया होता है। कुर्आन में यह बात स्पष्ट रूप से कही गयी है, कि कियामत के समय इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में परब्रह्म को स्वयं प्रकट होना है।

**बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत।
ए फसल परहेजगार मोमिन, काफ़रों के तंबीह के दिन ॥२०॥**

कुर्आन में कियामत का समय संकेतों में लिखा हुआ है और उसे परब्रह्म ने अपने आदेश से उचित समय पर प्रकट किया है। कियामत के समय में श्री प्राणनाथ जी के द्वारा अखण्ड ज्ञान की वर्षा होने से ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों की जागनी की फसल खड़ी हुयी अर्थात् इन्होंने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को पहचाना और परमधाम का सुख लिया। इनके विपरीत काफ़रों ने तारतम ज्ञान को अनसुना कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें न्याय के दिन प्रायश्चित की अग्नि में जलने का दण्ड मिलेगा।

**इस रोज फूँके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए।
एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥२१॥**

कियामत के समय में अक्षरब्रह्म की जागृत बुद्धि के फरिश्ते अस्म्राफील ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर ज्ञान का पहला सूर फूँका, जिससे सबके हृदय में विद्यमान अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो गया। अस्म्राफील द्वारा कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को प्रकाश में लाने से सबके हृदय में सत्य का प्रकाश फैल गया। उसके इस दूसरे सूर से परमधाम के ज्ञान को आत्मसात् कर, सबने बहिश्तों की अखण्ड मुक्ति का अधिकार प्राप्त कर लिया।

भावार्थ- तुरही (दुंदुभी, करनाए, Trumpet of God) का कथन आलंकारिक है। जिस प्रकार तुरही में सूर फूँकने पर मधुर ध्वनि निकलती है। उसी प्रकार श्री महामति जी के धाम

हृदय में विद्यमान अम्लाफील फरिश्ते के द्वारा परमधाम की ज्ञानमयी धारा के प्रवाहित होने को सूर फूंकना कहते हैं।

**सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी।
इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी॥२२॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी अपने शरीर के मोहरूपी बन्धन से परे होकर परमधाम में विचरण करने लगे। इस प्रकार उन्होंने अखण्ड ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले प्रियतम अक्षरातीत की कृपा दृष्टि से बेहद की अखण्ड मुक्ति का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। इमाम सालबी अपने पुत्र से कहते हैं, कि न्याय की लीला के समय मुहम्मद स. अपनी उम्मत से उसके कर्मों का विवरण लेंगे अर्थात् श्री प्राणनाथ जी के द्वारा सबका न्याय होगा।

भावार्थ- सत्स्वरूप में न्याय की लीला होगी, जिसे सातवें दिन की लीला के अन्तर्गत माना गया है। महाप्रलय के पश्चात् परमधाम की आत्माएं तो अपने मूल तनों में जागृत हो जाएंगी, किन्तु उनके जीव ब्रह्मसृष्टियों की परात्म की नकल का रूप धारण कर सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में विराजमान होंगे। श्री मिहिरराज जी का जीव श्री राज जी तथा श्री देवचन्द्र जी का जीव श्री श्यामा जी की नकल का रूप धारण कर सिंहासन पर विराजमान होंगे। शेष अन्य सभी सातों बहिश्तों वाले इन्हीं को ही श्री अक्षरातीत का युगल स्वरूप (श्री प्राणनाथ) मानेंगे। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का यही आशय है।

“मेरे गुन अंग खड़े होसी, अरचासी आकार” क. हि. 23/104

कलश हिन्दुस्तानी के इस कथन का इसी घटनाक्रम से सम्बन्ध है।

**कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन॥२३॥**

कुर्आन में कहा गया है कि योगमाया के ब्रह्माण्ड (सत्स्वरूप) में जो न्याय की लीला होगी, उसमें दस प्रकार के बुरे कर्मों के बारे में पूछा जाएगा और उसके अनुसार उन्हें दस तरह की दोजक की अग्नि में जलने का दण्ड मिलेगा। इस तरह उनके स्वरूप की कियामत होगी अर्थात् प्रायश्चित्त की अग्नि में जलने के पश्चात् जब जीव निर्मल हो जाएंगे, तब उन्हें योगमाया के अखण्ड तन देकर अखण्ड बहिश्तों का सुख प्राप्त होगा। जिनके हृदय में परब्रह्म के प्रति विश्वास नहीं होगा और जो परब्रह्म की पहचान की हंसी उड़ाएंगे, दण्ड स्वरूप उनकी सूरत बंदर जैसी हो जाएगी।

सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूँ हलाल के ढिग ना गए।

गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार॥२४॥

जिन लोगों ने ईमानदारी से स्वयं को दूर रखा और पाप की कमाई खाते रहे, उनके चेहरों की शक्ल सुअर जैसी हो जाएगी। जो लोग बुरे कर्मों के द्वारा पाप करते हैं और अनुचित व्यवसाय के द्वारा धन लूटते हैं, उनकी सूरत गधे जैसी हो जाएगी।

सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फंदे।

न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहरे पड़े दोजख मार॥२५॥

जो लोग अनियंत्रित रूप से अनुचित ब्याज लेते हैं, उन्हें उस पाप के परिणाम स्वरूप अन्धा होकर दोजक का कष्ट झेलना पड़ेगा। जिन लोगों ने न तो ब्रह्मज्ञान की पुकार सुनी और न कभी शुद्ध हृदय से परब्रह्म को प्रणाम किया, वे अपने इस पाप से बहरे होकर दोजक का कष्ट भोगेंगे।

गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम।

पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे॥२६॥

अपनी प्रजा पर अत्याचार करने वाले शासक गूंगे हो जाएंगे। वे सबके नीचे रहकर इतना पश्चाताप करेंगे कि स्वांस भी न ले सकेंगे। जो लोग धर्मग्रन्थों को पढ़कर स्वयं तो बुरे कार्य करेंगे और अपने मुख से दूसरों को उपदेश देते रहेंगे, उनकी जिह्वा कट जाएगी और उनके शरीर से पीव और खून बह रहा होगा।

भावार्थ—उपरोक्त चौपाई को पढ़कर मन में यह संशय होता है कि क्या भागवत आदि ग्रन्थों में जिस तरह से नकों का वर्णन है, जिनमें आग में जलाना, हाथ-पैर काटना तथा जिह्वा काटना, क्या यह योगमाया के ब्रह्माण्ड में भी संभव है? जैसा कि इस प्रकरण में भी आगे की चौपाईयों में वर्णित है।

इसके समाधान में यही कहा जा सकता है, कि कालमाया के ब्रह्माण्ड में स्थूल शरीर को काटने, जलाने आदि में भयंकर पीड़ा होती है। वैदिक मान्यता के अनुसार भिन्न-भिन्न योनियों में जो प्राणियों को जलने कटने आदि की पीड़ा भोगनी पड़ती है, उसे ही नर्क की पीड़ा कहते हैं। यही कारण है कि ८४ लाख योनियों की पीड़ा को दर्शाने के लिए भागवत आदि पुराणों में नर्क के ८४ कुण्डों का वर्णन किया गया है।

सच यह है कि जीवों की अनन्त योनियां हैं और उन अनन्त योनियों में जीव अपने चित्त की वासना के अनुसार पाप करता है तथा कष्ट भोगता है। केवल मानव योनि ही ऐसी है जिसमें मनुष्य को अखण्ड मुक्ति का सौभाग्य प्राप्त होता है। यदि ऐसा माना जाय कि स्थूल जगत में नर्क नहीं है, अपितु सूक्ष्म जगत में नर्क है, तो प्रश्न यह होता है कि सुअर को किस पाप के कारण तड़पा-तड़पाकर मारा जाता है? कल्लखानों में जिस प्रकार पशुओं को निर्दयता से मारा जाता है, क्या वह पुराणों में वर्णित किसी नर्क से कम है? जब गीता कहती है कि-

“नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः” गीता

अर्थात् इस जीव को न तो किसी अस्त्र-शस्त्र से काटा जा सकता है और न अग्नि से जलाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में मरे हुए व्यक्ति के सूक्ष्म शरीर को न तो तलवार से काटा जा सकता है और न अग्नि में जलाया जा सकता है। इतना अवश्य है कि उस सूक्ष्म शरीर को सुख और दुःख का अनुभव कराया जा सकता है। योगमाया में होने वाली न्याय की लीला में भी जो दण्ड मिलेगा, वह भावात्मक होगा अर्थात् जीवों को भावात्मक रूप से उस पीड़ा का अहसास होगा। वहां तलवार लेकर काटने वाले यमदूतों की कल्पना नहीं की जा सकती। अपितु प्रायश्चित्त का दुःख इतना होगा, कि उसकी उपमा तलवार से काटने या अग्नि में जलाने से दी जा सकती है।

उपरोक्त २६वीं चौपाई में जो पाप करने वालों की जिह्वा काटने तथा उनके शरीर से खून और पीव के बहने का वर्णन है, वह एक आलंकारिक कथन है। जिह्वा काटना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है किसी को उसके बुरे कर्म से इतना लज्जित कर देना कि वह एक भी शब्द बोलने का साहस न जुटा पाए। जिस प्रकार अपने शरीर से रक्त या पीव बहते हुए देखकर अपने ही शरीर से घृणा हो जाती है, उसी प्रकार भयंकर पापकर्म करने वाले जीवों को जब योगमाया के ब्रह्माण्ड में अपने बुरे कर्मों का अहसास होगा, तो उन्हें अपने शरीर से घृणा हो जाएगी। इसी को शरीर से खून और पीव बहना कहते हैं।

यद्यपि सामान्य स्थूल शरीरधारी व्यक्ति (सिद्ध पुरुषों को छोड़कर) अपने-अपने बाह्य चक्षुओं से दूसरों के सूक्ष्म शरीर को नहीं देख पाता किन्तु एक सूक्ष्म शरीरधारी सिद्ध व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर का आभास करता है और संकल्प मात्र से (तन्मात्राओं के द्वारा) उसे कुछ समय के लिए स्थूल शरीर में भी परिवर्तित कर सकता है। योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाली न्याय की लीला के दिन अपने बुरे कर्मों का फल भोगने वाले जीवों को परब्रह्म की न्याय व्यवस्था के अनुसार अपने स्थूल शरीर जैसा, तब तक आभास होता रहेगा, जब तक कि उन्हें नूरमयी तन नहीं मिलते।

इसी सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर का भाव लेकर वे प्रायश्चित की अग्नि में जलेंगे तथा निर्मल होकर पुनः नूरमयी तन प्राप्त करेंगे। आगे की २८वीं चौपाई में भी हाथ, पांव काटने आदि का जो वर्णन है, उसे इसी भाव से समझना होगा।

**मलें दोजखी हाथ पाऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए।
उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन॥२७॥**

दोजक में जलने वाले जीव अपने हाथ-पांव मल रहे होंगे अर्थात् प्रायश्चित की अग्नि में जल रहे होंगे। उन्हें दुःखी देखकर बहिश्त में बैठे हुए शुभ कार्य करने वाले जीवों को बहुत ही आश्चर्य होगा। ब्रह्मसृष्टियों को इश्क और ईमान के पंख से उड़ने वाला कहा गया है। इसका आशय यह है कि महाप्रलय के पश्चात् ब्रह्मसृष्टियां अपने मूल तन में चली जाएंगी तथा ब्रह्मसृष्टियों के जीव परात्म का प्रतिबिम्बित रूप धारण कर सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में विद्यमान होंगे। ईश्वरीय सृष्टियां भी अपने जीव के साथ सत्स्वरूप की दूसरी बहिश्त में अखण्ड तन प्राप्त करेंगी। इस प्रकार स्वयं को वह ब्रह्मसृष्टि की पड़ोसी समझेगी।

**ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन।
चुगलखोर काटे हाथ पाऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ॥२८॥**

ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों को जिन्होंने हर तरह से दुःखी किया है, उन्हें सूली पर लटकाया जाएगा, जिसके नीचे आग जल रही होगी। चुगली करने वालों के हाथ-पांव काटे जाएंगे और कठोर हृदय वालों को भी भयंकर पीड़ा का आघात सहना पड़ेगा।

भावार्थ- हाथ-पांव काटना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- किसी व्यक्ति को पूर्णतया निष्क्रिय कर देना। चुगली करने वालों को जब अपने बुरे कर्म का आभास होगा, तो प्रायश्चित स्वरूप उनका शरीर पत्थर की तरह जड़ होकर शून्य हो जाएगा कि हमने ऐसा पाप क्यों किया? कठोर हृदय वालों को अपने कठोर स्वभाव के कारण, इस प्रकार की मार्मिक पीड़ा होगी कि उन्हें लगेगा कि उनका हृदय फट गया है।

**ए दस भांत की कही दोजकं, जो बे फुरमान हुए हक।
जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए॥२९॥**

जिन्होंने परब्रह्म के आदेश को नहीं माना और बुरे कर्म किये, उनके लिए दस तरह की दोजक का वर्णन किया गया है। जिसने जैसा शुभ-अशुभ कर्म किया उसको वैसा ही सुख या दुःख का भोग करना पड़ा।

**फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों दोजख हमेसगी पाए।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर ॥३०॥**

जिन्होंने परब्रह्म के निर्देश का उल्लंघन किया उन्हें प्रायश्चित की अग्नि में जलाकर बहिश्तों में अखण्ड कर दिया जाएगा। बुरे कर्म करने वाले अहंकारी लोगों को, तब तक प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा, जब तक वे निर्मल नहीं हो जाते। इसके पश्चात् उन्हें भी अखण्ड मुक्ति (आठवीं बहिश्त) प्राप्त हो जाएगी। कुर्आन में जिसे मोतियों का घर कहा गया है, वह परब्रह्म की अंगरूपा ब्रह्मात्माओं का परमधाम है।

**उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदो मिले कहे।
जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई ॥३१॥**

ईश्वरीय सृष्टि ने भी ब्रह्मसृष्टियों की संगति में तारतम ज्ञान की अमृतमयी बूंदों का रसपान किया और ब्रह्मात्माओं से प्रेम सम्बन्ध निभाया। प्रियतम अक्षरातीत ने इन ईश्वरीय सृष्टियों को सत्स्वरूप की दूसरी बहिश्त में अखण्ड सुख का स्वामित्व दिया।

भावार्थ- सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में परमधाम की लीला का प्रतिबिम्ब अवतरित होगा, जिसका सुख सत्स्वरूप में दूसरी बहिश्त की ईश्वरीय सृष्टि को भी मिलेगा। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का यही आशय है।

“जाको मेहर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं होए दोजक ।

से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि जीव भी ब्रह्मसृष्टियों से शुद्ध हृदय से प्रेम रखता है, तो उसको स्वप्न में भी दोजक की अग्नि का कष्ट नहीं झेलना पड़ेगा और वह अखण्ड मुक्ति का अधिकारी बनेगा।

**और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर।
एजो दुनिया का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान ॥३२॥**

हे साथ जी! दूसरी वास्तविक बात सुनिए। आप एकाग्र मन से सत्य और झूठ का विचार कीजिये। कुर्आन में कहा गया है कि कियामत के समय संसार का यह आकाश फट जाएगा। किन्तु इसका आशय यह है, कि संसार में मानव हृदय के दो टुकड़े हो जाएंगे।

भावार्थ- आकाश और हृदय दोनों ही अतिसूक्ष्म पदार्थ हैं। इसलिए इनके फटने का कथन आलंकारिक है। जिस प्रकार आकाश के फटने (नष्ट होने) पर उसके कार्यरूप स्थूल जगत का

नाश हो जाता है, उसी प्रकार हृदय के टुकड़े हो जाने पर उसमें ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि अलौकिक सम्पदा कहाँ से ठहरेगी? कुर्आन में यही बात दर्शायी गयी है, कि कियामत के समय में मानवीय हृदय में मायावी विकारों का इतना प्रभाव हो जाएगा, कि वह टूट-सा जाएगा और ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, प्रेम आदि को आत्मसात् नहीं कर पाएगा।

ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कियामत बखत ।

बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए ॥३३॥

संसार के जीवों के लिए कियामत का यह समय बहुत ही कठिन होने वाला है। परब्रह्म को न मानने से नास्तिक लोगों को बहुत कष्ट झेलना होगा। संसार में स्वयं को श्रेष्ठ कहलाने वाले विद्वान, मौलवी तथा पादरी आदि के अहंकार पहाड़ के समान दृष्टिगोचर होते थे, किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश (अम्लाफील के पहले सूर) में ये रूई की तरह हवा में उड़ जाएंगे।

बुजरकों धोखा क्योए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए ।

फितुए इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥३४॥

धर्म के इन स्वयंभू अग्रगण्य लोगों से संसार को धोखा देने की प्रवृत्ति किसी प्रकार से नहीं जा पा रही है। यही कारण है कि इन्हें यह अति कठिन समय देखना पड़ रहा है। यह भी सच है कि जब ये अपने लिए कठिन समय देखेंगे, तभी उनके मन से सभी मत पन्थों में विवाद खड़ा करने की प्रवृत्ति जाएगी।

भावार्थ—दिल्ली के काजी शेख इस्लाम, आकिल खान, रिजवी खान, उदयपुर के राज दरबार के पंडित तथा औरंगाबाद के फतह मुहम्मद आदि धर्म के अग्रगण्य व्यक्ति थे, जिन्होंने संसार को हमेशा अंधेरे में रखा और विवादों की अग्नि बढ़ाते रहे। ये तारतम ज्ञान के समक्ष बार-बार नतमस्तक हुये, फिर भी अहंकार में मग्न होने के कारण न तो सत्य को ग्रहण किये और न संसार में शांति एवं सौहार्द का वातावरण बनने दिए।

ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए ।

सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥३५॥

जब धर्म के ये अग्रगण्य लोग प्रायश्चित की अग्नि में जलकर शांत होंगे अर्थात् शुद्ध होंगे, तब इन्हें वास्तविक सत्य का बोध होगा और परब्रह्म के चरणों में नतमस्तक होंगे। परब्रह्म के प्रति श्रद्धा विश्वास न रहने से समस्त संसार के जीवों को अपराधी होना पड़ेगा और उन्हें दोजक की अग्नि में जलने के लिये विवश होना पड़ेगा और उन्हें ऐसा समय अवश्य देखना पड़ेगा, जब वे न्याय के दिन दोजक की अग्नि में जल रहें होंगे।

भावार्थ- वर्तमान समय में माया का इतना अंधकार छाया हुआ है, कि संसार के सभी लोगों के लिए परब्रह्म के प्रति श्रद्धा रखना कठिन है। धर्म के अग्रगण्य लोगों के हृदय में विद्यमान अहंकार जब तक समाप्त नहीं होगा, तब तक वे वास्तविक सत्य को ग्रहण नहीं कर पाएंगे और संसार योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही परब्रह्म के प्रति पूर्णरूप से समर्पित हो सकेगा।

अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत।

जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े ॥३६॥

हे साथ जी! आप में जो भी ब्रह्मसृष्टि हो, वह मेरी बात सुने। आप द्रष्टाभाव से देखिए तो आपको विदित होगा, कि बुरे कर्म करने वाले काफिरों के लिए दोजक की अग्नि तैयार हो रही है। अर्थात् वह समय शीघ्र ही आने वाला है, जब योगमाया में न्याय की लीला होगी। आप इश्क-ईमान में डूबकर (एकान्त में खड़े रहकर) कियामत की इस लीला को देखिए। इसे जानने से विमुख न होइए। संसार में जिस तरह से पापकर्मों की अधिकता हो रही है, उससे निश्चित है कि न्याय के दिन प्रायश्चित की अग्नि बहुत भयंकर होगी।

भिस्त रजवान मोमिन निगेहवान, दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान।

तहां ताई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे जले अगिन ॥३७॥

ब्रह्मसृष्टियों की कृपा दृष्टि से दोजक की अग्नि में जलने वाले काफिर निर्मल होकर अखण्ड बहिश्तों को प्राप्त करेंगे। पापकर्म करने वाले नास्तिक जीवों को प्रायश्चित की अग्नि में तब तक बार-बार जलना पड़ेगा, जब तक वे निर्मल नहीं हो जाते। इसके पश्चात् ही उन्हें बहिश्त (मुक्ति सुख) का अधिकार प्राप्त होगा।

गुजरे हैं हद सें काफर, दूर दराज जानी थी आखिर।

दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन ॥३८॥

काफिरों ने यह मान रखा है कि कियामत तो अभी बहुत दूर है, इसलिए वे निर्भय होकर पापों की सीमा पार कर चुके हैं। यही कारण है कि अपने बुरे कर्मों के फलों के फलस्वरूप दोजक में जलने वाले इस काफिरों ने अपने दुखों की सीमा और अधिक बढ़ा ली है।

करे मोअलिम नकल अपनी जुबां, सांची जिकर जो कही खुदाए।

जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल ॥३९॥

कुर्आन के विद्वान अपने मुख से स्वयं इस तरह की बात कहते हैं, कि एकमात्र परब्रह्म की ही चर्चा करना सत्य है। शेष संसार की बातें निरर्थक हैं। जब तारतम ज्ञान के

प्रकाश में कुर्आन के गुह्य भेदों का स्पष्टीकरण होता है, तभी संकेतों में कही हुयी बातों की वास्तविकता का बोध होता है।

साखी-दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहें।

सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें॥४०॥

कुर्आन के पहले सिपारे में संसार की आयु सात हजार चालीस वर्षों की कही गयी है।
हे साथ जी! आप उसका अच्छी तरह से विचार कीजिये।

भावार्थ- कुर्आन के पहले सिपारे सूरः २ आ. २६-३० “हुवल्लजी खलक लकुम् मा फिल्अर्जि जमीअन् सुम्मस्तवा इलस्समाइ फ सव्वाहुन्न सब्अ समावातिन् व हुव बि कुल्लि शैइन् अलीमुन्(२६) व इज् काल रब्बुक लिम्मलाइकति इन्नी जाइलुन् फिल्अर्जि खलीफतन् कालू अ तज्अलु फीहा मंय्युफ्सिदु फीहा व यस्फिकुद्दिमाअ व नह्नु नुसब्बिहु बि हम्दिक व नुकद्दिदसु लक काल इन्नी अऽलमु मा ला तऽलमून्(३०)” अर्थात् वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती की सब चीजें पैदा की, फिर आकाश की तरफ ध्यान दिया तो सात आसमान बना दिये और वह सर्वज्ञ है। और जब तुम्हारे पालनकर्ता ने फरिश्तों से कहा- “मैं जमीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाऊँगा” तो फरिश्ते बोले- क्या तू जमीन में ऐसे को प्रतिनिधि बनायेगा, जो उसमें फसाद फैलाये और खून बहायेगा? और जबकि हम स्तुति-बन्दना के साथ तेरी बड़ाई और पवित्रता बयान करते रहते हैं। अल्लाह ने कहा- मैं वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।”

तफसीरे हुसैनी जिल्द अव्वल पेज नं. १६ में लिखा है कि पैदा किया सात आसमान, कहा रब ने फरिस्तो के वास्ते, बेशक मैं पैदा करने वाला हूँ। मुल्लक (स्वछंद, आजाद) जमीं में एक बदले को कि कौम (समुदाय) नबी-उल-जमाँ बदला होगा या किसी को जो इमारत जमीन और इबादत रब-उल-आलमीन में तुम्हारा खंलीफा हो,

और कहा यहूद ने ना छुएगी दोजख की आग, और हमको न पहुँची, मगर चंद रोज (कुछ दिन) गिनती के, वह सात दिन हैं। हर दिन हजार बरस (वर्ष) के बराबर कि वही सात हजार बरस दुनिया की उमर है। या चालीस दिन के कि इतने ही दिनों हमारी कौम ने गौशाला परस्ती की है। दुनिया की उम्र का विवरण एक साल हजार साल १०००x७=७००० + बादशाहत ४० साल = ७०४० साल

**तैंतालीस जुफ्त जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार भए।
हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए॥४१॥**

कुरआन के तिसवें सिपारे की अमेत सालून सूरत में तैंतालिस जुफ्त (जोड़ों) का वर्णन किया गया है। एक जुफ्त में सत्तर बहार होते हैं। एक बहार में सात सौ वर्ष और एक वर्ष में तीन सौ साठ (३६०) दिन होते हैं।

**याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन।
एरसूल के आए की मजल, एगिनती कर तुम देखो दिल॥४२॥**

इस प्रकार इक्कीस लाख सात हजार दिन पूरे होते हैं, दिनों की यह गिनती आदम सफी अल्लाह अर्थात् जबसे सृष्टि बनी है, तबसे लिखी है। परब्रह्म के प्रेम में डूबे रहने से ब्रह्मसृष्टियों का एक वर्ष एक दिन के समान व्यतीत हो जायेगा। मुहम्मद स. के संसार में आने तक की गिनती का हिसाब करने के लिए इक्कीस लाख सात हजार में तीन सौ साठ से भाग देने पर-

**पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए॥४३॥**

पांच हजार आठ सौ सैंतालिस (५८४७) वर्ष होते हैं अर्थात् संसार में मुहम्मद स. के प्रकट होने तक संसार की उम्र पांच हजार आठ सौ सैंतालिस वर्ष होती है। उनकी उम्र के त्रिरेसठ (६३) वर्ष जोड़ने पर पांच हजार नौ सौ दस (५९१०) वर्ष होते हैं। अर्थात् छः हजार (६०००) में नब्बे वर्ष कम होते हैं।

**इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करें जिकर।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस॥४४॥**

जब मुहम्मद स. का धामगमन हुआ तो संसार की उम्र पांच हजार नौ सौ दस (५९१०) वर्ष थी। अब इसके आगे की यथार्थता का मैं वर्णन करता हूँ। जब ग्यारहवीं सदी में दस वर्ष शेष रह गये थे अर्थात् वि. सं. १७३५ तक संसार की उम्र सात हजार वर्ष की हो गयी थी। पांच हजार नौ सौ दस वर्ष में दस नव नब्बे जोड़ने पर सात हजार वर्ष पूरे हो जाते हैं।

**इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥४५॥**

वि. सं. १७३५ के पश्चात् इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के द्वारा जागनी का स्वर्णिम काल (विशेष समय) प्रारम्भ होता है। श्री श्यामा जी के चालीस वर्षों के स्वामित्व की लीला का प्रारंभ भी यहीं से होता है। इन चालीस वर्षों (वि. सं. १७३५ से १७७५) तक तारतम ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैल गया। कुर्आन के अनुसार जब बीस और बीस का जोड़ा अर्थात् श्री श्यामा जी के स्वामित्व के चालीस वर्ष व्यतीत हो जाएंगे, तब संसार की उम्र समाप्त हो जाएगी।

भावार्थ- यद्यपि वि. सं. १७७५ में संसार की उम्र पूरी हो जाती है, किन्तु मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के खेल देखने की इच्छा के कारण मूल स्वरूप श्री राज जी ने खेल को लम्बा कर दिया है।

**“ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम ।
ना तो लेते अन्दर, केती बेर है हम ॥” सन्ध 34/66**

यह खेल कब तब चलेगा इसका ज्ञान, मात्र मूल स्वरूप श्री राज जी को ही है। इसलिए बड़ा क्यामतनामा प्रकरण २३ चौपाई ४ में कहा गया है कि “ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।”

**तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर ॥४६॥**

वि. सं. १७३५ से १७४५ तक दस वर्षों की लीला हुयी, उसमें खित्बत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार का अवतरित होने से ज्ञान का पूर्ण उजाला फैल गया। सारे संसार की दृष्टि में एक मात्र अक्षरातीत ही उपास्य रह गए। ग्यारहवीं सदी के पश्चात् बारहवीं सदी के जब तीस वर्ष व्यतीत हुये अर्थात् वि. सं. १७४५ से १७७५ तक का समय बीता, तो सारे संसार के लिए क्यामत का सब कार्य (सम्पूर्ण ज्ञान का अवतरण) पूरा हो गया है।

**सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने क्यामत बीच में रहे ।
पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखिर ॥४७॥**

बारहवीं सदी के शेष ७० वर्षों में जीव सृष्टि का कर्मकाण्ड की भक्ति द्वारा के पश्चाताप करते हुए स्वयं को जागृत करना था। इस पुलसिरात के मार्ग पर चलने वालों के

दुःखों का वर्णन कैसे करें? काफिरों को तो न्याय की लीला में अन्ततोगत्वा प्रायश्चित की अग्नि में जलना ही होगा।

भावार्थ- यदि विवेक दृष्टि से देखा जाय तो ग्यारहवीं सदी के अन्तिम दस वर्षों (वि. सं. १७३५-१७४५) में ब्रह्मसृष्टियों की विशेष रूप से जागनी हुई। इसमें ज्ञान एवं प्रेम मार्ग (चितवनी) की प्रधानता रही। इसके बाद बारहवीं सदी के तीस वर्षों (वि. सं. १७४५-१७७५) में ईश्वरीय सृष्टि की जागनी की प्रधानता रही जिसमें ज्ञान एवं भक्ति की प्रधानता रही। इसके पश्चात् जीव सृष्टि की प्रधानता वाली जागनी लीला प्रारम्भ हुई, जिसमें आंशिक ज्ञान के साथ कर्म काण्ड की प्रधानता रही। चितवनी (प्रेम मार्ग) का दीपक कहीं-कहीं मात्र ब्रह्ममुनियों के हृदय में ही टिमटिमाता रहा। सुन्दरसाथ का समूह अधिकतर कर्मकाण्ड (सेवा पूजा एवं मन्त्र जप) पर ही आश्रित हो गया। इसकी साक्षी बीतक के इस कथन से मिलती है-

अग्यारहीं जोलों रही, तोलों बहुत चाह धरे ।

फेर ठण्डे पड़ते गए, लाल कहे अंग ठरे ॥

अर्थात् ग्यारहवीं सदी में ब्रह्मसृष्टियों की जागनी लीला में ही चितवनी का महत्व रहा। ईश्वरीय सृष्टि की जागनी में चितवनी का थोड़ा सा महत्व रहा। चितवनी के स्थान पर चर्चनी (ज्ञान दृष्टि से परमधाम में विचरण करने) का प्रचलन अधिक हो गया, किन्तु वि. सं. १७७५ के पश्चात् कर्मकाण्ड की ही प्रधानता रही। इस सम्बन्ध में कि. के ये कथन देखने योग्य हैं-

सब्दातीत निध ल्याये सब्द में, मेटयो सबन को अंधकार ।

तीसे सृष्ट विष्णु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार ॥

विष्णु को पोहोंचाए ठौर अछर हिरदे, बुधजी देएंगे खोल के द्वार ।

अखण्ड ब्रह्माण्ड बरस पचास पीछे, रेहेसी हिरदे में खुमार ॥ कि. 54/16, 17,

स्पष्ट है कि बारहवीं सदी के अन्तिम ७० वर्षों में जीव सृष्टि तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर श्री प्राणनाथ जी के विरह में तड़पती रही, फिर भी वह कर्मकाण्ड पर ही आश्रित रही, चितवनी का मार्ग न अपना सकी 'सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिये चलाए। अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥' ब. कि. ६/४२ का यह कथन यही सिद्ध करता है। 'बारहहीं सदी संपूरन, ब्रह्माण्ड ने पायो इनाम।' सनद ४२/२३। वि. सं. १८६५ में जब इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति पाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया, तो ईश्वरीय सृष्टि श्री प्राणनाथ जी की जागनी लीला को याद करके प्रेम में डूबी रही, जिसे खुमारी (याद में डूबे रहने) की लीला कहते हैं।

ब्रह्मसृष्टियों की जागनी लीला के पश्चात् जीव सृष्टि किस प्रकार स्वयं की जागनी के लिये व्यथित होती है, इसकी एक झलक सनंद ४१/६७ में इस प्रकार है- जुदी हमसे भगवान की, रूह फिरी एक सोए । जब फिरे सुनसी हमको, तब घरों आवसी रोए ॥

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि जीव सृष्टि श्री जी के विरह में कर्मकाण्ड के मार्ग का अनुसरण करती रही, जिसे पुलसिरात के मार्ग पर चलना कहा गया है। 'पुलसिरात कहीं खांडे की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार' बड़ा क्यामतनामा १/११ से यही सिद्ध होता है कि यहां कर्मकाण्ड का ही प्रसंग है, क्योंकि ईश्वरीय सृष्टि और ब्रह्म सृष्टि तो अपने प्रेम, ज्ञान एवं विश्वास के बल पर पुलसिरात (निराकार को पार कराने वाले पूल) को पार कर जाती है, किन्तु जीव सृष्टि कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलती है, जिससे उसके पैर कट जाते हैं, और वह निराकार को पार नहीं कर पाती है।

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं क्यामत के पूरे भए ।

ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर ॥४८॥

कुर्आन में पार: ३० अम्म सूर: फज्र ८६ आयत १-४ "वल्फज्रि(१) व लयालिन् अश्रिन्(२) द'वश्शफूइ वल्वत्त्रि(३) वल्लैलि इजा यसूरि(४)" अर्थात् फज्र की कसम और दस रातों की कसम। जुप्त और ताक की कसम और रात की कसम जबकि गुजरने लगे। $१०० \times १० = १०००$, $१०० \times २ = २००$ अर्थात् $१००० + २०० = १२००$ सदी अर्थात् १२ बुजों का जो वर्णन है, वह बारहवीं सदी में पूर्ण हो जाता है। इस सदी के ७० वर्षों में जीव सृष्टि (तीसरी सृष्टि) के देवी-देवता अर्थात् उत्तम जीव तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर जागृत होंगे और अखण्ड बहिश्तों का अधिकार प्राप्त करेंगे। इसके पश्चात् तेरहवीं सदी में समस्त ब्रह्माण्ड को अक्षर ब्रह्म के बेहद मण्डल में अखण्ड होने का सौभाग्य प्राप्त हो जायेगा।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ ५१६ ॥

दिन क्यामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे ।

क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनोंकी सक ॥१॥

इस प्रकार बारहवीं सदी में कियामत का समय पूरा होता है। इस रहस्य को मात्र ब्रह्मसृष्टियों ने ही समझा है। जिन जीवों को दोजक की अग्नि में जलना लिखा है, भला वे इस कथन पर कैसे विश्वास करेंगे? उन जीवों का तो कभी संशय ही नहीं मिटता है।

भावार्थ— बारहवीं सदी का कथन कुर्आन के अनुसार दिया गया है किन्तु अभी वर्तमान समय में भी ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि की जागनी लीला चल रही है। क्योंकि ब्रह्मसृष्टियों की खेल देखने की इच्छा के कारण मूल स्वरूप श्री राज जी ने इसे बढ़ा दिया है। जब तक यह ब्रह्माण्ड है तब तक यही समझना चाहिए कि अभी सारी १२००० ब्रह्मसृष्टियां, २४ हजार ईश्वरीय सृष्टियां तथा श्री प्राणनाथ जी यहीं पर है। इस सम्बन्ध में खुलासा २/३३ का यह सन्दर्भ बहुत ही महत्वपूर्ण है—

**जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर ।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर ॥**

कियामतनामे की उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का यह भी आशय है कि ब्रह्मसृष्टियों ने मात्र समय की गणना को ही नहीं समझा है अपितु स्वयं को तारतम ज्ञान के प्रकाश में जागृत होकर भी दिखाया है। यही कियामत है। गणना को तो बौद्धिक रूप से कोई जीव भी सरलता से समझ सकता है।

**पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कियामत कौल दूजा कोई न पावे ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे ॥२॥**

श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा श्री जी ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाले न्याय के दिन की पहचान करा दी है। आज दिन तक संसार में कोई भी कियामत के समय की वास्तविक पहचान नहीं कर पाया था। कुर्आन के तीसवें सिपारे में पांच स्वरूपों का वर्णन दिया हुआ है किन्तु इसका रहस्य मात्र वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं जिनका हृदय तारतम ज्ञान के प्रकाश से पवित्र होता है।

**ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे ॥३॥**

इन पांचों स्वरूपों के द्वारा बताये गये सत्य मार्ग का जो अनुसरण करता है और उनके निर्देशों का कभी उल्लंघन नहीं करता है, वह अखण्ड बहिश्त (मुक्ति सुख) का अधिकारी होता है। संसार के जो जीव मिथ्या एवं बूरे पापमय कार्य करते हैं, उसके फलस्वरूप उन्हें दोजक (प्रायश्चित) की अग्नि में जलना पड़ेगा।

भावार्थ— उपरोक्त दोनों चौपाईयों (२,३) में यह संशय होता है कि कुर्आन में वर्णित ये पांचों स्वरूप कौन हैं। इसका समाधान इसी कियामतनामा ग्रन्थ ८/६८, ६९ तथा ७० वीं चौपाई में दिया गया है—

पांच नेहेरें जबरआईल पर, आइयां भिस्त से उतर ।
 पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और ॥
 उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में ।
 हिन्द बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥
 ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत पाया सबन ।
 दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥

यह तो निर्विवाद सत्य है कि परब्रह्म के द्वारा धारण किये गये पांचों स्वरूप ब्रज एवं रास के श्री कृष्ण जी, अरब के मुहम्मद स., नवतन पुरी में लीला करने वाले सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी सब सुन्दरसाथ के लिये आराध्य हैं। इनके दिये हुए निर्देशों का पालन करना हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है किन्तु ६६ वीं चौपाई में कथित 'रहियां एक झिरने सच में' का आशय यही होगा कि श्री महामति जी के धाम हृदय में जो पांचों स्वरूप विराजमान हुए, वे इस प्रकार हैं-

श्री धनी जी को जोस आतम दुल्हिन, नूर हुकम बुध मूल वतन ।
 ए पांचों मिल भई महामत, वेद कतेबों पहुँची सरत ॥ प्र. हि. 37/101

उपरोक्त कथन में 'हुकम' के रूप में अक्षर ब्रह्म की जो आत्मा है, वह ही तो ब्रज-रास एवं अरब में थी। उसी स्वरूप के द्वारा धारण किये तीन रूपों को श्री महामति जी के धाम हृदय में कैसे माना जा सकता है? इसी प्रकार ब्रज एवं रास के श्री कृष्ण जी को अलग-अलग दो स्वरूपों में नहीं माना जा सकता है। इतना अवश्य है, कि हमारे लिये लीला रूप ब्रज, रास, अरब, नवतनपुरी तथा पद्मावती पुरी के ये पांचों स्वरूप असीम श्रद्धा के स्वरूप हैं। ब्रज-रास की प्रेममयी लीलाओं का निर्देशन हमारी आत्म जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, किन्तु यदि हम श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान पांच स्वरूपों के द्वारा अवतरित श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के आधार पर मूल स्वरूप श्री राज श्यामा जी को अपने धाम हृदय में बसायें, तो निर्विवाद रूप से हमारी पूर्ण जागनी हो सकती है।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर ।
 एदिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानों जिन दर्ई खबर ॥ ४ ॥

सर्वदा ही बुरे कर्म करने वाले जीव योगमाया में होने वाली कियामत के दिन, लज्जा से दुःखी होंगे। अब तब किसी ने भी दोनों कियामतों का समय निश्चित नहीं किया था। हे साथ

जी! आप उस स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पहचान कीजिए, जिसने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा यह ज्ञान दिया है।

भावार्थ—कियामत दो प्रकार की है १. छोटी कियामत (सुगरा) एवं २. बड़ी कियामत (कुबरा) है। अखण्ड मुक्ति स्थानों में नूरी तन प्राप्त करना बड़ी कियामत है। संसार तो छोटी कियामत का भी समय नहीं जानता था। श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा छोटी कियामत के समय का तो निर्धारण हो गया है, किन्तु बड़ी कियामत के समय को मूल स्वरूप श्री राज जी ने अपने हाथ में ले रखा है, कि कब महाप्रलय होगा एवं योगमाया में कब न्याय की लीला होगी?

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन ।

उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर ॥५॥

आज दिन तक संसार में किसी को भी न तो परमधाम के साक्षात्कार के मार्ग का ज्ञान था और न कियामत के समय का ही बोध था। ऐसे समय में श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान (श्री कुलजुम स्वरूप) से सबको सावधान (जागृत) कर दिया है। न्याय के दिन जब स्वयं परब्रह्म के द्वारा सबका न्याय होगा, तो सबको अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल प्राप्त होगा। बुरे कर्म करने वालों को प्रायश्चित की अग्नि में दण्डित करके मुक्ति का सुख दिया जायेगा।

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन ।

निहायत इस रोज की कोई न पावे, एपातसाह पुरसिस का देखावे ॥६॥

हे साथ जी! आप इस बात का विचार कीजिए, कि अपनी आत्मिक दृष्टि से परमधाम पहुँच कर अर्थात् अपने धाम हृदय में अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को बसाकर आपको परमधाम की सुधि (पहचान) किसने दी है? इस नश्वर जगत में आपको परब्रह्म का अंगरूप कहे जाने तथा योगमाया के ब्रह्माण्ड में संसार के सभी जीवों को आपके हाथों अखण्ड मुक्ति दिलाने की शोभा किसने दी है? निश्चित रूप से आज दिन तक किसी को भी दोनों प्रकार की कियामत एवं दोनों प्रकार के न्याय की लीला एवं समय का ज्ञान नहीं था। यह सारा ज्ञान देने वाले सर्वोपरि न्यायाधीश, ईश्वरों के भी ईश्वर श्री प्राणनाथ जी हैं।

भावार्थ—तारतम ज्ञान (श्री कुलजुम स्वरूप) के प्रकाश में संसार में सत्य-असत्य का निर्णय होना संसार की कजा (न्याय) है। न्याय की दूसरी लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में होगी, जहाँ सबको अपने-अपने कर्मों का फल मिलेगा।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।

कूवत तिन समें कहुं जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए॥७॥

योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाली न्याय की लीला के दिन कोई भी किसी को किसी भी प्रकार का लाभ नहीं पहुँचा सकेगा। उस समय कोई भी किसी के सुख या दुःख में सम्मिलित नहीं हो सकेगा। उस समय कोई भी अपने ज्ञान या भक्ति आदि की, किसी भी शक्ति से अपने सांसारिक सम्बन्ध के कारण किसी को लाभ देने की स्थिति में नहीं होगा अर्थात् यदि कोई अपने किसी लौकिक सम्बन्धी को दण्ड रूप मिलने वाले दुःखों से छुटकारा दिलाना चाहेगा तो वह सम्भव नहीं हो पायेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।

मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उन्हीं को मिलाएं॥८॥

अपने निर्देशक मूल स्वरूप श्री राज जी के आदेश से श्री महामति जी श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को उजागर कर रहे हैं तथा ब्रह्मसृष्टियों को परब्रह्म की पहचान कराने की कृपा प्रदान कर रहे हैं। इसी प्रकार ब्रह्ममुनि परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास करने वालों से हार्दिक प्रेम करते हैं तथा परब्रह्म के ज्ञान एवं प्रेम मार्ग में उन्हें सम्मिलित करते हैं अर्थात् तारतम ज्ञान एवं चितवनी की विधा उन्हें प्रदान करते हैं।

भावार्थ- हादी का तात्पर्य श्री राज जी, श्यामा जी एवं तीनों सूरतों से होता है। चौपाई के अन्तिम चरण में कथित 'हक में' से यह स्पष्ट है, कि उसके पूर्व चरण में ब्रह्मात्माओं द्वारा ईमान वाले लोगों को चाहने का प्रसंग है।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।

एबात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दर्ई॥९॥

कियामत के समय ही सबके न्याधीश श्री प्राणनाथ जी ने कुर्आन के गुह्यतम भेदों को खोला और यह स्पष्ट किया कि ब्रह्मात्माओं के लिये अन्तर्मुखी होकर अपना सर्वस्व अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत के लिये समर्पित कर देना ही रोजा है तथा चितवनी के द्वारा परमधाम के पच्चीस पक्षों में भ्रमण करना हज्ज है। महाराजा छत्रसाल जी कहते हैं कि मेरे आराध्य श्री प्राणनाथ जी ने मुझे यह अनुपम ज्ञान दिया तथा परमधाम का अनुभव कराकर ब्रह्ममुनियों में शिरोमणि (अमीरुल मोमिनीन) की शोभा दी।

भावार्थ- 'हुकुम हाथ छत्रसाल के, दियो सो अपनो राज' बी. ६०/६३ का कथन इसी सन्दर्भ में है।

॥ प्रकरण ॥२३॥ चौपाई ॥५२५॥

**नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध ॥१॥**

हदीसों में नवमी सदी के पश्चात् अरफा ईद का वर्णन है। दसवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के पदार्पण के पश्चात् जागनी की सारी लीला प्रारम्भ होती है। यह लीला ग्यारहवीं सदी में प्रकट होने वाले इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के द्वारा संपादित होती है। इन तथ्यों को कुर्आन में अनेक प्रकार से अच्छे तरीके से दर्शाया गया है।

भावार्थ- रमजान महीने की नवमी, दसवीं तथा ग्यारहवीं तिथि को अरफा ईद कहा जाता है। नवमी तारीख को ईद-उल-फितर कहते हैं। दसवीं तारीख को ईद-उल-जुहा कहते हैं तथा ग्यारहवीं तारीख को ईद-उल-मिलाद कहते हैं। इस प्रकार सामूहिक रूप से नवमी, दसवीं तथा ग्यारहवीं सदी को बातिनी रूप से अरफा ईद कहा है। दसवीं तथा ग्यारहवीं सदी में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन होता है इसलिए समस्त ब्रह्माण्ड के लिए प्रसन्नता का समय होने के कारण इसे अरफा ईद कहा जाता है।

**ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार ॥२॥**

इस जागनी लीला का ग्यारहवीं सदी में बहुत अधिक विस्तार होता है, क्योंकि इसमें अपने परमधाम की सभी आत्माओं के साथ स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट हुये हैं। परमधाम की सम्पूर्ण निधियां (ज्ञान, प्रेम, आनन्द, एकत्व आदि) एवं महिमा इस स्वरूप में प्रकट होती है तथा आत्मा में परब्रह्म के प्रति अखण्ड प्रेम उत्पन्न करने वाली १८७५८ चौपाईयों का अवतरण भी होता है।

**छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार ॥३॥**

महान महिमा वाला कियामत का यह समय कुर्आन की आयतों में छिपा पड़ा था, किन्तु श्री प्राणनाथ जी ने कुर्आन के गुह्य भेदों को खोलकर कियामत की पूर्ण पहचान को प्रकट किया। ग्यारहवीं सदी में ब्रह्मात्माओं ने अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत की सानिध्यता में परमधाम के सुख का रसपान किया। इसके पश्चात् बारहवीं सदी में तारतम ज्ञान के पूर्ण उजाले में यह निश्चित हो गया है, कि न्याय की लीला में बुरे कर्म करने वालों को प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा।

**जिन पाई राह रोज क्यामत, सो उठे फजर के नूर बखत ।
फजर पीछे जब ऊया दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ।।४।।**

जो कियामत का समय पहचानकर अक्षरातीत के चरणों की सानिध्यता में आये, वे तारतम ज्ञान से होने वाले प्रातःकाल के उजाले में जागृत हुए और परमधाम का आनन्द प्राप्त किये। प्रातःकाल के पश्चात् जब दोपहर का उजाला फैल गया अर्थात् चारों ओर तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल गया, तब सबने श्री प्राणनाथ जी और परमधाम की पहचान कर अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित्त किया।

**तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्य़ा अजाजील, जाए उठाया असराफील ।।५।।**

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जब न्याय की लीला होगी, तो उस समय किसी भी प्रकार के प्रायश्चित्त का अवसर नहीं रहेगा और इस नश्वर जगत में परब्रह्म के आवेश स्वरूप से आने तथा तारतम ज्ञान द्वारा सबको जागृत करने का लाभ भी किसी को नहीं मिल सकेगा। श्री जी के अन्तर्धान होने के पश्चात् बारहवीं सदी में सत्तर वशों तक जीवसृष्टि श्री प्राणनाथ जी को याद कर पश्चातापपूर्वक विरह की इस अग्नि में जलती रही कि जिस समय परब्रह्म ने प्रत्यक्ष रूप से लीला की, उसका हमने लाभ क्यों नहीं उठाया? विरह में तड़पने वाली इस जीवसृष्टि को अस्माफील ने तारतम ज्ञान से जागृत किया।

भावार्थ- परम्परागत रूप से यही माना जाता है कि श्री जी के अन्तर्धान होने के पश्चात् अपने बुरे कर्मों से प्रायश्चित्त करने का दरवाजा बन्द हो गया। तथा एक की बंदगी का हजार गुना फल मिलने का सौभाग्य भी समाप्त हो गया है। यह विचारधारा उन सुन्दरसाथ की है जो यह मानते हैं कि श्री प्राणनाथ जी अन्तर्धान के पश्चात् सब सुन्दरसाथ को लेकर परमधाम चले गए। किन्तु ऐसी धारण बनाने से पहले वे यह नहीं सोचते कि वे श्री छत्रशाल जी, श्री लालदास जी तथा श्री मुकुन्ददास जी जैसे ब्रह्ममुनियों को अकेले छोड़कर क्यों चले गए? जब कलश हिन्दुस्तानी २३/२६ में स्पष्ट कहा है कि-

“पौढ़े भेले, जागसी भेले”

अर्थात् साथ आये हैं साथ जाएंगे। तो यह कैसे सम्भव है कि श्री जी कुछ को लेकर अकेले चले जाएं और कुछ को यहीं छोड़ जाएं? उस समय तक तो श्री श्यामा जी के स्वामित्व के चालीस वर्षों में से मात्र सोलह वर्ष ही व्यतीत हुए थे। यहां तक कि जागनी लीला के १२०

वर्ष भी पूरे नहीं हुये थे। इसके अतिरिक्त परमहंस श्री गोपालमणि जी, बाबा दयाराम जी तथा परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी जैसी ब्रह्मात्माओं से तो जागनी का कार्य अभी प्रारम्भ ही नहीं हुआ था। जब सनद ग्रन्थ ४२/१६ में कहा है कि-

“खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैन्यन।”

तो मात्र कुछ हजार की ही जागनी कर वे परमधाम में अकेले जाकर क्या करेंगे? ऐसी स्थिति में हमें यही मानना पड़ेगा, कि आज भी अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी, श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान हैं और श्री महामति जी का तन चैतन्य अवस्था में ध्यानावस्था में श्री गुम्फट जी में झूले पर शोभायमान है। आज भी एक की बंदगी का हजार गुना फल मिलेगा और तारतम ज्ञान से परमधाम और अक्षरातीत की पहचान करके कोई भी अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित्त (तोबा) कर सकता है।

यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि कालमाया के ब्रह्माण्ड में अपने बुरे कर्मों से जीवसृष्टि को प्रायश्चित्त करना है। योगमाया के ब्रह्माण्ड में तो न्याय के दिन अपने बुरे कर्मों के कारण प्रायश्चित्त की अग्नि में जलना ही पड़ेगा।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहींमें कायम किए।

यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन।।६।।

अस्माफील के एक सूर में संसार की अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो गया तथा दूसरे सूर से तेरहवीं सदी में तारतम ज्ञान का प्रकाश ऐसा फैल गया, कि इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति पाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा कियामत के समय को प्रकट कर दिया और परमधाम के ब्रह्ममुनियों की महिमा को भी संसार में उजागर कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५३१ ॥

इस प्रकार बड़े कियामतनामा की यह टीका संपूर्ण हुयी।

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ५२७, चौपाई १८७५८

॥ बड़ा कियामतनामा ॥ सम्पूर्ण ॥

-: एक विनम्र निवेदन :-

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! प्राणेश्वर अक्षरातीत के हृदय से प्रकट होने वाले श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के अगाध सागर की कुछ अमृतमयी बूंदों का रसास्वादन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। अपने जीवन के आधार युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी के चरणों की छत्रछाया में बैठकर परमहंस श्री रामरतन दास जी की कृपा दृष्टि से मैंने टीका करने का दुस्साहस किया। सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा ने मुझे इस कार्य के लिये प्रेरित किया, किन्तु मुझे अपनी अल्पज्ञता एवं विवेक हीनता का यथार्थ बोध था। अतः इसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। आप सभी सुन्दरसाथ विवेकशील हैं। अतः आपसे निवेदन है कि इसमें होने वाली भूलों के लिये मुझे क्षमा करने का कष्ट करें, और उसे सुधार कर मुझे भी सूचित करें जिससे कि भविष्य में टीका में संशोधन किया जा सके। मैं आप सभी सुन्दरसाथ के चरणों में प्रेम पूर्वक कोटि-कोटि साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

रास से कियामतनामा तक की इस टीका के कार्य में श्री अनिल श्रीवास्तव जी एवं कुर्आन के विशिष्ट विद्वान श्री नरेश टण्डन जी का विशेष योगदान रहा है। इसके टंकण कार्य में ज्ञानपीठ के ही अशोक, सच्चिदानन्द, पवन, राजकुमार, धरम राज, तारतम, सूरज तथा पंकज आदि की विशेष सेवा रही है। आचार्य सुभाष जी, श्री एस. पी. आर्य, किरण बहन, बबली बहन की प्रूफ संशोधन में विशेष सेवा है। प्रेस-मशीन को संचालित करने की सेवा जयकान्त की रही है। मैं इन सभी सुन्दरसाथ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए धाम धनी से प्रार्थना करता हूँ कि इनके ऊपर धाम धनी की पल-पल कृपा बरसती रहे।

आप सबकी चरण रज
राजन स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला- सहारनपुर, उ० प्र०

“तमाम शय वल्ल्खैर”
(समस्त प्राणी आनन्द पूर्वक रहे)